"HINDI YATRA VRITTANT KA AALOCHNATMAK ADHYAYAN"

Thesis Submitted in Partial Fulfilment of the Requirement for the Degree of

DOCTOR OF PHILOSOPHY

in Hindi

2020

Submitted By

LOKESH KUMAR

15HHPH05

Under the guidance of

Prof. Garima Srivastava

Department of Hindi, School of Humanities
University of Hyderabad
P.O. Central University, Gachibowli,
Hyderabad-500046
Telangana State, India

“हिंदी यात्रा-वृत्तांत का आलोचनात्मक अध्ययन”

(हैदराबाद विश्वविद्यालय की पीएच.डी. (हिंदी) उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबंध)

2020

शोधार्थी

लोकेश कुमार

15HHPH05

शोध-निर्देशक

प्रो. गरिमा श्रीवास्तव
भारतीय भाषा केंद्र, भाषा साहित्य एवं संस्कृति
अध्ययन संस्थान, जवाहरलाल नेहरू
विश्वविद्यालय, नई दिल्ली-110067
(भूतपूर्व प्रोफेसर- हिंदी विभाग, मानविकी संकाय
हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद-500046)

विभागाध्यक्ष

प्रो. सच्चिदानंद चतुर्वेदी
हिंदी विभाग, मानविकी संकाय
हैदराबाद विश्वविद्यालय
हैदराबाद-500046

हिंदी विभाग, मानविकी संकाय, हैदराबाद विश्वविद्यालय,
हैदराबाद-500046

DECLARATION

I, LOKESH KUMAR hereby declare that the thesis entitled "HINDI YATRA VRITTANT KA AALOCHNATMAK ADHYAYAN"

("हिंदी यात्रा-वृत्तांत का आलोचनात्मक अध्ययन") submitted by me under the guidance and supervision of Professor Garima Srivastava is a bonafide research work. I also declare that it has not been submitted previously in part or in full to this University or any other University or Institution for the award of any degree or diploma. I hereby agree that my thesis can be deposited in Shodhganga/INFLIBNET.

Lokesh Kumar 25-09-20

Date: 25-09-20

Signature of the Student

LOKESH KUMAR

Regd. No. 15HHPH05

CERTIFICATE

This is to certify that the thesis entitled **"HINDI YATRA VRITTANT KA AALOCHNATMAK ADHYAYAN"**

("हिंदी यात्रा-वृत्तांत का आलोचनात्मक अध्ययन") submitted by **LOKESH KUMAR** bearing Regd. No. 15HHPH05 in partial fulfillment of the requirements for the award of Doctor of Philosophy in HINDI is a bonafide work carried out by him under my supervision and guidance.

This thesis is free from plagiarism and has not been submitted previously in part or in full to this or any other University or Institution for award of any degree or diploma.
Parts of this thesis have been:

A. Published in the following publications:-
1. **"YATRA VRITTANT KI YATRA-BHARTIYA SANDARBH"** [ISSN NO-2249-8907] Volume VIII, Number-1, January 2018

2. **"YATRAON KE JHAROKHE MEIN RAHUL SANKRITYAYAN"** [ISSN NO-2348-6163] January-March, 2019

Following conferences:-

1."YATRAON KE JHAROKHE MEIN RAHUL SANKRITYAYAN" Organized by Kashi Hindu Vishwavidyalaya, Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Uttar Pradesh Hindi Sansthan in Banaras Hindu Vishwavidyalaya, Varanasi, Uttar Pradesh, 19-21 February 2018 (National)

2**. "HINDI YATRA VRITTANT MEIN PRAVASI JIVAN KA SANDARBH"** Organized by School of Distance Education, University of Kerala, Kerala, 11-13 November 2019 (International)

Further the student has passed the following courses towards fulfillment of coursework requirement for Ph.D, during the M.Phil from this university.

Course Code	Name	Credits	Pass/Fail
1. HN701	Research Methodology	4	Pass
2. HN721	Modern Thought	4	Pass
3. HN722	Sociology of Literature	4	Pass
4. HN726	Sahitya Media Aur Sanskrauti	4	Pass
5. HH750	Dissertation	16	Pass

G Srivastava 30.9.20 30/9/20

Supervisor Head of Department Dean of School

अनुक्रमणिका

भूमिका 4 - 7

प्रथम अध्याय : हिंदी की कथेतर गद्य विधाएँ और यात्रा-वृत्तांत 8 - 52

1.1 यात्रा-वृत्तांत:एक परिचय

1.2 स्वरूप, परिभाषा

1.3 साहित्यिक विधा के रूप में यात्रा-वृत्तांत का वैशिष्ट्य

1.4 कथेतर गद्य विधाएँ एवं यात्रा-वृत्तांत का अंतःसंबंध

द्वितीय अध्याय : हिंदी के चयनित यात्रा-वृत्तांत-एक परिचय 53 - 89

2.1 राहुल सांकृत्यायन:एशिया के दुर्गम भूखंडों में

2.2 श्रीरामवृक्ष बेनीपुरी:पैरों में पंख बाँधकर

2.3 यशपाल:लोहे की दीवार के दोनों ओर

2.4 सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय':अरे यायावर रहेगा याद

2.5 सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय':एक बूँद सहसा उछली

2.6 विष्णु प्रभाकर:हँसते निर्झर:दहकती भट्ठी

2.7 नरेश मेहता:कितना अकेला आकाश

2.8 मोहन राकेश:आखिरी चट्टान तक

2.9 अमृतलाल वेगड़:सौंदर्य की नदी नर्मदा

2.10 निर्मल वर्मा:चीड़ों पर चाँदनी

2.11 कृष्णनाथ:स्पीति में बारिश

2.12 मृदुला गर्ग:कुछ अटके कुछ भटके

2.13 कुसुम खेमानी:कहानियाँ सुनाती यात्राएँ

2.14 असगर वजाहत:चलते तो अच्छा था

2.15 नासिरा शर्मा:जहाँ फव्वारे लहू रोते हैं

2.16 ओम थानवी:मुअनजोदड़ो

2.17 गरिमा श्रीवास्तव:देह ही देश

2.18 अनिल यादव:वह भी कोई देस है महराज

2.19 अनुराधा बेनीवाल:आजादी मेरा ब्रांड

2.20 उमेश पंत:इनरलाइन पास

तृतीय अध्याय : हिंदी के चयनित यात्रा-वृत्तांतों का वर्गीकरण 90 - 161

3.1 साहित्यिक उद्देश्य परक यात्रा-वृत्तांत

3.2 धार्मिक उद्देश्य परक यात्रा-वृत्तांत

3.3 ऐतिहासिक वर्णन परक यात्रा-वृत्तांत

3.4 राजनैतिक वर्णन परक यात्रा-वृत्तांत

3.5 प्रकृति चित्रण परक यात्रा-वृत्तांत

3.6 युद्ध परिवेश संबंधी यात्रा-वृत्तांत

3.7 स्त्री स्वतंत्रता संबंधी यात्रा-वृत्तांत

चतुर्थ अध्याय : हिंदी के चयनित यात्रा-वृत्तांतों का आलोचनात्मक अध्ययन

162 - 251

4.1 भारत संबंधी यात्रा-वृत्तांत

4.2 पड़ोसी राष्ट्र संबंधी यात्रा-वृत्तांत

4.3 एशिया संबंधी यात्रा-वृत्तांत

4.4 यूरोप संबंधी यात्रा-वृत्तांत

उपसंहार 252 - 264

संदर्भ ग्रंथ सूची 265 - 269

1. आधार ग्रंथ

2. सहायक ग्रंथ

3. पत्र-पत्रिकाएँ

परिशिष्ट

प्रकाशित शोध-आलेख-1

प्रकाशित शोध-आलेख-2

राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रस्तुत शोध-पत्र का प्रमाणपत्र-1

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रस्तुत शोध-पत्र का प्रमाणपत्र-2

भूमिका

आदिम युग में मनुष्य घुमक्कड़ था और वह तमाम चिंताओं से मुक्त रहकर हमेशा विचरण करता था| मनुष्य अपनी भूख-प्यास मिटाने और जीवनगत आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु हमेशा यात्रा करता रहा है, लेकिन धीरे-धीरे सभ्यता के विकास के साथ उसकी यायावरी वृत्ति भी बढ़ने लगी और अपनी जरुरत के अनुसार देश-विदेश की यात्रा करने लगा| घुमक्कड़ों में से आर्यों, शकों, हूणों ने अपने अमानवीय कृत्यों द्वारा मानवता को प्रशस्त किया, किन्तु मंगोल घुमक्कड़ों ने पश्चिम में बारूद, तोप, कागज, छापाखाना आदि चीजों का आविष्कार किया| घुमक्कड़ी धर्म ने ही यहूदियों को व्यापार-कुशल, उद्योग-निष्णात और विज्ञान, दर्शन, साहित्य, संगीत सभी क्षेत्रों में आगे बढ़ने का मौका दिया| भारत की उन्नति में कुपमण्डूकताओं का बाधक होना भी यायावरों की कमी की ओर इशारा करता है| भारत में कुछ लोग पुरानी परम्पराओं और पुरातन विचारों से प्रभावित होकर समुद्र पार की यात्रा का विरोध करते रहे हैं| इन पुरातन विचारों से मुक्त होकर जिन यायावरों ने दूसरे देशों की यात्राएँ कीं, वे निश्चय ही भारत को उत्कृष्ट बनाने वाले कर्मठ यात्री रहे हैं|

यात्राओं के जरिए हम उन तमाम जाने-अनजाने लोगों से प्रत्यक्षतः रू-ब-रू होते हैं, जिनसे हमारा पूर्व में सीधा साहचर्य नहीं होता| हम इन मुलाकातों में जहाँ एक तरफ प्रकृति से सीधे जुड़ते हैं, वहीं दूसरी तरफ यह भी जान पाते हैं कि दुनिया के हर हिस्से के मनुष्य में प्रेम, दया, क्षमा, करुणा और परोपकार का भाव ही प्रधान होता है| कोई भी लेखक उत्कृष्ट रचनाकार तभी बनता है जब वह जीवन को समीप से देखता है और जीवन को समीप से देखने का सबसे सरल माध्यम यात्रा है| रचनात्मक लेखन करने वाला हर लेखक अपने साहित्य में किसी-न-किसी रूप में यात्रा-साहित्य का सृजन करता है| हिंदी गद्य के साथ-साथ यात्रा-वृत्तांत का भी

पर्याप्त विकास हुआ है| अधिकांश लेखकों ने इस विधा को अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया है|

शोध-विषय के चुनाव में कहीं-न-कहीं मेरा यात्राप्रिय होना, जीव-जंतु को देखने-समझने की जिज्ञासा और भौगोलिक परिदृश्यों के प्रति आकर्षण का योगदान रहा है| पिछले कई वर्षों से डिस्कवरी, एनिमल वाइल्ड जैसे चैनलों को देखते और यात्रा-वृत्तांतों को पढ़ते हुए इस दिशा में मेरी शोध की जिज्ञासा बढ़ी| यात्रा-वृत्तांत पर शोध निर्देशक प्रो. गरिमा श्रीवास्तव मैम से बौधिक विमर्श करके अपनी जिज्ञासाओं को तुष्ट किया| अनगिनत यात्रा-वृत्तांतों को मैंने कई बार पढ़ा| कभी पाठक की दृष्टि से, कभी लेखक की दृष्टि से तो कभी आलोचक की दृष्टि से| तत्पश्चात इस विषय पर शोध करने का निर्णय लिया|

शोध-कार्य के लिए मैंने बीस पुस्तकों का चयन किया है| ये बीस पुस्तकें इस प्रकार से हैं- राहुल सांकृत्यायन:एशिया के दुर्गम भूखंडों में, श्रीरामवृक्ष बेनीपुरी:पैरों में पंख बाँधकर, यशपाल:लोहे की दीवार के दोनों ओर, सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय':अरे यायावर रहेगा याद, सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय':एक बूँद सहसा उछली, विष्णु प्रभाकर:हँसते निर्झर:दहकती भट्ठी, नरेश मेहता:कितना अकेला आकाश, मोहन राकेश:आखिरी चट्टान तक, अमृतलाल बेगड़:सौंदर्य की नदी नर्मदा, निर्मल वर्मा:चीड़ों पर चाँदनी, कृष्णनाथ:स्पीति में बारिश, मृदुला गर्ग:कुछ अटके कुछ भटके, कुसुम खेमानी:कहानियाँ सुनाती यात्राएँ, असगर वजाहत:चलते तो अच्छा था, नासिरा शर्मा:जहाँ फव्वारे लहू रोते हैं, ओम थानवी:मुअनजोदड़ो, गरिमा श्रीवास्तव:देह ही देश, अनिल यादव:वह भी कोई देस है महराज, अनुराधा बेनीवाल:आजादी मेरा ब्रांड, उमेश पंत:इनरलाइन पास|

हैदराबाद विश्वविद्यालय की पीएच. डी. (हिंदी) उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबंध पाँच वर्षों के अध्ययन, विश्लेषण एवं शोध के परिणाम के रूप में प्रस्तुत है| शोध-प्रबंध लेखन में आलोचनात्मक, विश्लेषणात्मक, तुलनात्मक एवं समाजशास्त्रीय शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है| शोध-प्रवंध लेखन में मुझे पाँच वर्षों का समय मिला| समय की इस सीमा में मेरे तरफ से अथक परिश्रम के बावजूद यात्रा-वृत्तांत

पर सहायक शोध सामग्री की अनुपलब्धता के कारण कई कमियाँ रह गई होंगी- भविष्य में इन कमियों को दूर करना ही मेरी प्राथमिकता होगी|

प्रस्तुत शोध-प्रबंध का विषय **"हिंदी यात्रा-वृत्तांत का आलोचनात्मक अध्ययन"** है| शोध एवं अध्ययन की सुविधा हेतु मैंने शोध-प्रबंध को चार अध्यायों में विभाजित किया है| शोध-प्रबंध की शुरुआत भूमिका से की है| तदुपरांत चारों अध्यायों का विश्लेषण किया है| उसके बाद उपसंहार लिखा गया है और संदर्भ ग्रंथ सूची तैयार की गई है|

प्रथम अध्याय का शीर्षक "**हिंदी की कथेतर गद्य विधाएँ और यात्रा-वृत्तांत**" है| इस अध्याय के अंतर्गत मैंने यात्रा-वृत्तांत का परिचय, स्वरूप एवं परिभाषा पर बात की है| यात्रा-वृत्तांत के विकास एवं परंपरा का विश्लेषण किया है, जिनमें भारतेंदु हरिश्चंद्र के यात्रा-वृत्तांत से होते हुए राहुल सांकृत्यायन युग के महत्त्वपूर्ण यात्रा-वृत्तांतों की चर्चा की है| फिर स्वातंत्र्योत्तर युग के महत्त्वपूर्ण यात्रा-वृत्तांतों के बारे में बताया है| साहित्यिक विधा के रूप में यात्रा-वृत्तांत के वैशिष्ट्य को बताया है| तदुपरांत हिंदी की कथेतर गद्य विधाएँ एवं यात्रा-वृत्तांत का अंतःसंबंध पर विस्तृत चर्चा की है|

द्वितीय अध्याय का शीर्षक '**हिंदी के चयनित यात्रा-वृत्तांत-एक परिचय**' है| इस अध्याय में मैंने चयनित बीस यात्रा-वृत्तांतों एवं रचनाकारों का परिचय दिया है| रचनाकारों का परिचय देते हुए उनकी उपलब्धियों एवं साहित्य में उनके योगदान की चर्चा की है|

तृतीय अध्याय का शीर्षक '**हिंदी के चयनित यात्रा-वृत्तांतों का वर्गीकरण**' है| इस अध्याय में मैंने चयनित यात्रा-वृत्तांतों का वर्गीकरण करके विश्लेषण किया है| चयनित यात्रा-वृत्तांतों का साहित्यिक उद्देश्य परक यात्रा-वृत्तांत, धार्मिक उद्देश्य परक यात्रा-वृत्तांत, ऐतिहासिक वर्णन परक यात्रा-वृत्तांत, राजनैतिक वर्णन परक यात्रा-वृत्तांत, प्रकृति चित्रण परक यात्रा-वृत्तांत, युद्ध परिवेश संबंधी यात्रा-वृत्तांत, स्त्री स्वतंत्रता संबंधी यात्रा-वृत्तांत, श्रेणियों में विभाजन करते हुए विश्लेषण किया है|

सभी रचनाकारों की यात्रा के भिन्न-भिन्न उद्देश्य को बताते हुए उनके यात्रा-वृत्तांतों का भी श्रेणीबद्ध उद्देश्य बताया है|

चतुर्थ अध्याय का शीर्षक **'हिंदी के चयनित यात्रा-वृत्तांतों का आलोचनात्मक अध्ययन'** है| इस अध्याय में चयनित यात्रा-वृत्तांतों का आलोचनात्मक अध्ययन किया है| चयनित यात्रा-वृत्तांतों का भारत संबंधी यात्रा-वृत्तांत, पड़ोसी राष्ट्र संबंधी यात्रा-वृत्तांत, एशिया संबंधी यात्रा-वृत्तांत, यूरोप संबंधी यात्रा-वृत्तांत, श्रेणियों में विभाजन किया है| इन यात्रा-वृत्तांतों का सर्वांगीण विश्लेषण करते हुए सभी महत्त्वपूर्ण पक्षों पर बात की है|

शोध-प्रबंध की मूल मान्यताओं को संक्षेप में उपसंहार में प्रस्तुत किया गया है| संदर्भ ग्रंथ सूची के अंतर्गत आधार और सहायक ग्रंथों एवं पत्र-पत्रिकाओं का उल्लेख किया गया है| परिशिष्ट में शोध विषय से संबंधित प्रकाशित दो शोध-आलेख एवं दो संगोष्ठी प्रमाणपत्र लगाए गए हैं|

प्रस्तुत शोध-प्रबंध प्रो.गरिमा श्रीवास्तव मैम के निर्देशन में संपन्न हुआ है| आदरणीय गुरुजी के प्रति मैं विशेष आभार व्यक्त करता हूँ, क्योंकि उनका निरंतर सहयोग और प्रोत्साहन मेरे लिए अमूल्य महत्त्व रखता है| उन्होंने शोध-प्रबंध लेखन के दरम्यान निरंतर पाँच वर्षों तक मेरा मार्गदर्शन किया| शोध-प्रबंध लेखन के दौरान हमेशा प्रेरित करते हुए साथ बनी रहीं| मैं अपने विभागाध्यक्ष आदरणीय प्रो. सच्चिदानंद चतुर्वेदी सर एवं विभाग के अन्य प्राध्यापक गण का आभार व्यक्त करता हूँ, जिनसे मुझे प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सहयोग और मार्गदर्शन मिलता रहा है| मैं अपने माता-पिता, भाई-बहन एवं परिवार जनों का आभार व्यक्त करता हूँ, जिनका आशीर्वाद और अपेक्षाएँ मुझसे सदैव संपृक्त हैं|

लोकेश कुमार

प्रथम अध्याय

हिंदी की कथेतर गद्य विधाएँ और यात्रा-वृत्तांत

1.1 यात्रा-वृत्तांत:एक परिचय

1.2 स्वरूप, परिभाषा

1.3 साहित्यिक विधा के रूप में यात्रा-वृत्तांत का वैशिष्ट्य

1.4 कथेतर गद्य विधाएँ एवं यात्रा-वृत्तांत का अंतःसंबंध

1.1 यात्रा-वृत्तांत:एक परिचय

यात्रा मानव जीवन की एक जरुरत है| मानव जाति के विकास में यात्रा की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है| प्रारम्भ में मनुष्य अपनी भूख प्यास मिटाने और जीवनगत आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु यात्रा किया करता था, लेकिन धीरे-धीरे सभ्यता का विकास हुआ और बढ़ती जरुरत के अनुसार उसकी यायावरी वृत्ति भी बढ़ने लगी| डॉ. सुरेंद्र माथुर ने यात्रा के महत्त्व पर बात करते हुए लिखा है- "यात्रा का जीवन से अविच्छिन्न सम्बन्ध है| जीवनगत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वह सदैव से बड़े पर्वत, घनघोर जंगल और जलते हुए रेगिस्तानों की यात्रा करता आया है| बिना यात्रा किए उसका जीवन-निर्वाह दूभर था, उसके पास अन्य कोई साधन भी न थे|"[1]

प्राचीन काल से ही न सिर्फ भारतवर्ष बल्कि पूरी दुनिया में तीर्थयात्रा को महत्त्व दिया गया है| सभी धर्म के लोगों ने तीर्थयात्राएँ की हैं| लोगों में यह विश्वास रहा है कि तीर्थ स्थानों पर जाने से अपना मन पवित्र होता है| आज तीर्थयात्रियों की संख्या में और भी वृद्धि हुई है| यात्राओं का विवरण हमारे प्राचीन ग्रंथों यानी वेदों-पुराणों में भी मिलता है| बहुत सारे यायावर अपने देश छोड़कर लगातार साहित्य के भंडार को और देश की पहचान, सभ्यता, संस्कृति को एक जगह से दूसरी जगह तक पहुँचाने का कार्य कर रहे हैं| राहुल सांकृत्यायन ने यायावर और घुमक्कड़ी के महत्त्व को रेखांकित करते हुए लिखा है- “मेरी समझ में दुनिया की सर्वश्रेष्ठ वस्तु घुमक्कड़ी है| घुमक्कड़ से बढ़कर व्यक्ति और समाज के लिए कोई हितकारी नहीं हो सकता| मनुष्य स्थावर वृक्ष नहीं है, वह जंगम प्राणी है, चलना मनुष्य का धर्म है, जिसने इसे छोड़ा वह मनुष्य होने का अधिकारी नहीं है|”[2]

हिंदी यात्रा-वृत्तांत के सर्वप्रथम हस्तलिखित ग्रन्थ के रूप में गोस्वामी विट्ठलनाथ द्वारा लिखित ‘वन यात्रा’ को माना जाता है| चौवालीस पृष्ठों के इस ग्रन्थ में विट्ठल जी ने ब्रजमंडल के विविध दृश्यों को अन्यत्न भक्ति-भाव से चित्रित किया है| ‘वनयात्रा’ नाम से दो अन्य हस्तलिखित ग्रन्थ हैं| उनमें प्रथम के रचनाकाल एवं रचयिता के सम्बन्ध में प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं| पैंसठ पृष्ठों की यह रचना अपूर्ण है| ‘वनयात्रा’ नाम से जो दूसरी कृति है, उसकी रचनाकार जीमन महाराज की माँ हैं, इसमें भी गोकुल, मथुरा, गोवर्धन, वृन्दावन आदि स्थानों के प्राकृतिक वर्णन को प्रस्तुत किया गया है| ‘ब्रजपरिक्रमा’, ‘सेठ पद्मसिंह की यात्रा’, ‘बात दूर देश की’, ‘ब्रज चौरासी कोस वनयात्रा’, ‘बद्रीनारायण सुगम-यात्रा’ आदि अनेक हस्तलिखित कृतियों का उल्लेख है| इन ग्रंथों में वर्णनात्मकता के साथ-साथ भावात्मकता को भी

स्थान दिया गया है| इन यात्रा परक कृतियों में गद्य की अपेक्षा पद्य की प्रधानता है और पद्य में भक्ति भावना को प्रमुखता दी गई है|

दुनिया का बड़ा-से-बड़ा यायावर साहित्यिक कोटि का रहा है- फाहियान, ह्वेनसांग, इत्सिंग, बर्नियर, मार्कोपोलो, अलबरूनी, इब्नबतूता आदि जितने प्रसिद्ध घुमक्कड़ या देश-विदेश के अन्वेषक हुए हैं, सब साहित्यिक यायावर जान पड़ते हैं| महावीर जैन, गौतम बुद्ध, इसा मसीह और रामानुजाचार्य जैसे महान दार्शनिकों ने घूम-घूम कर अपने ज्ञान का सृजन किया| डॉ. सुरेन्द्र माथुर ने लिखा है- “धीरे-धीरे भ्रमण द्वारा मानव यात्रा-क्षेत्र में प्रगति करने लगा| उसने अपना क्षेत्र व्यापक बनाया और दूर-दूर के स्थानों का भ्रमण प्रारंभ किया| उसे नवीन बातों की जानकारी प्राप्त हुई और उसके जीवन का बौद्धिक विकास हुआ, साथ ही उसकी विचारधारा भी विकसित हुई और वह जीवन में प्रगति के पथ पर अग्रसर होने लगा|”[3]

हिंदी साहित्य में यात्रा-वृत्तांत का प्रारम्भ भारतेंदु युग से मानना ज्यादा उपयुक्त होगा| श्रीमती हरदेवी कृत 'लन्दन यात्रा' 1883 यात्रा-वृत्तांत का सर्वप्रथम मुद्रित ग्रंथ माना जाता है| भारतेंदु हरिश्चंद्र के सम्पादन में निकलने वाली पत्रिकाओं में 'सरयूपार की यात्रा', 'मेहदावल की यात्रा', 'लखनऊ की यात्रा', 'जनकपुर की यात्रा', 'वैद्यनाथ की यात्रा' आदि यात्रा-वृत्तांत प्रकाशित हुए| इन यात्रा-वृत्तांतों की भाषा व्यंग्यपूर्ण और शैली बड़ी रोचक एवं सजीव है। आलोचकों ने इन यात्रा-वृत्तांतों को निबंध विधा के अंतर्गत ही समाविष्ट कर लिया है| उस समय यात्रा-वृत्तांत के रूप में गद्य की स्वतंत्र विधा मान्य नहीं थी| भारतेंदु के बाद यात्रा-वृत्तांतकारों की एक लम्बी परम्परा दिखाई पड़ती है| इन रचनाओं में पंडित दामोदर शास्त्री कृत ‘मेरी पूर्व दिग्यात्रा’ (1885), देवी प्रसाद खत्री कृत ‘रामेश्वर की यात्रा’, ‘बद्रिकाश्रम यात्रा’, शिव प्रसाद कृत ‘पृथ्वी प्रदक्षिणा’, स्वामी सत्यदेव परिव्राजक कृत ‘मेरी कैलाश यात्रा’, ‘मेरी जर्मन यात्रा’, कन्हैया लाल प्रभाकर कृत

‘हमारी जापान यात्रा’ और रामनारायण कृत ‘यूरोप यात्रा में छः मास’ आदि यात्रा-वृत्तांत महत्त्वपूर्ण हैं| इन यात्रा-वृत्तांतों के कारण हिंदी प्रदेश में निवास करने वाले समाज के विकसित होते हुए मानसिक धरातल की सूचना मिलती है, उनके तमाम गतिविधियों एवं संस्कारों का चित्रण मिलता है|

यात्रा-वृत्तांत लेखन की दिशा में भी भारतेंदु युग के अनेक लेखकों ने योग दिया| भारतेंदु हरिश्चन्द्र ने यात्रा विषयक अनेक रचनाएं कीं, जो कविवचनसुधा के अंकों में प्रकाशित हुईं, ‘इनमें सरयू पार की यात्रा’, ‘लखनऊ की यात्रा’ और ‘हरिद्वार की यात्रा’ उल्लेखनीय हैं| इन यात्रा-वृत्तांतों की भाषा व्यंग्यपूर्ण हैं और शैली बड़ी रोचक और सजीव है| बालकृष्ण भट्ट ने ‘गया यात्रा’ और प्रताप नारायण मिश्र ने ‘विलायत यात्रा’ नामक रचनाएँ लिखीं| श्रीमती हरदेवी ने ‘लन्दन यात्रा’ में बम्बई से लंदन तक की जहाजी यात्रा का विस्तृत विवरण किया है| भगवानदास वर्मा ने तुलनात्मक शैली का आश्रय लेते हुए लखनऊ और लन्दन की समानताएं प्रकट की हैं|

भारतेंदु युगीन यात्रा-वृत्तांतों में भावात्मक स्थलों पर भाषा की प्रवाहमयता में लोकोक्तियाँ, अलंकार आदि सहजता से प्रवेश कर गए हैं| यात्रा-वृत्तांत की इस कड़ी को बालकृष्ण भट्ट के 'कातिकी का नहान', 'विलायत की यात्रा' एवं प्रताप नारायण मिश्र के 'विलायत यात्रा' में देखते हैं| इन लेखकों के प्रयत्नों से यात्रा-वृत्तांत की रचना में वृद्धि हुई जोकि भारतेंदु युग की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है|

भारतेंदु युग में विदेश यात्रा सम्बंधी वर्णनों में लन्दन को प्रमुखता मिली है तो स्वदेश यात्रा सम्बन्धी वर्णनों में तीर्थ स्थानों को| यात्रा-वृत्तांत हिंदी साहित्य के हर युग में लिखे गए| द्विवेदी युग में स्वामी मंगलानन्द ने ‘मारीशस यात्रा’ श्रीधर पाठक ने ‘देहरादून शिमला यात्रा’, उमा नेहरु ने ‘युद्ध क्षेत्र की सैर’ और लोचनप्रसाद पाण्डेय ‘हमारी यात्रा’ नामक यात्रा-वृत्तांत लिखे|

भारतेन्दु काल में लिखे गए यात्रा-वृत्तांत, यात्रा क्रम में लिखे गए स्थूल वृत्त मात्र होते थे| अधिक से अधिक उनमें लेखक के व्यक्तित्व का साक्षात्कार कर सकते हैं| यात्रा-वृत्तांत सामान्य-वर्णन शैली के अतिरिक्त डायरी, पत्र और रिपोर्ताज शैली में भी लिखा जाता है, इसलिए इसमें निबंध, कथा, संस्मरण आदि कई गद्य-विधाओं का आनंद एक साथ मिलता है| रेखा प्रवीण उप्रेती के अनुसार- “मनुष्य का रचनाशील मानस अनुभवों की समृद्धि ही नहीं, उनकी सार्थक अभिव्यक्ति भी चाहता है| यात्रा के दौरान प्राप्त अनुभवों को भी उसकी सृजनात्मक प्रतिभा ने शब्दबद्ध करने का प्रयास किया और यही प्रयास यात्रा-साहित्य के रूप में प्रतिफलित हुआ| यात्रा-साहित्य से अभिप्राय साहित्य की उस विधा से है, जिसके अंतर्गत रचनाकार अपने जीवन में की गई यात्राओं के मध्य अर्जित अनुभवों को रूपायित करता है| यात्रा के क्रम में प्रकृति की छवियाँ, जन-जीवन की झाँकियाँ, चुनौतीपूर्ण परिस्थितियाँ, विभिन्न स्वभाव के चरित्र, विविध ऐतिहासिक स्थल व स्मारक, सांस्कृतिक उपादान और अनेक घटनाएँ संवेदनशील यात्री के मानस को विविध अनुभूतियाँ प्रदान करते हैं| अपने भ्रमण में अर्जित ऐसी ही अनुभूतियों का आस्वादन पाठकों को कराने की प्रेरणा यात्रा-साहित्य का सृजन किया जाता है|”[4]

वर्तमान हिंदी यात्रा-वृत्तांत के आधुनिक रूप का विकास अन्य हिंदी गद्य विधाओं की तरह 19वीं शताब्दी में ही हुआ है| हिंदी यात्रा-वृत्तांत के सशक्त हस्ताक्षर प्रसिद्ध यायावर राहुल सांकृत्यायन ने अमूल्य कृतियों का सृजन किया है| सांकृत्यायन जी ने देश-विदेश की बार-बार यात्राएँ कीं और उनके आधार पर अनेक यात्रा-वृत्तांत का सृजन भी किया| सांकृत्यायन जी ने तिब्बत से अपार बौद्ध ग्रंथों को उपलब्ध कराया| तिब्बत यात्राओं का उनका उद्देश्य ही प्राचीन ग्रंथों की खोज रहा है| उसी प्रकार अध्यापन के लिए वे रूस गए, तब भी उनकी दृष्टि रचनाओं के लिए सामग्री संकलन में लगी थी| वामपंथ के समर्थक होने पर भी राहुल सांकृत्यायन भारतीयता के प्रति गहरी आस्था रखने वाले थे| जिस धरती या मिट्टी में उनका जन्म हुआ है, उस भारत के प्रति उनके मन में बेहद सम्मान था| घुमक्कड़ी उनके लिए

वृत्ति नहीं वरन् धर्म था| आधुनिक हिंदी साहित्य में राहुल सांकृत्यायन एक यात्राकार, इतिहासविद्, तत्वान्वेषी, युगपरिवर्तनकार साहित्यकार के रूप में जाने जाते हैं| उन्होंने लगभग एक दर्जन यात्रा-वृत्तांत लिखा है, जिनमें 'रूस में पच्चीस मास', 'मेरी तिब्बत यात्रा', 'किन्नर देश में', 'एशिया के दुर्गम भूखंडों में', 'हिमाचल', 'घुमक्कड़शास्त्र' आदि महत्त्वपूर्ण रचना हैं|

राहुल सांकृत्यायन के बाद यात्रा-वृत्तांत में बहुमुखी प्रतिभा के धनी कवि-कथाकार सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' का नाम बड़े सम्मान से लिया जाता है| अज्ञेय अपने यात्रा-वृत्तांत को यात्रा-संस्मरण कहना पसंद करते थे| इससे उनका आशय यात्रा-वृत्तांतों में संस्मरण का समावेश कर देना था| उनका मानना था कि यात्राएँ न केवल बाहर की जाती हैं बल्कि ये हमारे अंदर की ओर भी की जाती हैं| 'अरे यायावर रहेगा याद'(1953) और 'एक बूंद सहसा उछली'(1960) उनके द्वारा लिखित यात्रा-वृत्तांत की प्रसिद्ध कृतियाँ हैं| 'अरे यायावर रहेगा याद' में उनके भारत भ्रमण का वर्णन है और 'एक बूंद सहसा उछली' में विदेशी यात्राओं को शब्दबद्ध किया गया है| 'अज्ञेय' के यात्रा-वृत्तांत की भाषा गद्य भाषा को नए मुकाम तक ले जाती है|

हिंदी यात्रा-वृत्तांत में 1950 के बाद ऐतिहासिक परिवर्तन होता है। यात्रा-वृत्तांतकारों ने यात्रा-वृत्तांत को अपनी-अपनी शैलियों में कहानी, उपन्यास तथा कविता के समकक्ष स्थापित किया, इसलिए इस कालखंड में अन्य खंडों के विपरीत यात्रा-वृत्तांतकारों की बहुसंख्या है तथा विषयों का वैविध्य है। 1952 के बाद के यात्रा-वृत्तांत में सहसा बड़ा परिवर्तन आ जाता है| जनमानस की तथा लेखकों, साहित्यिकों की मानसिकता में एक अभूतपूर्व उल्लास, आत्मविश्वास, देश-प्रेम, देश की खोज, आत्मसम्मान और इन सबसे मिलकर उत्पन्न हुई रचनात्मकता यात्रा-वृत्तांत में उत्पन्न हो जाती है|

यात्रा-वृत्तांत मात्र भूमि नापने की क्रिया, आँखों देखा हाल, रिपोर्ट या रिपोर्ताज भी नहीं है वरन वह गहरी संवेदना या रागात्मक संबंधों की प्रेरणा से लिखा जाता है| उसमें भी राग, प्रेम, मानवता, प्रकृति, संस्कृति, समाज के प्रति सरोकार आदि उतना ही महत्त्व रखते हैं, जितना अन्य साहित्य में, इसलिए वह कथा, उपन्यास, कविता, समीक्षा, पत्र, डायरी आदि विधाओं की शैली में लिखा जा सकता है, बशर्ते कि उसका यथार्थ बराबर बना रहे| यह स्पष्ट है कि जो यात्रा-वृत्तांत परिवेश को या अनुभूतियों को जितनी गहरी संवेदना या रागात्मक संबंधों की प्रेरणा से अभिव्यक्ति देगा वह उतना ही उत्कृष्ट होगा| ऐसी संरचना यायावर अपनी कलात्मक एवं सृजनात्मक संवेदनशीलता के द्वारा ही कर सकता है| विभिन्न यांत्रिक अनुभवों से यात्रा-वृत्तांत के लिए चुने हुए केन्द्रों से सम्बद्ध अनुभवों का चयन, सम्बंधित घटनाओं का अनुक्रम, उत्सुकता बनाए रखने के लिए यात्रा-वृत्तांत की संरचना में घटनाओं को काटना, छांटना, तोड़ना, जोड़ना, मोड़ लाना आदि रचनात्मक क्रियाएं उपयोगी हो सकती हैं| विषय को प्रभावी बनाने के लिए उपयुक्त सामग्रियों का चयन एवं संयोजन कर, उनमें सामाजिक, प्रश्नोत्तरी, खोज-समाधान या कलात्मक सम्बन्ध बनाना, विषय के विकास के अनुरूप वाक्यों में लय स्थापित करना भी यात्रा-वृत्तांत को साहित्यिक बनाता है| इन समस्त क्रियाओं का उद्देश्य यात्रा-वृत्तांत को पठनीय, रोचक, रंजक, स्मरणीय, अनुभव-समृद्धिकारी, अनुभूति-संवाहक जानकारी, ज्ञान तथा विवेक-दृष्टि देने वाला होता है| इस उद्देश्य हेतु साहित्यिक अलंकारों का समुचित उपयोग भी वांछनीय है|

हिंदी प्रदेश में शिक्षा और यातायात के साधनों में वृद्धि के साथ-साथ यात्रा के प्रति लोगों की रुझान बढ़ती गई| हिंदी के साहित्यकारों में कुछ जन्मजात यायावरी प्रवृत्ति के यायावर सामने आए हैं, महापंडित राहुल सांकृत्यायन, रामवृक्ष बेनीपुरी, यशपाल, सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय', भगवतशरण उपाध्याय,

भदंत आनंद कौशल्यायन, रामधारी सिंह 'दिनकर', नागार्जुन, प्रभाकर माचवे, राजबल्लभ ओझा आदि अनेक यात्रा प्रेमी रहे हैं| राहुल सांकृत्यायन कृत 'मेरी तिब्बत यात्रा', 'मेरी लद्दाख यात्रा', 'किन्नर देश में' और 'रूस में पच्चीस मास', रामवृक्ष बेनीपुरी कृत 'पैरों में पंख बांधकर', 'उड़ते चलो उड़ते चलो', यशपाल कृत 'लोहे की दीवार के दोनों ओर', अज्ञेय कृत 'अरे यायावर रहेगा याद', 'एक बूंद सहसा उछली', दिनकर कृत 'देश-विदेश', प्रभाकर माचवे कृत 'गोरी नज़रों में हम', मोहन राकेश कृत 'आखिरी चट्टान तक', निर्मल वर्मा कृत 'चीड़ों पर चांदनी' कृष्णनाथ कृत 'स्पीति में बारिश', 'लद्दाख में राग-विराग' आदि महत्त्वपूर्ण यात्रा-वृत्तांतकार एवं उनकी रचनाएँ हैं|

सन 1936-37 का प्रगतिवादी आंदोलन, साम्यवादी विचारधारा के प्रति बढ़ता आकर्षण, द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति आदि परिस्थितियों ने भारत के यात्रा-वृत्तांत को नई जमीन दी। सांस्कृतिक सम्बन्धों के आदान-प्रदान ने एक-दूसरे देशों को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई| प्रारम्भिक यात्रापरक कृतियों में प्रकृति के संवेदनात्मक चित्र खींचे गए हैं तो बाद में मानव जीवन की विडम्बनाओं एवं विषमताओं को केंद्र में रखा गया है| वास्तव में प्रकृति यात्रा-वृत्तांत की अक्षय सम्पदा है| इसी प्राकृतिक सौंदर्य ने यात्रा-वृत्तांत को वर्णनात्मक बना दिया है| आगे चलकर वर्णनात्मकता के साथ-साथ आधुनिक जीवन की विसंगातियाँ, संत्रास एवं घुटन भरे वातावरण को यायावरों ने प्रस्तुत करने का सार्थक प्रयास किया है|

वस्तुपरकता यात्रा-वृत्तांत की जान है| यात्रा-वृत्तांत में लेखक जो देखता-खोजता है, उसका यथातथ्य वर्णन करता है| यात्रा-वृत्तांत भी यात्रा के बाद स्मृति के आधार पर लिखे जाते हैं, इसलिए यात्री यात्रा के दौरान तथ्यों को डायरी, नोट बुक आदि में दर्ज कर लेता है| संस्मरण में जो आत्मपरकता होती है या जो कल्पना का पुट होता है, यात्रा-वृत्तांत में नहीं होता| इसमें लेखक को अपने स्मृति को वस्तुपरक

बनाए रखना पड़ता है| वस्तुपरक होने के कारण यात्रा-वृत्तांत में कल्पना के लिए कोई जगह नहीं है। कल्पना कई बार यात्रा-वृत्तांत में इस्तेमाल होती है, लेकिन उसकी भूमिका इसमें आटे में नमक की तरह ही है| यात्रा-वृत्तांत में कल्पना यथार्थ को विस्थापित नहीं करती| कुछ लोग यात्रा-वृत्तांत को उसकी तथ्य निर्भरता और वस्तुपरकता के कारण साहित्य नहीं मानते| विख्यात लेखक मेरी किंग्सले ने एक जगह लिखा भी है कि यात्रा आख्यान की पुस्तक से कोई साहित्य की अपेक्षा नहीं करता|

यात्रा-वृत्तांत प्रकृतिपरक विधा है| वैसे तो सभी विधाओं में प्रकृति चित्रण हुआ है, लेकिन यात्रा-वृत्तांत का आधार ही प्रकृति चित्रण है| यात्रा-वृत्तांत में प्रकृति के प्रति अधिक आकर्षण देखने को मिलता है| हिमाच्छादित श्रृंगों, सरिताओं तथा झीलों का वर्णन प्रधानतया किया गया है| प्रकृति के सूक्ष्म रंगों, मेघों द्वारा उत्पन्न मोहक वातावरण, पुष्पों की फैली हुई विस्तृत क्यारियों और उनके मनोमुग्धकारी रंगों का वर्णन बहुत ही मनोरम शैली में मिलता है| वनों की हरीतिमा उनका व्यापार प्रसार, सघन गंभीरता का चित्र लेखकों ने सफलता के साथ चित्रित किया है| विभिन्न ऋतुओं के वर्णनों में लेखकों की वैयक्तिक झलक भी दृष्टिगोचर होती है| उनकी दार्शनिकता, विनोदवृत्ति, कला-प्रेम, संस्कृति आदि के स्पष्ट चित्र हमारे सामने खिंच जाते हैं|

वास्तव में यात्राओं के बीच इस प्राकृतिक दृश्य का बड़ा महत्त्व है| प्रकृति मानव की आदिम सहचरी है| आदिकाल के प्रथम पुरुष ने इस पृथ्वी पर अपने नेत्र खोले तो उसे सर्वप्रथम उसे प्रकृति का सहयोग एवं साहचर्य प्राप्त हुआ| आदिकाल के मानव ने जब चेतना उपलब्ध की तो स्वयं को हिमाच्छादित पर्वत श्रेणियों से परिवृत्त पाया| आधुनिक यात्रा-वृत्तांत के लेखकों को भी पर्वत के प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन करने का अवकाश मिला और वे अपने चारों ओर प्रकृति की माधुरी का दर्शन करते हुए उसका चित्रण करने लगे| कोई भी रचनाकार जिस भू-भाग की यात्रा करता है, सर्वप्रथम उसका स्वरूप, संरचना और सौंदर्य उसकी कृति का मूलाधार बनता है| प्रकृति ने पृथ्वी की रचना करते हुए उसे विविध प्रकार की छवियों में ढ़ाला है कि एक स्थल से दूसरे स्थल का भौगोलिक परिवेश हमेशा भिन्न मिलता है|

प्रारंभिक यात्रा-वृत्तांतों में भौगोलिक स्थितियों का विस्तृत व व्यापक परिचय मिलता है, जबकि बाद की रचनाओं में यह प्रवृत्ति कम होती गई है, फिर भी किसी-न-किसी रूप में यात्रा-वृत्तान्त देश या प्रांत के भौगोलिक परिवेश से सम्बद्ध रहता है| रामदरश मिश्र ने लिखा है- "प्रकृति आदिमकाल से ही मानव के लिए सौंदर्य का अखंड स्रोत और जिज्ञासा का विषय रही है| प्राकृतिक सौंदर्य को देखने की उत्कट इच्छा भी यात्रा के मूलभूत कारणों में से एक रही है| वस्तुतः किसी भी भू-भाग की यात्रा करते हुए यात्री सर्वप्रथम प्रकृति की ओर ही आकर्षित होता है, उसी के साथ आत्मीयता महसूस करता है, क्योंकि एक अपरिचित परिवेश में प्रकृति ही ऐसा तत्त्व है, जो उसे परिचित और आत्मीय लगती है|"[5]

यात्रा-वृत्तांत लेखक द्वारा की गई किसी भू-भाग की यात्रा का स्थूल वर्णन या विवरण मात्र नहीं है, उसमें रचनाकार की संवेदना का वह अंश भी अनिवार्यतः समाविष्ट रहता है, जो साहित्य का प्रमुख तत्त्व है| किसी भू-भाग का वाह्य परिवेश जब यात्री के अनुभव संसार को उद्वेलित करता हुआ, उसके रचनाशील व्यक्तित्व के स्पर्श से पुनः सृजित होता है, तभी वह यात्रा-वृत्तांत का स्वरूप ग्रहण करता है| इसी कारण यात्रा-वृत्तांत में जहाँ किसी प्रदेश विशेष की भौगोलिक संरचना प्राकृतिक परिवेश और सांस्कृतिक आयामों की झलक मिलती है| वहीं उसमें रचनाकार की अपनी अनुभूतियाँ, विचार और जीवन-दर्शन भी समाहित रहते हैं, इसी ओर इशारा करते हुए राहुल सांकृत्यायन ने लिखा है- "यात्रा-वर्णन स्वयं एक उच्च साहित्य का रूप ले सकता है, वह कितने ही लेखकों के वर्णन से समझ में आ सकता है| जो सतत घुमक्कड़ है और नित्य नए-नए देशों में घूमता रहता है, उसके लिए तो उसकी अपनी यात्राएँ ही इतनी सामग्री दे सकती हैं, जिस पर लिखने के लिए सारा जीवन भी पर्याप्त नहीं हो सकता है|"[6]

ह्वेनसांग, हुट्टली, फाहियान, अलबरूनी, इब्नबतूता, मार्कोपोलो, सेल्यूकस, निकेटर आदि ने भी अपने यात्रा-विवरण प्रस्तुत किए हैं| उनके यह विवरण ज्ञान के भंडार तो कहे जा सकते हैं, पर यात्रा-वृत्तांत नहीं, लेकिन ह्वेनसांग और फाहियान के यात्रा विवरण भी इतिहास को जानने के लिए हमारे सामने महत्त्वपूर्ण दस्तावेज हैं| संस्कृत साहित्य में कालिदास और बाणभट्ट के साहित्य में भी

आंशिक रूप से यात्रा वर्णन मिलता है| ऐसे विवरणों में लेखक के व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति बहुत कम हो पाती है| वह एक तटस्थ दृष्टा के रूप में देखता है और लिख देता है| प्रकृतिगत विशेषताएं प्रतिबिंबित हो उठती है, यही कारण है कि आधुनिक यात्रा-वृत्तांत का विकास शुद्ध निबंधों की शैली से माना जाता है|

लेखक अपने यात्रा-वृत्तांत में अमुक स्थान की प्राकृतिक विशिष्ठता, सामाजिक संरचना, समाज, लोगों के रहन-सहन, संस्कृति, स्थानीय भाषा, आगंतुकों के प्रति उनकी सोच व विचारों को स्थान देता है| एक सच्चे यायावर के सम्बन्ध में कहा गया है कि उसकी कोई मंजिल नहीं होती है| वह मन की तरंगों के कथनानुसार आगे बढ़ता जाता है तथा राह की कठिनाइयों में आनन्द की अनुभूति को खोजता है तभी मोहन राकेश यात्रा के सम्बन्ध में कहते हैं कि यात्रा व्यक्ति को तटस्थ नजरिया देती है|

आधुनिक कथेतर गद्य विधाओं में यात्रा-वृत्तांत भी प्राचीन साहित्यिक विधा है| समय के साथ इसके स्वरूप और चरित्र में बदलाव होते रहे हैं| इतिहास, आत्मचरित्र आदि के प्रति अनास्था और उदासीनता के कारण भारत में यात्रा वृत्तांतों की समृद्ध और निरंतर परंपरा नहीं मिलती है| यात्रा-वृत्तांत क्या है, इसे लेकर कई धारणाएं मौजूद हैं| कुछ लोगों के लिए यह आख्यान है, कुछ लोग इसे वृत्तांत कहते हैं, जबकि कुछ अन्य के अनुसार यह भी एक किस्म का संस्मरण है|

हिंदी में यात्रा-वृत्तांत लेखन की जड़ें बहुत मजबूत और गहरी नहीं हैं| हिंदी में इस दिशा में पहल भारतेंदु हरिश्चंद्र ने 1877 में दिल्ली दरबार दर्पण लिखकर की| बाद में बाबू शिपप्रसाद गुप्त, मौलवी महेश प्रसाद, रामनारायण मिश्र और सत्यदेव परिव्राजक ने भी यात्रा-वृत्तांत लिखा| इस दिशा में सर्वाधिक उल्लेखनीय काम राहुल सांस्कृत्यायन ने किया| उन्होंने खूब देशाटन किया और अपने अनुभवों एवं विवरणों को यात्रा-वृत्तांतो में लिखा| 'अज्ञेय' भी घुमक्कड़ थे| 'एक बूंद सहसा

उच्छली' और 'अरे यायावर रहेगा याद' उनके प्रसिद्ध यात्रा-वृत्तांत हैं| एक आधुनिक भारतीय मन की चिंता और आत्मान्वेषण इन रचनाओं की खासियत है| रघुवंश का यात्रा-वृत्तांत 'हरी घाटी' की भी सराहना हुई| आजादी के बाद इस क्षेत्र में उल्लेखनीय काम निर्मल वर्मा ने किया| 'चीड़ों पर चांदनी' और 'धुंध से उठती धुन' उनका प्रसिद्ध यात्रा-वृत्तांत है| 'धुंध से उठती धुन' में ऐसे भारतीय सभ्यता और संस्कृति को आधुनिक निगाह से समझने की कोशिश की गई है| हिमालय भारतीय रचनाकारों को अक्सर अपनी ओर आकृष्ट करता रहा है| हिमालय की धार्मिक और सांस्कृतिक विरासत से रूबरू करवाने वाले कृष्णनाथ ने 'स्फीति में बारिश', 'किन्नर धर्मलोक' और 'लद्दाख में राग-विराग' लिखा|

यात्रा-वृत्तांत में यात्री अपने यात्रा के प्रत्येक स्थल और क्षेत्रों में से उन्हीं क्षेत्रों का संयोजन करता है, जिनको वह सत्य के रूप में ग्रहण करता है| बाहरी जगत की प्रतिक्रिया से उसके हृदय में, जो भावनाएँ उमड़ती है, वह उन्हें अपनी सम्पूर्ण चेतना के साथ अभिव्यक्त करता है| उसके साथ पाठक भी इतना तादात्म्य स्थापित करता है कि वह स्वयं उस आनंद को पाने के लिए उत्सुक होता है| यात्रा-वृत्तांतकार को संवेदनशील होकर भी निरपेक्ष होना चाहिए अन्यथा यात्रा के स्थान पर यात्री के प्रधान हो उठने की संभावनाएँ बढ़ जाती हैं और यात्रा-वृत्तांत आत्मचरित या आत्मसंस्मरण रह जाता है|

यात्रा-वृत्तांत अकाल्पनिक गद्य विधा है| इसमें यायावर देखी हुई परिस्थितियों के यथार्थ अंकन का प्रयास करता है| हालाँकि कलात्मक अभिव्यक्ति होने के कारण कल्पना से नकारा नहीं जा सकता परन्तु यात्रा-वृत्तांत में चित्रित प्रत्येक दशा यायावर की निजी अनुभूति होती| कल्पना का संयोग उसे रोचक बना देता है| लेखक की भावनाएँ उस परिवेश और वहाँ के मनुष्य की जीवनगत संवेदना को आत्मसात करती है, जैसे वह यात्रा-वृत्तांत वहाँ का मानवीय इतिहास हो, जिसमें घटनाओं के साथ-साथ व्याक्तिचेतना, संस्कार, सांस्कृतिक जीवन, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक परिस्थितियाँ, भौगोलिक स्थितियाँ, विचार, धारणाएँ समाहित होती हैं| इस प्रकार यात्रा-वृत्तांत मनुष्य के द्वारा की गई सैर की

निजगत अनुभूतियों से आप्लावित ऐसी अभिव्यक्ति है, जो पाठक को उस परिवेश और समय के साथ यात्रा कराता है|

1.2 स्वरूप, परिभाषा

यात्रा संस्कृत भाषा का शब्द है, जिसकी उत्पत्ति संस्कृत की या धातु से हुई है, जिसका अर्थ है जाना| या धातु के साथ ष्ट्रन प्रत्यय लगाने से यात्रा शब्द बना है| गमन, सफर, प्रस्थान, जाना आदि अर्थों में इस शब्द का प्रयोग होता है| इस प्रकार यात्रा शब्द का अर्थ है एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाना| विभिन्न भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त यात्रा सम्बन्धी शब्दावली निम्नांकित हैं- संस्कृत- यात्रा, हिंदी- यात्रा, बांग्ला- यात्रा, सफर, गमन, मराठी- प्रवास, गुजराती- यात्रा, पंजाबी- पेंडा, उर्दू- सफ़र, तमिल- प्रयाण और मलयालम- यात्रा|

यात्रा शब्द सामान्यत: प्रवास के अर्थ में प्रयुक्त होता है| प्रवास अर्थात अपने घर से दूर बसना या वास करना| यात्रा का उद्देश्य भिन्न-भिन्न हो सकता है जैसे- व्यापार, ज्ञान, मनोरंजन, विलास आदि| यात्रा के समय किए गए अनुभव, संवेदनात्मक अनुभूति, समाज के साथ निर्विकार जुड़ाव का भाव, समाजगत चेतना का यथार्थ बोध तथा अन्य संवेदनात्मक तत्त्व यायावर के व्यक्तित्व से जुड़कर लेखनी के सहारे जब कलात्मक रूप धारण करते हैं तो यात्रा-वृत्तांत का निर्माण होता है|

चरैवेति-चरैवेति अर्थात चलते रहो-चलते रहो| वैदिक युग का यह सूत्र वाक्य गुरुकुलों में ऋषियों द्वारा अपने शिष्यों को ज्ञान देने के लिए चलते रहने का सन्देश देने के लिए किया था| विद्यार्थी दुनिया भर में सैर करके ज्ञान प्राप्त करते थे| यात्रा शब्द जीवन जगत के अनेक अर्थों को अपने में समेटे हुए है| जीवन एक यात्रा है| धार्मिक अर्थों में मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु पर्यंत यात्रा करता रहता है| संसार

मिथ्या ज्ञान है, इसको पार करने के लिये यात्रा करनी पड़ती है| परमात्मा तक पहुँचने की क्रिया इसी यात्रा द्वारा निष्पन्न होती है| दार्शनिक दृष्टि से यात्रा का आशय है कि व्यक्ति जीवन भर यात्रा करता है और मरने के बाद कहते हैं कि 'इहलोक की यात्रा' कर गया|

वृत्त का शाब्दिक अर्थ है- जो घटित हो चुका हो| जबकि वृत्तांत का शाब्दिक अर्थ है- किसी घटना, विषय, स्थिति आदि की जानकारी कराने के उद्देश्य से उससे सम्बद्ध कही या बतलाने वाली बातें या किया जाने वाला वर्णन| वृत्तांत का दूसरा अर्थ है- एक वृत्त का अंत| यात्रा में एक परिवृत्त की दुनिया गोल है अर्थात हम घूमकर एक वृत्त पूरा करते हैं| इस प्रकार दुनिया का चक्कर (वृत्त) पूरा करना- यात्रावृत्त है| वर्तमान में हिंदी में प्रचलित शब्द पर्यटन भी इसी का द्योतक है। पर्यटन विस्तृत भू-भाग में किया जाने वाला भ्रमण| पर्- परिधि, अटन, घूमना, फिरना अर्थात एक परिधि विशेष में घूमना-फिरना| डॉ. हरिमोहन ने लिखा है- "इस विचार से 'वृत्त' के स्थान पर 'वृत्तांत' शब्द का प्रयोग करना ज्यादा उचित है| यों भी 'वृत्तांत' का आशय, वृत्त का अंत| यात्रा के परिवृत्त का अंत|"[7]

आदि मानव की पहली अभिव्यक्ति अपनी यात्रा के अनुभव सुनाना ही रही होगी| वह अकेला या समूह में शिकार करने निकलता होगा और अपने द्वारा किए गए शिकार के साथ जब सकुशल लौटता होगा तो इंतजार कर रहे परिवार को उल्लासपूर्वक अपनी शिकार यात्रा को सुनाता होगा| इस साहसिकता भरे अभियान का बखान परिवार और पड़ोस में रहने वाले वाले लोगों के मन में वैसा ही भाव, रोमांच और कुतूहल पैदा करता होगा जैसा हम आज यात्रा-वृत्तांत पढ़कर करते हैं|

मनुष्य की प्रकृति नित्य नवीन स्थान देखने और अपने सामाजिक संपर्क को बढ़ाने की रही है| अपनी भ्रमणशील प्रवृत्ति के कारण ही वास्कोडिगामा और कोलंबस ने भारत और अमेरिका जैसे देशों की खोज कर दुनिया को परिचित कराया| इसी प्रवृत्ति के वशीभूत होकर हमेशा से देशी-विदेशी यात्रियों ने अपने संस्मरणों से यात्रा-वृत्तांत को समृद्ध किया| डॉ. रेखा प्रवीण उप्रेती ने लिखा है- "मनुष्य स्वभाव से ही जिज्ञासु, सौंदर्य-प्रेमी और विकासशील प्रवृत्तियों से युक्त रहा

है| उसमें सृष्टि के अनंत रहस्यों को जानने की उत्सुकता और प्रकृति के विविधतापूर्ण सौंदर्य को देखने का आकर्षण सदा से रहा है| साथ ही भौतिक तथा आत्मिक उन्नति के लिए सदा प्रगतिशील रहना उसकी मौलिक प्रवृत्ति है| इसी प्रवृत्ति ने उसे भ्रमण के लिए प्रेरित किया और 'चरवैति-चरवैति' अर्थात चलते रहो-चलते रहो, उसके विकास का मूल मंत्र बन गया|"[8]

भ्रमण की प्रवृति ने ही सामाजिक और आत्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त किया| यात्रियों ने ही अनेक अज्ञात स्थलों और द्वीपों का अन्वेषण किया| संसार के अलग-अलग भागों में विकसित और एक-दूसरे से असम्पृक्त सभ्यताओं के बीच संपर्क स्थापित किया| दुर्गम स्थलों को सुगम बनाया| मार्गों का निर्माण ही नहीं किया बल्कि यातायात के साधनों का विकास भी किया| पहिये के अविष्कार से लेकर अत्याधुनिक विमानों के पीछे भी यात्रा की उत्कट इच्छा ही कार्यरत रही है|

मानव चेतना के विकास में यात्रा की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है| यात्रा व्यक्ति के अनुभव क्षेत्र को समृद्ध बनाती है| यात्रा करते समय व्यक्ति जीवन-जगत के विविध व्यापारों का प्रत्यक्ष दर्शन करता है| अलग-अलग स्वभाव के लोगों से मिलता है| प्रकृति और जन-जीवन के अनेक परिदृश्य उसकी संवेदना को जगाते हैं| अनुभव संचय के साथ-साथ यात्रा आँखों देखी ज्ञान प्राप्ति का भी बेहतर माध्यम है| दुनिया के महान चिंतक घुमक्कड़ रहे है| उन्होंने कूपमंडूकता को जड़ता का प्रतीक माना और भ्रमण को विकास और चैतन्य का| डॉ. हरिमोहन ने लिखा है- "जो लोग घूम-फिरकर दूसरे देशों की वेशभूषा, रहन-सहन और बोली का अध्ययन नहीं करते, वे बिना सींग के बैल के समान हैं| जब आदमी समुद्र से घिरी पृथ्वी का भ्रमण करता है तब वह सज्जनों के आचरण, दुर्जनों की चेष्टा, विविध प्रकार के लोगों की उत्कंठा, विदग्ध जनों का परिहास, गंभीर और गूढ़ शास्त्रों के तत्त्व से परिचित होता है|"[9]

यात्रा मनुष्य की अपरिहार्य आवश्यकता है| उसके जीवन का एक महत्त्वपूर्ण अंग है और उसके सर्वांगीण विकास का माध्यम है| मनुष्य को एक ओर यात्रा वाह्य जगत के सत्यों से परिचय कराती है तो दूसरी ओर स्वयं को भी जानने-समझने का अवसर प्रदान करती है| उसके अंतर्जगत को समृद्ध करती है| उसकी भावनाओं, विचारों और कल्पनाओं को जागृत करती है| यायावर प्रकृति के निकट यात्रा करता

हुआ आगे बढ़ता है| प्रकृति उसे मोहती है, वह उसमें रम जाता है| वह यायावरी में जीवन यात्रा के यथार्थ समस्याओं से जूझता है और उन पर विचार करता है| डॉ. रेखा प्रवीण उप्रेती ने लिखा है- मनुष्य के बाह्य और आंतरिक विकास के साथ यात्रा का गहरा और अटूट संबंध रहा है| इत्यादि मानव के आधुनिक मानव बनने की प्रक्रिया में मनुष्य की यायावर वृत्ति ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है| भोजन और जीविका की खोज जैसी स्थूल भौतिक आवश्यकताओं से लेकर सौंदर्य तथा ज्ञान-प्राप्ति जैसे व्यापक उद्देश्यों तक यात्रा मानव की सहचरी रही है|”[10]

यात्रा के लिए भी हिंदी में घुमक्कड़, यायावर आदि शब्दों का प्रयोग होता है| घुमक्कड़ शब्द का अर्थ है- बहुत घूमने वाला| यायावर वह है जो एक जगह स्थाई नहीं रहता हो| हमारे यहाँ यात्रा की एक लम्बी परम्परा रही है| प्रारम्भ में लोग युद्ध, तीर्थाटन आदि के लिए यात्रा किया करते थे| विभिन्न शब्दकोशों में भिन्न-भिन्न अर्थों में यात्रा शब्द को परिभाषित किया गया है| वृहत हिंदी कोश में इसका अर्थ- जाने की क्रिया, तीर्थ-यात्रा, यात्रियों का समूह, मेला, काल-यापन, यान, प्रस्थान, चढ़ाई, युद्ध-यात्रा, उपाय-व्यवहार, जीवन-निर्वाह, उत्सव, नृत्य-गान युक्त रासलीला के ढंग का बंगाल में प्रचलित एक अभिनय|

यात्रा शब्द की पारलौकिक व्याख्या भी है| ‘इहलोक की यात्रा’, ‘जीवन यात्रा’ आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है| मनुष्य का जीवन भी एक यात्रा है, जन्म से लेकर मृत्यु तक की यात्रा| उसमें बचपन, यौवन, बुढ़ापा जैसी अनेक अवस्थाएँ आती रहती हैं| जब किसी व्यक्ति की मृत्यु होती है तब वह जीवन की महायात्रा से चला गया या उसकी इहलोक की यात्रा समाप्त हुई, ऐसा कहा जाता है|

यात्रा का मूल स्रोत यद्यपि वैदिक तथा संस्कृत ग्रन्थ हैं| ऋग्वेद में वशिष्ठ और वरुण द्वारा की गई यात्रा की कठिनाइयों पर प्रकाश डाला गया है| ‘महाभारत’

तथा ‘रामायण’ में भी यात्रा का सुन्दर वर्णन है| 'रामायण' में विश्वामित्र के साथ श्रीराम और लक्ष्मण की मिथिलापुरी यात्रा, श्रीराम जी वनयात्रा, पंचवटी यात्रा आदि यात्राओं का वर्णन है| इसी प्रकार ‘महाभारत’ में अनेक तीर्थ स्थानों की यात्रा के साथ पांडवों की पांचालदेश यात्रा, श्रीकृष्ण की भीम और अर्जुन के साथ मगध देश की यात्रा आदि देखने को मिलता है| पुराण एवं संहिताओं में भी यात्रा का सुन्दर वर्णन प्रस्तुत किया गया है| इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि विश्व साहित्य में यात्रा वर्णन की जो परंपरा है वह अत्यंत प्राचीन है, लेकिन इन पौराणिक ग्रंथो में जो यात्रा का वर्णन है, वह केवल प्रसंगवश ही आते हैं| इन्हें यात्रा-वृत्तांत की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता, लेकिन इन प्रारम्भिक यात्रा-वर्णनों ने हिंदी यात्रा-वृत्तांत को पृष्ठभूमि प्रदान किया, फिर भी हिंदी में यह 19 वीं शताब्दी की ही देन है| इसका प्रारम्भिक स्वरूप हस्तलिखित रूप में है| धीरे-धीरे इस विधा ने उत्तरोत्तर प्रगति की है, साथ ही सृजनात्मक विधा के रूप में अपना स्थान भी निर्धारित किया है|

यात्रा मानव के लिए एक महत्त्वपूर्ण कदम है| किसी भी व्यक्ति का बाहरी दुनिया से संपर्क कट जाने के बाद उसके समुचित व्यक्तित्व का विकास नहीं हो पाता है| यायावर दूसरी जगहों की भाषा,संस्कृति,रीति-रिवाज एवं तमाम सामाजिक गतिविधिओं की जानकारी अर्जित करता है और इनसे पाठकों को भी लाभान्वित कराता है| यात्रा के द्वारा हम दूसरे जाति, धर्म, संप्रदाय एवं देश के सम्पर्क में आते हैं, जिससे अनेकता में एकता, निकटता, सद्भाव और सामंजस्य आदि में वृद्धि होती है| यात्रियों के मन में प्राकृतिक सौंदर्य के प्रति उत्कट इच्छा होती है| विविध दृश्यों और प्राकृतिक सौंदर्य तथा विविध संस्कृतियों को देखने-परखने से मनुष्य की संवेदना-शक्ति में वृद्धि होती है| यात्रा-वृत्तांत के व्यापक फलक को दिखाते हुए डॉ. रामचंद्र तिवारी ने लिखा है- “यात्रा-वृत्तांतों में देश-विदेश के प्राकृतिक दृश्यों की रमणीयता, नर-नारियों के विविध जीवन सन्दर्भ, प्राचीन एवं नवीन सौंदर्य चेतना

की प्रतीक कलाकृतियों की भव्यता तथा मानवीय सभ्यता के विकास के द्योतक अनेक वस्तुचित्र यायावर लेखक के मानस में रूपायित होकर वैयक्तिक रागात्मक ऊष्मा से दीप्त हो जाते हैं| लेखक अपनी बिंबविधायिनी कल्पना शक्ति से उन्हें मूर्त करके पाठकों की जिज्ञासा वृत्ति को तुष्ट कर देता है|"[11]

मनुष्य का चाहे बचपना हो अथवा युवावस्था उसकी प्रवृत्ति सदैव से ही घुमक्कड़ी रही है| वह अपने बाल्यकाल से होकर प्रौढ़ावस्था तक कहीं-न-कहीं भ्रमण करने की चेष्टा किया करता है, इस भ्रमण में जो भी पात्र, दृश्य और विचार संपर्क में आते हैं, वह उसके मानस पटल पर अंकित हो जाते हैं| जब वह अपने मानस पटल पर अंकित विचारों को लिपिबद्ध करता है तब यात्रा-वृत्तांत का प्रस्फुटन होता है| रचनाकार जब यात्रा-वृत्तांत का सृजन करता है तब उसके मूल में उसका प्रकृति-प्रेम और उसके दार्शनिक विचार महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं| यात्रा-वृत्तांत में यायावर प्रकृति और जीवन की तमाम स्थितियों को बहुत ही गहराई से देखता है, जिसकी ओर इशारा करते हुए डॉ. रघुवंश ने लिखा है- "यात्रा का बहुत बड़ा आकर्षण प्रकृति की पुकार में है| यायावर वही है जो चलता जाय कहीं रूके नहीं और वह जो दर्शनीय है, ग्रहणीय है, रमणीय है अथवा संवेदनीय है, उसका संग्रह करता चले... या यों कहें कि जो मुक्त भाव से अनुभूतियाँ संजोता हुआ देश-काल में फैले, अनंत जीवन में साँसे लेता हुआ यात्रा नहीं करता, वह यात्रा का साहित्य नहीं दे सकता, विवरण प्रस्तुत कर सकता है|"[12]

मनुष्य कार्य की तलाश में प्राकृतिक आपदाओं से बचाव के लिए, व्यापारियों, सैनिकों, पुरोहितों और तीर्थयात्रियों के रूप में या फिर साहस की भावना से प्रेरित होकर यात्राएँ करता रहा है| घुमक्कड़ ने ही दुनिया का विकास किया है| आदिम घुमक्कड़ों में से आर्यों, शकों, हूणों ने अपने अमानवीय कृत्यों द्वारा

मानवता को प्रशस्त किया, किन्तु मंगोल घुमक्कड़ों ने पश्चिम में बारूद, तोप, कागज, छापाखाना आदि चीजों का अविष्कार किया| भारत में कुपमण्डूकताओं का होना भी यायावरों की कमी की ओर इशारा करता है| घुमक्कड़ी धर्म ने ही यहूदियों को व्यापार-कुशल, उद्योग-निष्णात और विज्ञान, दर्शन, साहित्य, संगीत सभी क्षेत्रों में आगे बढ़ने का मौका दिया| घुमक्कड़ी को महत्त्वपूर्ण स्थान देते हुए राहुल सांकृत्यायन ने इसकी तुलना रस से की है| उन्होंने लिखा है- "घुमक्कड़ी एक रस है जो काव्य के रस से किसी तरह भी कम नहीं है| कठिन मार्गों से तय करने के बाद नए स्थानों में पहुँचने पर ह्रदय में जो भावोद्रेक पैदा होता है, वह एक अनुपम चीज है| उसे कविता के रस से हम तुलना कर सकते हैं और यदि कोई ब्रह्म पर विश्वास रखता हो तो उसे ब्रह्म-रस समझेगा- "रसो वैसः रसंहि लब्ध्ता आनंदी भवति|"[13]

यात्रा करना मनुष्य की नैसर्गिक प्रवृत्ति है| हम अगर मानव इतिहास पर नज़र डालें तो पाएँगे कि मनुष्य के विकास की गाथा में यायावरी का महत्त्वपूर्ण योगदान है| अपने जीवन काल में हर आदमी कभी-न-कभी कोई-न-कोई यात्रा अवश्य करता है, लेकिन सृजनात्मक प्रतिभा के धनी अपने यात्रा अनुभवों को पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत कर यात्रा-वृत्तांत की रचना करने में सक्षम हो पाते हैं| यात्रा-वृत्तांत का उद्देश्य लेखक के यात्रा अनुभवों को पाठकों के साथ बाँटना और पाठकों को भी उन स्थानों की यात्रा के लिए प्रेरित करना है| इन स्थानों की प्राकृतिक विशिष्टता, सामाजिक संरचना, समाज के विविध वर्गों के सह-संबंध, वहाँ की भाषा, संस्कृति और सोच की जानकारी भी इससे प्राप्त होती है|

यात्रा मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति है| अज्ञात के प्रति मनुष्य के मन में स्वाभाविक जिज्ञासा है, जो उसे नए और दूरस्थ स्थानों की यात्रा के लिए प्रेरित करती है| मनुष्य यात्राएँ करता है और यात्रा के अपने अनुभवों को लिपिबद्ध भी करता है, जो यात्रा-वृत्तांत कहा जाता है| लेखक अपने विश्वास और धारणाओं के साथ यात्रा पर निकलता है और नई जगहों और लोगों के बीच जाता है| इस तरह

यात्रा धारणाओं और विश्वासों में उथल-पुथल और अंतर्क्रिया का कारण बनती है| यात्री इस उथल-पुथल और अंतर्क्रिया की पहचान कर दर्ज करता है|

यात्रा-वृत्तांत का रूपबंध निबंध के रूप बंध जैसा होता है, लेकिन कथात्मक गद्य विधाओं के रूप बंध के कुछ तत्त्व भी इसमें इस्तेमाल किए जाते हैं| यात्रा-वृत्तांत का रूपबंध वस्तुपरक और तथ्यात्मक होता है और कभी-कभी इसमें विवरण आत्मपरक भी होते हैं| यात्रा के सुख-दुख, उसकी विश्वसनीयता के उपकरण और सादा बयानी उसका हुनर है| यात्रा-वृत्तांत के रूपबंध में कथात्मक गद्य विधाओं की नाटकीयता, कुतूहल आदि तत्त्व भी प्रयुक्त होते हैं, लेकिन यह आवश्यक है कि इनके इस्तेमाल से यथार्थ में विकृति नहीं आए| पहले कथात्मक विधाओं वाले रूपबंध में भी यात्रा-वृत्तांत लिखे गए हैं, लेकिन इनको बाद में वृत्तांत की जगह कथात्मक आख्यान ही माना गया है| यात्रा-वृत्तांत एकाधिक शैलियों और रूपों में लिखे गए हैं| कुछ यात्रा-वृत्तांत ऐसे हैं, जिनको यात्रोपयोगी साहित्य की श्रेणी में रखा जा सकता है| इनमें स्थानों और देशों के संबंध विस्तृत और उपयोगी जानकारियाँ हैं|

आदिकाल में भी यात्रा का महत्त्व था| मानव देश-विदेश घुमा करता था| नौका यात्रा की तो एक होड़ सी लग गई थी| नौका से दूसरे देशों को ढूँढने और भ्रमण करने का प्रचलन था| मानव इस यात्रा में घूम-घूम कर अपने अनुभव को बताया करता था| दूसरे देशों की संस्कृति से परिचित होता था और शिक्षा व धर्म का प्रचार करता था| विदेशी यात्रियों अलबरूनी, मार्कोपोलो, फाहियान, ह्वेनसांग, इब्नबतूता, निकेटर, सेल्यूकस आदि ने भी घूम-घूम कर अपने अनुभव साझा किए| उनलोगों ने भी यात्रा विवरण प्रस्तुत किए हैं, लेकिन उनके ये यात्रा विवरण यात्रा-वृत्तांत नहीं कहे जा सकते| संस्कृत साहित्य में कालीदास और बाणभट्ट के साहित्य में भी आंशिक रूप में यात्रा विवरण मिलते हैं| ऐसे विवरणों में लेखक के व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति बहुत कम हो पाती है| वह एक तटस्थ दृष्टा के रूप में देखता और लिखता है|

आज जातीयता के उच्च सोपान पर पहुँचा ये मानव अपनी आदिम अवस्था में कैसा रहा होगा इसकी कल्पना ही की जा सकती है| शायद उस समय उसके पास रहने को घर भी नहीं होगा? वह इधर-उधर भटकता फिरता होगा? आस पास के पेड़ पौधों और कीट पतंगों को खाकर अपनी उदर पूर्ति करता होगा? पर प्राकृतिक वातावरण और जलवायु ने ऐसी स्थिति पैदा कर दी होगी कि वह आने वाले संकट का सामना करने के लिए उपाय सोचने लगा होगा? समय ने उसे चलना सिखाया और वह एक स्थान दूसरे स्थान की ओर जाने लगा| स्थान परिवर्तन के दौरान उसका जीवन जगत के अनेक अनुभवों और वातावरणीय विविधताओं से पाला पड़ा होगा| इस वैविध्य ने ही उसे आगे बढ़ने की प्रेरणा दी होगी| अब उसके सामने अनंत आकाश पड़ा था और घूमने के लिए सारी दुनिया| मानव का ये तब से चला सिलसिला आज भी अनवरत जारी है|

सभ्यता विकासक्रम के प्रथम सोपान में आदिम और जंगली मनुष्य वनों में घूमता होगा| भोजन की तलाश में एक स्थान से दूसरे स्थान जाता होगा| आदिम मनुष्य परम घुमक्कड़ था| खेती, बागवानी तथा घर द्वार से मुक्त वह आकाश के पक्षियों की भांति पृथ्वी पर सदा विचरण करता था| सर्दी में यदि इस जगह था तो गर्मी में दूसरी जगह| सामाजिक जीवन में प्रवेश हुआ और वह नियत स्थान पर घर बनाकर रहने लगा| शायद सुरक्षा की विचार-भावना और एक ही जगह भोजन की उपलब्धता ने ऐसी प्रेरणा दी होगी| सामाजिक जीवन ने उसे बहुत सी सुविधाएँ और सुरक्षा प्रदान की|

जब लोगों में शिक्षा ग्रहण करने की प्रवृति जगी| लोग एक-दूसरे से मिलकर अपने अनुभव बाँटने लगे| उस समय आज की भांति शायद अत्याधुनिक साधन नही थे परन्तु सभ्यता के इस युग में भी लोग प्राय: यात्राएँ किया करते थे| जल और स्थल दोनों प्रकार की यात्राएँ होती थी| लोगों के पास जहाज थे| वे सभ्य शिक्षित, उदार, साहसी, व्यापार कुशल, कला निपुण थे| हमारे साहित्य के ग्रन्थ इस काल की यात्राओं से भरे पड़े हैं| वैदिक सूक्तो में अनेक देवताओं की यात्राओं का उल्लेख मिलता है|

मनुष्य का इन यात्राओं के पीछे का प्रयोजन मात्र आत्मिक शांति ही नहीं बल्कि भौतिक क्रियाएँ भी रही हैं| समाज निर्माण के साथ ही व्यक्ति को अपनी

आवश्कताओं की पूर्ति हेतु अन्य मनुष्यों से संपर्क साधना पड़ा| भय ने मनुष्य को प्रकृति पूजक भी बना दिया| वह किसी व्यक्ति या स्थान विशेष के प्रति कृतज्ञ होता गया और मन में श्रद्धा-भक्ति का भाव उमड़ पड़ा| इस प्रकार किसी तीर्थ या देवस्थान की यात्रा का चलन सामने आया| लोग झुण्डों में किसी उत्सव की भांति यात्राएँ किया करते थे| उनके द्वारा ये यात्राएँ अपने आराध्य के प्रति भक्ति भाव की अभिव्यक्ति थी| तीर्थाटन को पाप शमन का साधन माना जाने लगा और यात्राओं का सिलसिला चल पड़ा|

मनुष्य की व्यापारिक प्रवृत्ति ने भी यात्राएँ करने के लिये बाध्य किया| वह छोटी से छोटी चीज से लेकर बड़ी से बड़ी चीजों का आदान-प्रदान करने के लिए स्वयं द्वारा निर्मित चीजों के वितरण, सामान खरीदने तथा अन्य विनिमय का कार्य करने के लिये इधर-उधर भागने लगा| एक दूसरे से बढ़ते संपर्क ने मनुष्य के व्यक्तिगत संबंधों को विस्तार प्रदान किया| दूर-दूर वैवाहिक संबंध स्थापित किए जाने लगे|

प्राचीन काल में आज की भांति गली कूंचे में शिक्षा संस्थान उपलब्ध नहीं थे और न ही आज की तरह शिक्षा पद्धति थी| मीलों दूर कहीं-कहीं गुरुकुल हुआ करते थे| विद्यार्थी ज्ञान प्राप्ति के लिए दुनिया का भ्रमण करता था| शिक्षक भी ज्ञान प्राप्ति और अनुभव के लिये लम्बी यात्राएँ किया करते थे| शंकराचार्य जैसे दार्शनिक द्वारा देश के चारों कोनों की यात्राएँ की गई और चार ज्ञान केंद्र स्थापित किये गए|

इस प्रकार प्राणी जगत पृथ्वी की उत्पत्ति से लेकर आज तक चरेवैति-चरेवैति का पालन करता आ रहा है| पुरातत्व खोजों में मिले गिरिकंदराओं के कोटरों में मनुष्य वास के प्रमाण, समुद्र तथा पृथ्वी में समाहित सभ्यताओं की निशानियाँ एवं काल की ये अंतहीन चाल मनुष्य की घुमक्कड़ी के प्रथम बीज बिंदू से लेकर आज तक की कहानी सप्रमाण कहती है| यात्रा मार्ग में मनुष्य को प्रकृति के प्रांगण में फैले अंतहीन सौंदर्य ने अभिभूत किया होगा| धीरे-धीरे प्रकृति के इन आकर्षक दृश्यों, कल-कल करती नदियों, विराट पर्वत शिखर, विहँसते झरने, विशाल जंगल, उमड़ता सागर, गिरिकंदराएँ व एकांत में अगणित तारा पंक्तियों से चमकता नील गगन आदि को आत्मसात करके मनुष्य उनके साथ एकाकार हुआ| इन दृश्यों से हृदयगत भावनाओं का उमड़ता ज्वार मनुष्य को और

भी निकट ले गया| प्रकृति से उनकी दैनिक जीवन की आवश्कताओं की पूर्ति तो होती ही थी, साथ ही साथ प्राकृतिक दृश्यों के आत्मसात एवं विशिष्ट अनुभूति की यह मानव भावना और आकर्षण ही वस्तुतः यात्रा-वृत्तांत की मूल भित्ति है| अतः कहा जा सकता है कि मनुष्य की स्वभावगत विशेषता चंचलता, आत्मतुष्टि की खोज तथा भौतिक आवश्कताओं ने उसमें सौंदर्य बोध की दृष्टि विकसित की और वह अपनी अभिव्यक्ति के लिये यात्रा-वृत्तांत को कलात्मक रूप देने लगा|

चलना मनुष्य का धर्म है जिसने इसको छोड़ा वह मनुष्य होने का अधिकारी नहीं है| मनुष्य स्वभावतः ही संचरणशील है| स्थान की आबद्धता उब पैदा करती है| व्यक्ति जीवन में सुख और आनंद चाहता है| व्यक्ति के समस्त कार्यकलाप इसी आनंद को पाने के लिये प्रायोजित है| समाज और परिवार की निर्मिति, नियम और कायदे, व्यक्तित्व पर नैतिक बंधन आदि समस्त प्रायोजित या स्वाभाविक कार्यवृत्तियाँ व्यक्ति को जीवन में सुख देने के लिये हैं| इन सुखों की कामना और प्राप्त करने के भौतिक प्रयास व्यक्ति मन को थका देते हैं| इस थके हुए मन की विश्रांति किसी ऐसी जगह है, जहाँ समस्त दायित्वों से मुक्ति मिले और मनुष्य आत्म की पड़ताल में व्यस्त हो जाए| अपने जीवन के निकट वातावरण से हटकर निजी परिस्थितियों के दबाव से मुक्त होकर मन में कोई कुंठा नहीं रहती| वह स्वयं को स्वतंत्र महसूस करता है| यात्री बनकर जब व्यक्ति निकलता है तो उसे प्राकृतिक सौंदर्य, नया समाज, नई जगह का इतिहास और भूगोल, विभिन्न व्यक्तियों के भिन्न-भिन्न आचरण, रहन-सहन, शिक्षा, व्यवस्थाएँ आदि आकर्षित करते हैं| वहाँ के जीवन संग व्यतीत समय अनुभव प्रदान करता है| वह मात्र उपरी चीजों को देखता भर नहीं बल्कि उनके विश्लेषण की प्रक्रिया भी चलती रहती है| वह उस परिवेश से एकतान होकर इतिहास के झरोखों से देखता हुआ उनका सांस्कृतिक और मनोवेज्ञानिक विश्लेषण भी करता है| वह उन सबको एक क्षण अनुभव करके जी लेना चाहता है| एक साहित्यिक यात्री चीजों को देख और विश्लेषण करके नहीं छोड़ देता अपितु तथ्य और सौंदर्य के सहारे उसके शब्द वहाँ का जीवन राग अलापने लगते हैं| उन निजी अनुभूतियों को लेखक ऐसी कलात्मक अभिव्यक्ति प्रदान करता है कि पाठक मानसिक धरातल पर अपना अस्तित्व विस्मृत कर देता है और वहाँ की सैर करने लगता है|

किसी भी विधा की बनावट के मूल में कोई न कोई ऐसी चीज होती है जो उसे अन्य विधाओं से अलगाती है और वो है मूलभूत तत्त्व| उन तत्त्वों के आधार पर निर्णय किया जाता है कि वो साहित्यिक है या नहीं| यात्रा-वृत्तांत भी एक साहित्यिक विधा है| यात्रा-वृत्तांत में हम संख्या गिनकर तत्त्व निर्धारित नहीं कर सकते, क्योंकि उसका ढांचा जीवन की भांति अत्यंत विस्तृत है| हम नहीं कह सकते कि वहाँ कल्पना, या तथ्य, या वैयक्तिकता, या चित्रात्मकता से काम चल जाएगा| यायावर के सम्पूर्ण जीवन के अनुभव से लेकर समसामयिक घटनाओं की सृष्टि उसमें समाहित होती है| गोविन्द मिश्र ने यात्रा-वृत्तांत को अन्य साहित्यिक विधाओं से श्रेष्ठ माना है, क्योंकि यात्रा-वृत्तांत में अपनी बात कहने के लिए लेखक स्वतंत्र होता है| उन्होंने लिखा है- “यात्राकथा लिखते समय एक लाभ मेरा निजी रहा है| अक्सर यहाँ वह कुछ कह चुका हूँ, जो कहानी उपन्यास की विधागत सीमाओं में उलझते हुए फिसल-फिसल गया है|”[14]

स्थानीयता वह तत्त्व है जिसके चारों ओर सम्पूर्ण यात्रा-वृत्तांत घूमता है| वर्णित स्थान का चयन लेखक की दृष्टि और पसंद पर निर्भर करता है| यात्रा-वृत्तांत में यात्रा किए गए स्थान की वस्तुस्थिति का चित्रण आवश्यक है अन्यथा बिना उसके अन्य स्थितियों का चित्रण असंभव हैं| तथ्य इतिहास या भूगोल का विषय है, परन्तु यात्रा-वृत्तांत की प्रमाणिकता उसकी तथ्यात्मकता में ही निहित है| लेखक द्वारा दिए गए तथ्य कोई आँकड़े या घटना भर नहीं होते बल्कि उनको अन्य स्थितियों से इस प्रकार संबद्ध किया जाता है कि वे बुद्धि पर बोझ न रहकर सहज ही कथ्य के भाग बन जाते हैं|

कल्पना के बिना साहित्य नहीं लिखा जा सकता| आत्मीयता ही ऐसा तत्त्व है, जो पाठक को रचना से जोड़े रखता है | यात्रा में मिला प्रत्येक व्यक्ति महत्त्वपूर्ण होता है, यात्री का लगाव उनसे मात्र औपचारिक ही नहीं होता अपितु संवेदनात्मक और आत्मीय होता है| यात्रा-वृत्तांत में उस आत्मीयता पूर्ण व्यवहार का वर्णन ही रचना को आत्मीय बना देता है|

यात्रा में पड़ने वाले कुछ क्षण के लिए मार्ग, जंगल, पर्वत, व्यक्ति और सामाजिक जीवन-यात्री इनमें डूबता उतरता चलता जाता है| इन सब को वह अपने नजरिए से देखता है| यात्रा-वृत्तांत में वर्णन नितांत व्यक्तिगत दृष्टि से होता है| यात्रा

के समय उसका व्यक्तित्व और भी हावी हो जाता है, क्योंकि व्यक्ति को अपनी अभिरुचि, खानपान, वेशभूषा, पारिवारिक सुख-सुविधा आदि का जितना तीव्र बोध प्रवास के क्षणों में होता है उतना परिजनों और आत्मीय बंधुओं के साथ रहते नहीं होता|

वर्णन की रोचकता यात्रा-वृत्तांत का मूल तत्त्व है| पढ़ते समय जो चीज मन में रोमांच पैदा कर दे तथा पाठक की जिज्ञासा बढ़ा दे| यात्री का उद्देश्य समय निकालने के लिये घूमना–फिरना नहीं होता| वह सैर किए गए क्षणों को अनुभव करता हैं, उनसे आत्मीयता स्थापित करता है| यायावर का जुड़ाव इस कदर गहरा होता है कि वहाँ का प्राकृतिक सौन्दर्य, जनजीवन, समस्याएँ आदि से वह संवेदना के गहरे स्तर पर तादात्म्य स्थापित करता है| संवेदना के गहरे स्तर पर जुड़कर सौन्दर्य दृष्टि वृत्तांत को साहित्यिक रूप देती है|

लेखक का ज्ञान और अनुभव यात्रा में पड़ने वाली प्रत्येक चीज को समझने में सहायक होता है| वह अपने अनुभवों के आधार पर निष्कर्ष निकालता है, तुलना करता है और कारणों की खोज करता है| ज्ञान और अनुभव के बिना यात्रा फीकी लगने लगती है| लेखक के अनुभव ही महत्त्वपूर्ण नहीं होते बल्कि अभिव्यंजना कौशल भी महत्त्वपूर्ण होता है| वह यात्रा के समय अपने परिजनों या परिचितों को लिखे गए पत्रों को यात्रानुभवों के रूप में काम में लाता है, जिससे शैली में आत्मीयता और रोचकता आ जाती है| सामान्य घटनाओं के वर्णनों में बोलचाल की भाषा की सहजता, प्रकृति या भावनात्मक क्षणों के वर्णन में कलात्मकता, दृश्यों के मूर्तिकरण में चित्रात्मकता और बिम्बधर्मिता, विचारों की अभिव्यक्ति में गाम्भीर्य तथा स्थितियों के विश्लेषण में भाषा का प्रौढ़, प्रांजल और बोधगम्य रूप दिखाई पड़ता है|

किसी दृश्य का मूर्तिकरण करना चित्रात्मकता या बिम्बधर्मिता है| लेखक को यात्रा स्थल का वर्णन इस प्रकार करना चाहिए कि पढ़ते समय दृश्य आँखों के सामने जीवंत हो जाए| बिंब निर्माण करना किसी यात्रा लेखक की सबसे बड़ी सफलता है| यात्रा-वृत्तांत का एक और महत्त्वपूर्ण तत्त्व समसामयिकता है जो उसका आधार है| उपर्युक्त तत्त्वों के बिना यात्रा-वृत्तांत का निर्माण हो ही नहीं सकता, परन्तु उसमें कालगत बोध स्वभाविकता ला देता है| इससे यह अहसास नहीं

होता कि हम इतिहास की कोई घटना पढ़ रहे है| हम समय के साथ-साथ यात्रा करने लगते हैं|

1.3 साहित्यिक विधा के रूप में यात्रा-वृत्तांत का वैशिष्ट्य

हिंदी साहित्य में यात्रा-वृत्तांत एक स्वतंत्र विधा का रूप ले चुका है और उतरोत्तर यह प्रगति की ओर अग्रसर है, लेकिन फिर भी इस विधा का सही विश्लेषण बहुत कम हुआ है| रचनाशील मनुष्य अपनी यात्राओं से प्राप्त अनुभवों को अभिव्यक्त करता है तब यात्रा-वृत्तांत का उद्भव होता है| यात्रा अनुभवों का विवरण देना नहीं बल्कि रचनाकार की संवेदनात्मक अनुभूतियों को प्रस्तुत करना भी इस विधा का लक्ष्य है| यात्रा-वृत्तांत का विषय अत्यंत स्पष्ट और व्यापक है| यह पूरे विश्व को अपने दायरे में समाहित किये हुए है| यह विधा देश-विदेश की दूरी को मिटाते हुए एकात्मकता स्थापित करती है| यात्रा-वृत्तांतकार जिस प्रकार अपने अनुभवों को रमणीयता और आत्मीयता के साथ प्रस्तुत करता है, उस प्रस्तुति से पाठक आह्लादित होता है, क्योंकि लेखक जहाँ का वर्णन करता है, पाठक भी वहाँ के विभिन्न स्थलों, वस्तुओं, संस्कृतियों, भाषाओं एवं तमाम गतिविधियों से तादात्म्य स्थापित करता है| यात्रा-वृत्तांत से विभिन्न देश के कला, धर्म-दर्शन, राजनीति, शिक्षा एवं अर्थ आदि की जानकारी मिलती है| ये सब संस्कृति के विभिन्न पहलू हैं जो कि किसी भी देश के महत्त्वपूर्ण दस्तावेज हैं| यायावर न केवल हमें दुनिया की जानकारी देता है बल्कि अपनी संस्कृति से भी दुनिया को परिचय कराता है|

यात्रा-वृत्तांत न मात्र प्रेरक शक्ति है बल्कि वह पथ-प्रदर्शक भी है| उत्तर से लेकर दक्षिण और पूर्व से लेकर पश्चिम तक दुनिया के सारे पक्ष यात्रा-वृत्तांत में देखने को मिलते हैं| हर यात्रा का ऐतिहासिक और भौगोलिक परिवेश अलग-अलग होता है- कहीं पर्वत और सागर, कहीं जंगल और झरना तो कहीं झील से शोभित भौगोलिक परिदृश्य यात्री को आकर्षित करता है|

यायावर यात्रा-वृत्तांत के माध्यम से जीवन-जगत के विभिन्न अनुभवों को बहुत ही कलात्मक ढंग से प्रस्तुत करता है और पाठक तक पहुँचाता है, जिससे पाठक भी रसांवित होता है| यात्रा-वृत्तांत में 'वसुधैव कुटुंबकम' की अवधारणा भी निहित है, इसीलिए आज दुनिया एक जैसी हो गई है और मानव भी बहुत कुछ भिन्नता के बावजूद एक ही जान पड़ता है| यशपाल ने लिखा है- “ऐसा जान पड़ता था अपने-अपने राष्ट्रों और जातीय अस्मिता का गौरव लिए भी मनुष्य मात्र के जीवन की भावना एक ही है, अनेक रंग-रूपों और पोशाकों और बोलियाँ बोलने वाले मानव का खून एक ही है और सहयोग के बल पर ही अपनी मानवता को अजर-अमर बना सकता है|”[15]

1.4 कथेतर गद्य विधाएँ एवं यात्रा-वृत्तांत का अंतःसंबंध

यात्रा-वृत्तांत और आत्मकथा

यात्रा-वृत्तांत हिंदी गद्य विधा में एक स्वतंत्र विधा के रूप में अपना स्थान रखता है, लेकिन इसका अन्य कथेतर विधाओं के साथ गहरा सम्बन्ध है| यात्रा-वृत्तांत और आत्मकथा दोनों में लेखक की अनुभूतियों की आत्माभिव्यक्ति है| आत्मकथा भी एक प्रकार से किसी व्यक्ति की जीवन यात्रा है| दोनों रचनाओं के माध्यम से तत्कालीन

समाज, संस्कृति, रीति-रिवाज आदि का परिचय मिलता है| यात्रा-वृत्तांत की तुलना में आत्मकथा का व्यापक फलक है, क्योंकि लेखक का सम्पूर्ण जीवन उसमें समाहित है| आत्मकथा में स्व को महत्त्व दिया जाता है, जबकि यात्रा वृत्तांत में यायावर की दृष्टि अनुभव और यात्रा में मिले परिचित-अपरिचित स्थितियों को महत्त्व देती है|

आत्मकथा किसी लेखक द्वारा अपने ही जीवन का वर्णन करने वाली कथा को कहते हैं| यह संस्मरण से मिलती-जुलती लेकिन भिन्न है| जहाँ संस्मरण में लेखक अपने आसपास के समाज, परिस्थितियों व अन्य घटनाओं के बारे में लिखता हैं, वहीं आत्मकथा में केन्द्र लेखक स्वयं होता है| आत्मकथा हमेशा व्यक्तिपरक होती है, यानी वह लेखक के दृष्टिकोण से लिखी जाती है| इसमें लेखक अनजाने में या जानबूझ कर अपने जीवन के महत्त्वपूर्ण तथ्य छुपा सकता है या फिर कुछ मात्रा में असत्य वर्णन भी कर सकता है| एक ओर आत्मकथा से व्यक्ति के जीवन और परिस्थितियों के बारे पढ़कर पाठकों को जानकारी व मनोरंजन मिलता है तो दूसरी ओर इतिहासकार आत्मकथाओं की जानकारी को स्वयं में मान्य नहीं ठहराते और सदैव अन्य स्रोतों से उनमें कही गई बातों की पुष्टि करने का प्रयास करते हैं|

आत्मकथा स्वानुभूति का सबसे सरल माध्यम है| आत्मकथा के द्वारा लेखक अपने जीवन, परिवेश, महत्त्वपूर्ण घटनाओं, विचारधारा, निजी अनुभव, अपनी क्षमताओं और दुर्बलताओं तथा अपने समय की सामाजिक-राजनीतिक स्थितियों को पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करता है| हिन्दी में आत्मकथाओं की एक लंबी परंपरा रही है| हिंदी की प्रथम आत्मकथा बनारसीदास जैन कृत 'अर्द्धकथानक' (1641 ई.) है| आत्मकथा की मूलभूत विशेषताओं निरपेक्षता और तटस्थता को इसमें सहज ही देखा जा सकता है| इसमें लेखक अपने गुणों और अवगुणों का यथार्थ चित्रण करता है| पद्य में लिखी इस आत्मकथा के अतिरिक्त पूरे मध्यकाल में हिंदी में कोई दूसरी आत्मकथा नहीं मिलती|

अन्य कई गद्य विधाओं के साथ आत्मकथा भी भारतेंदु हरिश्चंद्र के समय में विकसित हुई| भारतेंदु हरिश्चंद्र ने अपनी पत्रिकाओं के माध्यम से इस विधा का

पल्लवन किया| उनकी स्वयं की आत्मकथा 'एक कहानी कुछ आप बीती कुछ जग बीती' शीर्षक से प्रकाशित हुई थी|

आत्मकथा लेखक के जीवन का एक लिखित खाता है| आत्मकथा लेखक के पूरे जीवन का विस्तार नहीं करती है, लेकिन आम तौर पर जन्म से लेकर लिखने के समय तक आती है| इन खातों में सार्वजनिक जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाओं के साथ ही निजी मामलों, व्यक्तिगत प्रतिबिंब और भावनात्मक प्रतिक्रिया शामिल हो सकते हैं| धीरेन्द्र वर्मा ने यात्रा-वृत्तांत और आत्मकथा पर बात करते हुए लिखा है- "यात्रा-साहित्य में रचनाकार का आत्म-तत्त्व इस सीमा तक प्रभावी रहता है कि कभी-कभी इस विधा की रचनाएँ आत्म-कथांश प्रतीत होने लगती है| वस्तुतः यात्रा-वृत्त पढ़ते हुए पाठक रचनाकारों के विचारों से ही परिचित नहीं होता, बल्कि उसकी जीवनचर्या, स्वभाव, रुचि तथा जीवन के प्रति उसके दृष्टिकोण से भी परिचय प्राप्त करता है| रचनाकार के व्यक्तित्व का यह पक्ष यात्रा-वृत्त के लिए आवश्यक भी है, क्योंकि यही आत्म-तत्त्व, या वैयक्तिक स्पर्श उसे साधारण 'टूरिस्ट गाइडों' या भौगोलिक परिचय देने वाली पुस्तकों से पृथक साहित्यिक अस्तित्व प्रदान करता है| उसे रचनात्मक बनाता है, लेकिन यात्रा-वृत्त आत्मचरित न बन जाए, इसके लिए आवश्यक है कि रचनाकार रचना में सर्वत्र विद्यमान रहते हुए भी उस पर हावी न हो| उसका व्यक्तित्व कृति में उतना उजागर हो जितना यात्रागत अनुभूतियों को उभारने के लिए आवश्यक हो|"[16]

आत्मकथा का एक सबसेट संस्मरण है, जो एक आत्मकथा की तुलना में गुंजाइश में छोटा है और अक्सर केवल लेखक के अनुभव का एक विशेष भाग को प्रस्तुत करता है| एक संस्मरण शैली में और अधिक कलात्मक हो सकता है और उन घटनाओं पर ध्यान केंद्रित कर सकता है जो किसी विशेष विषय, ऐतिहासिक समय अवधि या सार्वजनिक प्रासंगिकता से संबंधित हैं|

आत्मकथा की अवधारणा पर अनेक विद्वानों ने अपने विचार रखे हैं, इन विचारों के आधार पर यह कहा जाता है कि जो आत्मकथाकार होता है, वह अपने

जीवन की प्रमुख घटनाओं, मानवीय अनुभूतियों, भावों, विचारों तथा कार्यकलापों को निष्पक्षता एवं स्पष्टता से आत्मकथा में समाहित करता है| इसमें उस के जीवन की उचित एवं अनुचित घटनाओं का सच्चा चित्रण होता है| इसमें लेखक स्वयं के जीवन की स्मृतियों को प्रस्तुत करता है, जो आत्मनिरीक्षण, आत्मज्ञान तथा आत्म-न्याय के आधार पर होती है| इसलिए आत्मकथा को हम सम्पूर्ण व्यक्तित्व के उद्घाटन की विधा के रूप में भी स्वीकार करते हैं|

आत्मकथा व्यक्ति विशेष के जीवन की अनुकृति होने के साथ-साथ कथा साहित्य की तुलना में यह अनियोजित एवं अपूर्ण होती है| अत: कथा साहित्य के अंतर्गत इसे अधूरी कथा की संज्ञा दी जा सकती है क्योंकि कोई भी आत्मकथा लेखक अपनी मृत्यु के बाद तो आत्मकथा लिख नहीं सकता और जीवित रहकर लिखी गई आत्मकथा में जीवन के कुछ अंश शेष रह जाते हैं| आत्मकथा का अंत किसी कथा साहित्य की भांति पूर्व नियोजित अंत नहीं होता है| बावजूद इसके आत्मकथा में कथावस्तु, चरित्र-चित्रण, भाषा-शैली, कथोपकथन, उद्देश्य और वातावरण जैसे कथा साहित्य के तत्त्व विद्यमान रहते हैं|

यात्रा-वृत्तांत और रेखाचित्र

यात्रा-वृत्तांत और रेखाचित्र दोनों में यथार्थ पर बल दिया जाता है| दोनों में रचनाकार के संपर्क में आए किसी वस्तु या व्यक्ति का चित्रण होता है जो लेखक की संवेदना को जगाते हैं| रेखाचित्र में व्यक्ति या वस्तुचित्रों के अतिरिक्त अन्य बातों को कम महत्त्व दिया जाता है| यात्रा-वृत्तांत लेखक को यात्रा अवश्य करनी पड़ती है, जबकि रेखाचित्रकार के लिए यात्रा कोई अनिवार्य शर्त नहीं है| यायावर जब चित्रात्मक शैली में यात्रा-वृत्तांत की रचना करता है तब उसकी शैली रेखाचित्र की सी होती है| डॉ. सुरेंद्र माथुर ने यात्रा-वृत्तांत की चित्रात्मक शैली का विवेचन करते हुए लिखा है- “शब्द चित्रांकन के लिए सबसे अधिक उपयोगी और उपादेय शैली

यही है| इस शैली का मुख्य उपयोग किसी वस्तु या भाव के चित्र-वर्णन में तथा किसी स्थान दृश्य आदि के विशेष चित्रों का दिग्दर्शन कराने में होता है|”17

रेखाचित्र कहानी से मिलता-जुलता विधा रूप है| यह नाम अंग्रेजी के 'स्केच' शब्द की नाप-तोल पर गढ़ा गया है| स्केच चित्रकला का अंग है| इसमें चित्रकार कुछ इनी-गिनी रेखाओं द्वारा किसी वस्तु-व्यक्ति या दृश्य को अंकित करता है| स्केच रेखाओं की बहुलता और रंगों की विविधता में अंकित कोई चित्र नहीं है, न वह एक फ़ोटो ही है, जिसमें नन्हीं से नन्हीं और साधारण से साधारण वस्तु भी खिंच आती है| साहित्य में जिसे रेखाचित्र कहते हैं, उसमें भी कम से कम शब्दों में कलात्मक ढंग से किसी वस्तु, व्यक्ति या दृश्य का अंकन किया जाता है| इसमें साधन शब्द है, रेखाएँ नहीं| इसीलिए इसे शब्दचित्र भी कहते हैं| कहीं-कहीं इसका अंग्रेज़ी नाम 'स्केच' भी व्यवहृत होता है|

रेखाचित्र किसी व्यक्ति, वस्तु, घटना या भाव का कम से कम शब्दों में मर्मस्पर्शी, भावपूर्ण एवं सजीव अंकन है| कहानी से इसका बहुत अधिक साम्य है| दोनों में क्षण, घटना या भाव विशेष पर ध्यान रहता है, दोनों की रूपरेखा संक्षिप्त रहती है| इन विधाओं के साम्य के कारण अनेक कहानियों को भी रेखाचित्र कह दिया जाता है और इसके ठीक विपरीत अनेक रेखाचित्रों को कहानी की संज्ञा प्राप्त हो जाती है| कहीं-कहीं लगता है कि कहानी और रेखाचित्र के बीच विभाजन रेखा खींचना सरल नहीं है| उदाहरण के लिए रायकृष्णदास लिखित ‘अन्त:पुर का आरम्भ’ कहानी है, पर वह आदिम मनुष्य की अन्त:वृत्ति पर आधारित ‘रेखाचित्र’ भी है| श्रीरामवृक्ष बेनीपुरी की पुस्तक ‘माटी की मूरतें’ में संकलित ‘रज़िया’, ‘बलदेव सिंह’, ‘देव’ आदि रेखाचित्र कहानियाँ भी हैं| महादेवी वर्मा लिखित ‘रामा’, ‘घीसा’ आदि रेखाचित्र भी कहानी कहे जाते हैं| कहानी और रेखाचित्र में साम्य है, पर जैसा

कि ‘शिप्ले’ के ‘विश्व साहित्य कोश’ में कहा गया है, रेखाचित्र में कहानी की गहराई का अभाव रहता है|

रेखाचित्र शब्द अंग्रेजी के ‘स्कैच’ शब्द का हिन्दी रूपान्तर है। जैसे ‘स्कैच’ में रेखाओं के माध्यम से किसी व्यक्ति या वस्तु का चित्र प्रस्तुत किया जाता है, ठीक वैसे ही शब्द रेखाओं के माध्यम से किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को उसके समग्र रूप में पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत किया जाता है| ये व्यक्तित्व प्रायः वे होते हैं जिनसे लेखक किसी न किसी रूप में प्रभावित रहा हो या जिनसे लेखक की घनिष्ठता अथवा समीपता हो|

महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों ने विधा के रूप में संस्मरण और रेखाचित्र की सीमाओं का उल्लंघन किया| उनके लेखन को संस्मरणात्मक रेखाचित्रों की श्रेणी में रखा जा सकता है| ‘अतीत के चलचित्र’, ‘स्मृति की रेखाएँ’, ‘पथ के साथी’ और ‘श्रृंखला की कड़ियाँ’ इनके संग्रह हैं| ‘अतीत के चलचित्र’ और ‘स्मृति की रेखाएँ’ में समाज के षोषित वर्ग और नारी के प्रति इनकी सहानुभूति प्रकट हुई है तो ‘पथ के साथी’ में अपने साथी साहित्यकारों के चित्रों को लिपिबद्ध किया है|

यात्रा-वृत्तांत और संस्मरण

संस्मरण यात्रा-वृत्तांत की सबसे निकटवर्ती विधा है| बीती हुई घटनाओं का सम्यक स्मरण दोनों में होता है, किन्तु दोनों के स्मरण में अंतर है| संस्मरण अपने व्यक्तिगत जीवन से सम्बंधित किसी व्यक्ति की स्मृतियों को आधार बनाकर लिखा जाता है, लेकिन यात्रा-वृत्तांत में यात्रा के दौरान आने वाले दृश्यों या घटनाओं को स्मरण करके उनका चित्रण किया जाता है| यात्रा-वृत्तांत का फलक बड़ा है, उसमें भूगोल, इतिहास, समाज, संस्कृति, धर्म आदि का भी चित्रण होता है, जबकि संस्मरण में किसी एक व्यक्ति या जीवन की कुछ अविस्मरणीय अनुभूतियों की अभिव्यक्ति होती

है| यात्रा में जिन चीजों से साक्षात्कार होता है, उनका वर्णन यात्रा-वृत्तांत में होता है| संस्मरण में किसी एक का चरित्र-चित्रण होता है| यात्रा-वृत्तांत में केवल व्यक्ति चित्रण ही नहीं बल्कि प्रकृति, भाषा, रीति-रिवाज, खान-पान, रहन-सहन, वेश-भूषा आदि का भी वर्णन होता है जबकि संस्मरण में ऐसा नहीं है| उसी प्रकार संस्मरण में घटनाओं का उल्लेख मात्र होता है, वहीं यात्रा-वृत्तांत में हुई घटनाओं के प्रति लेखक की अनुभूति में ढ़लकर प्रतिक्रिया व्यक्त होती है|

स्मृति के आधार पर किसी विषय पर अथवा किसी व्यक्ति पर लिखित आलेख संस्मरण कहलाता है| यात्रा-वृत्तांत भी इसके अंतर्गत आता है| संस्मरण को साहित्यिक निबन्ध की एक प्रवृत्ति भी माना जा सकता है| ऐसी रचनाओं को 'संस्मरणात्मक निबंध' कहा जा सकता है|

व्यापक रूप से संस्मरण आत्मचरित के अन्तर्गत लिया जा सकता है, किन्तु संस्मरण और आत्मचरित के दृष्टिकोण में मौलिक अन्तर है| आत्मचरित के लेखक का मुख्य उद्देश्य अपनी जीवनकथा का वर्णन करना होता है| इसमें कथा का प्रमुख पात्र स्वयं लेखक होता है| संस्मरण लेखक का दृष्टिकोण भिन्न रहता है| संस्मरण में लेखक जो कुछ स्वयं देखता है और स्वयं अनुभव करता है उसी का चित्रण करता है| लेखक की स्वयं की अनुभूतियाँ तथा संवेदनाएँ संस्मरण में अन्तर्निहित रहती हैं|

संस्मरणों को साहित्यिक रूप में लिखे जाने का प्रचलन आधुनिक काल में पाश्चात्य प्रभाव के कारण हुआ है, किन्तु हिंदी में संस्मरणात्मक आलेखों की गद्य विधा का पर्याप्त विकास हुआ है। संस्मरण लेखन के क्षेत्र में हमें अत्यन्त प्रौढ़ तथा श्रेष्ठ रचनाएँ हिन्दी साहित्य में उपलब्ध हुई हैं|

संस्मरण और रेखाचित्र में बहुत सूक्ष्म अंतर है| कुछ विद्वानों ने तो इन दोनों विधाओं को एक-दूसरे की पूरक विधा भी कहा है| संस्मरण का सामान्य अर्थ होता है सम्यक् स्मरण| सामान्यतः इसमें चारित्रिक गुणों से युक्त किसी महान व्यक्ति को याद करते हुए उसके परिवेश के साथ उसका प्रभावशाली वर्णन किया जाता है| इसमें लेखक स्वानुभूत विषय का यथावत अंकन न करके उसका पुनर्सृजन करता है|

रेखाचित्र की तरह यह वर्ण्य विषय के प्रति तटस्थ नहीं होता| आत्मकथात्मक विधा होते हुए भी संस्मरण आत्मकथा से पर्याप्त भिन्नता रखता है| संस्मरण और रेखाचित्रों में कोई भी तात्विक भेद नहीं मानने वाले आलोचक डा. नगेन्द्र ने 'चेतना के बिंब' नाम की कृति के माध्यम से इस विधा को समृद्ध किया| प्रभाकर माचवे, विष्णु प्रभाकर, सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' और कमलेश्वर प्रमुख संस्मरण लेखक रहे हैं|

स्मृति के आधार पर किसी विषय पर अथवा किसी व्यक्ति पर लिखित आलेख 'संस्मरण' कहलाता है| संस्मरण को साहित्यिक निबन्ध की एक प्रवृत्ति भी माना जा सकता है| ऐसी रचनाओं को संस्मरणात्मक निबंध कहा जा सकता है| जीवन में कुछ ऐसी घटनाएँ घट जाती हैं, जिनके साथ हम जुड़ पाते हैं, उन्हें सुनाना अपने आप में आनंद होता है| आत्मकथा संस्मरण का ही विस्तृत रूप है| आत्मकथा के जरिए हमें इस संसार के महान लोगों के जीवन के सकारात्मक-नकारात्मक एवं तमाम घटनाक्रम के भीतर झाँकने का अवसर मिलता है|

स्मृति के आधार पर किसी विषय या व्यक्ति के संबंध में लिखित किसी लेख या ग्रंथ को संस्मरण कहते हैं| संस्मरण लेखक अतीत की अनेक स्मृतियों में से कुछ रमणीय अनुभूतियों को अपनी कल्पना भावना या व्यक्तित्व की विशेषताओं से युक्त कर प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त करता है, उसकी अभिव्यक्ति में उसकी अपनी अनुभूतियों और सम्वेदनाओं का समावेश रहता है|

संस्मरण के लेखक के लिए यह नितांत आवश्यक है कि लेखक ने उस व्यक्ति या वस्तु का साक्षात्कार किया हो, जिसका वह संस्मरण लिख रहा है| वह अपने समय के इतिहास को लिखना चाहता है, परंतु इतिहासकार की भांति वह विवरण प्रस्तुत नहीं करता| इतिहासकार के वस्तुपरक दृष्टिकोण से वह बिल्कुल अलग है| संस्मरण में जीवन के कुछ महत्त्वपूर्ण क्षणों या घटनाओं की स्मृति पर आधारित रोचक अभिव्यक्ति होती है| यथार्थ जीवन से संबंधित संक्षिप्त रोचक, चित्रात्मक, भावुकतापूर्ण लेखक के व्यक्तित्व के आभा से पूर्ण प्रभाव में लिखित घटना संस्मरण कहलाती है|

यात्रा-वृत्तांत और निबंध

यात्रा-वृत्तांत और निबंध में समानता है| दोनों में लेखक ने अपने व्यक्तित्व को महत्त्व देता है| दोनों में यथार्थ और कल्पना के सहारे व्यक्तिगत अनुभूतियों को वाणी दी जाती है| पाठकों को आत्मीयता के सूत्र में बांधने की क्षमता दोनों में होती है| दोनों विधाएं सूचनात्मक हैं| सभी निबंध यात्रा-वृत्तांत नहीं होते, लेकिन यात्रा-वृत्तांत एक हद तक निबंध होता है| प्रारम्भ में यात्रा-वृत्तांत को निबंधों के अंतर्गत ही रखा गया था, बाद में इसे स्वतंत्र विधा के रूप में मान्यता प्राप्त हुई|

निबंध शब्द का अर्थ है- बाँधना या अच्छी तरह से बंधा हुआ है| किसी विषयवस्तु से सम्बंधित ज्ञान को क्रमबद्ध रूप से बाँधते हुए लिखना निबंध कहलाता है| दूसरे शब्दों में, किसी विषय पर अपने मानसिक भावों या विचारों को संक्षिप्त रूप से क्रमानुसार लिपिबद्ध करना या नियंत्रित ढंग से लिखना निबंध कहलाता है| निबंध को लेख, प्रबंध आदि नामों से भी पुकारा जाता है|

निबंध गद्य लेखन की एक विधा है, लेकिन इस शब्द का प्रयोग किसी विषय की तार्किक और बौद्धिक विवेचना करने वाले लेखों के लिए भी किया जाता है| निबंध के पर्याय रूप में सन्दर्भ, रचना और प्रस्ताव का भी उल्लेख किया जाता है, लेकिन साहित्यिक आलोचना में सर्वाधिक प्रचलित शब्द निबंध ही है| आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार संस्कृत में भी निबंध का साहित्य है| प्राचीन संस्कृत साहित्य के उन निबंधों में धर्मशास्त्रीय सिद्धांतों की तार्किक व्याख्या की जाती थी| उनमें व्यक्तित्व की विशेषता नहीं होती थी, किन्तु वर्तमान काल के निबंध संस्कृत के निबंधों से ठीक उलटे हैं, उनमें व्यक्तित्व या वैयक्तिकता का गुण सर्वप्रधान है|

इतिहास-बोध परम्परा की रूढ़ियों से मनुष्य के व्यक्तित्व को मुक्त करता है| निबंध की विधा का संबंध इसी इतिहास-बोध से है| यही कारण है कि निबंध की प्रधान विशेषता व्यक्तित्व का प्रकाशन है, इसलिए निबंधकार के व्यक्तित्व को प्रकाशित करता है| इस परिभाषा में अतिव्याप्ति दोष है, लेकिन निबंध का रूप

साहित्य की अन्य विधाओं की अपेक्षा इतना स्वतंत्र है कि उसकी सटीक परिभाषा करना अत्यंत कठिन है|

निबंध को साहित्य की सृजनात्मक विधा के रूप में मान्यता आधुनिक युग में ही मिली है| आधुनिक युग में ही मध्ययुगीन धार्मिक, सामाजिक रूढ़ियों से मुक्ति का द्वार दिखाई पड़ा है| इस मुक्ति से निबंध का गहरा संबंध है|

निबंध लेखक अपने मन की प्रवृत्ति के अनुसार स्वच्छंद गति से इधर-उधर फूटी हुई सूत्र शाखाओं पर विचरता चलता है| यही उसकी अर्थ सम्बन्धी व्यक्तिगत विशेषता है| अर्थ-संबंध-सूत्रों की टेढ़ी-मेढ़ी रेखाएँ ही भिन्न-भिन्न लेखकों के दृष्टि-पथ को निर्दिष्ट करती हैं| निबंध में किन्हीं ऐसे ठोस रचना-नियमों और तत्त्वों का निर्देश नहीं दिया जा सकता है, जिसका पालन करना निबंधकार के लिए आवश्यक है| ऐसा कहा जाता है कि निबंध एक ऐसी कलाकृति है, जिसके नियम लेखक द्वारा ही आविष्कृत होते हैं| निबंध में सहज, सरल और आडम्बरहीन ढंग से व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति होती है| लेखक बिना किसी संकोच के अपने पाठकों को अपने जीवन-अनुभव सुनाता है और उन्हें आत्मीयता के साथ उनमें भाग लेने के लिए आमंत्रित करता है| उसकी यह घनिष्ठता जितनी सच्ची और सघन होगी, उसका निबंध पाठकों पर उतना ही सीधा और तीव्र असर करेगा| इसी आत्मीयता के फलस्वरूप निबंधकार पाठकों को अपने पांडित्य से अभिभूत नहीं करना चाहता|

हिन्दी साहित्य के आधुनिक युग में भारतेंदु और उनके सहयोगियों से निबंध लिखने की परम्परा का आरंभ होता है| निबंध ही नहीं, गद्य की कई विधाओं का प्रचलन भारतेन्दु से होता है| यह इस बात का प्रमाण है कि गद्य और उसकी विधाएँ आधुनिक मनुष्य के स्वाधीन व्यक्तित्व के अधिक अनुकूल हैं| मोटे रूप में स्वाधीनता आधुनिक मनुष्य का केन्द्रीय भाव है| इस भाव के कारण परम्परा की रूढ़ियाँ दिखाई पड़ती हैं| सामयिक परिस्थितियों का दबाव अनुभव होता है| भविष्य की संभावनाएँ खुलती जान पड़ती हैं| इसी को इतिहास-बोध कहा जाता है| भारतेंदु युग का साहित्य इस इतिहास-बोध के कारण आधुनिक माना जाता है|

यात्रा-वृत्तांत और रिपोर्ताज

रिपोर्ताज का सम्बन्ध पत्रकारिता के क्षेत्र से है| किसी घटना, दुर्घटना या मेला आदि की रिपोर्ट को कलात्मक और साहित्यिक रूप दिया जाता है, तब रिपोर्ताज का सृजन होता है| रिपोर्ताज में लेखक मात्र दर्शक के रूप में होता है, लेकिन यात्रा-वृत्तांत में अपनी अनुभूतियों को संवेदनात्मक रूप में अभिव्यक्ति देता है| रिपोर्ताज लिखने से पहले लेखक को किसी घटना, दुर्घटना, मेला आदि से सम्बंधित जानकारी मिलती है और वह उस जगह जाकर अपनी सामग्री में विस्तार पाता है, लेकिन यात्रा-वृत्तांत का सृजन करते समय वह अपने अनुभवों को प्रमुखता देता है| वहाँ कोई पूर्व निश्चित जानकारी नहीं होती है| रिपोर्ताज में केवल घटनास्थल की रिपोर्ट होती है, जबकि यात्रा-वृत्तांत में घटनाओं के साथ-साथ मार्ग का भी मनोरम चित्र प्रस्तुत किया जाता है| दोनों में रेखाचित्र, संस्मरण, निबंध आदि की विशेषताएँ होती हैं और दोनों वर्णनात्मक भी हैं| दोनों विधाओं में लेखक का व्यक्तित्व किसी-न-किसी रूप में समाहित है और ये सब होते हुए भी दोनों में भिन्नता है|

रिपोर्ताज गद्य लेखन की एक विधा है| रिपोर्ताज फ्रांसीसी भाषा का शब्द है| रिपोर्ताज किसी घटना के यथातथ्य वर्णन को कहते हैं| रिपोर्ट अंग्रेजी भाषा का शब्द है| रिपोर्ट समाचार पत्रों के लिए लिखी जाती है और उसमें साहित्यिकता नहीं होती है| रिपोर्ट के कलात्मक तथा साहित्यिक रूप को रिपोर्ताज कहते हैं| वास्तव में रेखाचित्र की शैली में प्रभावोत्पादक ढंग से लिखे जाने में ही रिपोर्ताज की सार्थकता है| आँखों देखी और कानों सुनी घटनाओं पर भी रिपोर्ताज लिखा जा सकता है| कल्पना के आधार पर रिपोर्ताज नहीं लिखा जा सकता है| घटना प्रधान होने के साथ ही रिपोर्ताज को कथातत्त्व से भी युक्त होना चाहिए| रिपोर्ताज लेखक को पत्रकार तथा कलाकार दोनों की भूमिका निभानी पड़ती है| रिपोर्ताज लेखक के लिए यह भी आवश्यक है कि वह जनसाधारण के जीवन की सच्ची और सही जानकारी रखे, तभी रिपोर्ताज लेखक प्रभावोत्पादक ढंग से जनजीवन का इतिहास लिख सकता है|

जीवन की सूचनाओं की कलात्मक अभिव्यक्ति के लिए रिपोर्ताज का जन्म हुआ| रिपोर्ताज पत्रकारिता के क्षेत्र की विधा है| इस शब्द का उद्भव फ्रांसीसी भाषा से माना जाता है| इस विधा को हम गद्य विधाओं में सबसे नया कह सकते हैं| द्वितीय विश्वयुद्ध के समय यूरोप के रचनाकारों ने युद्ध के मोर्चे से साहित्यिक रिपोर्ट तैयार की| इन रिपोर्टों को ही बाद में रिपोर्ताज कहा गया| वस्तुतः यथार्थ घटनाओं को संवेदनशील साहित्यिक शैली में प्रस्तुत कर देने को ही रिपोर्ताज कहा जाता है|

हिंदी खड़ी बोली गद्य के आरंभ के साथ ही अनेक नई विधाओं का चलन हुआ| इन विधाओं में कुछ तो सायास थीं और कुछ के गुण अनायास ही कुछ गद्यकारों के लेखन में आ गए थे| वास्तविक रूप में तो रिपोर्ताज का जन्म हिंदी में बहुत बाद में हुआ, लेकिन भारतेंदु-युगीन साहित्य में इसकी कुछ विशेषताओं को देखा जा सकता है| उदाहरण स्वरूप भारतेंदु ने स्वयं जनवरी, 1877 की 'हरिश्चंद्र चंद्रिका' में दिल्ली दरबार का वर्णन किया है, जिसमें रिपोर्ताज की झलक देखी जा सकती है। रिपोर्ताज लेखन का प्रथम सायास प्रयास शिवदान सिंह चौहान द्वारा लिखित 'लक्ष्मीपुरा' को माना जा सकता है| यह सन 1938 में 'रूपाभ' पत्रिका में प्रकाशित हुआ| रांगेय राघव रिपोर्ताज की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ लेखक कहे जा सकते हैं| सन 1946 में प्रकाशित 'तूफानों के बीच में' नामक रिपोर्ताज में उन्होंने बंगाल के अकाल का बड़ा मार्मिक चित्रण किया है| रांगेय राघव अपने रिपोर्ताजों में वास्तविक घटनाओं के बीच में से सजीव पात्रों की सृष्टि करते हैं| वे गरीबों और शोषितों के लिए प्रतिबद्ध लेखक हैं| इस रिपोर्ताज के निर्धन और अकाल पीड़ित निरीह पात्रों में उनकी लेखकीय प्रतिबद्धता को देखा जा सकता है| लेखक विपदाग्रस्त मानवीयता के बीच संबल की तरह खड़ा दिखाई देता है|

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद रिपोर्ताज लेखन का हिंदी में चलन बढ़ा| लेखकों ने अभिव्यक्ति की विविध शैलियों को आधार बनाकर नए प्रयोग करने आरंभ कर दिए थे| रामनारायण उपाध्याय ने अपने रिपोर्ताज संग्रह 'अमीर और गरीब' में व्यंग्यात्मक शैली को आधार बनाकर समाज के शाश्वत विभाजन को चित्रित किया है| फणीश्वरनाथ रेणु के रिपोर्ताजों ने इस विधा को नई ताजगी दी| 'ऋण जल धन जल' रिपोर्ताज संग्रह में बिहार के अकाल को अभिव्यक्ति मिली है और 'नेपाली

क्रांतिकथा’ में नेपाल के लोकतांत्रिक आंदोलन को कथ्य बनाया गया है| संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि अपने समय की समस्याओं से जूझती जनता को हमारे लेखकों ने अपने रिपोर्ताजों में हमारे सामने प्रस्तुत किया है, लेकिन हिंदी रिपोर्ताज के बारे में यह भी सच है कि इस विधा को वह ऊँचाई नहीं मिल सकी जो कि इसे मिलनी चाहिए थी|

आँखों-देखी घटनाओं पर रिपोर्ताज लिखा जा सकता है, कल्पना के आधार पर नहीं, लेकिन तथ्यों के वर्णन मात्र से रिपोर्ताज नहीं लिखा जा सकता, रिपोर्ट भले ही बन सकता है| घटना-प्रधान होने के साथ ही रिपोर्ताज को कथातत्त्व से भी युक्त होना चाहिए| रिपोर्ताज लेखक को पत्रकार तथा कलाकार की दोहरी ज़िम्मेदारी निभानी पड़ती है| साथ ही उसके लिए आवश्यक होता है कि वह जनसाधारण के जीवन की सच्ची और सही जानकारी रखे और उत्सवों, मेलों, बाढ़ों, अकालों, युद्धों और महामारियों जैसे सुख-दु:ख के क्षणों में जनता को निकट से देखे, तभी वह अख़बारी रिपोर्टर और साहित्यिक रचनाकार की हैसियत से जन-जीवन का प्रभावोत्पादक वर्णन लिख सकता है|

यात्रा-वृत्तांत और डायरी

यात्रा-वृत्तांत और डायरी साहित्य में वास्तविक सुख-दुःख को प्रकट करते हुए लेखक का सही व्यक्तित्व प्रतिबिंबित होता है| दोनों में बीती हुए घटनाओं का स्मरण तथा पुनर्मूल्यांकन होता है| इन दोनों विधाओं का संस्मरण तथा रेखाचित्र के साथ गहरा सम्बन्ध है, क्योंकि दोनों में व्यक्ति, वस्तु या परिवेश का अंकन होता है| वास्तव में यात्रा-वृत्तांत के लिए डायरी एक माध्यम है| अधिकांश लेखक डायरी में लिखित टिप्पणी के माध्यम से यात्रानुभवों का स्मरण करके साहित्यिक अभिव्यक्ति देते हैं| मनोरंजन या ज्ञानार्जन डायरी लेखक का उद्देश्य नहीं है| वह अनुभूतियों का अंकन

मात्र करता है| यात्रा-वृत्तांत जीवनानुभूतियों के अंकन के साथ-साथ पाठकों को मनोरंजन भी प्रदान करता है|

डायरी लेखन व्यक्ति के द्वारा लिखा गया व्यक्तिगत अभुभवों, सोच और भावनाओं को अंकित करके बनाया गया एक संग्रह है| दुनिया के बहुत सारे महान व्यक्तियों ने डायरी लेखन किया है| आज भी उनके अनुभवों से उनके निधन के बाद भी कई लोगों को प्रेरणा मिलती है| डायरी गध साहित्य की एक प्रमुख विधा है, इसमें लेखक आत्म साक्षात्कार करता है| वह अपने आपसे सम्प्रेषण की स्थिति में होता है| डायरी, अपने इमोशन्स को व्यक्त करने का, अपने सपनों और विचारों को रिकॉर्ड करने का और अपनी डेली लाइफ के ऊपर एक प्राइवेट, सेफ स्पेस में रिफ़्लेक्ट करने का एक बेहद खूबसूरत जरिया होती है| हालांकि डायरी लिखने का कोई एक अकेला, निश्चित तरीका नहीं होता है, लेकिन लेखक कुछ नया और बेहतर लिखकर समाज को अच्छी दिशा जरूर दे सकता है|

डायरी लिखने की शुरुआत मन की बातों को अभिव्यक्ति देने की जरूरत से होती है| डायरी लिखना रोज़ के अनुभवों को लिपिबद्ध करने का एक बहाना भी हो सकता है| डायरी लिखते समय हमें भाषा की ग़लतियों की परवाह किए बिना सीधे-सपाट शब्दों में अपनी बात लिखते चलना चाहिए| डायरी लिखते समय मन में आने वाले सवालों, उलझनों, भावनाओं, हलचलों को ज़्यों-का-त्यों व्यक्त करने की कोशिश करनी चाहिए| डायरी में निजता का भाव होता है| यह हमारा वह स्पेश होता है, जहाँ हम खुद का सामना बिना किसी मुखौटे के करते हैं| डायरी लेखन के दौरान हम खुद को अपने ज़्यादा करीब होने का मौका देते हैं| इसमें भाषा का सवाल भी हो सकता है कि किस भाषा में डायरी लिखें, जहाँ तक संभव हो अपनी मातृभाषा में लिखने की कोशिश करनी चाहिए| बाकी किसी नई भाषा में भी डायरी लिखी जा सकती है|

डायरी में रोज़मर्रा के जीवन की बारीक भावनाओं का सटीक वर्णन होता है| यहाँ मन की तमाम ख़ुशियों और ग़मों को उचित स्थान दिया जाता है, जैसे कोई

गीत बेइंतहा गुगगुनाने का मन हो रहा है, किसी पुराने दोस्त की याद आ रही है, कोई बात मन को बहुत ज़्यादा परेशान कर रही है, किसी को ग़ौर से देखना अच्छा लगता है, किसी का ख़्याल मन को गुदगुदा जाता है, ज़िंदगी का कोई सवाल आपको ख़ामोश कर जाता है| ऐसे जीवन के तमाम अनुभवों का लेखा-जोखा हम लिखते हैं|

डायरी एक तरल विधा है, जिस बर्तन में डालो उसी का आकार वो ले लेगी| डायरी का उपयोग यात्रा-आख्यान लिखने में किया जाता है| आप कल्पना करें कि यदि वास्को-डि-गामा जर्नल नहीं लिखता तो क्या होता? यदि चार्ल्स डारविन ने जर्नल्स नहीं लिखे होते तो क्या होता? जर्नल में व्यक्तिगत बातें प्रायः नहीं लिखी जाती हैं| जहाज के हर कप्तान के लिए यह आवश्यक है कि वह जहाज की गतिविधियों के बारे में रोज जर्नल लिखे| वास्को-डि-गामा का लिखा हुआ जैसा भी यात्रा-वृत्तांत भारत पर उपलब्ध है, उसकी शक्ल जर्नल की ही है। जर्नल और डायरी में बुनियादी अंतर एक तो है ही, वह है कि एक डायरी बहुत व्यक्तिगत होती है और जर्नल एक सार्वजनिक दस्तावेज है| डायरी में लोग दूसरों के बारे में भी लिखते हैं, तब वह डायरी कम जर्नल का रूप अधिक ले लेती है| विलियम वड्र्सवर्थ की बहन डोरोथी वड्र्सवर्थ ने जर्नल लिखे, जो वड्र्सवर्थ के रचनात्मक मन और जीवन पर पर्याप्त रोशनी डालती है|

यात्रा-वृत्तांत और पत्र साहित्य

वैयक्तिक आनंद के क्षणों को लिपिबद्ध करने के उद्देश्य से यात्रा-वृत्तांत और पत्र साहित्य दोनों विधाओं का सृजन होता है| दोनों विधाएँ व्यक्तिगत सुख-दुःख के अनुभवों को दूसरों तक पहुँचाकर एक प्रकार की आनंदानुभूति कराती हैं| यात्रा-वृत्तांत ने एक शैली के रूप में पत्र को अपनाया है| पत्र साहित्य घर बैठे लिख सकते

हैं, लेकिन यात्रा-वृत्तांत लिखने के लिए यायावर को यात्रा करनी होती है| पत्र एक शैली के रूप में मान्य है और स्वतंत्र साहित्यिक विधा के रूप में भी, लेकिन यात्रा-वृत्तांत सिर्फ एक साहित्यिक विधा है| पत्र किसी खास व्यक्ति को सम्बोधित करते हुए लिखा जाता है, लेकिन यात्रा-वृत्तांत पाठक वर्ग के लिए लिखा जाता है| पत्र में केवल अंतर्मन की भावनाओं को प्रमुखता दी जाती है, जबकि यात्रा-वृत्तांत में अंतर्मन के साथ बाह्य जगत की भी स्थापना होती है| यात्रा-वृत्तांत सभी गद्य विधाओं के गुण-दोष का समन्वित और मौलिक सृजनात्मक साहित्यिक रूप है| यात्रा-वृत्तांत का अन्य विधाओं के साथ अंतर्संबंध को दिखाते हुए डॉ. रघुवंश ने लिखा है- "समग्र जीवन को अभिव्यक्ति देने वाले यात्रा-वृत्तांत में महाकाव्य और उपन्यास का विराट तत्व, कहानी का आकर्षण, गीतिकाव्य की मोहक भावशीलता, संस्मरणों की आत्मीयता, निबंधों की मुक्ति सब एक साथ मिल जाती है|"[18]

किसी भी भाषा के पत्र उसके साहित्य की बहुमूल्य थाती के समान माना है| पत्र-पत्रिकाओं की भरमार के साथ जैसे-जैसे साहित्यकारों में आत्मचेतना आयी, पत्र लेखन और प्रकाशन प्रारंभ हुआ| धीरे-धीरे दिवंगत साहित्यकारों के पत्र स्मृति-ग्रंथों में छपने लगे, लेकिन इस विधा की ओर सर्वप्रथम ध्यान पं. बनारसीदास चतुर्वेदी का गया| उन्होंने पत्र-लेखन को एक व्यसन के रूप में स्वीकार किया और कुछ लेखकों को लेकर पत्र-लेखन मंडल की स्थापना की| इसके सक्रिय सदस्य आचार्य शिवपूजन सहाय भी थे| शिवपूजन सहाय ने इस बात की चर्चा अपने पत्रों में की है| बनारसीदास चतुर्वेदी ने विभिन्न साहित्यकारों के पत्र प्राप्त कने के लिए उन्हें नियमित रूप से पत्र लिखना प्रारंभ किया| उनके पत्रों को संभालकर रखा और उन्हें छपवाया भी|

पत्रों के महत्त्व के सम्बंध में अमृतराय ने भी नाराजगी जाहिर की है| उन्होंने हिंदी भाषा के लोगों से कहा भी कि बांग्ला, उर्दू और मराठी क्षेत्र के लोग पत्र को संभालकर रखते हैं, लेकिन हिंदी के लोग नहीं| हिंदी पत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाले ऐसे जिन पत्र-साहित्य को ख्याति मिली-उनमें बालमुकुंद गुप्त के 'भारत-

मित्र’ में प्रकाशित ‘शिवशम्भु के चिट्ठे’ और विश्वम्भरनाथ शर्मा ‘कौशिक’ द्वारा ‘चांद’ में प्रकाशित ‘दुबेजी की चिट्ठी’ प्रमुख हैं| तत्कालीन वायसराय लार्ड कर्जन के नाम लिखे गए ‘शिवशम्भु के चिट्ठे’ ने उस समय के पाठकों में हलचल मचा दिया था|

सन 1963 ई. के नवम्बर-दिसंबर में ‘ज्ञानोदय’ ने अपना पत्र-विशेषांक निकालकर इस विधा का अच्छा प्रयोग किया| इसमें हिंदी के अनेक साहित्यकारों ने पत्र-विधा में संस्मरण, रेखाचित्र, कहानी, रिपोर्ताज, निबंध, आलोचना आदि लिखे हैं| बीच-बीच में कुछ देशी-विदेशी साहित्यकारों-विचारकों के व्यक्तिगत पत्र भी संकलित हैं| इस विधा के अभिनत्व की दृष्टि से एक साहित्यिक विधा के रूप में इसकी बहुत अधिक संभावनाएँ हैं| इस विधा में कुछ उपन्यास, कहानियाँ और यात्रा-वृत्तांत भी लिखे गए हैं और लिखे जा रहे हैं| वैसे विधा के रूप में इसकी कुछ सीमाएँ हैं| उनका अतिक्रमण करते ही पत्र, पत्र न रहकर निबंध या आलोचना का रूप धारण कर लेता है| लेखकों के स्वभाव और उनकी प्रवृत्तियों की सही जानकारी पत्र-साहित्य में ही मिल पाती है|

पत्र-साहित्य का महत्त्व इसलिए है कि उसमें बने-ठने, सजे-सजाए’ मनुष्य का चित्र नहीं, बल्कि एक चलते-फिरते मनुष्य का अंकन रहता है| इसमें लेखक के वैयक्तिक सम्बंध, मानसिक और बाह्य संघर्ष, रुचि और उस पर पड़नेवाले प्रभावों का पता चल जाता है| जिन पत्रों के विषय और शैली दोनों ही महत्त्वपूर्ण हों, वे साहित्य की स्थायी सम्पत्ति बन जाते हैं और इस सम्पत्ति पर पाठक भी गर्व करते हैं|

यात्रा-वृत्तांत और जीवनी

प्रसिद्ध इतिहासकार और जीवनीकार टॉमस कार्लाइल ने अत्यंत सरल भाषा में जीवनी को ‘व्यक्ति का जीवन’ कहा है| इस तरह किसी व्यक्ति के जीवन-वृत्तांत को सचेत और कलात्मक ढ़ंग से लिख डालना जीवनी कहा जाता है| जीवनी में किसी

एक व्यक्ति के यथार्थ जीवन के इतिहास का आलेखन होता है, अनेक व्यक्तियों के जीवन का नहीं| जीवनीकार एक ओर तो व्यक्ति के जीवन की घटनाओं की यथार्थता इतिहासकार की भाँति स्थापित करता है तो दूसरी ओर वह साहित्यकार की प्रतिभा और रागात्मकता का तथ्य निरूपण में उपयोग करता है| उसकी यह स्थिति उसे उपन्यासकार के निकट ला देती है|

जीवनी के प्राचीनतम रूपों के उदाहरण किसी भी देश के धार्मिक, पौराणिक आख्यानों और दंतकथाओं में मिल सकते हैं, जिनमें मानवीय चरित्रों, मनोविकारों और मनोभावों का रूपायन हुआ हो| अधिकांशत: दैवी और मानवीय चरित्रों में जीवनचरित्र के कुछेक लक्षण मिल जाते हैं, जिनका निर्माण उस काल से ही होता चला आ रहा है, जब लेखनकला का विकास भी नहीं हुआ था और इस प्रयोजन के लिए मिट्टी और श्रीपत्रों का प्रयोग होता था|

जीवनी हिंदी साहित्य की महत्त्वपूर्ण विधा है| किसी व्यक्ति के जीवन का चरित्र चित्रण करना अर्थात किसी व्यक्ति विशेष के सम्पूर्ण जीवन-वृत्तांत को जीवनी कहते हैं| जीवनी का अंग्रेजी अर्थ बायोग्राफी है| जीवनी में व्यक्ति विशेष के जीवन में घटित घटनाओं का कलात्मक और सौन्दर्यता के साथ चित्रण होता है| जीवनी इतिहास, साहित्य और नायक की त्रिवेणी होती है| जीवनी में लेखक व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन और यथेष्ट जीवन की जानकारी प्रमाणिकता के साथ प्रस्तुत करता है| जीवनी के अनेक भेद होते जैसे आत्मीय जीवनी, लोकप्रिय जीवनी, ऐतिहासिक जीवनी, मनोवैज्ञानिक जीवनी, व्यक्तिगत जीवनी, कलात्मक जीवनी|

पाद-टिप्पणी

1. सुरेंद्र माथुर:यात्रा साहित्य का उद्भव और विकास, पृष्ठ- 10
2. राहुल सांकृत्यायन:घुमक्कड़शास्त्र, पृष्ठ- 81
3. सुरेंद्र माथुर:यात्रा साहित्य का उद्भव और विकास, पृष्ठ- 10
4. रेखा प्रवीण उप्रेती:हिंदी का यात्रा साहित्य (1960 से 1990 तक), पृष्ठ- 2-3
5. रामदरश मिश्र:तना हुआ इन्द्रधनुष, पृष्ठ- 56-57
6. श्यामसिंह 'शशि':यायावर साहित्य-शास्त्र, भाषा पत्रिका, पृष्ठ-18
7. हरिमोहन:साहित्यिक विधाएँ:पुनर्विचार, पृष्ठ-273
8. रेखा प्रवीण उप्रेती:हिंदी का यात्रा साहित्य (1960 से 1990 तक), पृष्ठ- 1
9. हरिमोहन:साहित्यिक विधाएँ:पुनर्विचार, पृष्ठ-273
10. रेखा प्रवीण उप्रेती:हिंदी का यात्रा साहित्य (1960 से 1990 तक), पृष्ठ- 1
11. रामचंद्र तिवारी:हिंदी का गद्य साहित्य, पृष्ठ-415
12. सं. रघुवंश:आलोचना, जुलाई 1954, पृष्ठ-11-12
13. राहुल सांकृत्यायन:घुमक्कड़शास्त्र, पृष्ठ-89
14. गोविन्द मिश्र:दरख्तों के पार...शाम, पृष्ठ-6
15. यशपाल:लोहे की दीवार के दोनों ओर, पृष्ठ-99
16. धीरेन्द्र वर्मा:हिंदी साहित्य कोश, भाग-2, पृष्ठ- 512
17. सुरेंद्र माथुर:यात्रा साहित्य का उद्भव और विकास, पृष्ठ-345-46
18. रघुवंश:हिंदी साहित्य कोश, पृष्ठ- 610

द्वितीय अध्याय

हिंदी के चयनित यात्रा-वृत्तांत-एक परिचय

2.1 राहुल सांकृत्यायन:एशिया के दुर्गम भूखंडों में

2.2 श्रीरामवृक्ष बेनीपुरी:पैरों में पंख बाँधकर

2.3 यशपाल:लोहे की दीवार के दोनों ओर

2.4 सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन ‘अज्ञेय’:अरे यायावर रहेगा याद

2.5 सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन ‘अज्ञेय’:एक बूँद सहसा उछली

2.6 विष्णु प्रभाकर:हँसते निर्झर:दहकती भट्ठी

2.7 नरेश मेहता:कितना अकेला आकाश

2.8 मोहन राकेश:आखिरी चट्टान तक

2.9 अमृतलाल वेगड़:सौंदर्य की नदी नर्मदा

2.10 निर्मल वर्मा:चीड़ों पर चाँदनी

2.11 कृष्णनाथ:स्पीति में बारिश

2.12 मृदुला गर्ग:कुछ अटके कुछ भटके

2.13 कुसुम खेमानी:कहानियाँ सुनाती यात्राएँ

2.14 असगर वजाहत:चलते तो अच्छा था

2.15 नासिरा शर्मा:जहाँ फव्वारे लहू रोते हैं

2.16 ओम थानवी:मुअनजोदड़ो

2.17 गरिमा श्रीवास्तव:देह ही देश

2.18 अनिल यादव:वह भी कोई देस है महराज

2.19 अनुराधा बेनीवाल:आजादी मेरा ब्रांड

2.20 उमेश पंत:इनरलाइन पास

यात्राएँ मनुष्य के व्यक्तित्व निर्माण में सहायक होती हैं| बहुत सारी जातियाँ दुनिया में घूम-घूमकर भाषा, रीति-रिवाज, पर्व-त्यौहार, प्रकृति के नाना रूप एवं उसके आश्चर्यजनक कृत्य, संस्कृति एवं दुनिया की तमाम गतिविधियों से वाकिफ होती रही हैं और दुनिया को नई चीजों से भी परिचित कराती रही हैं| जो जातियाँ दूसरे देशों का भ्रमण करने नहीं जाती हैं और स्थावर बनी रहती हैं, वे धीरे-धीरे मृत्यु की ओर अग्रसर होने लगती हैं| इनके विपरीत जो जातियाँ बराबर देशाटन करती हैं, वे नए अनुभव प्राप्त करती हैं, नए विचार बाहर से लाती हैं, उन्हें अपने जीवन, समाज में स्थान देती हैं और सदा जागरूक होकर रहती हैं, उनका विकास निरंतर होता रहता है| रेखा प्रवीण उप्रेती ने लिखा है- "सभ्यता के आरंभ से ही यात्रा मानव मात्र के जीवन की अपरिहार्य आवश्यकता रही है| मानव की भौतिक प्रगति तथा उन्नति के क्रम में यात्रा ने आधारभूत भूमिका निभाई है| स्वभाव से ही जिज्ञासु, सौंदर्याकांक्षी तथा प्रगतिशील चेतना से युक्त मानव ने निरंतर चलते रहने में ही जीवन की सिद्धि मानी है| यात्रा में व्यक्ति का मानस सामान्य जीवन-स्थितियों से उबर कर एक व्यापक धरातल पर गतिशील रहता है| उसकी चेतना अधिक उन्मुक्त और उदात्त होकर जीवन और जगत का पर्यवेक्षण करती है, उसके सत्त्व को ग्रहण करती है| साहित्यकार में यह ग्रहणशीलता स्वभावतः अधिक रहती है, इसलिए जब कोई यायावर साहित्य-सृजन की क्षमता अर्जित कर लेता है या कोई साहित्यकार यायावर वृत्ति की ओर उन्मुक्त होता है, तब साहित्य-लेखन जिस विशिष्ट विधा का रूप लेता है, उसे ही 'यात्रा साहित्य' कहा जाता है|"[1]

यात्रा-वृत्तांत में हम व्यक्तियों, स्थितियों, दृश्यों और आधुनिक तकनीकी ज्ञान के बल पर निर्मित विविध विस्मयकारी परिदृश्यों तथा इनके प्रति लेखक की मान्यताओं को देखते-परखते चलते हैं| लेखक की मानसिकता, संवेदनशीलता और संसार रूचि के अनुसार यात्रा-वृत्तांतों के बदलते स्वरूप हमारी चेतना को निरंतर उद्वेलित करते चलते हैं| यात्रा-वृत्तांतकार के साथ सह यात्रा का सुख अनुभव करते हुए हम अपनी जिज्ञासा तुष्ट तो करते ही हैं, उसकी आत्मा का साक्षात्कार भी करते

चलते हैं| यात्रा-वृत्तांत में लेखक अपनी प्रकृति के अनुसार कविता, डायरी, संस्मरण, रेखाचित्र, पत्र आदि के रंग का भी अलग और कभी एक साथ संश्लिष्ट रूप में भरता चलता है| पाठक के रूप में हम लेखक के साथ चलते हुए अतिरंजित होते रहते हैं|

हिंदी यात्रा-वृत्तांत में 1950 के बाद ऐतिहासिक परिवर्तन होता है| यात्रा-वृत्तांतकारों ने यात्रा-वृत्तांत को अपनी-अपनी शैलियों में कहानी, उपन्यास तथा कविता के समकक्ष स्थापित किया| इसलिए इस कालखंड में अन्य खंडो के विपरीत यात्रा वृत्तांतकारों की बहुसंख्या है तथा विषयों का वैविध्य है| 1950 के बाद के यात्रा-वृत्तांत में सहसा बड़ा परिवर्तन आ जाता है| जनमानस की तथा लेखकों, साहित्यिकों की मानसिकता में एक अभूतपूर्व उल्लास, आत्मविश्वास, देश-प्रेम, देश की खोज, आत्मसम्मान और इन सबसे मिलकर उत्पन्न हुई रचनात्मकता यात्रा-वृत्तान्त में उत्पन्न हो जाती है| स्वतंत्र देश के इस कालखंड में समृद्धि की बढ़त से, देश में औद्योगिक तथा कृषि विकास के तीव्रतर होने से, यात्रा संसाधनों की प्रचुरता से यात्राओं की होड़ लगी और यात्रा-वृत्तांतों एवं पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित यात्रा-लेखों में भी इजाफा हुआ|

2.1 राहुल सांकृत्यायन:एशिया के दुर्गम भूखंडों में

हिंदी यात्रा-वृत्तांत की महत्त्वपूर्ण कड़ी राहुल सांकृत्यायन का जन्म उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ जिले के पंदहा गाँव में 9 अप्रैल 1893 को हुआ था| उनकी मृत्यु 14 अप्रैल 1963 को दार्जिलिंग, पश्चिम बंगाल में हुई थी| राहुल सांकृत्यायन हिंदी के प्रमुख साहित्यकार थे| वे एक प्रतिष्ठित बहुभाषाविद् थे और बीसवीं सदी के पूर्वार्ध में उन्होंने यात्रा-वृत्तांत के क्षेत्र में बहुत कुछ दिया| वे हिंदी यात्रा-वृत्तांत के पितामह

कहे जाते हैं| बौद्ध धर्म पर किए गए काम हिन्दी साहित्य में युगान्तरकारी माना जाता है, जिसके लिए उन्होंने तिब्बत से लेकर श्रीलंका तक भ्रमण किया था|

विपुल साहित्य सृजन करके हिंदी साहित्य को अपनी प्रतिभा से आलोकित करने वाले राहुल सांकृत्यायन को उनके विस्तृत एवं बहुविध ज्ञान के कारण महापंडित कहा जाता है| उन्होंने यात्रा-वृत्तांत तथा विश्व दर्शन में महत्त्वपूर्ण साहित्यिक योगदान दिया है| उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ कहानी संग्रह- 'सतमी के बच्चे', 'वोल्गा से गंगा', 'कनैला की कथा', उपन्यास- 'जीने के लिए', 'सिंह सेनापति', 'जय यौधेय', 'भागो नहीं दुनिया को बदलो', 'विस्मृत यात्री', 'दिवोदास', आत्मकथा- 'मेरी जीवन यात्रा', जीवनी- 'नए भारत के नए नेता', 'बचपन की स्मृतियाँ', 'स्तालिन', 'लेनिन', 'कार्ल मार्क्स', 'माओ-त्से-तुंग', 'मेरे असहयोग के साथी', 'जिनका मैं कृतज्ञ', 'सिंहल घुमक्कड़ जयवर्धन', 'कप्तान लाल', यात्रा-वृत्तांत- 'लंका', 'जापान', 'इरान', 'किन्नर देश में', 'चीन में क्या देखा', 'मेरी लद्दाख यात्रा', 'मेरी तिब्बत यात्रा', 'तिब्बत में सवा वर्ष', 'रूस में पच्चीस मास', 'एशिया के दुर्गम भूखंडों में', 'हिमाचल', 'घुमक्कड़शास्त्र' आदि हैं|

राहुल सांकृत्यायन का समग्र जीवन ही रचनाधर्मिता की यात्रा थी| वे जहाँ भी गए, वहाँ की भाषा व बोलियों को सीखा और इस तरह वहाँ के लोगों में घुलमिल कर वहाँ की संस्कृति, समाज व साहित्य का गूढ़ अध्ययन किया| राहुल सांकृत्यायन उस दौर की उपज थे जब ब्रिटिश शासन के अन्तर्गत भारतीय समाज, संस्कृति, अर्थव्यवस्था और राजनीति सभी संक्रमणकालीन दौर से गुजर रहे थे| वह दौर समाज सुधारकों का था| इन सबसे राहुल सांकृत्यायन अप्रभावित नहीं रह सके| अपनी जिज्ञासु एवं घुमक्कड़ प्रवृत्ति के कारण उन्होंने घर त्याग कर वेषधारी साधु से लेकर वेदांती, आर्यसमाजी, किसान नेता, बौद्ध भिक्षु एवं साम्यवादी चिन्तक तक का लम्बा सफ़र तय किया|

21वीं सदी के इस दौर में जब संचार क्रांति के साधनों ने पूरी दुनिया को 'ग्लोबल विलेज' में परिवर्तित कर दिया है और इंटरनेट पर ज्ञान का पूरा संसार उपलब्ध है, ऐसे में राहुल सांकृत्यायन का दुर्लभ ग्रन्थों की खोज में हजारों मील दूर पहाड़ों व नदियों के बीच भटकना, उन ग्रन्थों को खच्चरों पर लादकर लाना, आश्चर्यजनक लगता है| भारतीय मनीषा के अग्रणी विचारक, साम्यवादी चिन्तक, सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूत एवं घुमक्कड़ी प्रवृत्ति के महान पुरुष राहुल सांकृत्यायन के जीवन का मूलमंत्र ही घुमक्कड़ी यानी गतिशीलता रही है| आधुनिक हिंदी साहित्य में राहुल सांकृत्यायन एक यात्रा-वृत्तांतकार, इतिहासकार, तत्त्वान्वेषी, युगपरिवर्तनकारी साहित्यकार के रूप में जाने जाते हैं|

'एशिया के दुर्गम भूखंडों में' महापंडित राहुल सांकृत्यायन का महत्त्वपूर्ण यात्रा-वृत्तांत है, जिसमें लेखक की लद्दाख, तिब्बत, ईरान, अफगानिस्तान की यात्राओं का वर्णन है| इस पुस्तक में उन्होंने अपनी कठिन यात्राओं और उसके खतरों का भी सविस्तार वर्णन किया है| राहुल सांकृत्यायन ने एशिया के दुर्गम भूखंडों की भूमिका में लिखा है- "घुमक्कड़ी सदा मिर्च की तरह कड़वी और स्वादिष्ट रहेगी, तभी वह तरुण-हृदयों को आकृष्ट कर सकेगी| मुझे घुमक्कड़ी में स्वतः एक प्रकार का आनंद आता था-'आनंद आता है' भी कह सकता हूँ, यद्दपि शरीर उसके लिए पहले की तरह सहायक नहीं है| मैंने प्रायः 'स्वान्तःसुखाय' यात्राएँ की थीं, पर उससे दूसरे के हृदयों को भी सुख मिल सकता है और किन्हीं-किन्हीं यात्राओं का का तो उद्देश्य 'स्वान्तःसुखाय से भी कुछ अधिक था| मुझे यह जानकार प्रसन्नता है कि तरुण पीढ़ी अपने देश के महान घुमक्कड़ों की परंपरा को उच्छिन्न होने देना नहीं चाहती|"[2]

इस यात्रा-वृत्तांत में राहुल सांकृत्यायन की चार यात्राओं का सविस्तार वर्णन है| राहुल सांकृत्यायन ने यात्रा वर्णन के माध्यम से लद्दाख, तिब्बत, ईरान, अफगानिस्तान के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक परिवेश का रोचक वर्णन किया है| पुस्तक में तिब्बत और ईरान के इतिहास से संबंधित महत्त्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन किया गया है| यह पुस्तक इतिहास ग्रंथ नहीं है किंतु इसके माध्यम से एशियाई देशों के इतिहास को बखूबी समझा जा सकता है|

‘एशिया के दुर्गम भूखंडों में' की अपनी ऐतिहासिक विशेषता भी है, क्योंकि राहुल जी के देखे हुए कई देशों का इतिहास अब बदल चुका है, इसलिए भी इस पुस्तक का महत्त्व बढ़ जाता है|

2.2 रामवृक्ष बेनीपुरी:पैरों में पंख बाँधकर

रामवृक्ष बेनीपुरी का जन्म बिहार के मुजफ्फरपुर में 23 दिसंबर 1899 में हुआ था और उनका निधन 7 सितम्बर 1968 को हुआ था| वे एक महान विचारक, चिन्तक, पत्रकार, संपादक एवं साहित्यकार थे| रामवृक्ष बेनीपुरी की आत्मा में राष्ट्रीय भावना लहू के रूप में बहती थी| उनके फुटकर लेखों से और उनके साथियों के संस्मरणों से ज्ञात होता है कि जीवन के प्रारंभ काल से ही क्रान्तिकारी रचनाओं के कारण उनके भीतर केवल वही आग नहीं थी, जो कलम से निकलकर साहित्य बन जाती है| वे उस आग के भी धनी थे जो राजनीतिक और सामाजिक आंदोलनों को जन्म देती है, जो परंपराओं को तोड़ती है और मूल्यों पर प्रहार करती है|

रामवृक्ष बेनीपुरी जी के क्रांतिकारी व्यक्तित्व ने उत्कृष्ट देश भक्ति, मौलिक साहित्य प्रतिभा, अथक समाज सेवा की भावना और चारित्रिक पावनता का अद्भुत समन्वय था| वे अन्धकार के खिलाफ़ रोशनी की तलाश के लिए बेचैन थे| चिरविद्रोही रामवृक्ष बेनीपुरी अपने विलक्षण व्यक्तित्व में जीवन की बहुरंगी धाराओं को चतुर्दिक बाधाओं से टकराते रहे| विपत्तियों के झंझावातों, नियति के थपेड़ों से जूझते रहे| सच तो यह है कि आन्दोलन एक पर्याय है रामबृक्ष बेनीपुरी का| बालपन से परिनिर्वाण तक उनका जीवन आन्दोलनों की अटूट श्रृंखला है|

रामवृक्ष बेनीपुरी ने हिंदी की विविध विधाओं में साहित्य सृजन किया फिर भी वे ललित निबंधकार, रेखा चित्रकार, संस्मरणकार तथा पत्रकार के रूप में विशेष उभर कर आए हैं| उन्होंने अपनी बहुमुखी प्रतिभा से हिंदी साहित्य को भाषा

एवं गुण दोनों दृष्टियों से समृद्ध किया है और हिंदी साहित्य में अपना प्रमुख स्थान बना लिया है| उनकी प्रमुख रचनाएँ उपन्यास- 'पतितों के देश में', 'आम्रपाली', कहानी संग्रह- 'माटी की मूरतें', निबंध- 'चिता के फूल', 'लाल तारा', 'कैदी की पत्नी', 'गेहूँ और गुलाब', 'जंजीरें और दीवारें', नाटक- 'सीता का मन', 'संघमित्रा', 'शकुंतला', 'रामराज्य', नेत्रदान, 'गाँवों के देवता', यात्रा-वृत्तांत- 'पैरों में पंख बाँधकर', 'उड़ते चलो, उड़ते चलो' आदि हैं|

पैरों में पंख बाँधकर' रामवृक्ष बेनीपुरी का चर्चित यात्रा-वृत्तांत है| रामवृक्ष बेनीपुरी ने 19 अप्रैल 1951 से 2 जून 1951 तक इंग्लैंड, स्कॉटलैंड, स्विट्जर्लैंड और फ्रांस तक की यात्रा की थी| इस पुस्तक में उल्लेखित देशों की प्रकृति, संस्कृति, राजनीति, सामाजिक, मानसिक और आर्थिक संरचना को शब्दांकित किया गया है| इसमें प्रकृति चित्रण में सौंदर्य बोध, वर्णनों में चित्रात्मकता, यूरोपीय रंगमंच की खूबसूरती, स्त्री जीवन का खुलापन और यूरोपीय जाति की विशेषता देखने को मिलती है|

रामवृक्ष बेनीपुरी ने इस यात्रा-वृत्तांत में 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना का प्रतिपादन किया है, लेकिन विदेश में रहते हुए भी बेनीपुरी जी का अपनों और हिंदुस्तान के प्रति लगाव और श्रद्धा को इस पुस्तक में देख सकते हैं| उन्होंने देश, काल की सीमा को त्यागकर मानव जीवन के वैश्विक संबंधों का विवेचन किया है| लेखक ने इस पुस्तक में यूरोप के प्रसिद्ध व्यक्तियों एवं साहित्यकारों की छवियाँ भी प्रस्तुत की हैं| यूरोपीय महिलाओं के सौंदर्य, उनकी स्वतंत्रता, उनकी आर्थिक सम्पन्नता एवं भारतीय महिलाओं की सामाजिक स्थिति का भी चित्रण इस किताब में मिलता है| उन्होंने यूरोप, ईरान और पंजाब के लोगों की विशेषताओं पर भी कलम चलाई है| पूरी किताब में लेखक ने यूरोपीय समाज और भारतीय समाज की तुलना की है और उसपर चिंता व्यक्त की है| उन्होंने यूरोप और भारतीय सभ्यता, संस्कृति एवं जातीय विशेषताओं की तुलना की है और उसका निचोड़ भी प्रस्तुत किया है| इस यात्रा-वृत्तांत में सिर्फ अनुभूत सत्यों का ही विवरण नहीं है, बल्कि उनमें आत्मीयता की भावधारा का संचार उन्हें कलात्मक स्वरूप प्रदान करता है|

2.3 यशपाल:लोहे की दीवार के दोनों ओर

यशपाल का जन्म 3 दिसंबर, 1903 को पंजाब के फिरोजपुर छावनी में हुआ था| उनका निधन 25 दिसम्बर, 1976 को हुआ था| छात्र जीवन में ही उनके मन में अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ चिंगारी भड़क चुकी थी| लाहौर में नेशनल कॉलेज में वे भगतसिंह, सुखदेव और भगवतीचरण बोहरा के संपर्क में आए और 'नौजवान भारत सभा' से जुड़े| यशपाल क्रांतिकारी जीवन के दौरान 1932 में गिरफ्तारी के बाद जेल भेज दिए गए, लेकिन उनका संघर्ष अनवरत जारी रहा|

यशपाल ने कहानी, उपन्यास, व्यंग्य, संस्मरण, आत्मकथा आदि के जरिए समाज की हकीकत और मानव मन की परतों को सामने लाने की भरपूर कोशिश की| उन्होंने गद्य की प्रायः सभी विधाओं में लिखा है| यशपाल की ख्याति का कारण उनका कथाकार व्यक्तित्व है| उनकी पचास से भी अधिक प्रकाशित कृतियों में 17 कहानी-संग्रह और 11 उपन्यास शामिल हैं| उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ उपन्यास- 'दिव्या', 'देशद्रोही', झूठ-सच', 'दादा कामरेड', 'तेरी मेरी उसकी बात', कहानी संग्रह- 'पिंजड़े की उड़ान', 'फूलों का कुर्ता', 'तुमने क्यों कहा था मैं सुंदर हूँ', 'वो दुनिया', व्यंग्य संग्रह- 'चक्कर क्लब', 'कुत्ते की पूंछ', यात्रा-वृत्तांत- 'लोहे की दीवार के दोनों ओर', 'जय अमरनाथ', 'राह-बीती', 'स्वर्गोद्यान बिना साँप' आदि हैं|

'लोहे की दीवार के दोनों ओर' में सोवियत देश और पूंजीवादी देशों के जीवन और व्यवस्था का आँखों देखा तुलनात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है| यशपाल ने व्यक्तिगत जानकारी के आधार पर सब बातों का विवरण और विश्लेषण करने की चेष्टा की है, लेकिन उन्होंने संस्मरणों के व्यक्तिगत होने पर भी केवल स्मृति

पर ही भरोसा नहीं किया है| यथासंभव स्मृति को प्रमाणिक आधारों, तत्कालीन अदालती दस्तावेजों और समाचारपत्रों द्वारा सही करने की भी कोशिश की है|

यशपाल के यात्रा-वृत्तांत का वस्तुपरक, आत्मपरकता प्रमुख गुण है| भारतीय संदर्भ की दृष्टि से लेखक ने विभिन्न देशों की जमीन, आबोहबा, तरक्की, सफाई, सुघड़ता और निजी विशेषताओं का वर्णन किया है| 'लोहे की दीवार के दोनों ओर' में स्विट्जरलैंड, वियना, मास्को, जार्जिया, लन्दन आदि के विभिन्न स्थानों, संस्थानों, लेखक समितियों, सोवियत संघ के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक स्थितियों और मजदूरों की भागीदारी आदि का आकर्षक वर्णन है| पूंजीवादी और समाजवादी देशों की जीवन प्रणाली और सांस्कृतिक अभिरुचि और मूल्यों की तत्कालीन स्थिति का भी वर्णन है| मनुष्य विभिन्नताओं के बावजूद कितना एक है और उसकी जिजीविषा, संघर्ष करने, बदलने तथा बनाने की शक्ति भी सीमाओं से परे है| यशपाल ने लिखा है- "एक तटस्थ और जागरूक यात्री की संवेदनशील दृष्टि विभिन्न प्रदेशों की विविधता को ही नहीं देखती, अपितु वह उनके बीच बहती मानवीय एकता की सामान्य अंतर्धारा के दर्शन भी करती है| वह अनुभव करता है कि जाति, धर्म, देश की सीमाओं में बंधे मानव की भावनाएँ और संवेदनाएँ एक ही धरातल से जुड़ी हुई हैं|"[3]

किसी भी यात्रा में व्यक्ति देश, काल की सीमाओं से परे होता है| तब उसके न व्यक्तिगत समस्याएँ महत्त्वपूर्ण रहती हैं, न वह कभी जाति, क्षेत्र, भाषा इत्यादि की सीमाओं में बँधकर सोचता है| वह इन सबसे मुक्त होकर सर्वथा मानवीय धरातल पर विचरण करता हुआ मानव मूल्यों के अनुसंधान का प्रयत्न करता है| उसकी रचना में सदैव 'वसुधैव कुटुम्बकम' की प्रेरणा से विश्व वन्धुत्व की भावना की अभिव्यक्ति होती है|

2.4. सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय':अरे यायावर रहेगा याद

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' का जन्म 7 मार्च 1911 को कुशीनगर, उत्तरप्रदेश में हुआ था और मृत्यु 4 अप्रैल, 1987 को दिल्ली में हुई थी| अज्ञेय को कथा-साहित्य को एक महत्त्वपूर्ण मोड़ देने वाले कथाकार, ललित-निबन्धकार, सम्पादक और अध्यापक के रूप में जाना जाता है| उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ कविता- 'भग्नदूत', 'चिंता', 'इत्यलम्', 'हरी घास पर क्षण भर', 'इंद्रधनु रौंदे हुए थे', 'आँगन के पार द्वार', 'कितनी नावों में कितनी बार', 'पहले मैं सन्नाटा बुनता हूँ', उपन्यास- 'शेखर:एक जीवन, 'नदी के द्वीप', 'अपने अपने अजनबी', कहानी संग्रह- 'विपथगा', 'शरणार्थी', 'जयदोल', निबंध- 'सबरंग', 'त्रिशंकु', 'आत्मपरक', नाटक- 'उत्तरप्रियदर्शी', यात्रा-वृत्तांत- 'अरे यायावर रहेगा याद', 'एक बूँद सहसा उछली' आदि हैं|

अज्ञेय को पढ़ाई के दौरान क्रान्तिकारी षड्यन्त्रों में भाग लेने के कारण जेल भी जाना पड़ा| सन 1943-1946 ई. में उन्होंने सेना में भर्ती होकर असम-बर्मा सीमा पर और युद्ध समाप्त हो जाने पर पंजाब-पश्चिमोत्तर सीमा पर एक सैनिक के रूप में सेवा की| सन 1943 ई. में 'तार-सप्तक' का प्रकाशन करके हिंदी साहित्य में नवीन आन्दोलन चलाया| पत्रकार के रूप में उन्हें पर्याप्त सम्मान मिला| वे प्रयोगवाद के प्रवर्त्तक तथा समर्थ साहित्यकार थे| उनकी प्रतिभा गद्य-क्षेत्र में नवीन प्रयोगों में दिखाई देती है|

अज्ञेय की एक कविता 'दूर्वाचल' की पंक्ति इस यात्रा-वृत्तांत का नाम बनकर मुहावरा सा चुकी है और यायावर नाम लगभग 'अज्ञेय' का पर्याय| पूर्वोत्तर के जिन क़स्बों, जंगलों, माझुली जैसे द्वीप में उत्तर भारत का निवासी आज भी नहीं जाता, वहाँ अज्ञेय ने चालीस के दशक में उन्हें फ़ौजी ट्रक हांकते हुए नापा| उन्होंने असम से बंगाल, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, पंजाब, तक्षशिला, एबटाबाद, हसन अब्दाल, नौशेरा, पेशावर और अंत में खैबर यानी भारत की एक सीमा से दूसरी सीमा की यात्रा की| इस यात्रा-वृत्तांत में तरह-तरह के अनुभव, दृश्य, लोग और हादसे सबकुछ हैं| इस यात्रा के अलावा कुल्लू, रोहतांग जोत की यात्रा का भी वर्णन इस कृति में है, जब लेखक ने मौत को करीब से देखा| इस संस्मरण का नाम ही है, 'मौत की घाटी में'|

‘एलुरा’ और ‘कन्याकुमारी से नंदा देवी’ की यात्रा का वर्णन भी कृति में बहुत दिलचस्प है| दक्षिण भारत के बारे में भी उस ज़माने में यह यात्रा-वृत्तांत हिंदी पाठक के लिए जानकारी की परतें खोलने वाला साबित हुआ था|

कोई भी यात्रा मात्र व्यक्ति की यात्रा नहीं होती है| अज्ञेय की यात्रा भी प्रकृति, भूगोल से गुजरती हुई संस्कृति, सभ्यता तक जाती है| अज्ञेय लाहौर, कश्मीर, पंजाब, औरंगाबाद, बंगाल, असम आदि प्रदेशों की प्रकृति और भूमि से गुज़रते हुए अपनी कथात्मक शैली और भाषा की ताजगी से सिर्फ सौन्दर्य को नहीं रचते बल्कि सदियों हम जिनके गुलाम रहे, उनके इतिहास के पन्ने भी पलटते हैं|

2.5 सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन ‘अज्ञेय’:एक बूँद सहसा उछली

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन ‘अज्ञेय’ की यूरोप यात्रा का चर्चित यात्रा-वृत्तांत ‘एक बूँद सहसा उछली’ घुमक्कड़ी का काव्य है| इसमें मन्त्र नहीं आत्मा बोलती है| नश्वरता से मुक्त आलोक छुए अपनेपन की बात पुस्तक को शीर्षक देनेवाली कविता में है, वह पुस्तक में सर्वत्र बिखरा है| पाठक को भी वह अवश्य अपनी परिधि में खींच लेगा|

इस पुस्तक की भूमिका में ही अज्ञेय ने घूमने के उद्देश्य के बारे में चर्चा की है| उन्होंने कहा है कि अगर इस पुस्तक को एक विवरणिका की तरह से सोचकर किसी ने पढ़ने के लिए उठाया है तो उसे निराशा ही हाथ लगेगी। यह पुस्तक रहने-घूमने के उत्तम स्थानों और खर्चे का अंदाजा लगाने के लिए किसी ने पढ़ने की कोशिश की तो उसे भी निराश होना पड़ेगा| लेखक की यात्रा का उद्देश्य धार्मिक तीर्थयात्रा न होकर मनुष्य के अनुभवों की वृद्धि था, ज्ञानार्जन था| लेखक बहुत से कवियों, विचारकों और दार्शनिकों से मिला और वहाँ पर उसने संसार और इस लोक से पर की बातों पर चर्चा की| मनुष्य के अस्तित्व के मूलभूत सवालों पर चर्चा की और अंजान लोगों से मिलकर बातें करने का आनंद लिया| लेखक ने यूरोप के दर्शनीय स्थानों की भी यात्रा की| जब मनुष्य उन दो जगह घूमता है, जिनकी

समानताओं की पहले चर्चा हो चुकी होती है तो स्वाभाविक है कि लेखक के मन में भी इन तथाकथित समानताओं के बारे में कुछ विचार आते हैं| स्विट्ज़रलैंड और कश्मीर की तुलना को व्यर्थ बताते हुए अज्ञेय ने कहा है कि दोनों ही प्रदेशों का अपना सौंदर्य है और उनको यथा अवस्था में रखते हुए उनका अवलोकन किया जाए न कि यह सोचते हुए कि यदि यह पैमाना यहाँ होता तो यह भी उस जगह के जैसे लगता|

'एक बूँद सहसा उछली' अज्ञेय का लिखा हुआ दूसरा यात्रा-वृत्तांत है| इस यात्रा-वृत्तांत में लेखक ने यूरोप के लगभग एक वर्ष के प्रवास के बारे में लिखा है| 'अज्ञेय' यूनेस्को द्वारा प्रायोजित यात्रा में यूरोप गए थे और जब वहाँ गए तो सोचा कि इस यात्रा को सार्थक बनाया जाए| इस यात्रा-वृत्तांत में 'अज्ञेय' ने इटली, स्विट्ज़रलैंड, फ्रांस, नीदरलैंड, इंग्लैंड, स्कॉटलैंड, वेल्श, स्वीडन आदि देशों की अपनी यात्रा के बारे में लिखा है| भिन्न-भिन्न देशों के अपने भिन्न-भिन्न अनुभवों के बारे में बताया है| 'अज्ञेय' ने यात्रा के संपर्क में आई प्रकृति और मानव जीवन का जबर्दस्त सामंजस्य बैठाया है| उन्होंने हर एक चीज का बारीकी से वर्णन किया है| यात्रा में आई कठिनाइयों और तमाम उथल-पुथल का ईमानदारीपूर्वक वर्णन किया है|

2.6 विष्णु प्रभाकर:हँसते निर्झर:दहकती भट्ठी

हिंदी नाटक, निबंध, कविता, जीवनी के क्षेत्र में ख्याति प्राप्त लेखक विष्णु प्रभाकर का जन्म 21 जून 1912 को मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश में हुआ था एवं 11 अप्रैल 2009 को दिल्ली में उनका निधन हुआ था| विष्णु प्रभाकर बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार थे| उन्होंने कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, जीवनी, यात्रा-वृत्तांत आदि क्षेत्रों में सृजन किया है| उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ उपन्यास- 'ढलती रात', 'अर्धनारीश्वर', 'तट के बंधन', 'परछाई', कहानी संग्रह- 'संघर्ष के बाद', 'धरती अब भी घूम रही है', 'मेरा वतन', 'जिंदगी के थपेड़े', 'सफर के साथी', नाटक- 'हत्या के बाद', 'डॉक्टर', 'टूटते परिवेश', 'समाधि', कविता संग्रह- 'चलता चला जाऊँगा',

जीवनी- ‘आवारा मसीहा’, ‘अमर शहीद भगत सिंह’, ‘काका कालेलकर’, संस्मरण- ‘जानेअनजाने-’, ‘यादों की तीर्थयात्रा’, ‘मेरे अग्रज मेरे मीत :’, ‘मेरे हमसफर’, यात्रा-वृत्तांत- ‘ज्योतिर्पूंज हिमालय’, ‘जमुना गंगा के नैहर मै’, हँसते निर्झर:दहकती भट्ठी’ आदि हैं|

विष्णु प्रभाकर भारतीय संस्कृति के व्याख्याता थे| उनकी लगभग सभी विधा की रचनाओं में हम भारतीय संस्कृति की व्याख्या देख सकते हैं| उनका व्यक्तित्व और लेखन के बारे में बात करते हुए डॉ. सविता जनार्दन सबनीस ने लिखा है- “विष्णु प्रभाकर के व्यक्तित्व के दो सशक्त पक्ष हैं, एक उनका बौद्धिक प्रशासकीय व्यक्तित्व दूसरा मानवीय संवेदनाओं से परिपूर्ण सृजनशील साहित्यकार का व्यक्तित्व| इस प्रकार संस्कारित रचनाकार का दायित्व भी दोहरा हो जाता है| एक स्तर पर वे सीधे संस्कार की वकालत न करके परिवर्तन के स्तरों को स्पर्श करते हैं, दूसरे स्तर पर वे अन्धानुकरण से बचकर अपने सामयिक बोध के प्रति भी विश्लेषणात्मक रुख अपनाकर सही और गलत की पहचान करते हैं|”[4]

बाँग्ला के सुप्रसिद्ध लेखक शरत्चंद्र की जीवनी की सामग्री की खोज में विष्णु प्रभाकर सन 1960 में दक्षिण-पूर्व एशिया के छह देशों में गए थे| आज के समय में वहाँ की राजनीतिक स्थिति में बहुत परिवर्तन हो गया है, लेकिन प्रकृति और ऐतिहासिक स्थल हर जगह वैसे ही हैं| कंबोदिया ‘कंपूचिया’ भले ही बन गया हो, लेकिन हिंदुओं के जो सुंदर मंदिर वहाँ पर हैं, वे आज भी वैसे ही हैं| थाईलैंड की स्थिति भी वैसी ही है| ‘एमराल्ड बुद्धा’ का विशाल मंदिर, वैसा ही है| भले ही वर्मा का नाम और शासक बदल गए हों, भारतवासी भी अब वहाँ उतने नहीं रहे, लेकिन उसके बौद्ध मंदिर और प्राकृतिक झीलें, वे सभी वैसी की वैसी हैं, जैसा उन्होंने इस यात्रा-वृत्तांत में वर्णन किया है|

इस पुस्तक में 21 वृत्त संकलित हैं| छह लेखों का संबंध हिमालय में स्थित तीर्थ स्थानों से है, जैसे बदरीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, यमनोत्री| पाँच लेख कश्मीर से सम्बंधित हैं| चार का संबंध सोवियत रूस से, तीन लेख दक्षिण पूर्व-एशिया के

देशों से और एक-एक लेख भारत कलकत्ता, भिलाई और वैशाली से सम्बंधित हैं| वैशाली का ऐतिहासिक महत्त्व है| यहीं पर तीर्थंकर महावीर और तथागत बुद्ध का कार्य-स्थल है| इसका महत्त्व आज भी वैसा ही है, जैसा पिछली सदी में था| कलकत्ता और भिलाई तो आधुनिक नगर हैं, उनमें कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ है| उन्होंने हिमालय के जिन तीर्थों की यात्रा की उनमें केदारनाथ, बदरीनाथ, यमनोत्री और गंगोत्री प्रमुख हैं| इस यात्रा-वृत्तांत में इन तीर्थ स्थलों के धार्मिक महत्त्व को भी उन्होंने बताया है| दक्षिणपूर्व एशिया के देशों और सोवियत रूस की यात्राओं के संबंध में जो वृत्तांत इसमें लिखे गए हैं, उनके माध्यम से रूस की तत्कालीन सामाजिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक स्थिति को समझा जा सकता है|

2.7 नरेश मेहता:कितना अकेला आकाश

हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि नरेश मेहता का जन्म 15 फरवरी 1922 को शाजापुर, मध्यप्रदेश में हुआ था| उनकी मृत्यु 22 नवम्बर 2000 में हुई थी| आधुनिक हिंदी साहित्य जगत में नरेश मेहता कवि, कथाकार, गीतकार, नाटककार, चिन्तक, विचारक आदि रूपों में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं| वे नयी कविता के प्रयोगधर्मी अन्वेषक हैं| सांस्कृतिक गौरव, परम्पराओं एवं मिथकीय सन्दर्भों के बीच सम्बन्धों को दर्शाती उनकी रचनाएं अपनी सृजनधर्मिता के वैशिष्ट से ओतप्रोत हैं| वे मूलतः कवि थे| कवि होने के नाते उनकी रचनाओं में राग-विराग की वैयक्तिक और सामाजिक अनुभूतियाँ हैं|

ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित कवि नरेश मेहता उन शीर्षस्थ लेखकों में हैं, जो भारतीयता की अपनी गहरी दृष्टि के लिए जाने जाते हैं| नरेश मेहता ने आधुनिक कविता को नई व्यंजना के साथ नया आयाम दिया है| रागात्मकता, संवेदना और उदात्तता उनकी सर्जना के मूल तत्त्व हैं, जो उन्हें प्रकृति और समूची

सृष्टि के प्रति पर्युत्सुक बनाते हैं| उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ उपन्यास- 'उत्तर कथा' (दो भागों में), कविता संग्रह- 'चैत्या', 'प्रवाद पर्व', 'अरण्या', 'उत्सवा', यात्रा-वृत्तांत- 'कितना अकेला आकाश' आदि हैं|

'कितना अकेला आकाश' नरेश मेहता का चर्चित यात्रा-वृत्तांत है| अगस्त 1989 में नरेश मेहता ने युगोस्लाविया के एक छोटे शहर स्त्रूगा में आयोजित काव्य-समारोह में एक मात्र भारतीय प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया था| इस यात्रा-वृत्तांत में उन्होंने युगोस्लाविया और अन्य यूरोपीय लोगों की मानसिक बनावट का जो रूप प्रस्तुत किया है, वह बड़ा ही ह्लदयस्पर्शी और प्रभावी है| इस यात्रा-वृत्तांत में व्यक्तियों, स्थानों और प्राकृतिक दृश्यों का जो वर्णन किया गया है, वह नरेश मेहता जैसा संवेदनशील लेखक ही कर सकता है|

यूरोप के लोगों का खुलापन, उनकी धार्मिक चेतना, अपने सांस्कृतिक प्रतीकों के प्रति लगाव, उनकी जीवन शैली, खान-पान, रहन-सहन, उनका सौंदर्य बोध और भारत को जानने की उनकी ललक आदि का बड़ा ही मोहक चित्र इस यात्रा-वृत्तांत में खींचा गया है| इस यात्रा-वृत्तांत के माध्यम से हम जानते हैं कि यूरोपीय लोग भारतीय 'रामायण', 'महाभारत' और कालिदास को जानते हैं| आधुनिक भारत में वे गांधी और रवीन्द्रनाथ टैगोर के आलावा किसी को नहीं जानते हैं| यात्रा-वृत्तांत में नरेश मेहता ने लिखा है कि मैंने कुछ आधुनिक लेखकों की चर्चा चलानी चाही थी पर वे उसके बारे में कुछ भी जानना नहीं चाहते थे और उन्होंने भारतीय लेखकों को सिर्फ अनुकरण करनेवाला बताया, जिसकी ओर इशारा करते हुए नरेश मेहता ने लिखा है- "कई कवियों ने, विशेषकर साम्यवादी देशों के कवियों ने तो खुलकर कहा कि आपकी भाषा में आधुनिकता के नाम पर यह पश्चिम की जूठन क्यों लिखी जा रही है? और इससे क्या होगा? क्यों आधुनिकता का अर्थ आप केवल पश्चिम को ही स्वीकार करते हैं?"[5]

2.8 मोहन राकेश:आखिरी चट्टान तक

हिंदी के सुप्रसिद्ध नाटककार मोहन राकेश का जन्म 8 जनवरी 1925 को अमृतसर, पंजाब में हुआ था और उनका निधन 3 जनवरी 1972 को दिल्ली में हुआ था| मोहन राकेश उन चुनिंदा साहित्यकारों में हैं जिन्हें 'नयी कहानी आंदोलन' का नायक माना जाता है और साहित्य जगत में अधिकांश लोग उन्हें उस दौर का 'महानायक' कहते हैं| हिंदी नाटक के क्षितिज पर मोहन राकेश का उदय उस समय हुआ, जब स्वाधीनता के बाद पचास के दशक में सांस्कृतिक पुनर्जागरण का ज्वार देश में जीवन के हर क्षेत्र को स्पन्दित कर रहा था|

अपनी साहित्यिक अभिरुचि के कारण मोहन राकेश का अध्यापन कार्य में मन नहीं लगा और एक वर्ष तक उन्होंने 'सारिका' पत्रिका का सम्पादन किया। इस कार्य को भी अपने लेखन में बाधा समझकर इससे किनारे कर लिया और जीवन के अन्त तक स्वतंत्र लेखन ही उनके जीविकोपार्जन का साधन रहा| मोहन राकेश हिंदी के बहुमुखी प्रतिभा संपन्न नाटककार और उपन्यासकार थे| समाज की संवेदनशील अनुभूतियों को चुनकर उनका सार्थक सम्बन्ध खोज निकालना उनकी कहानियों की विषय-वस्तु थी| उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ उपन्यास- 'अंधेरे बंद कमरे', 'अंतराल, 'न आनेवाला कल', कहानी संग्रह- 'क्वार्टर तथा अन्य कहानियाँ', 'पहचान तथा अन्य कहानियाँ', 'नए बादल', नाटक- 'अषाढ़ का एक दिन', 'लहरों के राजहंस', 'आधे अधूरे', निबंध संग्रह- 'परिवेश', यात्रा-वृत्तांत- 'आखिरी चट्टान तक' आदि हैं|

'आख़िरी चट्टान तक' बहुआयामी रचनाकार मोहन राकेश का चर्चित यात्रा-वृत्तांत है| कथाकार मोहन राकेश ने इस संचित सामग्री को मनुष्य, प्रकृति और विराट जीवन के विवेचन की तरह अपनाते हुए 'आख़िरी चट्टान तक' की रचना की है| यात्रा के दौरान उत्पन्न स्वाभाविक 'अतिरिक्त भावुकता' लिखते समय तटस्थता में परिवर्तित हुई और मोहन राकेश ने यात्रा का गत्यात्मक मूल्यांकन

प्रस्तुत किया| पुस्तक पढ़ते समय अनुभव होता रहता है कि हम एक विलक्षण बुद्धिजीवी की बाह्य और अन्तर्यात्रा के सहपथिक हैं|

मोहन राकेश जीवन के जिन बिम्बों को रचना में प्रस्तुत करने के लिए जाने जाते हैं, उनके कुछ संवेदनशील उदाहरण 'आख़िरी चट्टान तक' में प्राप्त होते हैं| मानव मनोविज्ञान और सामाजिक संरचना की सूक्ष्म समझ के कारण यह यात्रा-वृत्तांत भौतिक विवरण और आन्तरिक व्याख्या का निदर्शन बन गया है| मोहन राकेश इस पुस्तक में यात्री, यायावर और घुमक्कड़ की भूमिका में एक साथ दिखाई देते हैं| मोहन राकेश ने इन विवरणों में बहुरंगी जीवन को चित्रित किया है| भाषा इतनी पार्दर्शी है कि लेखक के अनुभव पाठक के अनुभव में रूपान्तरित होने लगते हैं|

इस कृति में मोहन राकेश की 1952-1953 के दौरान की गई यात्राओं का वर्णन है| उनकी गोवा से कन्याकुमारी तक के यात्रानुभव का वर्णन है| जिस तरह से मोहन राकेश ने मनोविज्ञान और सामाजिक संरचना की सूक्ष्म समझ का परिचय दिया है, वह अद्भुत है| यात्रा वर्णन में भावुक होते हुए भी मोहन राकेश ने तटस्थता बनाए रखा है| मोहन राकेश का यह यात्रा-वृत्तांत कोई सोच-समझकर और रूप-रेखा बनाकर की गई यात्रा का परिणाम नहीं है बल्कि एक अव्यवस्थित यात्रा का यात्रानुभव है| वे यात्रा में सुख-सुविधाओं की परवाह किए वगैर निरंतर चलते रहे जिसे हम उन्हीं के शब्दों समझते हैं- "घर से चलते समय मन में यात्रा की कोई बनी हुई रूप-रेखा नहीं थी| बस एक अस्थिरता ही थी जो मुझे अंदर से धकेल रही थी| समुद्र-तट के प्रति मन में एक ऐसा आकर्षण था कि मेरी यात्रा की कल्पना में समुद्र का विस्तार अनायास ही आ जाता था| बहुत बार सोचा था कि कभी समुद्र-तट के साथ-साथ एक लम्बी यात्रा करूँगा, परंतु यात्रा के लिए समय और साधन साथ-साथ मेरे पास कभी नहीं रहते थे|"[6]

2.9 अमृतलाल वेगड़:सौंदर्य की नदी नर्मदा

अमृतलाल वेगड़ का जन्म 3 अक्टूबर 1928 को जबलपुर, मध्यप्रदेश में हुआ था| उनकी मृत्यु 6 जुलाई 2018 को हुई थी| उन्होंने नर्मदा संरक्षण में उल्लेखनीय

भूमिका निभाई थी| अमृतलाल वेगड़ ने पर्यावरण संरक्षण के लिए उल्लेखनीय काम किया है| उन्होंने नर्मदा की 4 हज़ार किलोमीटर की पदयात्रा की| उन्होंने नर्मदा अंचल में फैली बेशुमार जैव विविधता से दुनिया को परिचित कराया| 1977 में 47 साल की उम्र में नर्मदा परिक्रमा करनी शुरू की, जो 2009 तक जारी रही| मूलतः गुजराती संस्कृति से ताल्लुक रखने वाले अमृतलाल वेगड ने शांति निकेतन में कला का अध्ययन किया| नर्मदा के प्रति उनकी गहरी आस्था थी| यही वजह है कि उनकी नर्मदा वृत्तांत की तीन पुस्तकें हिंदी, गुजरती, मराठी, बंगला, अंग्रेज़ी और संस्कृत मे प्रकाशित हो चुकी हैं|

सैलानी की यात्रा का तेवर अलग होता है और यात्री का अलग| अमृतलाल वेगड़ नर्मदा की विकट मगर सरस यात्राओं के लिए पहचाने गए हैं| वे चित्रकार भी हैं और कला-शिक्षक भी| अमृतलाल वेगड़ गुजराती तथा हिंदी भाषा के विख्यात साहित्यकार साथ ही जाने-माने चित्रकार थे| वे गुजराती और हिंदी में साहित्य अकादमी पुरस्कार एवं अनेक राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित हुए थे|

यात्रा के रेखांकनों-चित्रों से सुसज्जित उनकी यात्रा-त्रयी इन किताबों के साथ पूर्णता पाती है- 'सौंदर्य की नदी नर्मदा', 'अमृतस्य नर्मदा', 'तीरे-तीरे नर्मदा'| यात्राओं का यह सिलसिला अमृतलाल वेगड़ ने पत्नी कांताजी के साथ विवाह की पचासवीं सालगिरह के मौके पर शुरू किया था| अंतराल में नर्मदा जैसे उन्हें फिर बुलाती रही और वे वृद्धावस्था में भी अपने सहयात्रियों के साथ निकलते रहे| हम इन यात्रा-वृत्तांतों में कदम-कदम पर नर्मदा के इर्द-गिर्द के लोकजीवन से दो-चार होते हैं| अमृतलाल वेगड़ के संस्मरणों में नदी, नदी नहीं रहती, एक जीवंत शख्सियत बन जाती है, जो हजारों वर्षों से अपने प्रवाह में जीवन को रूपायित और आलोकित करती आई है|

'सौंदर्य की नदी नर्मदा' नामक यात्रा-वृत्तांत में अमृतलाल वेगड़ द्वारा की गई दस यात्राओं का विवरण है| यह यात्रा उन्होंने 1977 से 1987 तक की थी| इस पुस्तक में उन्होंने नर्मदा का इतिहास, भूगोल और उसके धार्मिक महत्त्व के बारे में

विस्तृत बताया है| नदी के ऊपर बनाए जा रहे बाँध के कारण विस्थापन और उजाड़ की समस्या और इसके दूरगामी परिणाम को भी उठाया है| अमृतलाल वेगड़ जन्मजात घुमक्कड़ रहे हैं| उन्होंने हमेशा यात्राएँ कीं और जो कुछ भी देखा, महसूस किया, उससे हम पाठक को भी रू-ब-रू कराया| सौंदर्य की नदी नर्मदा एक उच्च कोटि का यात्रा-वृत्तांत है, जिसे उन्होंने इक्कीस पड़ावों में लिखा है| पुस्तक की शुरुआत उन्होंने पुराणों में दर्ज नर्मदा की जन्मकथा से की है| पुराणों में नर्मदा को शिव तनया बताया गया है, जो भगवान शंकर के नीलकंठ से निसृत हुई हैं| शिव ने नर्मदा को अमृतमयी और दर्शन मात्र से फलदायिनी बताया है| जबलपुर से उन्होंने अपनी यात्रा प्रारंभ की और भरूच में समाप्त की| इस यात्रा के दौरान उनके संपर्क में जो कुछ भी आया उनका जीवंत वर्णन किया है| यात्रा में आने वाली नर्मदा की विशेषताओं, प्रकृति के नाना रूपों, पशु, पक्षी एवं जन-जीवन तथा उसमें घटित दैनंदिन जीवन के तमाम क्रियाकलापों का वर्णन किया है|

2.10 निर्मल वर्मा:चीड़ों पर चाँदनी

निर्मल वर्मा का जन्म 3 अप्रैल 1929 को शिमला में और निधन 25 अक्टूबर 2005 को दिल्ली में हुआ था| 'परिंदे' कहानी से प्रसिद्धि पाने वाले निर्मल वर्मा की कहानियाँ अभिव्यक्ति और शिल्प की दृष्टि से अच्छी हैं| आधुनिकबोध लाने वाले कहानीकारों में निर्मल वर्मा का अग्रणी स्थान है| उन्होंने बहुत कम लिखा है, लेकिन जितना लिखा है, उतने से ही ख्याति पाने में सफल रहे| हिंदी के महान साहित्यकारों में से 'अज्ञेय' और निर्मल वर्मा जैसे कुछ ही साहित्यकार ऐसे रहे हैं, जिन्होंने अपने प्रत्यक्ष अनुभवों के आधार पर भारतीय और पश्चिम की संस्कृतियों के अंतर्द्वन्द्व पर गहनता एवं व्यापकता से विचार किया है|

निर्मल वर्मा के गद्य में कहानी, निबंध, यात्रा-वृत्तांत और डायरी की समस्त विधाएं अपना-अपना अलगाव छोड़कर अपनी चिंतन-क्षमता और सृजन प्रक्रिया में समरस हो जाती हैं| निर्मल वर्मा के यहाँ संसार का आशय सम्बन्धों की छाया या

प्रकाश में ही खुलता है| सम्बन्धों के प्रति यह संवेदनशीलता उन्हें अनेक अप्रत्याशित सूक्ष्मताओं में भले ले जाती हो, लेकिन उन्हें ऐसा कथाकार नहीं बनाती, जिसका चिन्तन अलग से हस्तक्षेप करते चलता हो| वे अर्थों के बखान के नहीं, अर्थों की गूँजों और अनुगूँजों के कथाकार हैं| उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ कहानी संग्रह- 'परिंदे', 'जलती झाड़ी', 'पिछली गर्मियों में', 'बीच बहस में', 'कौवे और काला पानी', उपन्यास- 'वे दिन', 'लाल टीन की छत', 'एक चिथड़ा सुख', 'अंतिम अरण्य', नाटक- 'तीन एकांत', निबंध- 'शब्द और स्मृति', 'कला का जोखिम', 'ढलान से उतरते हुए', 'सर्जनपथ के सहयात्री', यात्रा-वृत्तांत- 'चीड़ों पर चाँदनी', 'हर बारिश में', 'धुंध से उठती धुन' आदि हैं|

'चीड़ों पर चाँदनी' यात्रा-वृत्तांत लेखक ने यूरोप के दौरे पर लिखा है| निर्मल वर्मा ने उस वक्त के बाद का यूरोप देखा है, जब दूसरे महायुद्ध को करीब बीस साल गुज़र चुके थे| निर्मल वर्मा ने यूरोप के अलग-अलग शहरों को देखा| वे साठ के दशक में यूरोप की यात्रा पर थे| इस यात्रा-वृत्तांत में लगता है कि एक के बाद एक शहर की ओर हम बढ़ते जाते हैं और ऐसा एहसास कि हम उसे अपनी आंखों से देख रहे हैं| ये बिल्कुल ऐसा कि कोई आपकी आँख बन गया हो| इस यात्रा-वृत्तांत में लिखावट की खूबसूरती की मिसाल जगह-जगह पर देखने को मिलते हैं, फिर वो चाहे बियर बार के अंदर का माहौल हो या किसी फुटपाथ पर चलते हुए जगह का वर्णन|

विदेश यात्रा निर्मल वर्मा के लिए महज़ पर्यटकों की सैर नहीं रही| वे जर्मनी जाते हैं तो नाटककार ब्रेख्त उनके साथ चलते दिखाई पड़ते हैं| कोपनहेगन में दूसरे यूरोपीय देशों की मौजूदगी भी साथ रहती है| आइसलैंड की हिमनदियों और क्षेत्र की साहित्यिक संस्कृति का आंखों देखा वर्णन हिंदी में इससे पहले शायद ही देखने में आया हो| इस यात्रा-वृत्तांत के कई साल बाद निर्मल वर्मा ने 'सुलगती टहनी' (कुंभ यात्रा) और डायरी की शक्ल में अनेक दूसरे यात्रा-वृत्तांत भी लिखे, पर 'चीड़ों पर चांदनी' इस विधा में उनकी अनूठी कृति है|

निर्मल वर्मा ने इस यात्रा-वृत्तांत को तीन भागों में विभाजित किया है| लेखक ने इसमें चेकोस्लोवाकिया, जर्मनी, डेनमार्क, आस्ट्रिया, फ़्रांस, आयरलैंड,

आदि देशों की साहित्यिक गतिविधियों, विश्वयुद्ध के प्रभाव एवं वहाँ की जीवन-शैलियों का वर्णन किया है| निर्मल वर्मा ने यूरोप की सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं आर्थिक स्थिति का ही वर्णन नहीं किया बल्कि ऐतिहासिक धरोहरों और साहित्यिक मूल्यों का भी वर्णन किया है| यूरोप में जो कुछ भी लिखा-पढ़ा जा रहा है, उन सब पर प्रकाश डाला गया है| इस यात्रा-वृत्तांत में उन्होंने कुछ बड़े रचनाकारों के दृष्टिकोण का भी वर्णन किया है| इस पुस्तक में युद्ध की विभीषिका और उसके दुष्परिणाम का भी वर्णन किया गया है| द्वितीय विश्वयुद्ध में झुलसा हुआ जर्मनी और उसके बाद का पश्चिम और पूर्वी जर्मनी के सामाजिक और आधारभूत बदलावों का लेखक ने बहुत ही सजीव वर्णन किया है| निर्मल वर्मा ने इस यात्रा-वृत्तांत में यूरोपीय देशों के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन भी प्रमुखता से किया है|

2.11 कृष्णनाथ:स्पीति में बारिश

कृष्णनाथ का जन्म 1934 में वाराणसी, उत्तरप्रदेश में हुआ है| काशी हिंदू विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में एम.ए. के बाद उनका झुकाव समाजवादी आन्दोलन और बौद्ध दर्शन की ओर हो गया| बौद्ध दर्शन में उनकी गहरी पैठ है| उन्होंने लोहिया और जयप्रकाश नारायण के साथ भी काफी समय व्यतीत किया है| वे अर्थशास्त्र के विद्वान हैं और काशी विद्यापीठ में प्रोफेसर रहे हैं| उनका जुड़ाव पत्रकारिता से भी रहा है| हिंदी की पत्रिका कल्पना के संपादक मंडल में रहे और अंग्रेजी की पत्रिका मैनकाइंड का कुछ वर्षों तक संपादन भी किया| राजनीति, पत्रकारिता और अध्यापन की प्रक्रिया से गुजरते-गुजरते वे बौद्ध दर्शन की ओर मुड़े| उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ यात्रा-वृत्तांत- 'लद्दाख में राग-विराग', 'किन्नर धर्म लोक', 'स्पीति में बारिश', 'पृथ्वी परिक्रमा', 'अरूणाचल यात्रा', 'किन्नौर यात्रा', 'हिमालय यात्रा' आदि हैं|

इतना कुछ करने के बाद कृष्णनाथ जी की सृजन-आकांक्षा पूरी नहीं हुई, इसलिए वे यायावर हो गए| एक यायावरी तो उन्होंने वैचारिक धरातल पर की थी, दूसरी सांसारिक अर्थ में| उन्होंने हिमालय की यात्रा शुरू की और उन स्थलों को

खोजना और खंगालना शुरू किया जो बौद्ध धर्म और भारतीय मिथकों से जुड़े हैं| कृष्णनाथ ने जब इस यात्रा को शब्दों में बाँधना शुरू किया तो यात्रा-वृत्तांत भी समृद्ध हुआ|

'स्पीति में बारिश' उनका चर्चित यात्रा-वृत्तांत है| स्पीति हिमाचल प्रदेश में स्थित है| यह स्थान अपनी प्राकृतिक एवं भौगोलिक विशेषताओं के कारण अन्य पर्वतीय स्थलों से भिन्न है| लेखक ने इस पुस्तक में स्पीति का इतिहास, धर्म, संस्कृति, जनसँख्या, ऋतु, फसल, जलवायु तथा भूगोल का वर्णन किया है, जो परस्पर एक-दूसरे से संबंधित हैं|

प्रस्तुत यात्रा-वृत्तांत में कृष्णनाथ स्पीतिवासियों के जीवन पर बौद्ध धर्म का प्रभाव, हिन्दू, बौद्ध तथा आदिम धर्मों के मिश्रण तथा योग को सूक्ष्मता से परखते चलते हैं| लेखक ने स्पीति में रहने वाले लोगों के कठिनाई भरे जीवन का भी वर्णन किया है| इस यात्रा-वृत्तान्त का मुख्य उद्देश्य बौद्ध धर्म के धार्मिक, सांस्कृतिक परिवेश का अन्वेषण है| कृष्णनाथ ने यात्रा ही बौध धर्म और संस्कृति के अन्वेषण के उद्देश्य से की थी| लेखक ने खुद ऐसा लिखा है- "मूल बौद्ध धर्म भारत से लुप्त हो गया, ऐसा मानने की भूल प्रायः इतिहासकार करते हैं|...मूल बौद्ध धर्म के अध्ययन के लिए भी हिमालय में सुरक्षित बौद्ध धर्म और संस्कृति और शास्त्र का अध्ययन जरूरी है| सिर्फ बौद्ध धर्म की पहचान के लिए नहीं, अपनी ही खोई हुई पहचान के लिए यह खोज जरूरी है|"[7]

2.12 मृदुला गर्ग:कुछ अटके कुछ भटके

25 अक्टूबर 1938 में कलकत्ता में जन्मीं मृदुला गर्ग हिंदी की लोकप्रिय लेखिकाओं में से एक हैं| उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध-संग्रह तथा यात्रा-वृत्तांत मिलाकर उन्होंने पच्चीस से अधिक पुस्तकों की रचना की है| 1960 में स्नातकोत्तर करने के बाद उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय में अध्यापन भी किया है| उनके उपन्यासों को

अपने कथानक की विविधता और नयेपन के कारण समालोचकों की काफी सराहना मिली| उनके उपन्यास और कहानियों का अनेक हिंदी भाषाओं तथा जर्मन, चेक, जापानी और अँग्रेजी में अनुवाद हुआ है| वे स्तंभकार रही हैं, पर्यावरण के प्रति सजगता प्रकट करती रही हैं तथा महिलाओं एवं बच्चों के हित में समाज सेवा के काम करती रही हैं| उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ उपन्यास- ‘उसके हिस्से की धूप’, ‘चितकोबरा’, ‘कठगुलाब’, ‘मिलजुल मन’, कहानी संग्रह- ‘कितनी कैदें’, ‘टुकड़ा-टुकड़ा आदमी’, ‘डैफोडिल जल रहे हैं’, ‘समागम’, निबंध- ‘रंग-ढंग’, ‘चुकते नहीं सवाल’, नाटक- ‘एक और अजनबी’, ‘जादू का कालीन’, यात्रा-वृत्तांत- ‘कुछ अटके कुछ भटके’ आदि हैं|

मृदुला गर्ग की रचनाओं से हिंदी साहित्य को एक नयी दिशा मिली| उनकी लेखनी का प्रमुख केन्द्र हमारे समाज में घर के अंदर कैद वे स्त्रियाँ हैं, जो कई तरह के संघर्षों और मुश्किलों से जूझती रहती हैं| इन्हीं स्त्रियों के आसपास वह नई कहानियाँ बुनती हैं| मृदुला गर्ग हिंदी साहित्य के उन कुछ खास लेखिकाओं में से एक हैं, जिन्होंने अपने लेखन के जरिए स्त्री संघर्ष के विविध पहलुओं को चित्रित किया है| इसके अलावा उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से स्त्री-पुरुष सम्बन्धों में नए आयामों पर प्रकाश डाला है|

‘कुछ अटके कुछ भटके’ मृदुला गर्ग का चर्चित यात्रा-वृत्तांत है, जिसमें हिंदुस्तान और विदेश यानी सूरीनाम, अमेरिका से संबंधित यात्राओं का संकलन है| आसाम, केरल के वर्षावनों और अभ्यारण्यों की अठखेलियाँ दर्ज हैं तो हिरोशिमा की त्रासदी का वर्णन देख आँखें भी नम हो जाती हैं| जुमले, व्यंग्य, कटाक्ष और एक मस्ती भरी लापरवाही पूरी पुस्तक में देखने को मिलती है| यात्रा में आए जंगल, दरख्त, पर्वत-घाटी, पशु-पक्षी, मनुष्य के पूरक संबंधों को रचते चलते हैं| हिंदुस्तान और बाहर के सामाजिक स्थिति का भी वर्णन है, जिसमें उन्होंने हिंदुस्तान को छोड़कर विदेशों में बस गए तथाकथित लोगों पर करारा व्यंग्य किया गया है| विदेशों में बस गए लोग हिंदुस्तान में रह रहे लोगों को कमतर आंकने लगते हैं, जबकि वे खुद भी उसी तरह की जीवन शैली में जी रहे होते हैं| ऐसे लोगों पर करारा व्यंग्य करते हुए लेखिका ने लिखा है- “बदकिस्मती से मैं कई बार अमरीकी हिन्दुस्तानियों के घरों में रही हूँ| हर बार लगा, अपने देश के किसी छोटे कस्बे में रह

रही हूँ| मेजबानों की दोस्त मंडली हिन्दुस्तानी, बातचीत हिन्दुस्तानी यानी जेवर-कपड़े, पैसे और परनिंदा पर केंद्रित| बस रुपयों की जगह डॉलर काबिज| और भारत की बदहाली के साथ अमरीका में अपनी खुशहाली का जिक्र खैर लाजिमी|"[8]

2.13 कुसुम खेमानी:कहानियाँ सुनाती यात्राएँ

कुसुम खेमानी का जन्म 19 सितम्बर 1944 को कलकत्ता में हुआ है| वे पेशे से एक प्राध्यापिका हैं| उन्होंने कई विधाओं में लेखन कार्य किया है| कुसुम खेमानी एक सफल घुमक्कड़ भी हैं, जो मौका पाते ही कहीं भी चल पड़ती हैं| यात्रा लेखन के क्षेत्र में भी उनका योगदान सराहनीय है| उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ उपन्यास- 'लावण्यदेवी', 'लालबत्ती की अमृतकन्याएँ', कहानी संग्रह- 'कुसुम खेमानी की लोकप्रिय कहानियाँ', यात्रा-वृत्तान्त- 'कहानियाँ सुनाती यात्राएँ' आदि हैं|

'कहानियाँ सुनाती यात्राएँ' बतरस और किस्सागो शैली में रचित यात्रा-वृत्तांत है, जिसमें निबंध, कहानी, संस्मरण सब एक हो गए हैं| इस पुस्तक में हरिद्वार, उज्जैन, कोलकाता, कश्मीर, शिलांग, हैदराबाद से लेकर उर्बन, रोम, बर्लिन, स्विट्जलैंड, प्राग, मास्को, मिस्र, मॉरीशस, भूटान और अलास्का तक की यात्रा का वर्णन है| वहाँ की भौगोलिक और आनुभूतिक यात्राओं का ही वर्णन नहीं है, बल्कि ऐतिहासिक, सांस्कृतिक यात्रा के भी साक्ष्य मौजूद हैं|

किताब शुरू होती है एक कविता से| सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की कविता, 'तुम एक यात्रा हो-जहाँ कुछ छूटने का अर्थ कुछ मिलना है, जहाँ हर थकान एक नई स्फूर्ति है, जहाँ हर अनुभूति ईश्वर की मूर्ति है|' इस यात्रा-वृत्तांत की खास बात है कि यह आपको सिर्फ यात्रा के भूगोल से ही परिचित नहीं करवाता, बल्कि उसके इतिहास के बारे में भी बताता है| पाठक को किताब की भाषा थोड़ी जटिल लग सकती है, लेकिन शब्दों की तारतम्यता और किस्सागोईनुमा शैली किताब को सार्थकता देती है|

कमर बांध लो घुमक्कड़ों, दुनिया तुम्हारे स्वागत के लिए बेकरार है| हिंदी यात्रा-वृत्तांत में अहम योगदान देने वाले राहुल सांकृत्यायन अक्सर यात्रा प्रेमियों को यही संदेश दिया करते थे| वह कहते थे, घुमक्कड़ी सिर्फ व्यक्ति के मन को ही मुक्त नहीं करती, बल्कि उसकी सोच को भी विस्तार देती है| देश और दुनिया के तमाम खूबसूरत शहरों की यात्रा के बाद इसी सोच के विस्तार को कुसुम खेमानी ने इस यात्रा-वृत्तांत में दर्ज किया है| इस यात्रा-वृत्तांत में कुसुम खेमानी की लेखन यात्रा को हरिद्वार, हैदराबाद, गोवा, कलकत्ता, कश्मीर और शिलांग से लेकर विदेश के मिस्त्र, मास्को, वैंकूवर, भूटान, स्विटजरलैंड, बर्लिन और डर्बन जैसे कई पड़ाव मिलते हैं|

'कहानियाँ सुनाती यात्राएँ' एक ऐसा यात्रा-वृत्तांत है, जिसमें न सिर्फ भौगोलिक दर्शन है, बल्कि अनुभूति और रोमांच का प्रसरण भी है| इस पुस्तक से यात्रा-वृत्तांत को एक नया आयाम मिलता है, जिसके माध्यम से इस विधा और शैली को परिपुष्ट किया जा सके| इस यात्रा-वृत्तांत की भाषा उतनी ही जीवंत और रोचक है, जितनी यात्रा| इसके जरिए कुसुम खेमानी ने हिंदुस्तान और विश्व संस्कृति की जो अप्रतिम व्याख्या की है वो अनन्य है| इस यात्रा-वृत्तांत को परम्परागत शैली से भिन्न इस अंदाज में प्रस्तुत किया गया है कि सभी प्रस्तुतियां एकाकार हो गई हैं| कुसुम खेमानी ने इस यात्रा-वृत्तांत में डरबन, रोम, बर्लिन, स्विट्जरलैण्ड, प्राग, मॉस्को, मिस्त्र, भूटान, अलास्का, हरिद्वार, कश्मीर, उज्जैन, कोलकाता, शिलांग, हैदराबाद तथा शांतिनिकेतन को एक सूत्र में पिरो दिया है|

2.14 असगर वजाहत:चलते तो अच्छा था

असगर वजाहत का जन्म 5 जुलाई 1946 को फतेहपुर, उत्तरप्रदेश में हुआ है| असग़र वजाहत मूलतः कहानीकार हैं| कहानी के बाद उन्होंने गद्य साहित्य की लगभग सभी विधाओं में लेखन किया है और अपने लिए हमेशा नए प्रतिमान बनाए हैं| असगर वजाहत हिन्दी के उन चुनिन्दा रचनाकारों में से हैं, जिन्होंने हिन्दी के दायरे का सर्जनात्मक विस्तार किया है| असगर वजाहत नियमित रूप से अखबारों और पत्रिकाओं के लिए भी लिखते रहे हैं| असग़र वजाहत के लेखन में अनेक कहानी

संग्रह, पाँच उपन्यास, आठ नाटक, यात्रा-वृत्तांत और कई अन्य रचनाएँ शामिल हैं| उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ उपन्यास- 'सात आसमान', 'कैसी आगी लगाई', 'पहर-दोपहर', 'मन माटी', कहानी संग्रह- 'मैं हिंदू हूँ', 'दिल्ली पहुँचना है', 'डेमोक्रेसिया', 'भीड़तंत्र', नाटक- 'समिधा', 'फिरंगी लौट आये', 'इन्ना की आवाज', यात्रा-वृत्तांत- 'चलते तो अच्छा था', 'रास्ते की तलाश में', 'पाकिस्तान का मतलब क्या', 'अतीत का दरवाजा', 'स्वर्ग में पाँच दिन' आदि हैं|

'चलते तो अच्छा था' ईरान और आजरबाईजान की यात्रा के यात्रा-वृत्तांत हैं| असग़र वजाहत ने केवल इन देशों की यात्रा ही नहीं की बल्कि उनके समाज, संस्कृति और इतिहास को समझने का भी प्रयास किया है| उन्हें इस यात्रा के दौरान विभिन्न प्रकार के रोचक अनुभव हुए हैं, जो हम इस यात्रा-वृत्तांत में देख सकते हैं| उन्हें आजरबाईजान में एक प्राचीन हिन्दू अग्नि मंदिर मिला| कोहेकाफ़ की परियों की तलाश में भी भटके और तबरेज़ में एक ठग द्वारा ठगे भी गए| यात्राओं का आनन्द और स्वयं देखने तथा खोजने का सन्तोष 'चलते तो अच्छा था' में जगह-जगह देखा जा सकता है| असग़र वजाहत ने ये यात्राएँ साधारण ढंग से एक साधारण आदमी के रूप में की हैं, जिसके परिणाम स्वरूप वे उन लोगों से मिल पाए हैं, जिनसे अन्यथा मिल पाना कठिन है|

इस यात्रा-वृत्तांत में ईरान और आजरबाईजान के समाज, संस्कृति और इतिहास का रोचक वर्णन मिलता है| ईरान के आर्यों का इतिहास से लेकर प्राचीन हिन्दू धरोहरों तक का वर्णन है| भारत और ईरान के प्राचीन काल में प्रगाढ़ संबंध और सामाजिक जीवन की समानता का वर्णन भी हम इस पुस्तक में देखते हैं| ईरान में आज भी कुछ लोग अग्निपूजक हैं जो आर्य हैं और खुद को इस्लाम से इतर बताते हैं, इस्लामिक राष्ट्र ईरान में उनकी त्रासदी को हम इस पुस्तक के माध्यम से देख पाते हैं| वर्तमान ईरानी समाज में हिंदुस्तान की एक महक छवि उपलब्ध है, जिसका वर्णन इस यात्रा-वृत्तांत में देखने को मिलता है| इस यात्रा-वृत्तांत में असग़र वजाहत बस, टैक्सी टाँगे से लेकर अलग-अलग सामाजिक परिवेश से इस तरह रू-ब-रू कराते हैं कि पाठक भी साथ सफ़र करने लगता है|

2.15 नासिरा शर्मा:जहाँ फव्वारे लहू रोते हैं

हिंदी की सुप्रसिद्ध लेखिका नासिरा शर्मा का जन्म 22 अगस्त 1948 को प्रयागराज, उत्तरप्रदेश में हुआ है| लेखन के साथ ही स्वतन्त्र पत्रकारिता में भी उन्होंने उल्लेखनीय कार्य किया है| वह ईरानी समाज और राजनीति के अतिरिक्त साहित्य, कला व सांस्कृतिक विषयों की विशेषज्ञ हैं| इऱाक, अफ़गानिस्तान, सीरिया, पाकिस्तान व भारत के राजनीतिज्ञों तथा प्रसिद्ध बुद्धिजीवियों के साथ उन्होंने साक्षात्कार किए, जो बहुचर्चित हुए| उनके साक्षात्कार से मध्य-पूर्व के समाज के विषय में अच्छी जानकारी प्राप्त होती है| उन्होंने युद्धबन्दियों पर जर्मन और फ्रेंच दूरदर्शन के लिए बनी फिल्म में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है| उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ उपन्यास- 'सात नदियाँ एक समंदर', 'शाल्मली', 'ठीकरे की मंगनी', 'अक्षयवट', 'कुइयॉजान', कहानी संग्रह- 'शामी कागज', 'पत्थरगली', 'संगसार', 'सबीना के चालीस चोर', 'खुदा की वापसी', 'इंसानी नस्ल', 'बुतखाना', यात्रा-वृत्तांत- 'जहाँ फव्वारे लहू रोते हैं' आदि हैं|

नासिरा शर्मा साहित्य, कला, संस्कृति एवं राजनीति की भी विशेषज्ञ हैं| नासिरा शर्मा कृत 'जहाँ फव्वारे लहू रोते हैं', एक वृहत यात्रा-वृत्तांत है| इसमें आधे से अधिक यात्रा-वृत्तांत ईरान से संबन्धित हैं| ईरान के अलावा उन्होंने इराक, फिलिस्तीन, कुर्दिस्तान, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, नेपाल, जापान, पेरिस, लंदन आदि की भी यात्राएँ की हैं| उन्होंने इन देशों के हालातों का वर्णन भी इस यात्रा-वृत्तांत में किया है| इस यात्रा-वृत्तांत का लक्ष्य असुरक्षा और अशांति के दौर से गुज़र रहे इन देशों की जनता के जीवन के दुख-दर्द को सामने लाना है|

नासिरा शर्मा स्वतंत्र विचारों की प्रगतिशील लेखिका हैं| उन्हें पीड़ित जनता की सच्ची हमदर्दी है| उनका लेखन फासिस्ट व्यवस्था के विरुद्ध है| इस यात्रा-वृत्तांत में हम देखते हैं कि कुछ बड़ी ताक़तें मज़हबी खब्त को बढ़ावा देकर अपना

प्रभाव बनाए रखना चाहती हैं| मध्य-पूर्व एशियाई देश उनकी साजिश के शिकार हैं| ईरान में भी जो कुछ हो रहा है, वह ईरान को वीरान करने की साज़िश है| इराक-ईरान युद्ध भी इसी साजिश का परिणाम था|

मध्य-पूर्व एशियाई देशों की हकीकत और उनकी लाचारी होने के बावजूद इस यात्रा-वृत्तांत में नासिरा शर्मा निराश नहीं हैं| उन्हें उम्मीद है कि अब इन देशों की जनता जाग उठी है, इसलिए शोषण और तबाही का दौर खत्म होगा और जनता शांति महसूस करेगी| नासिरा शर्मा ने जिन-जिन देशों की यात्राएँ की हैं वहाँ के हालातों को जनता के बीच रहकर देखा-जाना और परखा है| कई देशों के बुद्धिजीवियों, साहित्यकारों और पत्रकारों के संपर्क में वे रही हैं और उनके साथ बिताए पलों से इस यात्रा-वृत्तांत के माध्यम से पाठक को भी रू-ब-रू कराया है| इस पुस्तक में उन्होंने जो कुछ भी लिखा है, एक बुद्धिजीवी की हैसियत से अनुभव किया हुआ सच है| नासिरा शर्मा के इस यात्रा-वृत्तांत में देखा हुआ ही नहीं बल्कि भुगता हुआ भी सच है| पेरिस हो या लंदन, कुर्द हो या पेशावर, तेहरान हो या बगदाद, जहाँ जो कुछ जैसा प्रत्यक्ष देखा और अनुभव किया है, उन्हें वैसा ही सजीव और जीवंत रूप में इस यात्रा-वृत्तांत में प्रस्तुत किया है| निश्चय ही रिपोर्ताज शैली में लिखा गया यह यात्रा-वृत्तांत मध्य-पूर्व देशों का जीता-जागता दस्तावेज है|

2.16 ओम थानवी:मुअनजोदड़ो

ओम थानवी का जन्म 1 अगस्त 1957 को जोधपुर, राजस्थान में हुआ है| वे एक बड़े पत्रकार हैं| पत्रकारिता में आने से पहले वे रंगमंच की गतिविधियों से जुड़े रहे हैं| उन्होंने वक्ता और विचारक की ख्याति अर्जित की है| उनकी रुचि के क्षेत्रों में मीडिया के साथ साहित्य, कला, संस्कृति, रंगमंच और सिनेमा से लेकर इतिहास,

नृतत्त्वशास्त्र, समाज विज्ञान और पर्यावरण तक शामिल हैं| नैतिक मूल्यों के साथ भाषा और साहित्य के अनुराग और समाज, राजनीति और संस्कृति से प्रतिबद्ध ओम थानवी की एक अलग पहचान है| ओम थानवी ने देश और विदेश की अनेक विश्वविद्यालयों और शैक्षिक संस्थाओं में पत्रकारिता, भाषा, पर्यावरण और अन्य विषयों पर व्याख्यान दिए हैं| वे मीडिया प्रतिनिधि के नाते पर्यावरण, समाज विज्ञान और कला-संस्कृति पर दुनिया के लगभग सभी महाद्वीपों में गए हैं| ओम थानवी के क्यूबा यात्रा से जुड़े संस्मरण भी खासे चर्चित हुए थे, जिसमें उन्होंने क्रांतिकारी चेग्वेवारा के भारत दौरे का जिक्र किया था|

भारतीय संस्कृति के सबसे बड़े सांस्कृतिक प्रतीकों में से एक 'मोहनजोदड़ो' है और 'मुअनजोदड़ो' ओम थानवी का चर्चित यात्रा-वृत्तांत भी है| इस पुस्तक में सिन्धु घाटी सभ्यता और मोहनजोदड़ों का वैभव और उसके पतन के इतिहास का वर्णन है| हिंदुस्तान और पाकिस्तान के सांस्कृतिक धरोहरों के माध्यम से दोनों देशों के वर्तमान सांस्कृतिक, सामाजिक समानता को भी लेखक ने रेखांकित किया है| 'मुअनजोदड़ो' नए तरीके से गहराइयों के साथ चीजों को देखने का नजरिया देता है| इसकी कथा हमारे पूर्वजों की अनंतिम कथा है| लेखक ने बताया है कि इस वैभवशाली सभ्यता की सड़क, गलियों में घूमते हुए आज भी गौरवान्वित महसूस कर सकते हैं| शहर और हमारे महान पूर्वजों की स्मृतियाँ आज भी वहीं हैं| वे क्या खाते-पीते थे? वे कैसे जीते थे? उनका सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक स्थिति क्या थी, सबकुछ इस पुस्तक के माध्यम से समझ सकते हैं| सात हजार साल पूर्व पुरानी इस महान सभ्यता का पतन कैसे हुआ, वह आज भी रहस्य है| लेकिन दुनिया हमारी इस प्राचीन सभ्यता का फलक, महानता एवं पतन के बारे में अनबूझ है| उन्होंने लिखा है- "आज सिन्धु घाटी की धारा सिंध, पंजाब, गुजरात, राजस्थान, हरियाणा आदि को पीछे छोड़कर बलूचिस्तान के मैदान यानी मेहरगढ़ तक पहुँच गई है| वहाँ की खुदाई ने इस सभ्यता के सात हजार साल ईसा पूर्व के प्रणाम मुहैया कराए हैं| जानकार कहते हैं कि आवोहवा रूठने की वजह से वहाँ से लोग सिन्धु घाटी की तरफ उतार आए| यहाँ उन्होंने बहुत तरक्की की, खुशहाल हुए| फैलते हुए यह सभ्यता शिवालिक की तलहटी-आज के चंडीगढ़-तक पहुँच गई| छह सौ साल की

अपूर्व समृद्धि के बाद एक रोज वह हमेशा के लिए सिमट गई| कैसे? इस पर रहस्य की बहुत-सी परते हैं|”[9]

'मुअनजोदड़ो' किसी यात्रा का केवल विवरण भर नहीं है| बल्कि किताब में यात्रा के क्षणों में उपजी अनंत जिज्ञासाओं के साथ-साथ एक बौद्धिक यात्रा भी समानांतर चलती रहती है| इस यात्रा का रहस्यमय आकर्षण हर किसी को मोह लेता है| अपनी पहली कृति से ही पहचान बना लेने वाले लेखक कम ही होते हैं| ओम थानवी के 'मुअनजोदड़ो' को ऐसी पुस्तकों में शामिल किया जा सकता है, जिसने विषय के प्रस्तुतिकरण के नए अंदाज के चलते सभी का ध्यान अपनी तरफ खींच लिया है|

मोहनजोदड़ो और हड़प्पा सभ्यता पर लेखक का विशद अध्ययन है| सहज सरल भाषा और अनूठी वर्णन शैली इस पुस्तक को विशिष्ट बनाती है| साहित्य, कला, सिनेमा, पर्यावरण, पुरातत्त्व, स्थापत्य और यात्राओं में थानवी की गहन रुचि है और वे अनगिनत देशों की यात्राएँ कर चुके हैं| बिहारी पुरस्कार के लिए चुनी यह पुस्तक किसी यात्रा का विवरण भर नहीं है, बल्कि इसमें तमाम बौद्धिक जिज्ञासाएं साथ-साथ चलती रहती हैं| लेखक अपनी पाकिस्तान यात्रा के दौरान मोहनजोदड़ो की यात्रा पर जाता है| यह यात्रा लेखक के लिए किसी तीर्थयात्रा के समान है| मोहनजोदड़ो से जुड़े कई भारतीय और पाश्चात्य विचारकों द्वारा प्रस्तुत मिथक भी एक ओर उसे रहस्यमय बनाते हैं, तो वहीं इससे उसका आकर्षण भी बढ़ जाता है|

2.17 गरिमा श्रीवास्तव:देह ही देश

गरिमा श्रीवास्तव का जन्म 18 जुलाई 1970 को नई दिल्ली में हुआ है| पेशे से प्राध्यापिका गरिमा श्रीवास्तव ने अपने लेखन में हमेशा दुनिया की आधी आबादी यानी स्त्रियों को जगह दी है| गरिमा श्रीवास्तव अध्यापन के उद्देश्य से विदेश का दौरा हमेशा करती रही हैं| इन्हीं यात्राओं में से उनकी एक यात्रा क्रोएशिया की रही है, जिसका वर्णन चर्चित यात्रा-वृत्तांत 'देह ही देश' में है| गरिमा श्रीवास्तव एक सफल प्राध्यापक ही नहीं बल्कि चर्चित लेखिका भी हैं| उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ

'लाला श्रीनिवासदास-विनिबंध', 'किशोरीलाल गोस्वामी-विनिबंध', 'भाषा और भाषाविज्ञान-', 'ऐ लड़की में नारीचेतना-', 'हिंदी उपन्यासों में बौद्धिक विमर्श', 'प्रतिरोध की संस्कृति-स्त्री आत्मकथाएँ', संपादन- 'वामा शिक्षक', 'उपन्यास का समाजशास्त्र', 'आधुनिक हिंदी कहानी', 'आधुनिक हिंदी निबंध' आदि हैं|

'देश ही देश' गरिमा श्रीवास्तव की क्रोएशिया यात्रा की दस्तावेज है| इस यात्रा-वृत्तांत का विश्लेषण करने पर हम देखते हैं कि गरिमा श्रीवास्तव एक यायावर ही नहीं बल्कि संस्मरणकार और डायरी लेखक के रूप में भी हमारे सामने उपस्थित हैं| दुनिया के युद्ध में पीड़ित और घर्षित महिलाओं की त्रासदी को मुखर रूप से उठाना, उनकी संवेदनशील दृष्टि का परिणाम है| इस पुस्तक में क्रोएशिया, बोस्निया, सर्बिया, पाकिस्तान, बांग्लादेश, हिंदुस्तान और पूरी दुनिया के युद्ध में घर्षित स्त्रियों के रक्तरंजित इतिहास को हम देखते हैं| युद्ध पीड़ित स्त्रियों के प्रति देश-दुनिया की सोच और दुनिया के तमाम बड़े-बड़े मानवाधिकार संगठन की उदासीनता को यह पुस्तक बखूबी बयान करती है| इतना ही नहीं लेखिका ने युद्ध में स्त्रियों के साथ-साथ बच्चे, बुजुर्ग, स्त्री-पुरुष सबकी त्रासदी को रेखांकित किया है| लेखिका ने लिखा है कि- "यौन हिंसा का शिकार सिर्फ स्त्रियाँ ही नहीं पुरुष और बच्चे भी बने, जिसका रूप अकथनीय और वीभत्स था, सैनिक शिविरों में कैदियों को आपस में अप्राकृतिक आचरण के लिए मजबूर किया जाता| इवान का कहना है कि भूखे, नंगे बीमार ठठरी मात्र रह गए कैदी को दूसरे कैदी के साथ अप्राकृतिक कर्म करने के लिए मजबूर किया जाता जिसकी तस्वीरें सैनिक खींचा करते, बन्दूक की नोक पर कैदियों को विवश किया जाता, 'ग्रेटर सर्बिया' बनाने की दिशा में यह कदम था जिससे अंतरराष्ट्रीय मीडिया को बताया जा सके कि बोस्नियाई, क्रोआती सांस्कृतिक रूप से कितने निकृष्ट हैं|"[10]

युद्धों का इतिहास देखें तो पता चलता है कि हर युद्ध में स्त्रियों के अस्तित्व को रौंदा गया है| इस जघन्य अपराध को कभी भी दुनिया ने गंभीरता से नहीं लिया, जिसका दर्दनाक ब्यौरा इस यात्रा-वृत्तांत में देखने को मिलता है| यही कारण है कि लेखिका ने निष्पक्ष होते हुए सिर्फ़ घटनाओं के सच को ही नहीं व्यक्त किया है, बल्कि स्त्रीवादी संगठनों द्वारा की गयी उपेक्षा के सच को भी स्पष्ट रूप में इस यात्रा-वृत्तांत में लिखा है| यह यात्रा-वृत्तांत रक्तरंजित स्मृतियों का तीखा और प्रमाण है, जो सर्ब,

क्रोआती, बोस्नियाई संघर्ष के दौरान वहाँ के स्त्री जीवन की विभीषिका और विवशता को रेखांकित करता है| डायरी शैली में लिखा गया यह यात्रा-वृत्तांत भोगे गये यथार्थ का दस्तावेज़ है, जिनमें खून में सनी औरतें और बच्चियां हैं| क्षत-विक्षत और छलनी जिस्म हैं| ज़बरन गर्भवती होती स्त्रियाँ हैं, जो टायलेट में, तहख़ानों में और छावनियों में घसीटी जा रही हैं| यह किताब गुमनामी के अंधेरों में खोई हुई स्त्रियों की त्रासदी को समेटती चलती है| दिखाती चलती है उस भय, घृणा और वितृष्णा को जिसमें स्त्रियों की घुटती हुई चीखें, निर्वसन होती जिस्में, खुरँचती हुई ज़िंदगी और धुंधलाती स्मृतियाँ हैं|

2.18 अनिल यादव:वह भी कोई देस है महराज

अनिल यादव का जन्म गाजीपुर, उत्तरप्रदेश में हुआ है| दो दशक से ज्यादा समय तक पत्रकार और रिपोर्टर रहे अनिल यादव बेहद संवेदनशील और गंभीर लेखक हैं| अनिल यादव सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक मसलों पर लिखने वाले हिंदी के उन प्रतिभाओं में हैं, जो साहित्यकार और पत्रकार दोनों हैं| उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ कहानी संग्रह- 'नगरवधुएँ अखबार नहीं पढ़तीं', 'सोनम गुप्ता बेवफा नहीं है', यात्रा-वृत्तांत- 'वह भी कोई देस है महराज' आदि हैं|

'वह भी कोई देस है महराज' पत्रकार अनिल यादव का चर्चित यात्रा-वृत्तांत है| यह पुस्तक पूर्वोत्तर की जमीनी हकीकत तो बयान करती ही है, वहाँ के जन-जीवन का आँखों देखा हाल भी बताती है| पूर्वोत्तर केंद्रित इस यात्रा-वृत्तांत में वहाँ के जन-जीवन की असलियत बयान करने के साथ-साथ व्यवस्था की असलियत को उजागर करने में भी अनिल यादव ने कोताही नहीं बरती है| इस पुस्तक में अनिल यादव के कथाकार की भाषा उनकी पत्रकार दृष्टि को मजबूत ताकत देती है, जिसमें पाठक को रमाये रखने का साहस है|

यह यात्रा-वृत्तांत पूर्वोत्तर भारत या सेवेन सिस्टर्स के सांस्कृतिक और राजनैतिक इतिहास की कहानी कहता है, जो हमारे अवधारणाओं के परे बिल्कुल ही

अलग है| एक बेबाक वृत्तांत उनके लिए जो पूर्वोत्तर भारत को नजदीक से जानना चाहते हैं या समझना चाहते हैं| अनिल यादव की यात्रा पूर्वोत्तर के उस सच को टटोलने का प्रयास है, जहाँ की यात्रा के दौरान लेखक की अपनी मुश्किलें कम नहीं हैं| कोई लेखक अपनी मुश्किलों को अकसर छुपा लेता है तो कोई उन्हीं मुश्किलों से उस परिवेश को भी उभारना चाहता है, जहाँ यह लगे कि यात्रा वाकई पाठक ही कर रहा है| लेकिन अनिल यादव के साथ सफर में पाठक थकेगा, त्रासदी भोगेगा और फिर गुस्से में ऐसे सफर को न करने की हिदायत भी देगा|

पूर्वोत्तर देश का उपेक्षित और अर्धज्ञात हिस्सा है, उसको महज सौन्दर्य के लपेटे में देखना अधूरी बात है| अनिल यादव ने कंटकाकीर्ण मार्गों से गुज़रते हुए सूचना और ज्ञान, रोमांच और वृत्तांत, कहानी और पत्रकारिता शैली में इस अनूठे यात्रा-वृत्तांत की रचना की है, जो पूर्वोत्तर के इतिहास, भौगोलिक परिदृश्य, भाषा, पर्व-त्यौहार, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनीतिक व्यवस्था को बखूबी बयान करता है|

2.19 अनुराधा बेनीवाल:आजादी मेरा ब्रांड

अनुराधा बेनीवाल का जन्म 1986 को रोहतक, हरियाणा में हुआ है| अनुराधा बेनीवाल राष्ट्रीय स्तर के शतरंज की खिलाड़ी रही हैं| उनका चर्चित यात्रा-वृत्तांत 'आजादी मेरा ब्रांड' है, जिसमें उनकी यूरोप यात्रा का वर्णन है| लंदन में शतरंज की कोच और विंदास यात्री अनुराधा बेनीवाल ने दुनिया के कई देशों का दौरा कर अपनी यात्राओं के अनुभवों को इस किताब में समेटा है| अनुराधा बेनीवाल की इस पुस्तक में एक स्त्री के कुछ करने की उड़ान, कुछ पाने की आकांक्षा देखने को मिलती है| समाज की सभी बंदिशों को तोड़कर जीने और अपने अस्तित्व को पहचानने की वकालत करते दिखती हैं, जो जरूरी मुद्दें हैं, उन्हें देखते हुए जीवन के सौंदर्य की तरफ आगे बढ़ जाती हैं| स्त्री विमर्श के नए आधारभूत तथ्य रेखांकित करती यह पुस्तक यौनिकता, नैतिकता को परिवार के दायरे में नहीं बाँधती है|

यह यात्रा-वृत्तांत भारत की उन तमाम स्त्रियों के लिए स्वंतत्रता का घोषणापत्र-सा मालूम पड़ता है जो अपने एकतरफा संस्कार, धर्म, मर्यादाओं की बेड़ियों में कैद हैं| अनुराधा बेनीवाल की किताब ‘आजादी मेरा ब्रांड’ यूँ तो एक यात्रा-वृतांत है पर असल में यह समाज में विमर्श पैदा करती किताब है| यहाँ नारीवाद जैसा कोई वाद नहीं है, लेकिन पूरी किताब लड़कियों के सम्मान के साथ जिंदा रहने, अपनी निजता और स्पेस खोजने की वकालत करती है| दुनिया की परवाह किए बगैर घूमने की हिमायत करती है| अनुराधा बेनीवाल ने लिखा है- “तुम चलोगी तो तुम्हारी बेटी भी चलेगी और मेरी बेटी भी| फिर हम सबकी बेटियाँ चलेंगी| और जब सब साथ चलेंगी तो सब आजाद, बेफिक्र और बेपरवाह ही चलेंगी| दुनिया को हमारे चलने की आदत हो जाएगी| अगर नहीं होगी तो आदत डलवानी पड़ेगी, लेकिन डरकर घर में मत रह जाना|...खुद पर यकीन रखते हुए घूमना| तू खुद अपना सहारा है| तुझे किसी सहारे की जरुरत नहीं| तुम अपने-आप के साथ घूमना|...अपने तक पहुँचने और अपने-आप को पाने के लिए घूमना; तुम घूमना!”[11]

यह यात्रा-वृत्तांत पूरी तरह व्यक्तिगत आज़ादी और घुमक्क्ड़ी को जोड़ता है| अनुराधा बेनीवाल ने सही-गलत समाज, संस्कृति का मूल्यांकन केवल आज़ादी की कसौटी पर किया है| उन्होंने विचारधाराओं की बाध्यता के बिना अपनी यूरोप की यात्रा का वृत्तांत लिखा है| यह यात्रा-वृत्तांत यूरोपियन समाज को प्रतिबिम्बित करने का दम्भ नहीं भरता बल्कि वहाँ पर रहने वाले प्रवासी भारतीय, पुराने दोस्त एवं यूरोपीय लोगों की निजी जिंदगी का हिस्सा आपके सामने साफगोई से रखता है|

2.20 उमेश पंत:इनरलाइन पास

उमेश पंत का जन्म 20 जुलाई 1988 को पिथौरागढ़, उत्तराखंड में हुआ है| वे एक पत्रकार एवं स्क्रिप्ट लेखक हैं| उन्होंने दिल्ली के जामिया मिल्लिया इस्लामिया

विश्वविद्यालय से मास कम्यूनिकेशन में मास्टर्स किया है| मुम्बई जाकर बालाजी टेलीफ़िल्म्स में बतौर एसोशिएट राइटर के रूप में काम किया है| मुम्बई में गीतकार और पटकथा लेखक नीलेश मिस्रा से जुडक़र उनके मशहूर किस्सागोई के कार्यक्रम के लिए कहानियाँ लिखीं| रेडियो के लिए फ़िल्म और गाने भी लिख चुके हैं| हिंदी के तमाम अखबारों में यात्राओं और समसामयिक विषयों से जुड़े लेख लिखते रहे हैं| उन्होंने कविताएँ भी लिखीं हैं| वे 'यात्राकार' नाम से ब्लॉग भी चलाते हैं|

'इनरलाइन पास' उमेश पंत का चर्चित यात्रा-वृत्तांत है| इस पुस्तक में उमेश पन्त की आदि कैलाश और ओम पर्वत की यात्राओं का वर्णन है| उन्होंने पर्वतीय जीवन की एक-एक दैनंदिन क्रियाकलापों का बहुत ही रोचक वर्णन किया है| पर्वतीय लोगों के कठिन जीवन की परिस्थितियों को बहुत ही बारीकी से रेखांकित किया है| उन्होंने चकाचौंध दिल्ली की दुनिया और उत्तराखंड के पर्वतीय लोगों के कठिन जीवन की तुलना भी की है| जिस जगह पर इंसान को मौलिक सुख-सुविधाएँ भी मयस्सर नहीं हों, वहाँ का सामाजिक विकास किस कदर हो सकता है, इसे हम इनरलाइन पास में देख सकते हैं| इस यात्रा में उन्होंने बहुत कष्ट भी सहे, क्योंकि पर्वतीय यात्रा यायातात विहिन और तमाम सुविधाओं से दूर थी, जिसे हम लेखक के शब्दों में समझ सकते हैं- "पिछले कई दिनों से मैं लगातार अपनी उस यात्रा को फिर से जीने की कोशिश कर रहा था, जिसमें जीवन और मृत्यु के बीच कितनी महीन रेखा होती है, यह बहुत करीब से महसूस किया| बिना टेंट, बिना आग और बिना खाने के, एक रात ऐसे जंगल में बिताई जहाँ तापमान शून्य या उससे नीचे जा रहा था और यह यात्रा एक 'सर्वाइवल' की कहानी बन गई|"[12]

उमेश पंत ने इस यात्रा-वृत्तांत में आदि कैलास और ओम पर्वत की 200 किलोमीटर से ज्यादा चली अपनी अठारह दिनों की पैदल यात्रा का वृत्तांत दर्ज किया है| यह यात्रा-वृत्तांत पैदल यात्रा के रोमांचक अनुभवों का एक गुलदस्ता है, जो आपको ख़ूबसूरती और जोख़िमों के एकदम चरम तक लेकर जाता है| किताब पढ़ना शुरू करते ही वह उत्साह मन में भरने लगता है, जो कि यात्रा पर निकलने से पहले महसूस होता है| उमेश पंत एक अच्छे किस्सागो की तरह सबसे पहले दिल्ली

के बारे में ही बात कहते हैं, जहाँ से उन्होंने यात्रा शुरू की और जहाँ लौटकर भी आना था|

इस यात्रा-वृत्तांत को उमेश पंत ने 15 पड़ावों में पूरी किया है| पहाड़ी जिन्दगी की मुश्किलें, वहाँ के लोगों की ईमानदारी और निश्छल प्रेम, बिना किसी इच्छा के मदद करने का जज्बा, सबके बारे में किताब बताती चलती है| लेखक पहाड़ी में बसने वालों की पहाड़-सी विशाल और मजबूत जिजीविषा का कायल है, क्योंकि पूरे इलाके के पहाड़ इतने संवेदनशील हैं कि कोई तेज बारिश कब पूरे इलाके के भूगोल बदल दे, कहना मुश्किल है| इन इलाक़ों का जनजीवन मृत्यु और आपदाओं से घिरा हुआ है, फिर भी यहाँ के लोग अपनी जमीन से जुड़े हैं|

'इनरलाइन पास' एक तरह का सरकारी दस्तावेज या आज्ञापत्र होता है, जिसके बिना भारत सरकार देश की अंतराष्ट्रीय सीमाओं से लगे कुछ खास संरक्षित इलाकों में लोगों को जाने की अनुमति नहीं देती है| लेखक ने दुनिया की सबसे ऊंचाई पर मौजूद बसाहटों में रहने वाले, 'शौका' और 'रंग' समुदाय के मूल निवास दारमा घाटी के कुछ हिस्सों और ब्यास घाटी के लोगों के रिवाजों का भी वर्णन किया है| यह यात्रा-वृत्तांत पाठकों को पहाड़ों की हरियाली, सन्नाटे, सुंदरता और पहाड़ी लोगों की निश्छल मासूम मिजाज से परिचित कराता है| प्रकृति की खूबसूरती और विध्वंस दोनों का रोमांच इस किताब में मौजूद है| पाठक यात्रा के अलग-अलग चरणों में लेखक के साथ यात्रा करता है, उसके रोमांच में रोमांचित होता है और उसके खौफ में भयभीत भी| उमेश पंत ने जितनी जिजीविषा से यात्रा की होगी, उस यात्रा के रोमांचक किस्सों को उतनी ही खूबसूरती से लिखा भी है|

पाद टिप्पणी

1. रेखा प्रवीण उप्रेती:हिंदी का यात्रा साहित्य (1960 से 1990 तक), पृष्ठ- 2-3
2. राहुल संकृत्यायन:एशिया के दुर्गम भूखंडों में, पृष्ठ-भूमिका
3. यशपाल:लोहे की दीवार के दोनों ओर, पृष्ठ- 99
4. सविता जनार्दन:विष्णु प्रभाकर का कहानी साहित्य, पृष्ठ- 49
5. नरेश मेहता:कितना अकेला आकाश, पृष्ठ- 45
6. मोहन राकेश:आखिरी चट्टान तक, पृष्ठ- 16
7. कृष्णनाथ:लद्दाख में राग-विराग, पृष्ठ- 45
8. मृदुला गर्ग:कुछ अटके कुछ भटके, पृष्ठ- xxiv
9. ओम थानवी:मुअनजोदड़ो, पृष्ठ- 47
10. गरिमा श्रीवास्तव:देह ही देश, पृष्ठ- 131
11. अनुराधा बेनीवाल:आजादी मेरा ब्रांड, पृष्ठ- 188
12. उमेश पंत:इनरलाइन पास, पृष्ठ-7

तृतीय अध्याय

हिंदी के चयनित यात्रा-वृत्तांतों का वर्गीकरण

3.1 साहित्यिक उद्देश्य परक यात्रा-वृत्तांत

नरेश मेहता:कितना अकेला आकाश

3.2 धार्मिक उद्देश्य परक यात्रा-वृत्तांत

कृष्णनाथ:स्पीति में बारिश

3.3 ऐतिहासिक वर्णन परक यात्रा-वृत्तांत

राहुल सांकृत्यायन:एशिया के दुर्गम भूखंडों में

श्रीरामवृक्ष बेनीपुरी:पैरों में पंख बाँधकर

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय':अरे यायावर रहेगा याद

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय':एक बूँद सहसा उछली

कुसुम खेमानी:कहानियाँ सुनाती यात्राएँ

असगर वजाहत:चलते तो अच्छा था

ओम थानवी:मुअनजोदड़ो

3.4 राजनैतिक वर्णन परक यात्रा-वृत्तांत

यशपाल:लोहे की दीवार के दोनों ओर

अनिल यादव:वह भी कोई देस है महराज

3.5 प्रकृति चित्रण परक यात्रा-वृत्तांत

विष्णु प्रभाकर:हँसते निर्झर:दहकती भट्ठी

मोहन राकेश:आखिरी चट्टान तक

अमृतलाल वेगड़:सौंदर्य की नदी नर्मदा

निर्मल वर्मा:चीड़ों पर चाँदनी

मृदुला गर्ग:कुछ अटके कुछ भटके

उमेश पंत:इनरलाइन पास

3.6 युद्ध परिवेश संबंधी यात्रा-वृत्तांत

नासिरा शर्मा:जहाँ फव्वारे लहू रोते हैं

गरिमा श्रीवास्तव:देह ही देश

3.7 स्त्री स्वतंत्रता संबंधी यात्रा-वृत्तांत

अनुराधा बेनीवाल:आजादी मेरा ब्रांड

रचना और रचनाकार का सम्बन्ध किसी भी विधा से जुड़ा होता है| कहानी, उपन्यास, निबंध आदि विधाओं में लेखक गौण होता है और अपने विचारों को पात्रों के माध्यम से अभिव्यक्त करता है, लेकिन यात्रा-वृत्तांत में लेखक प्रत्यक्षतः अपने अनुभवों का अवलोकन करता है, इसलिए यात्रा-वृत्तांत में लेखकीय व्यक्तित्व का

बड़ा महत्त्व है| यात्रा-वृत्तांत में लेखक का व्यक्तित्व पक्ष उभर जाता है, लेकिन स्वान्तः सुखाय के लिए की गई यात्राओं में यह मुखर रूप में आता है| यात्रा-वृत्तांत में सभी विषय रचनाकार की अनुभूति में ढ़लकर ही व्यक्त होते हैं| यात्रा-वृत्तांत से रचनाकार के विचारों के साथ उनकी जीवन-चर्या, जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण आदि का भी परिचय मिलता है|

यात्रा-वृत्तांत के लिए विषयवस्तु के चयन में पर्याप्त स्वतंत्रता है| यात्रा-वृत्तांत में ऐसी कोई केंद्रीय वस्तु नहीं होती, जिसके आस-पास कृति की संवेदना घुमती हो| गतिशीलता यात्रा की अनिवार्य शर्त है और यह गतिशीलता यात्रा-वृत्तांत की विषय-वस्तु में विद्यमान रहती है| यात्रा में व्यक्ति खुली आँखों से दुनिया के विभिन्न भू-भागों को देखता है| जब जो स्थल, घटना, पात्र, प्रसंग उसके दृष्टिपथ में आता है और उसकी संवेदना को छूता है, वही उसकी कृति की वस्तु बन कर उभरता है, इसलिए यात्रा-वृत्तांत में किसी एक केंद्रीय भाव, विचार या समस्या को रेखांकित नहीं किया जा सकता| यात्री की भांति कृति की विषय-वस्तु, उसकी संवेदना भी गतिशील होती है, इसलिए उसका वस्तु-पक्ष विस्तृत और बहु-आयामी होता है| उसका विवेचन या निर्धारण करना गति को आकार देने के समान है| संसार के छोटे-से छोटा और बड़े-से-बड़ा कोई भी कार्य व्यापार जीवन जगत का कोई भी क्षेत्र उसकी विषय-वस्तु की परिधि में आ सकता है|

प्रारंभिक यात्रापरक कृतियों में प्रकृति के संवेदनात्मक चित्र खींचे गए हैं तो बाद में मानव जीवन की विडम्बनाओं एवं विषमताओं को केंद्र में रखा गया है| आगे चलकर वर्णनात्मकता के साथ-साथ आधुनिक जीवन की विसंगतियाँ, संत्रास एवं घुटन भरे वातावरण को यायावरों ने प्रस्तुत करने का प्रयास किया है, लेकिन यात्रा-वृत्तांतों में घटनाओं के तथ्यपरक विवरणों और सूचनाओं के प्रेषण की प्रवृत्ति ही प्रधान थी, वहाँ धीरे-धीरे लेखकों ने दुनिया की गतिविधियों पर प्रतिक्रिया देना भी शुरू किया है| आज के यात्रा-वृत्तांतों में निजी अनुभवों और प्रतिक्रियाओं में पहले से अधिक प्रौढ़ता और सघनता के साथ-साथ साहसिकता के दर्शन होते हैं| आज यात्रा-

वृत्तांत में रचनाकार रूचि ले रहे हैं और अनेकों प्रकार के यात्रा-वृत्तांत हमारे सामने आ रहे हैं| सभी रचनाकारों की यात्रा और उनके यात्रा-वृत्तांत के उद्देश्य अलग-अलग रहे हैं, जिन्हें हम भिन्न-भिन्न श्रेणियों में वर्गीकरण करके देख सकते हैं| भिन्न-भिन्न श्रेणियों में वर्गीकरण के बाद हम यात्रा-वृत्तान्त के उद्देश्य का सही तरीके से विश्लेषण कर सकते हैं|

3.1 साहित्यिक उद्देश्य परक यात्रा-वृत्तांत

साहित्य समाज का मार्गदर्शक है एवं समाज का लेखा-जोखा है| किसी भी राष्ट्र या सभ्यता की जानकारी उसके साहित्य से प्राप्त होती है| साहित्य लोकजीवन का अभिन्न अंग है| किसी भी काल के साहित्य से उस समय की परिस्थितियों, जनमानस के रहन-सहन, खान-पान व अन्य गतिविधियों का पता चलता है| समाज साहित्य को प्रभावित करता है और साहित्य समाज पर प्रभाव डालता है| दोनों एक सिक्के के दो पहलू हैं| साहित्य का समाज से वही संबंध है, जो संबंध आत्मा का शरीर से होता है| साहित्य समाज रूपी शरीर की आत्मा है| साहित्य अजर-अमर है|

मानव को जन्म से लेकर मृत्यु तक जीवन के हर क्षेत्र में समाज की आवश्यकता पड़ती है| मानव समाज का एक अभिन्न अंग है| जीवन में मानव के साथ क्या घटित होता है, उसे साहित्यकार शब्दों में रचकर साहित्य की रचना करता है, अर्थात साहित्यकार जो देखता है, अनुभव करता है, चिंतन करता है, विश्लेषण करता है, उसे लिखता है| साहित्य सृजन के लिए विषयवस्तु समाज के ही विभिन्न पक्षों से ली जाती है| साहित्यकार साहित्य की रचना करते समय अपने विचारों और कल्पना को भी सम्मिलित करता है| साहित्य के बिना राष्ट्र की सभ्यता और संस्कृति निर्जीव है| साहित्यकार का कर्म ही है कि वह ऐसे साहित्य का सृजन करे, जो राष्ट्रीय एकता, मानवीय समानता, विश्व-बंधुत्व और सद्भाव के साथ हाशिए के आदमी के जीवन को ऊपर उठाने में उसकी मदद करे|

साहित्यकार समाज और अपने युग को साथ लिए बिना रचना कर ही नहीं सकता है, क्योंकि सच्चे साहित्यकार की दृष्टि में साहित्य ही अपने समाज की अस्मिता की पहचान है| साहित्य जब एक समाज के लिए उपयोगी है तभी तक ग्राह्य है| साहित्य की उपादेयता में ही साहित्य की प्रासंगिकता है| साहित्यकार के अंतस में युगचेतना होती है और यही चेतना साहित्य सृजन का आधार बनती है| श्रेष्ठ साहित्य भावनात्मक स्तर पर व्यक्ति और समाज को संस्कारित करता है, उसका युग चेतना से साक्षात्कार कराता है|

मानव सभ्यता के विकास में साहित्य का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है| विचारों ने साहित्य को जन्म दिया तथा साहित्य ने मानव की विचारधारा को गतिशीलता प्रदान की, उसे सभ्य बनाने का कार्य किया| मानव की विचारधारा में परिवर्तन लाने का कार्य साहित्य द्वारा ही किया जाता है| इतिहास साक्षी है कि किसी भी राष्ट्र या समाज में आज तक जितने भी परिवर्तन आए, वे सब साहित्य के माध्यम से ही आए| साहित्यकार समाज में फैली कुरीतियों, विसंगतियों, विकृतियों, अभावों, विसमताओं, असमानताओं आदि के बारे में लिखता है, इनके प्रति जनमानस को जागरूक करने का कार्य करता है| साहित्य जनहित के लिए होता है| जब सामाजिक जीवन में नैतिक मूल्यों का पतन होने लगता है, तो साहित्य जनमानस का मार्गदर्शन करता है|

साहित्य का उद्देश्य हमारी अनुभूतियों की तीव्रता को बढ़ाने के अलावा वर्तमान समाज और भविष्य के पथ प्रदर्शक का खोज करना भी है| इसलिए जिस समय साहित्य की रचना की जाती है, उस समय की परिस्थितियों का समावेश अवश्य होता है| मानव जीवन में साहित्य का सबसे अधिक महत्त्व है, क्योंकि साहित्य ही मनुष्य की बुराइयों का अंत करता है| साहित्य ही मनोविकारों के रहस्यों को खोलकर सद्वृत्तियों को जगाता है| मनुष्य के व्यक्तित्व के विकास में जब साहित्य का योगदान है तो यात्रा-वृत्तांत भी इसमें अतुलनीय महत्त्व रखता है| आज यात्रा-वृत्तांतकार शिक्षा और साहित्यिक गतिविधियों को अपने यात्रा-वृत्तांत

का विषय बना रहे हैं| अपने यात्रा-वृत्तांत के माध्यम से दुनिया की तमाम साहित्यिक, अकादमिक और शैक्षणिक गतिविधियों से हमें रू-ब-रू करा रहे हैं|

नरेश मेहता:कितना अकेला आकाश

नरेश मेहता ने अपने यात्रा-वृत्तांत 'कितना अकेला आकाश' में अपनी सहज सर्जक दृष्टि से यूरोपीय जीवनधारा को परखने की चेष्टा की है| यूगोस्लाविया के एक छोटे-से स्थान स्त्रूगा में आयोजित काव्य सामारोह में एकमात्र भारतीय प्रतिनिधि के रूप में सहभागिता करने के लिए गए नरेश मेहता ने सहज कौतुक से न सिर्फ स्त्रूगा को देखा बल्कि वहाँ आयोजित और भी काव्यसमारोह में सहभागिता की| एनी और बुदिमका जैसे सौम्य और बुद्धिदीप्त महिलाओं के सहयोग ने कवि के अकेले और सूने आकाश को काफी दीप्ति और उल्लास से भर दिया| इसी तरह के और भी अनेक लोग कवि के इस प्रवास को बेहद आत्मीयता से भर देते हैं| उन्होंने वहाँ के जीवन, वहाँ के स्त्री-पुरुषों की गतिविधियों और मानसिक हलचलों को भी मन के कैमरे में छवि उतारी है, लेकिन इस यात्रा-वृत्तांत का उद्देश्य मूलतः अकादमिक एवं साहित्यिक है| नरेश मेहता ने साहित्यिक संगोष्ठियों के तमाम पहलुओं पर कलम चलाई है और अकादमिक व्यवस्था का तुलनात्मक अध्ययन भी प्रस्तुत किया है|

आज के समय में आपको भाषा की समस्या हर जगह देखने को मिलती है| कई बार अकादमिक और साहित्यिक संगोष्ठियों में भी इस समस्या से जूझना पड़ता है, जिसका वर्णन हम इस यात्रा-वृत्तांत में भी देखते हैं और लेखक भी इसका भुक्तभोगी रहा है, जिसे उन्हीं के शब्दों में समझा जा सकता है- "पहली बार लगा कि इस प्रकार के अंतरराष्ट्रीय काव्य-पाठ का लाभ न भी सही, तो भी प्रयोजन क्या है? ठीक है स्थानीय लोगों को अपनी भाषा में अनुवाद मिल जाता है परन्तु हम जैसे बाहर से आये लोगों का क्या हो? मूल भाषा भी आप नहीं जान रहे होते हैं और न ही अनुवाद की भाषा से आप परिचित हैं| तब भला तीन-चार घंटे एक ध्वनियाँ

सुनते हुए कोई कितना बैठ सकता है? थोड़ी देर जब ऊब होने लगी तो बिल के साथ बाहर आ गया|"[1]

साहित्य में मौलिक लेखन और अनुकरण जैसे मुद्दे हमेशा से उलझाए रखे हैं| भारतीय साहित्य पर हमेशा से नक़ल का आरोप लगता रहा है| नरेश मेहता ने हिंदुस्तान से बाहर भारतीय साहित्य के बारे में व्याप्त पूर्वाग्रहों को भी दिखाने का प्रयास किया है| पश्चिम के लोगों के मन में यह धारणा आज भी ज्यों-की-त्यों बनी हुई है, जिसकी ओर इशारा करते हुए नरेश मेहता ने लिखा है- "लेकिन कुल मिलाकर पश्चिम, खासकर यूरोप, भारत को कोई विशेष महत्त्व नहीं देता| वे शायद यह मानकर चलते हैं कि हम अनुकरणकर्ता हैं, मौलिक नहीं| शायद उनकी दृष्टि में अंतिम मौलिक कवि रबीन्द्रनाथ टैगोर ही थे| वैसे यदि हम इसकी शिकायत करते हैं तो वाजिब नहीं, क्योंकि बहुत-कुछ ऐसा अनुकरण हमारे आज के लेखन में है, जो भारत में भले ही आधुनिक, अजूबा या नया लगे पर पश्चिम के लिए तो वह बासी है| पश्चिम की एक और विशेषता है कि वह निरंतर नये और वह भी अपनी समस्त परम्परा के परिपार्श्व के साथ न केवल परिवर्तित होता रहता है बल्कि गतिशील भी| हाँ यदि ठहराव है, वह भी केवल उपरी सतह पर, तो वह साम्यवादी पूर्वी यूरोप में जरूर है|"[2]

भारतीय साहित्य और परम्परा पर पश्चिम के लेखकों की बेबाक टिप्पणी को भी लेखक ने खुलकर लिखा है| उनके द्वारा लगाए गए आरोपों पर लेखक ने पैबंद डालने के बजाय उसी रूप में रखा है| नरेश मेहता ने लिखा है- "कई कवियों ने, विशेषकर साम्यवादी देशों के कवियों ने तो खुलकर कहा कि आपकी भाषा में आधुनिकता के नाम पर यह पश्चिम की जूठन क्यों लिखी जा रही है? और इससे क्या होगा? आप अपनी परम्परा को क्यों नहीं आधुनिक परिपार्श्व देते? क्यों आधुनिकता का अर्थ आप केवल पश्चिम को ही स्वीकार करते हैं क्या आपकी आधुनिकता का कोई भिन्न स्वरूप या सत्ता नहीं हो सकती?"[3]

यूरोपीय देशों की शिक्षा व्यवस्था, उनके पुस्तक प्रकाशन का तरीका, बच्चों के मनोविज्ञान से संबंधित किताबें, उनके विकास से संबंधित योजनाएँ, इन सबका वर्णन नरेश मेहता ने अपने यात्रा-वृत्तांत में किया है| उन्होंने यूरोप और अपने देश

की शिक्षा व्यवस्था की तुलना करते हुए अफ़सोस भी व्यक्त किया है| उन्होंने लिखा है- “वैसे तो साम्यवादी देशों के प्रकाशन का स्तर वैसे ही अच्छा है पर सबसे प्रभावशाली था बाल-पुस्तकों का प्रकाशन| सच में ये लोग अपने बच्चों के विकास, ज्ञान आदि के बारे में कितना सुचिंतित रूप से काम करते हैं| मैं नहीं समझता कि ऐसा एक भी प्रकाशन हमारे यहाँ होता है| नेशनल बुक ट्रस्ट की बच्चों की किताबें स्वयं ही बचकानी होती हैं, तब भला उनसे बच्चों का क्या भला होना है? हाँ, इन संस्थाओं का अहं भले ही तुष्ट हो जाता हो|”[4]

3.2 धार्मिक उद्देश्य परक यात्रा-वृत्तांत

धर्म का अर्थ है धारण करना, पास रखना या संचालन करना| इसलिए, जो धारण करता है, पास रखता है, या संचालन करता है, वही धर्म है| धर्म पूरे ब्रह्मांड की व्यवस्था को बनाए रखता है| इस संदर्भ में धर्म का अर्थ ब्रह्मांड में संतुलन बनाए रखने वाले चक्रीय गतिविधियों के सही संचालन से है| धर्म का अर्थ नैतिकता भी है, क्योंकि यह हमें सत्य के निकट ले जाता है, जिस सत्य से ब्रह्मांड की व्यवस्था बनी रहती है| एक व्यक्ति के लिए स्व-धर्म है, जिसे उसने चुना है| धर्म का अर्थ लोगों की आस्था और परम्परा भी होता है| ये परम्पराएँ शाश्वत हैं, इसीलिए इसे सनातन धर्म भी कहा जाता है| भारतीय परम्पराओं के अनुसार धर्म एक व्यवहार का भी विषय है|

साहित्य वास्तव में मनुष्य धर्म को रेखांकित करने वाला वह रूप है, जो अपने देश के समाज के परिदृश्य को उसके बहुआयामी रंगों में फैला हुआ दिखाता है| साहित्य ही समाज को गति देता है और उसे जीवंत बनाने का प्रयत्न भी करता है| धर्म से साहित्य का रिश्ता एक ख़ास मायने में परिलक्षित होता है| साहित्य द्वारा धर्म का परिचालन होता है, लेकिन वह धर्म से तटस्थ रहकर अपनी बात कह सकने में समर्थ है| सभी धर्मों ने भारतीय जन-मानस को प्रभावित किया है| बौद्ध धर्म के

पुनर्जागरण ने हिंदी जन-मानस को काफी प्रभावित किया| ईश्वरवाद और आत्मवाद के अनिच्छुक इस धर्म दर्शन के समन्वयवादी रूप ने आधुनिक हिंदी साहित्य को एक नई स्फूर्ति और चेतना दी| मध्यकालीन साहित्य का एक पहलू ही धर्म था| लगभग सभी रचनाकारों ने धर्म को किसी-न-किसी रूप में अपनी रचना का आधार बनाया था| वर्त्तमान समय में भी बौद्ध धर्म-दर्शन का वृहद् साहित्य प्रकाश में आ रहा है| रचनाकार लगभग सभी विधाओं में धर्म से सम्बंधित रचनाएँ कर रहे हैं| हिंदी यात्रा-वृत्तांत भी इससे अछूता नहीं है| कई लेखकों ने धार्मिक स्थलों की यात्रा करके उनका रोचक शब्दों में अपने यात्रा-वृत्तांत में वर्णन किया है| धार्मिक उद्देश्य से सम्बंधित यात्रा-वृत्तांत में कृष्णनाथ कृत 'स्पीति में बारिश', 'लद्दाख में राग-विराग', महेश कटारे कृत 'देस बिदेस दरवेश', गगन गिल कृत 'अवाक् कैलाश-मानसरोवर:एक अंतर्यात्रा' आदि हैं|

कृष्णनाथ:स्पीति में बारिश

कृष्णनाथ के यात्रा-वृत्तांत स्थान विशेष से जुड़े होकर भी भाषा, इतिहास, पुराण, धर्म, संस्कृति का संसार समेटे हुए है| पाठक उनके साथ खुद यात्रा करने लगता है| वे लोग जो इन स्थानों की यात्रा कर चुके होते हैं, उन्हें भी कृष्णनाथ के यात्रा-वृत्तांत को पढ़ने के बाद महसूस होता है कि उनकी यात्रा अधूरी थी और यात्रा-वृत्तांत पढ़कर पूरी हुई| माना जाता है कि स्पीति में कभी बारिश नहीं होती, लेकिन उस दुनिया में भी कृष्णनाथ स्नेह, ज्ञान, परम्परा, धर्म, संस्कृति, मानवीय रिश्तों की बारिश ढूँढ़ते हैं| लेखक ने इस यात्रा-वृत्तांत में बौद्ध धर्म का अन्वेषण ही नहीं बल्कि हिमालयी अंचल के लोकजीवन और संस्कृति का भी बहुत ही आत्मीय ढंग से वर्णन किया है|

कृष्णनाथ ने बौद्धों का इतिहास, संस्कृति, परंपरा, मिथक, रीति-रिवाज, व्यवहार, खान-पान, रहन-सहन एवं सामाजिक व्यवस्था आदि का बहुत ही विस्तृत वर्णन किया है| उनके यात्रा-वृत्तांत में बौद्ध धर्म के उद्भव और इतिहास पर भी गंभीर चर्चा देखने को मिलती है| बौद्ध धर्म के ऐतिहासिक महत्त्व को बताते हुए

लेखक ने लिखा है- “हिमालय के मध्य की लाहुल-स्पीति की घाटियों में परंपरागत बौद्ध बसे हुए हैं| ये मानते हैं कि बुद्ध कुल्लू आये थे| उन्होंने स्वयं यहाँ धर्म शासन चलाया था| बुद्ध के काल में ही, या कम-से-कम अशोक के काल में इस प्रदेश ने बौद्ध धर्म अपनाया| फिर तो जैसे शिखरों की बर्फ़ कभी नहीं पिघली, वैसे ही इनका धर्म भी नहीं पिघला| इनके धर्म, भाषा, संस्कृति, व्यापार के संबंध तिब्बत से थे| तिब्बत पर चीन का प्रभुत्व हो जाने से ये संबंध टूट गये| शेष भारत से इनके संबंध जुड़े नहीं|”[5]

बौद्ध मठ या बौद्ध धर्म के धार्मिक स्थल, लामाओं, उनकी परम्परागत शिक्षा, धर्म से जुड़ी सभी गतिविधियाँ, साधना, पूजा, धार्मिक शिक्षा आदि का भी चित्रण इस यात्रा-वृत्तांत में देखने को मिलता है| प्रसिद्ध गोनपा का चित्रण करते हुए कृष्णनाथ ने लिखा है- “गोनपा लामा का तो किला ही है| बौद्ध धर्म, दर्शन, कला, संस्कृति का जीवन केंद्र है| इनमें ही लामाओं की और उपासकों की परंपरागत शिक्षा होती है| उस शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य सर्वज्ञता प्राप्त करना है|”[6]

सभी धर्म में कुछ-न-कुछ पाखण्ड, कुरीतियाँ देखने को मिलती हैं, जाहिर है कि बौद्ध धर्म भी इससे अछूता नहीं है| लेखक ने बौद्ध धर्म की की कुरीतियाँ, उसका पतन, परम्परागत धार्मिक विधियाँ, नई पीढ़ी की धार्मिक आस्था आदि का वर्णन इस यात्रा-वृत्तांत में किया है| लेखक की पंक्तियाँ द्रष्टव्य है- “मैं देखता हूँ कि यहाँ परंपरागत बौद्ध हैं| ये उसी प्रकार बौद्ध हैं, जिस प्रकार ब्राह्मण होते हैं| जन्म से ही ब्राह्मण होते हैं, कर्म से नहीं| उसी तरह ये जन्म से बौद्ध हैं| माता-पिता बौद्ध हैं इसलिए ये बौद्ध हैं| बुद्ध, धर्म और संघ की शरण भी कभी-कभार रस्म के रूप में जाते हैं| त्रिशरण का मर्म नहीं जानते| ‘मने’ नहीं करते| ‘ओं मणि पद्मे हु’ का मंत्र नहीं जानते| हाँ, कभी गोनपा में गये तो मने का चक्कर चला लेते हैं| फिर पंचशील नहीं ग्रहण करते| शायद यह जानते भी नहीं हैं कि पंचशील क्या है? बुद्ध का बताया हुआ दुःख सत्य क्या है? आर्य-आष्टांगिक मार्ग क्या है? यह सब नहीं जानते हैं| न बरतते हैं| फिर भी बौद्ध हैं|”[7]

बौद्धों में जाति व्यवस्था और उनके बीच ऊँच-नीच की धारणा का भी वर्णन कृष्णनाथ ने किया है| बौद्धों में जाति व्यवस्था कैसे आई, इसका भी जिक्र किया है| बौद्ध धर्म में प्रचलित जाति व्यवस्था पर कटाक्ष लेखक के शब्दों में देखिए- “किन्नौर लाहुल-स्पीति के दक्षिण-पूर्व में स्थित है| कालपा इसका केंद्र है| इससे सतलुज बहती

है| यहाँ किन्नर कैलास पर्वत है| यह भी परंपरागत बौद्ध क्षेत्र है| रामपुर बुशहर राज्य के प्रभाव से इस पर जगह-बेजगह हिंदू प्रभाव है| हिंदू का मतलब तो अब जाति रह गया है| जाति का असर, इसकी ऊँच-नीच अलगाव और शुद्ध-अशुद्ध का भाव आदिम और बौद्ध विश्वासों से जुड़ गया है|"[8]

लेखक ने स्पीति के बौद्धों की विशेषताओं का वर्णन इस यात्रा-वृत्तांत में किया है| बौद्धों के आदिम विश्वास और मान्यताओं, हिन्दुओं के धार्मिक विश्वास, ब्राह्मणों के कर्मकांड का भी उल्लेख उन्होंने किया है| स्पीति के बौद्धों की शुद्धता और ब्राह्मणों पर कटाक्ष करते हुए कृष्णनाथ ने लिखा है- "की गोनपा का लाहुल-स्पीति के बौद्धों में बड़ा मान है| स्पीति में बौद्ध धर्म लाहुल से ज्यादा शुद्ध रूप में है| लाहुल की चंद्रभागा घाटी में आदिम और हिंदू विश्वासों और संस्थाओं का मिश्रण हुआ है| स्पीति में आदिम विश्वास तो है| विशेषकर देवता हैं| जैसे ग्लेशियर के बचाव के देवता हैं| इन विश्वासों के साथ स्पीति परंपरागत बौद्ध है| यहाँ हिंदू देव परिवार नहीं हैं| ब्राह्मण नहीं हैं| और ब्राह्मण कर्मकांड नहीं हैं| स्पीति की गोनपाएँ भी लाहुल से ज्यादा बड़ी और प्रशस्त हैं| की इनमें भी प्रधान है|"[9]

3.3 ऐतिहासिक वर्णन परक यात्रा-वृत्तांत

जब भी कोई व्यक्ति ऐतिहासिक शब्द का प्रयोग करता है, तब अतीत की प्रतीति होती है| मनुष्य हमेशा से अपने अतीत से जुड़ा रहा है| इसी कारण वह इतिहास से जुड़े परम्पराओं, किंवदंतियों, गाथाओं, स्थलों एवं ऐतिहासिक धरोहरों को सहेजकर रखता है| अतीतकालीन घटनाओं, ऐतिहासिक धरोहरों और महान व्यक्तियों से सम्बंधित जानकारी हमें इतिहास से ही प्राप्त होती है| ऐतिहासिक चित्रण में केवल अतीत का चित्रण नहीं होता है, बल्कि अतीत चित्रण द्वारा कई आधुनिक समस्याएँ भी उभर कर आती हैं|

किसी भी देश की सभ्यता और संस्कृति को जानने-समझने के लिए उसके वर्तमान स्वरूप का ही परिचय पर्याप्त नहीं होता, उसके अतीत की समझ भी उतनी

ही प्रासंगिक होती है| यही नहीं किसी ऐतिहासिक स्थल या स्मारक की महत्ता और सौंदर्य को तभी पहचाना जा सकता है, जब उससे जुड़ा हुआ इतिहास ज्ञात हो| इसी कारण साहित्यकार किसी भी देश या भू-भाग के वर्तमान परिदृश्य को प्रस्तुत करने के साथ-साथ वहाँ के ऐतिहासिक संदर्भों को भी प्रकाशित करता है| महलों, किलों, खंडहरों, समाधियों, प्राचीन सांस्कृतिक नगरों का वर्णन करते हुए उनसे संबंधित इतिहास भी प्रस्तुत करता है| इस विषय में लेखक आवश्यकतानुसार किसी देश की उत्पत्ति व विकास, वहाँ का राजवंश, उसकी परम्पराएँ, नीतियाँ, युद्ध-संधियाँ तथा अन्य महत्त्वपूर्ण प्रसंग, किसी स्थान-विशेष से जुड़ी हुई किंवदंतियाँ, गाथाएं इत्यादि उधृत करता है, लेकिन ऐसा करते हुए उसकी दृष्टि इतिहासकार की न होकर एक साहित्यकार की ही होती है| वह इतिहास को स्थूल तथ्यों के रूप में प्रस्तुत नहीं करता, बल्कि उसे मानवीय संवेदना के साथ ग्रहण करता है और कई बार ऐतिहासिक प्रसंगों के बीच छिपी मानवीय त्रासदी को पहचानने की कोशिश करता है|

जब कोई यात्रा-वृत्तांतकार किसी देश की यात्रा करता है, तब वह उस देश की सभ्यता, संस्कृति एवं इतिहास को भली-भांति समझता है और अपनी रचना में स्थान देता है| लेकिन यात्रा-वृत्तांतकार इतिहासकार की तरह विवरण को तथ्यों के रूप में प्रस्तुत नहीं करता, बल्कि उसे अपनी संवेदना के साथ प्रस्तुत करता है| यात्रा-वृत्तांतकारों ने यात्रा-वृत्तांत में ऐतिहासिक पक्षों को संवेदना के साथ प्रस्तुत किया है| इसमें इतिहास के मार्मिक पक्षों का ही अधिक वर्णन हुआ है| यात्रा-वृत्तांतकरों ने इतिहास में हुए अत्याचारों, गौरवपूर्ण गाथाओं, रोचक घटनाओं, ऐतिहासिक धरोहरों आदि का बहुत ही गंभीरता से वर्णन किया है|

राहुल सांकृत्यायन:एशिया के दुर्गम भूखंडों में

एशिया के दुर्गम भूखंडों में राहुल सांकृत्यायन के लद्दाख, ईरान, तिब्बत, अफगानिस्तान की यात्राओं का विस्तृत वर्णन है| इस यात्रा-वृत्तांत में उन्होंने लद्दाख, तिब्बत, ईरान, अफगानिस्तान के सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक परिवेश का

रोचक ढंग से वर्णन किया है| इस यात्रा-वृत्तांत के माध्यम से एशियाई देशों के इतिहास, संस्कृति एवं सामाजिक जीवन को प्रमाणिक तरीके से समेटने का प्रयास किया गया है| इसमें लद्दाख के जन-जीवन, वहाँ की संस्कृति और सामाजिक स्थिति का भी उल्लेख किया गया है| लेखक ने ईरान का इतिहास, वहाँ के राजवंशों का इतिहास एवं ईरानी जनता के सामाजिक जन-जीवन पर प्रकाश डाला है| यह किताब अपनी साहसिकता, खोजी प्रवृत्ति और बेबाक वर्णन के लिए प्रसिद्ध है| इसमें मध्य-पूर्व देशों की संस्कृति, धर्म, दर्शन, पुरातत्त्व, लुप्तप्राय ग्रंथों की खोज, जन-जीवन, इतिहास, भूगोल, कला, प्रकृति का ज्ञानवर्धक एवं रोचक वर्णन मिलता है| राहुल सांकृत्यायन का विभिन्न देशों का इतिहास के गूढ़ रहस्यों को उलटने पर ही अधिक ध्यान रहा है| उन्होंने इस यात्रा-वृत्तांत में मध्य-पूर्व देशों के इतिहास पर गंभीरता से कलम चलाई है|

राहुल सांकृत्यायन ने तिब्बत यात्रा का बहुत ही रोचक वर्णन किया है| उन्होंने वहाँ के ऐतिहासिक धरोहरों, बौद्ध मठों, देवालयों, पुरानी कलाकृतियों का वर्णन किया है| चंगेज खां के द्वारा तिब्बत पर आक्रमण का भी विस्तृत वर्णन मिलता है| उसके सिपाहियों द्वारा वहाँ के ऐतिहासिक इमारतों को तोड़ने एवं मार-काट मचाने का भी जिक्र मिलता है| उन्होंने लिखा है- “कल सवेरे रे-डिड से प्रस्थान करते वक्त एक बार फिर से प्रधान देवालय देखने की इच्छा हुई| पहले लिखने में हमने गलती की| उत्तर ओर तीन देवालय हैं, जिनमें सबसे पश्चिम वाला मैत्रेय देवालय कहा जाता है, बाकी दो गसूड-रब-द्वुस-म और गसुड-रब-शर-म कहे जाते हैं| दूसरी बार जाने का मतलब था, उन पुराने चित्रपटों को एक बार फिर देख लेना, लेकिन उस वक्त वहाँ मठ के भिक्षु बैठे पाठ करते सत्तू खा रहे थे| इन चित्रपटों को यहाँ लोग ग्य-थड (भारतीय चित्रपट) कहते हैं| इनकी संख्या सोलह है| कुछ छोटे चित्रपट भी भारतीय ढंग के हैं| 1239 ई. में चंगेज खां के सेनापति दो-ती ने रे-डिड मठ को जला दिया था|”[10]

राहुल सांकृत्यायन ने अरबों के खूनी इतिहास को भी अपने यात्रा-वृत्तांत में लिखा है| ईरान पर अरबों के द्वारा किया गया बर्बर जुल्म भी इस यात्रा-वृत्तांत में देखने को मिलता है| ईरानियों की ध्वस्त सभ्यता और संस्कृति का भी जिक्र मिलता

है| अरबों के खूनी इतिहास का वर्णन लेखक के शब्दों में द्रष्टव्य है- "शताब्दियों से अरबी शासन और सभ्यता के अत्याचार के कारण ईरानी सभ्यता बहुत कुछ लुप्त हो चुकी थी| किन्तु एक बार मजहबी दीवानेपन की लहर के थोड़ा ढीला पड़ जाने पर लोगों में फिर, पुराने ईरान का ख्याल आने लगा| उस वक्त फिर ईरानी जाति अपने प्राचीन वैभव की स्मृति को जागृत कर रही थी और यह जागृति अपनी भाषा, उसके साहित्य और इतिहास के पुनरुज्जीवन के रूप में प्रकट हो रही थी|"[11]

इस यात्रा-वृत्तांत में आर्यों के इतिहास का भी वर्णन मिलता है| आर्य कहाँ कब गए, उनका रहन-सहन, उनका शारीरिक सौष्ठव, उनके भोजन का साधन, उनकी ज्ञान परम्परा आदि का चित्रण इस यात्रा-वृत्तांत में मिलता है| अफगानिस्तान में आकर बसे आर्यों के इतिहास का वर्णन करते हुए राहुल सांकृत्यायन ने लिखा है- "हमारा ख्याल कभी वक्षु गंगा की ओर जाता था और सोचते थे यही चरागाह हैं, जिनकी खोज में हमारे पूर्वज चार-साढ़े चार हजार वर्ष पूर्व अपनी भेंड़ और गायों को लेकर इस पार आए थे| उनके भी वैसे ही काले बालों के तम्बू रहे होंगे, जैसे कि आजकल के कितने ही तुर्कमानों के| इन्हीं की तरह पाँच-पाँच सेर की पिटारी जैसी पगड़ी वह आदिम आर्य रमणियाँ अपने पीले बालों के ऊपर बाँधती रही होंगी-यह संभव नहीं मालूम होता, क्योंकि आर्य कपास को जानते ही नहीं थे| बहुत कुछ संभव है, भेड़ की पोस्तीन ही उनकी पोषक रही| इसी चौरस चरागाह में, जिससे हम आज इस अँधेरी रात में गुजर रहे हैं, वह भी महीनों टिकते और भेड़ बकरियाँ चराते इधर से उधर आते-जाते रहे होंगे| उस वक्त के भेड़ियों और दूसरे हिंसक जंगली जानवरों से त्राण पाने के लिए उनके पास डंडे-पत्थर के सिवा और कोई साधन नहीं था| तलवार का होना भी बहुत ही कम संभव है; और धनुष-बाण तो निश्चय ही उन्हें मालूम न था| हाँ, उनका पुष्ट गौर शरीर, दृढ़ मांसल भुजाएँ, लम्बा-चौड़ा कद, पौरुष के पुंज थे| उस वक्त अभी आर्यों का मुकाबला असुरों से नहीं हुआ था; और तुर्क, उजबेक, हजारा-वर्तमान मंगोल जातियाँ जो इन प्रदेशों में बसती हैं-निश्चय ही आर्यों के इस भूमि में आने से दो-ढाई हजार वर्ष बाद पहुँची|"[12]

ईरान के राजवंशों का लंबा इतिहास इस यात्रा-वृत्तांत में बताया गया है| ईरान के प्रमुख राजवंशों और उनके साम्राज्य का विस्तृत वर्णन मिलता है| ईरान पर सिकंदर और यूनानी राजाओं की हुकूमत का इतिहासएवं अरबों के खूनी इतिहास को भी लेखक ने बताया है| बलख शहर के ऐतिहासिक महत्त्व को लेखक के शब्दों में समझा जा सकता है- “बलख को मादरेशहर (शहरों की माँ) कहते हैं और इसमें शक नहीं कि यह संसार के बहुत पुराने शहरों में है| ईसा से 500-600 वर्ष पूर्व जब ईरान के अखामनशी सम्राटों का राज्य एशिया, योरोप और अफ्रीका-तीनों महाद्वीपों में फैला हुआ था, उस वक्त यह एक महानगर था| किसी-न-किसी बड़े रूप में ईसा पूर्व 1000 वर्ष में भी यह जरूर रहा होगा| सिकंदर के बाद तो यह यूनानी राजाओं के मुख्य केन्द्रों में था| ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी में मिनांदर (मिलिंद) की यह राजधानियों में था| यूनानी शासन की समाप्ति के बाद फिर यह पार्थिव (ईरानी) सम्राटों के हाथों में चला गया| और तब से सासानियों के अंतिम समय (652) ई. तक यह ईरान के गवर्नर या सामंत की राजधानी रहा| सातवीं सदी से यह अरबों के शासन में आया| उस वक्त यहाँ कितने ही विशाल बौद्ध-मंदिर और पारसी अग्नि-देवालय थे|...अरब आए| उन्होंने सिर्फ राजनीतिक युद्ध ही नहीं किया, बल्कि धर्म के नाम पर तत्कालीन कला और संस्कृति के खिलाफ जेहाद बोल दिया| न जाने कितने सौ बौद्ध-विहार और अग्निशालाएँ नष्ट की गईं| न जाने कितनी लाख पुस्तकें आग की भेंट की गईं| न जाने कितने लाख स्वदेशी धर्म और संस्कृति को मानने वाले स्त्री-पुरुष, बूढ़े-बच्चे, तलवार के घाट उतारे गए|”[13]

अफगानिस्तान के बामियान में स्थित बुद्ध की विशाल ऐतिहासिक प्रतिमा का भी चित्रण इस यात्रा-वृत्तांत में मिलता है| बामियान की विशाल मूर्तियाँ, उनकी स्थापत्यकला की विशेषताओं का चित्रांकन लेखक के शब्दों में देखिए- “दूसरी जगह बामियाँ की दीवारों पर उत्कीर्ण चित्रों की कुछ नकलें देखीं| बामियाँ के पर्वत-गात्र में उत्कीर्ण सैंकड़ों फुट ऊँची बुद्ध-मूर्तियाँ अपनी विशालता के लिए संसार में प्रसिद्ध हैं| दूर-दूर से लोग बामियाँ को देखने आते हैं और निर्माताओं के श्रम, कला-नैपुण्य और हिम्मत की दाद देते हैं| आज के अफगान भी अपने पूर्वजों की इस कृति पर

अभिमान करते हैं| बामियाँ की मूर्तियों के गवाक्षों और भीतों में सुन्दर रंगीन चित्र थे; वैसे ही जैसे अजंता में पाए जाते हैं|”[14]

श्रीरामवृक्ष बेनीपुरी:पैरों में पंख बाँधकर

‘पैरों में पंख बाँधकर’ श्रीरामवृक्ष बेनीपुरी की यूरोपीय यात्रा का वृत्तांत है| इस पुस्तक में बेनीपुरी जी ने अपनी यात्रा को डायरी के रूप में प्रस्तुत किया है| इस यात्रा-वृत्तांत में तुलनात्मक शैली का प्रयोग किया गया है| इसमें विशेषकर फ़्रांस, इंग्लैंड, स्कॉटलैंड, स्विट्जरलैंड की यात्रा का वर्णन है| लेखक ने अपनी यात्रा में देखे गए यूरोपीय जीवन का बहुत ही सजीव, सुंदर और रोचक वर्णन इस यात्रा-वृत्तांत में किया है| उन्होंने अपने यात्रा-वृत्तांत में ऐतिहासिक व्यक्तियों, ऐतिहासिक धरोहरों एवं ऐतिहासिक घटनाओं को प्रमुखता से चित्रित किया है|

लेखक ने इंग्लैंड के प्रसिद्ध ऐतिहासिक म्यूजियम का वर्णन करते हुए उसकी हर विशेषताओं का उल्लेख किया है| वहाँ के ऐतिहासिक लेखकों एवं उनकी हस्तलिपियों का भी वर्णन किया है| इतना ही नहीं, वहाँ के म्यूजियम से हिंदुस्तान के म्यूजियम की तुलना करते हुए उन्होंने क्षोभ भी प्रकट किया है| लेखक के शब्दों में उदाहरण प्रस्तुत है- “ब्रिटिश म्यूजियम-अंग्रेजों की संग्रहवृत्ति का श्रेष्ठ उदाहरण| विदेशों से रुपये-पैसे ही नहीं लाए, कला, कारीगरी, ज्ञान आदि के साधन भी लाए और उन्हें यहाँ एक जगह एकत्र किया! इसके लगभग एक दर्जन विभाग हैं| एक-एक विभाग भारत के किसी भी पूरे म्यूजियम का मुकाबला कर सकता है| यहाँ छपी पुस्तकें हैं, हस्तलिखित पोथियाँ हैं, चित्र हैं, सिक्के हैं, मूर्तियाँ हैं| रोमन और मिस्री मूर्तियों की पंक्तियाँ देखते ही सिर चकरा जाता है| चीन की चित्रकारियों का संग्रह देखकर आदमी भौंचक हो जाता है| हस्तलिपियों की भी भरमार है| ऐसा एक भी

प्रसिद्ध अंग्रेज लेखक नहीं हुआ जिसकी हस्तलिपियाँ यहाँ न हों-और छपी पुस्तकों का क्या कहना?"[15]

स्कॉटलैंड के ऐतिहासिक 'एडिनबरा का किला' का शौर्यपूर्ण एवं मार्मिक चित्रण इस यात्रा-वृत्तांत में किया गया है| स्कॉटलैंड के शहीद सैनिकों को सम्मान देने और उनकी स्मृतियों को सहेजकर रखने के तरीके का भी वर्णन मिलता है| श्रीरामवृक्ष बेनीपुरी की पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं- "किन्तु मुझे सबसे अधिक प्रभावित किया शहीदों के स्मारक ने; किले के एक भाग में यह स्मारक बनाया गया है| भवन के द्वार पर ही लिखा है-Lest we forget-कहीं हम उन्हें भूल न जाएँ; भीतर बहुत बड़ा हॉल है-दीवारों पर खुदाई की तस्वीरें हैं| जहाँ-जहाँ लड़ाईयां हुईं और उनमें जो-जो वीर मारे गए, सबके नाम एक बड़ी पुस्तक में लिखकर रख दिए गए हैं|...दीवारों पर प्रसिद्ध युद्धों और वीरों के चित्र बनाए गए हैं| उनके द्वारा प्रयोग किए गए हथियारों का भी संग्रह है| यही नहीं, जिन जानवरों का प्रयोग उन्होंने सवारियों के लिए किया था, उनके सिर के चित्र भी बड़े मनोरम बनाए गए हैं! जब मैं उन्हें देख रहा था, बार-बार यह बात याद आती थी कि क्या हमलोग अपने शहीदों के लिए कुछ ऐसा नहीं कर सकेंगे! 1857 से लेकर 1947 तक जितने शहीद हुए, कम-से-कम उसके नाम और पते की भी तो हम एक सूची बना लेते!"[16]

श्रीरामवृक्ष बेनीपुरी ने शेक्सपीयर के जन्मस्थल का भ्रमण किया था| उन्होंने शेक्स्पीयर के ऐतिहासिक जन्मस्थल, उनकी स्मृतियाँ, उनके साहित्यिक योगदान का उल्लेख इस यात्रा-वृत्तांत में किया है| शेक्सपीयर की महानता को रेखांकित करते वक्त उनके प्रति लेखक का सम्मान देखिए- "प्रणाम करो इस स्थान को संसार के मानवों! इसी स्थान पर शेक्सपीयर जन्मा था, जिसने मानवता को गौरव दिया| शेक्सपीयर या कालिदास किसी खास देश के नहीं होते! वे सारी मानवता के हैं-सारी मानवता के आभूषण हैं, श्रृंगार हैं| सारे मानव उसके निकट सिर झुकाएँ-सादर, सविनय!"[17]

लेखक ने फ़्रांस की ऐतिहासिक उपलब्धियों पर विस्तृत चर्चा की है| फ़्रांस की दुनिया को देन, फ़्रांस का वैभव, उसका साम्राज्य, राजा-महाराजाओं का शौर्यगान, उनकी बर्बरता, सबका वर्णन रामबृक्ष बेनीपुरी ने इस यात्रा-वृत्तांत में किया है| फ्रांस के ऐतिहासिक महत्त्व को रेखांकित करते हुए लेखक ने लिखा है-

“फ्रांस-यूरोप की सभ्यताभूमि, कलाभूमि, भावनाभूमि! फ्रांस ने संसार को फ्रांस की क्रांति या नेपोलियन ही नहीं दिए| इतिहास में राजनीति को इतना अधिक स्थान मिल गया है कि उसने मानव के अन्य सारे प्रयत्नों को दबा रखा है| इतिहास-राजाओं की नामावली पढ़िए, राज्यों की उलट-पुलट का वर्णन पढ़िए या विजेताओं की यशोगाथा पढ़िए-जिसका सबसे बड़ा कर्त्तव्य यह कि कितने देशों को गुलाम बनाया, कितने लोगों को तलवार के घाट उतारे! जब इतिहास सारे मानव प्रयत्नों को स्थान देना शुरू करेगा, फ़्रांस यूरोप के सभी देशों में शीर्ष स्थान पाएगा ही, संसार के इतिहास में भी उसका उल्लेख सोने के अक्षरों में होगा!”[18]

फ्रांस के ऐतिहासिक नौत्रदां गिरजाघर का भी वर्णन श्रीरामवृक्ष बेनीपुरी ने किया है| यह गिरजाघर दुनिया के सात आश्चर्य में से एक है| इसमें ऐतिहासिक वस्तुओं, धरोहरों, ईसा मसीह, नेपोलियन की स्मृतियाँ एवं फ़्रांस के तमाम ऐतिहासिक उपलब्धियों को सहेजकर रखा गया है| नौत्रदां का चित्रण उल्लेखनीय है- “नौत्रदां’ को आधुनिक संसार के सात आश्चर्यों में गिना जाता है| यह एक गिरजाघर है| 1183 में इसकी शुरुआत की गई थी और दो सौ वर्षों में यह तैयार हुआ| इसी के एक गुम्बद पर एक घडी लगाई गई है, जो फ्रांस की सबसे बड़ी घडी समझी जाती है| इसी के अन्दर एक सुरक्षित स्थान पर वह पोषाक रखी गई है, जिसे पहनकर नेपोलियन गद्दी पर बैठा था| महात्मा ईसा को क्रूस पर चढ़ाकर जो लोहे की काँटियाँ ठोकी गई थीं, उसमें से एक काँटी भी यहाँ रखी गई है और ईसा के सिर पर जो काँटों का ताज रखा गया था, उसके भी कुछ टुकड़े यहाँ रखे गए हैं| ‘नौत्रदां’ के आँगन में वह सुप्रसिद्ध स्थान ‘पार्विस’ है, जहाँ से कहा जाता है, फ्रांस की सभी सड़कें निकली हैं| काँसे का एक मील पत्थर बनाकर वहाँ रख दिया गया है जो मील नंबर शून्य का सूचक है|”[19]

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन ‘अज्ञेय’:अरे यायावर रहेगा याद

प्रसिद्ध लेखक सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन ‘अज्ञेय’ का चर्चित यात्रा-वृत्तांत ‘अरे यायावर रहेगा याद’ में असम, बंगाल, औरंगाबाद, कश्मीर, पंजाब व हिमाचल प्रदेश की यात्राओं का वर्णन है| साथ ही साथ तमिलनाडु के अति प्राचीन मंदिरों के बारे में भी महत्त्वपूर्ण जानकारी दी गई है| पुस्तक की शुरुआत ब्रह्मपुत्र के मैदानी भाग में अवतरण से हुई और समाप्त एलोरा की गुफाओं में इतिहास खोजने की कोशिश से हुआ| पहला लेख जो ‘परशुराम से तूरखम’ है, उसमें लेखक ने यात्रा एक सैनिक के रूप में की थी जबकि ‘किरणों की खोज में’ को उन्होंने भौतिक शास्त्र के विद्यार्थी के रूप में लिखा है| अन्य कई लेख उन्होंने साधारण घुमक्कड़ के तौर पर लिखा है|

अज्ञेय ने इस यात्रा-वृत्तांत में एलोरा, अलिफंता, कन्याकुमारी, हिमालय आदि की यात्रा करते मिथकों, प्रतीकों और मूर्तियों की रचना को अपने यथार्थ के केंद्र में देखा-परखा है, जहाँ पुराणों और इतिहास की सच्चाई युगों तक दबी रही| उन्होंने सिर्फ सौंदर्य को ही नहीं रचा है, बल्कि हमारी गुलामी के इतिहास के पन्ने भी पलटे हैं और द्वितीय विश्वयुद्ध से लेकर, हिंदुस्तान की आजादी तक के इतिहास का वर्णन भी किया है|

इस यात्रा-वृत्तांत में ऐतिहासिक पौराणिक कथाओं का भी चित्रण किया गया है| ब्रह्मपुत्र नदी और कृष्ण एवं रुक्मिणी से जुड़ा हुआ एक कथा लेखक के शब्दों में सुनिए- “सदिया से तीन-चार मील जा कर ही ब्रह्मपुत्र की एक उपनदी पार करनी पड़ती है, जो अब कुंडिल कहलाती है| प्रसिद्धि है कि इसी नदी के किनारे कुंडिनपुर की राजधानी थी, और यहीं से रुक्मिणी को लेने कृष्ण आए थे|”[20]

लेखक ने इस यात्रा-वृत्तांत में हिंदुस्तान के प्राचीन विश्वविद्यालयों एवं ऐतिहासिक धार्मिक स्थलों का वर्णन किया है| वे विश्वविद्यालय इस्लामी आक्रांताओं के भेंट चढ़ गए, जो कभी हिंदुस्तान के गौरव थे| इसीलिए उन ऐतिहासिक धरोहरों के अवशेष को देखकर लेखक के मन में उत्साह और क्षोभ दोनों उत्पन्न होता है| उन्होंने लिखा है- “तक्षशिला, नालंदा, सारनाथ, ये नाम यायावर के शरीर में पुलक उत्पन्न करते हैं, किन्तु इसलिए नहीं कि ये प्राचीन खंडहरों के नाम हैं, वरन इसलिए कि ये सांस्कृतिक विकास के-समष्टि के अनुभव पर आधारित जीवन की उन्नततर परिपाटियों के आविष्कार के-कीर्ति-स्तम्भ हैं|”[21]

मुसलमान शासकों ने हिंदुस्तान के अनगिनत शहरों का नाम बदलकर इस्लामिक नाम दे दिया था, जिसका उल्लेख इस यात्रा-वृत्तांत में मिलता है| अज्ञेय ने इस यात्रा-वृत्तांत में इस्लाम के आक्रमण एवं मुस्लिम शासकों के इतिहास को भी बताया है| हिंदुस्तान के ऐतिहसिक नगरों एवं उसकी विशेषताओं को भी रेखांकित किया है| ऐतिहासिक नगरों का चित्रण करते हुए अज्ञेय ने बताया है- "किस्साखानी बाजार को देख कर उसका सामंजस्य प्राचीन भारत का इतिहास पढ़ कर मन में बनाए हुए पुरुषपुर के चित्र के साथ करना कठिन हो जाता है| गांधार राज्य की राजधानी से अपदस्थ हो कर केवल 'मेशा आवर' रह गया-सीमांत का नगर| प्राचीन गौरव के अवशेष जहाँ-तहाँ पुराखंडों में ही मिलते हैं| पेशावर के पास ही 'शाहजी की ढेरी' में अनेक अन्य वस्तुओं के साथ कनिष्क-कालीन मंजूषा भी मिली जिसमें बुद्ध के धातु सम्पुट थे| यह मंजूषा अब पेशावर संग्रहालय में है| आठवीं शती से पुरुषपुर पर पठानों के आक्रमण होने लगे; ग्यारहवीं शती के आरम्भ में राजा जयपाल और युवराज आनंदपाल मुहम्मद गजनवी से पराजित हुए| पंद्रहवीं शती से वे कबीले आस-पास बसने लगे जो अब वहाँ के रहने वाले हैं| सोलहवीं शती के आरम्भ में बाबर उधर से आया और उसके बाद अकबर ने शहर को नया नाम दे दिया|"[22]

इस्लामिक आक्रांताओं ने न सिर्फ हिंदुस्तान बल्कि पूरी दुनिया में तबाही मचाई है| हिंदुस्तान पर किए गए उनके जुल्म न भूलने वाला एक काला अध्याय है| लेखक ने इस यात्रा-वृत्तांत में औरंगज़ेब के खूनी इतिहास का बहुत ही निर्भीकता के साथ वर्णन किया है| औरंगज़ेब का बर्बर इतिहास एवं अमानवीय कृत्यों का एक उदाहरण देखिए- "दौलताबाद के दुर्ग के नीचे से हो कर जाती हुई सड़क से खुल्दाबाद की छोटी-सी बस्ती पड़ती है| एक सफ़ेद मेहराब के नीचे से हो कर सड़क गुजरती है; दोनों ओर सफ़ेद चूना-पुती इमारतें हैं, जिन की चक-चक सफ़ेदी में से एक बीहड़ सुनसान चीत्कार कर उठता है| वह नई-नई सफ़ेदी और इस आवरण के भीतर समाधियाँ-समाधियाँ नहीं क्योंकि इस नाम से तो शांति से भरे हुए व्यक्ति के अंतिम विश्राम की ध्वनि होती है-केवल क़ब्रें; लड़ते-झगड़ते, धर्म-मद, सत्ता-मद, राज्य लोलुपता से डसे हुए, ईर्ष्या और प्रतिहिंसा से सुलगते, धोखे षड्यंत्र और दुष्चक्रों से खोखले हो गए मनुष्यों की क़ब्रें|...औरंगाबाद-जैसा कि नाम से ही प्रकट है-औरंगज़ेब ने बसाया था| खुल्दाबाद भी उसी की कृति है| खुल्दाबाद के अर्थ हैं 'स्वर्ग की बस्ती'| न जाने क्या सोच कर औरंगज़ेब ने इस स्थल को यह नाम दिया

होगा, पर इतिहास ने उसे एक नई व्यंग्य सार्थकता दे दी है:औरंगज़ेब और उसके सारे परिवार को वहीं मदफन मिला-औरंगज़ेब के जराजीर्ण और दूसरों के हिंसा-प्रतिहिंसा-जर्जर शरीरों को वहीं मिट्टी मिली-अपने ही रचे हुए स्वर्ग में सब मिट्टी हो गए|"[23]

हिंदुस्तान के मंदिर स्थापत्य कला के बेहतर नमूने हैं| ये मंदिर हमारी परम्परा, दर्शन और संस्कृति के संवाहक हैं| अज्ञेय ने इस यात्रा-वृत्तांत में ऐतिहासिक मंदिरों की समुचित कलाकृतियों का चित्रण किया है| मंदिरों की स्थापत्य कला की विशेषताएँ लेखक के शब्दों में द्रष्टव्य हैं- "मदुरै की मीनाक्षी और तंजावूर के बृहदीश्वर, या कि चिदंबरम के नटराज? सभी के मंदिर अद्वितीय हैं और विराट की ओर उन्मुख एक श्रद्धा को मूर्त करते हैं, जो स्वयं हम में हो न हो, अपनी स्वतः प्रमाणता से हमें चौंधिया जाती है| बृहदीश्वर और नटराज के दर्शन एक ही बार किए, मीनाक्षी के एकाधिक बार; पर उससे कोई अंतर नहीं पड़ता| मूर्तियाँ भी नहीं भुलाई जा सकतीं| मंदिर भी नहीं, पर सबसे अधिक गहरा प्रभाव पड़ता है उस भावना का जिस ने इन मंदिरों को संभव बनाया-उस आस्था का, उस विश्व-दर्शन का उस परंपरा का, उस संस्कृति का जिसके ये अवशेष हैं|"[24]

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय':एक बूँद सहसा उछली

इस यात्रा-वृत्तांत में लेखक ने यूरोप के लगभग एक वर्ष के प्रवास के बारे में लिखा है| इसमें अज्ञेय ने इटली, स्विट्ज़रलैंड, फ्रांस, नीदरलैंड, इंग्लैंड, स्कॉटलैंड, वेल्श, स्वीडन आदि देशों की यात्रा के बारे में लिखा है| जिस यूरोप का वर्णन 'अज्ञेय' ने किया है, वह पचास के दशक का है और अब तक वहाँ काफी बदलाव हो चुके हैं, लेकिन जिन मूलभूत विचारधाराओं की बात लेखक ने की है, उन्हें अभी भी कुछ बदलाव के साथ देखा जा सकता है|

यूरोप में लेखक ने जो कुछ भी देखा-परखा, उसका बारीकी से वर्णन किया है| पुस्तक में लेखक ने यूरोप के इतिहास, धर्म, दर्शन, संस्कृति एवं समाज के बारे में गहरी चर्चा की है| यूरोप के कुछ प्रसिद्ध संतों की कर्मस्थली, उनके रहन-सहन और उनकी सामाजिक स्थिति की भी चर्चा की है| इस यात्रा-वृत्तांत में लेखक ने जर्मनी पर द्वितीय विश्वयुद्ध की विभीषिका के प्रभाव को भी दिखाया है तो यूरोपीय जीवन की स्वतंत्रता और खुलापन पर भी गहरा प्रकाश डाला है| लेखक ने यूरोपीय समाज के पुराने आदर्शों, जीवन शैली और स्थापत्य कला का बहुत ही गंभीर वर्णन किया है| यूरोप के ऐतिहासिक धरोहरों और यूरोपीय जीवन के ऐतिहासिक पक्षों का वर्णन लेखक ने सजीवता के साथ किया है|

दुनिया के सभी देशों और उनके प्रमुख प्राचीन महानगरों का अपना-अपना ऐतिहासिक महत्त्व है| इटली का प्रमुख शहर फ़िरेंजे और ग्रीस की राजधानी एथेंस का भी अपना ऐतिहासिक है| इस यात्रा-वृत्तांत में अज्ञेय ने फ़िरेंजे और एथेंस की परम्परा, इतिहास, वैभव एवं संस्कृति पर प्रकाश डाला है| फ़िरेंजे और एथेंस के ऐतिहासिक महत्त्व को रेखांकित करते हुए लेखक ने लिखा है- “वास्तव में फ़िरेंजे और एथेंस का नाम एक साथ लेना ऐतिहासिक अभिप्राय रखता है| दोनों नगर अपने उत्कर्ष-काल में गणराज्य थे और उनकी सांस्कृतिक देन में इस बात का विशेष महत्त्व रहा| निःसंदेह दोनों का समय अलग-अलग था; और इसके अलावा एथेंस के गणराज्य में अभिजातों की सत्ता थी, जब कि फ़िरेंजे के गणराज्य में सत्ता नागर अथवा व्यापारी वर्ग की थी| और इसी के अनुरूप दोनों की देन में भी अंतर रहा है| किन्तु एक स्वाधीन चिंतन, एक निश्शंक कौतूहल, और शिल्प की साधना में एक निश्चिन्त खुलेपन और उदार विस्तार का भाव दोनों में रहा| मानसिक स्वातन्त्र्य की इस परम्परा के और व्यापारिक समृद्धि के कारण फ़िरेंजे मध्यकालीन पुनरुज्जीवन का केंद्र रहा| 14वीं शती का उत्तरांश और 15वीं शती का समय फ़िरेंजे का उत्कर्ष का समय रहा| यह समय सुप्रसिद्ध मेडिची परिवार की उन्नति और समृद्धि का समय रहा, उसी वंश के लोरेंजो ‘लोरेंजो द मैग्निफिसेंट’ के विरुद से प्रसिद्ध हैं| सन 1860 में जनमत संग्रह द्वारा फ़िरेंजे इटली के राज्य से संबद्ध हो गया और कुछ वर्षों तक उसकी राजधानी भी रहा|”[25]

संग्रहालय किसी भी देश के ऐतिहसिक अवशेषों का भण्डार होता है| ब्रिटेन में कई बड़े संग्रहालय हैं, जिनमें दुनिया की बहुत सारी दुर्लभ चीजों को संग्रहित करके रखा गया है| इस यात्रा-वृत्तांत में ब्रिटेन के कई संग्रहालयों के अद्‌भुत संग्रहों का वर्णन मिलता है| ब्रिटेन के ऐतिहासिक म्यूजियम की विशेषताओं को लेखक ने इस प्रकार से प्रकट किया है- “ब्रिटिश म्यूजियम तथा विक्टोरिया एण्ड आल्बर्ट म्यूजियम के भारतीय कला संग्रह और ब्रिटिश म्यूजियम तथा इण्डिया लायब्रेरी के ग्रन्थ-संग्रह संसार-प्रसिद्ध हैं| लेकिन लन्दन से बाहर के छोटे भारतीय संग्रह भी कम मूल्यवान नहीं हैं| ऑक्सफोर्ड और केम्ब्रिज के संग्रहालय भी उल्लेखनीय हैं; और बर्मिंघम संग्रहालय की बुद्ध की कांस्य प्रतिमा तो अनुपम है|”[26]

हिंदू धर्म और ईसाई धर्म से जुडी हुई ऐतिहासिक पौराणिक कथाओं का वर्णन जगह-जगह इस यात्रा-वृत्तांत में मिलता है| लेखक ने इतिहास का सहारा लेते हुए इन पौराणिक कथाओं का जिक्र किया है| इसके इतिहास और परम्परा का वर्णन बहुत ही रोचक है- “ईसाई ‘बड़ा दिन’, क्रिसमस, ईसाइयत से कहीं पुराना है| (होली भी पौराणिक हिन्दू धर्म से कहीं अधिक पुरानी है|) रोमिक आक्रमण से पहले ब्रिटेन में जो सूर्योपासक ड्रूइड बसते थे, उनके अयनोत्सव का ही ईसाई रूप क्रिसमस हुआ| इस रूपांतर में ड्रूइड उत्सव के साथ रोमिक जातियों का अयनोत्सव (‘शनि उत्सव’) भी मिल चुका था जब उस पर ईसाई मत ने यीशू के जन्म की कथा का आरोप कर दिया|”[27]

हिंदुस्तान और यूरोप के ऐतिहासिक पौराणिक आस्था और विश्वासों का भी उल्लेख इस यात्रा-वृत्तांत में मिलता है| हिंदुस्तान और यूरोपीय देशों की माता की अवधारणा का वर्णन लेखक के शब्दों में देखिए- “अवनीन्द्रनाथ ठाकुर ने भारतमाता की कल्पना गैरिक-वसना तपस्विनी के वेश में की है; नहीं तो भारतवासियों के मन में भी देश-माता का रूप सिंहवाहिनी दुर्गा का ही एक प्रक्षेपण होता है| ब्रिटेन की देश-माता ब्रितानिया भी सिंहवाहिनी है| जर्मानिया के वाहन रीछ हैं| इसी प्रकार अधिकतर देश देश-माता की रूप-कल्पना शक्ति अथवा तेजस्विता के किसी प्रतीक के साथ करते हैं| किन्तु डेनमार्क की प्रतीक कन्या सागर के किनारे एक चट्टान पर बैठी हुई स्वप्न देखनेवाली किशोरिका सागर-कन्या अथवा जल-परी है|”[28]

द्वितीय विश्वयुद्ध की विभीषिका का प्रभाव पूरी दुनिया पर हुआ था| यह एक ऐतिहासिक युद्ध था, जिसमें पूरी दुनिया को शामिल होना पड़ा था| आज भी बहुत सारे देश इस त्रासदी से उबर नहीं पाए हैं| जर्मनी पर भी इस त्रासदी का असर बहुत ही गहरा हुआ था, जिसका चित्रण इस यात्रा-वृत्तांत में देखने को मिलता है| द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद के बॉन और बर्लिन के इतिहास एवं शासन व्यवस्था का वर्णन करते हुए अज्ञेय ने लिखा है- “बर्लिन की वर्तमान स्थिति से जो परिचित नहीं हैं उन्हें उसे ठीक-ठीक समझाने के लिए अवकाश चाहिए| संक्षेप में यह, कि जर्मनी दो भागों में बंटा है जो अलग देश और राष्ट्र माने जाते हैं| पश्चिमी जर्मनी की राजधानी बॉन है, पूर्वी जर्मनी की बर्लिन| महायुद्ध के बाद बर्लिन पर चार महाशक्तियों का संयुक्त सैनिक शासन होता था; अनन्तर ब्रितानी, फ्रांसीसी अमेरिकी सैनिक अधिकारियों ने सैनिक नियंत्रण हटाकर अपना खण्ड नगर शासन को सौंप दिया; दूसरी ओर रूसी खण्ड में रूस के संरक्षण में पूर्वी जर्मनी की सरकार स्थापित हुई और पूर्वी जर्मनी की राजधानी इसी खण्ड में है|”[29]

कुसुम खेमानी:कहानियाँ सुनाती यात्राएँ

यह यात्रा-वृत्तांत कुसुम खेमानी द्वारा की गई अनेक यात्राओं का संग्रह है, जिसमें देश के भीतर और देश के बाहर, कई स्थानों, कई नगरों-महानगरों का वर्णन है| इस यात्रा-वृत्तांत में हरिद्वार, कश्मीर, कोलकाता, शिलांग, शांति निकेतन, गोवा, उज्जैन, हैदराबाद से लेकर रोम, डर्बन, बर्लिन, प्राग, मास्को, मिस्त्र, मॉरिशस, त्रिनिनाड, भूटान, स्विट्जरलैंड, अलास्का, वैंकूवर तक का भौगोलिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक विस्तार है| कुसुम खेमानी ने अपनी यात्राओं में वहाँ की सभ्यता, संस्कृति, धर्म, भाषा, खान-पान, रहन-सहन एवं ऐतिहासिक धरोहरों का सूक्ष्म अध्ययन किया है और उसका बखूबी वर्णन भी किया है| उन्होंने इस यात्रा-वृत्तांत में

अनेक देश की सभ्यता, संस्कृति के साथ अपनी सभ्यता एवं संस्कृति को एकमेक करके देखा है और वहाँ के ऐतिहासिक मूल्यों को रेखांकित किया है|

हिटलर आज के समय में तानाशाह, क्रूर, बर्बर और नरभक्षी का पर्याय है| उसके अमानवीय कृत्यों ने पूरी दुनिया को झकझोर कर रख दिया था| जर्मनी के संग्रहालय में हिटलर के अमानवीय कृत्यों से सम्बंधित स्मृतियों को आज सहेजकर रखा गया है| इन सभी अमानुषिक स्मृतियों का चित्रण कुसुम खेमानी ने अपने यात्रा-वृत्तांत में किया है| कुसुम खेमानी ने हिटलर के अपराधों को रेखांकित करते हुए लिखा है- "ओशविश कैम्प और यहाँ के संग्रहालय को देखते समय मन इतना भारी हो जाता है कि इच्छा करती है हिटलर को झिंझोड़कर पूछा जाए-क्यों किया तुमने यह अत्याचार? तुम क्या हो? नर-पिचाश? नहीं उससे भी आगे कुछ और...शायद शब्दकारों को कोई नया घिनौना शब्द ढूँढना पड़ेगा तुम्हारे लिए|...इस नीचता का,...इस कुकर्म का...क्या अर्थ था?... क्यों तुमने इन नर्म-नर्म छोटे बच्चों को लॉरियों में भरा और फिर उन्हें कूड़े के ढेर की तरह जमीं में खोदे हुए धधकते दावानलों में जलने के लिए ऊँड़लवा दिया? क्या वे प्यारे और सुकुमार नहीं थे?...क्या उनकी मासूमियत,...फूलों से चेहरे की हँसी,...हवा की सुंगंधित बयार के मानिंद नहीं थी?...क्यों किया तुमने लाखों लोगों का खून?...क्या किसी वैज्ञानिक ने तुम्हारे इस बदबूदार मगज की शोध नहीं की?...क्या तुम भी उसी हाड़-मांस से बने थे, जिससे सब बनते हैं? नहीं-ऐसा नहीं हो सकता! बच्चों के बालों में बांधे जाने वाले ये रिबन के छोटे-छोटे फूल और उनके मासूम चेहरों की मीठी हँसी पर आच्छादित भय की छाया??... इस दृश्य की सोच से ही किसी मनुष्य के मस्तिष्क की कोमल शिराओं में विस्फोट हो सकता है-और तुमने तो पूरी तैयारी;...पूरी योजना के साथ ऐसा किया| कैसे संभव हुआ यह? कैसे घटा ऐसा?"[30]

हिंदुस्तान के राजाओं-महाराजाओं ने अनगिनत महलों, किलों का निर्माण कराया है, इनमें से एक प्रमुख हैदराबाद का गोलकोंडा है| गोलकोंडा का अपना लम्बा इतिहास है| कुसुम खेमानी ने इस यात्रा-वृत्तांत में गोलकोंडा के बनने से लेकर इस पर आक्रमण तक के इतिहास का वर्णन किया है| इसके स्थापत्यकला एवं विशेषताओं का चित्रण करते हुए लेखिका ने लिखा है- "सदियों पहले यहाँ काकातिया राजा प्रताप रुद्र देव रहते थे| एक गड़रिए के कहने पर राजा ने इस

‘पहाड़ी’ पर मिट्टी का किला बनाया| ‘गोल्ला’ माने ‘गड़रिया’ ‘कोंडा’ माने पहाड़ी और मेरा नाम हो गया गोलकुंडा| काकातिया राजा ठहरे वारंगल के मूल निवासी, उनका मन यहाँ न रमा| उन्होंने मुझे बहमनी वंशज मोहम्मद शाह को सन 1363 में सम्हला दिया| इन कुतुबशाही बादशाहों ने मुझे बासठ सालों तक सजाया-संवारा और वास्तुकला के कई अजूबों से भरा| सबसे ज्यादा मेहरबानों इनके राजा मोहम्मद कुली क़ुतुब शाह ने की| इन्होंने मेरे चारों ओर भागमती नगर (हैदराबाद) बसाया| इन्होंने अपनी मुहब्बत के कारण मुझे बाग-बगीचों, मस्जिदों, मंदिरों, मीनारों, फव्वारों, गर्म-ठंडे तरण-ठंडे तरण-तालों, बावड़ियों, बारादरियों, दरबारे-खास, दीवाने आम, दीवाने-खास, तारामती-महल, प्रेममती-महल आदि से ऐसा सजाया कि दूर-दराज दिल्ली बैठे मुगलों को रश्क होने लगा|”[31]

हिंदू राजाओं का साम्राज्य आज की दुनिया के कई देशों तक फैला हुआ था| उन राजाओं ने हर जगह शासन व्यवस्था के अनुसार मंदिरों का निर्माण कराया था, जिनमें से कई कम्बोडिया के प्रसिद्ध ऐतिहासिक मंदिर हैं| कुसुम खेमानी ने उन मंदिरों के इतिहास को खंगालते हुए महत्त्वपूर्ण तथ्य पेश किए हैं| कुसुम खेमानी ने उन मंदिरों का इतिहास बताते हुए लिखा है- “जयवर्मन पंचम ने (968-1001) माता को समर्पित मंदिर ‘ता प्रोम’ पिता को समर्पित ‘प्रियाहान’ बनवाया| जयवर्मन का दरबार गुणीजनों, कवियों, मंत्रियों, दार्शनिकों, चित्रकारों, संगीतज्ञों, गायकों और नर्तकों, से समृद्ध था| इन्होने ‘बैन्ते सरै’ नामक एक खूबसूरत मंदिर का निर्माण किया जो महिलाओं को समर्पित है| 969 में बने इस मंदिर को जंगल ने चारों ओर से अपने संगुऊन में ले लिया है| यह गुलाबी बलुआ पत्थर से बना एक प्यारा सा ठिकाना लगता है-जिसकी रक्षा एक ओर से ‘शिव’ और दूसरी ओर से ‘विष्णु’ कर रहे हैं और इन्हीं का बनाया अनोखा ‘ता कोओ शिव मंदिर’ पूरा का पूरा बलुआ पत्थर (सैंड स्टोन) से बना हुआ है|”[32]

मिस्र की सभ्यता दुनिया की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक मानी जाती है| मिस्र की सभ्यता में आज भी अनगिनत राज दफ्न हैं, जिन्हें समय-समय पर खोजकर्ता एवं इतिहासकार निकालते रहते हैं| मिस्र की सभ्यता के वृहद् इतिहास का भी वर्णन इस यात्रा-वृत्तांत में किया गया है, जिसे यात्रा-वृत्तांतकार के शब्दों में

समझा जा सकता है- “5300 ई. पू. से 3050 ई. पू. तक मिस्र में आदिवासियों का राज था, तत्पश्चात फैरो के राजवंश रहे और 332 ई. पू. से 30 ई. पू. तक आते-आते उनका पूर्णतः पराभव हो गया| वर्तमान शती के आरम्भ से ही वहाँ इस्लामी और ईसाई दोनों धर्मों की छाप पड़ने लगी| आम जीवन पर भी इन सभ्यताओं और संस्कृतियों का प्रभाव पड़ा, पर मूलतः इनकी जीवन-प्रणाली मिस्री ही रही|”[33]

ब्रिटिश उपनिवेश के दौरान गोरों ने भारतीयों पर अनेक जुल्म किए, जिनमें से एक है, हिंदुस्तान से बाहर खेती करने के लिए लाखों मजदूरों को लेकर जाना| उन मजदूरों को आज गिरमिटिया नाम से जाना जाता है| कुसुम खेमानी ने उन मजदूरों के ऐतिहासिक दास्तान को इस यात्रा-वृत्तांत में शब्दबद्ध किया है| गिरमिटिया मजदूरों के खौफनाक इतिहास पर नजर दौड़ाते हुए लेखिका ने लिखा है- “मारिशस, डर्बन, सूरीनाम आदि की तरह ही ट्रिनिडाड में भी सन 1845 से 1917 तक लगभग 1,47,000 बंधुआ मजदूर, भारत से गन्ने की खेती के लिए लाए गए थे| सबका अतीत कमोबेश एक सा ही दर्दनाक है: और उनका यह वर्तमान भी कि आज वे सब भारत से ज्यादा इन देशों में खुश हैं| कहने को तो नृत्तत्वशास्त्री इस द्वीप को कम-से-कम 7000 वर्ष पुराना देश मानते हैं पर आधुनिक मानचित्र पर यह 31 जुलाई सन 1498 में कोलंबस की ईजाद के रूप में अस्तित्व आया| दक्षिणी अमेरिका के सिर पर बिंदी की तरह शोभित उत्तरी अमेरिका के चरण पखारता यह देश विश्व मानचित्र पर मात्र छोटे बिंदु सा है; लेकिन अपने छोटे से आकार में ही निरंतर विकास कर इसने यथाशक्ति सफलता के चरम शीर्षों को छुआ है|”[34]

ओम थानवी:मुअनजोदड़ो

मुअनजोदड़ो नाम सुनते ही आँखों के समक्ष एक प्राचीन और सुव्यवस्थित नगर की तस्वीर उभरती है| ओम थानवी का यात्रा-वृत्तांत मुअनजोदड़ो में इसी ऐतिहासिक

नगर की यात्रा का बहुत ही रोचक वर्णन है| यह यात्रा-वृत्तांत पाठक को प्राचीन सभ्यता के शहर मुअनजोदड़ो का भ्रमण करवाने में सक्षम है| सिंधु घाटी सभ्यता को समझने के लिए मुअनजोदड़ो बहुत उपयोगी है| इस यात्रा-वृतांत के माध्यम से मुअनजोदड़ो का जो कलात्मक शैली में चित्रण किया गया है, वह एक अनोखी अनुभूति देता है, एक ऐसी अनुभूति जिसमें मानो कि पाठक स्वयं मुअनजोदड़ो की गलियों में घूम रहा हो| इस यात्रा-वृत्तांत के माध्यम से ओम थानवी ने मुअनजोदड़ो के इतिहास एवं उसके ऐतिहासिक महत्त्व को बहुत ही बारीकी से खंगाला है|

हिंदुस्तान के विभाजन की पीड़ा बहुत सारे भारतीय लेखकों की रचनाओं में दिखाई पड़ती है| इस विभाजन में बड़ी जनसँख्या को पलायन होना पड़ा था| खासकर पाकिस्तान को इस विभाजन की आड़ में हिंदू, सिख और ईसाई मुक्त किया गया| पाकिस्तान के सिंध में जो हिंदू बचे थे, उन्हें भी धीरे-धीरे ख़त्म कर दिया गया| ओम थानवी ने इस यात्रा-वृत्तांत में पाकिस्तान के सिंध पर मुस्लिम आक्रमण का इतिहास भी लिखा है| उन्होंने हिंदुओं पर हुए जुल्म पर भी कलम चलाई है| ओम थानवी ने सिंध की ऐतिहासिक स्थिति की चर्चा करते हुए लिखा है- “नासिर खान बोले कि पाकिस्तान में सबसे ज्यादा हिन्दू-कोई पच्चीस लाख-सिंध में रहते हैं| बँटवारे से पहले यह तादाद ज्यादा थी| यह बात इसलिए अहम है कि पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में मुस्लिम राज सबसे पहले सिंध में कायम हुआ, इस्लाम की स्थापना के थोड़े ही समय बाद| सत्तरह साल के अरब शहज़ादे मोहम्मद बिन कासिम ने सन 711 में सिंध के राजा दाहिर पर धावा बोला था| बाद में इलाके पर बगदाद के खलीफाओं ने राज किया| उन्नीसवीं सदी तक मुगलों समेत सात राजवंश यहाँ अपनी धाक जमा चुके थे|”[35]

सिन्धु घाटी सभ्यता सबसे पुरानी और विकसित सभ्यताओं में से एक है| यह बहुत ही विकसित और सुव्यवस्थित सभ्यता थी, जिस पर आज भी बहुत सारे शोध और खोज कार्य चल रहे हैं| इस यात्रा-वृत्तांत में सिन्धु घाटी सभ्यता के इतिहास का विस्तृत वर्णन मिलता है| ओम थानवी ने सिन्धु घाटी सभ्यता की ऐतिहासिक विशेषताओं को रेखांकित करते हुए लिखा है- “जो हो, सिंध के

मुअनजोदड़ो, पाक-पंजाब के हड़प्पा, राजस्थान के कालीबंगा और गुजरात के लोथल व धौलावीरा आदि खुदाई में हासिल पुरावशेषों ने यह अच्छी तरह साबित कर दिया है कि सिन्धु घाटी नागर संस्कृति थी| समृद्ध और व्यवस्थित| उन्नत खेती और दूर-दूर तक व्यवसाय करने वाले निवासी| उपकरणों का इस्तेमाल करने वाले और शुद्ध माप-तौल जानने वाले| उनका रहन-सहन और नगर नियोजन अनूठी प्रकृति का था|”[36]

सिन्धु घाटी सभ्यता की आज भी अच्छी तरह से खुदाई नहीं हो पाई है| लेकिन जितनी भी खुदाई हुई और जानकारी इकठ्ठा की गई है, उनके आधार पर यह दुनिया की सबसे विकसित सभ्यता मानी जाती है| इसकी खोज संबंधी इतिहास की समुचित व्याख्या इस यात्रा-वृत्तांत में मिलती है, जो लेखक के शब्दों में द्रष्टव्य है- “मुअनजोदड़ों के खँडहर 1924 में दुनिया के सामने आए| इनकी खुदाई का श्रेय जॉन मार्शल को दिया जाता है| वे पूरे बत्तीस बरस भारतीय पुरातत्त्व के सर्वेक्षण के महानिदेशक रहे| उन्होंने अपने सहयोगियों का हौसला बढ़ाया, उन्हें दिशा दी| खोज की व्याख्या की, कुछ उलझे सूत्रों को जोड़ा| उन्होंने स्थापित किया कि सिन्धु घाटी पूरी तरह भारत में पनपी और पली-पुसी संस्कृति थी|”[37]

वैदिक संस्कृति एवं सिन्धु घाटी सभ्यता के आपस का विवाद बहुत पुराना है, जिसका जिक्र लेखक ने इस यात्रा-वृत्तांत में किया है| कुछ इतिहासकार वैदिक संस्कृति को श्रेष्ठ मानते हैं तो कुछ सिन्धु घाटी की संस्कृति को, कुछ ऐसे हैं, जो वैदिक संस्कृति को सिन्धु घाटी सभ्यता में लेकर जाते हैं| इस विवाद की ओर ध्यान दिलाते हुए यात्रा-वृत्तांतकार ने लिखा है- “अगर देशज-विदेशज की भावुकता के जंजाल में कोई न पड़े तो वैदिक संस्कृति और सिन्धु सभ्यता, दोनों, भारत के आदि इतिहास की शान हैं| विडम्बना यही है कि वेदों को साहित्य से हड़प्पाई इतिहास के पाले में धकेला जाता है, जबकि इसकी पुष्टि के लिए न दस्तावेज़ हैं न पुरातात्त्विक प्रमाण| साहित्य भी श्रुति में है; उसकी अपनी लिपि नहीं है| जबकि सिन्धु सभ्यता में पुरात्तत्व के असंख्य प्रमाण हैं| अपनी लिपि भी है| पर ‘साहित्य’ नहीं है, जो हड़प्पा की सच्चाई पर रोशनी डाल सके!”[38]

असगर वजाहत:चलते तो अच्छा था

यह यात्रा-वृत्तांत असगर वजाहत की ईरान और आजरबाईजान यात्रा की दस्तावेज है| इसमें 26 संस्मरणात्मक वृत्त हैं, जो कबूतरों के झुंड से छाए हैं, जो तेहरान जाकर उतरते हैं और पूरे ईरान व आजरबाईजान में अमरूद के बाग़ खोजने के लिए भटकते हैं| इस यात्रा-वृत्तांत में लेखक तेहरान के हिज़ाब से खिन्न कोहे क़ाफ़ की परियों से दो-चार होता है और उस दुनिया से हमें भी परिचित कराता है| इस पुस्तक के माध्यम से ईरान और आजरबाईजान के तमाम सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं ऐतिहासिक पक्षों से हम वाकिफ़ होते हैं, जिनका वर्णन असगर वजाहत ने बखूबी किया है|

आर्यों का इतिहास बहुत पुराना और शौर्यपूर्ण रहा है| एक समय उनका साम्राज्य दुनिया के बहुत बड़े भू-भाग तक फैला था| ईरान का 'हखामनश', जो बहुत ही बड़ा और प्रगतिशील साम्राज्य था, जिसकी शासन व्यवस्था बहुत ही लोकतांत्रिक थी, जिसका वर्णन लेखक ने इस यात्रा-वृत्तांत में किया है| इस साम्राज्य के मूलभूत सिद्धांतों एवं लोकतांत्रिक मूल्यों को रेखांकित करते हुए असगर वजाहत ने लिखा है- "बताया जाता है कि ईसा से सात सौ साल पहले ईरान के एक जनसमूह ने जो अपने को आर्य कहता था, एक बहुत बड़ा साम्राज्य बनाया था| यह पूर्व में सिंध नदी से लेकर पश्चिम में डनयुब नदी और उत्तर में अरल झील से लेकर ईरान की खाड़ी तक फैला हुआ था| इतिहास में इस साम्राज्य को 'हखामनश' के नाम से याद किया जाता है| अंग्रेजी में इसे 'अकामीडियन' साम्राज्य कहते हैं| बड़े आश्चर्य की बात है कि यह अपने समय का ही नहीं बल्कि हमारे समय में भी बड़े महत्त्व का साम्राज्य माना जाएगा| इस साम्राज्य के एक महान शासक दारुस प्रथम (549 जन्म-485 मृत्यु ई.पू.) ने विश्व का पहला मानव अधिकार दस्तावेज जारी किया था जो आज भी इतना महत्त्वपूर्ण है कि 1971 में संयुक्त राष्ट्र संघ ने उसका अनुवाद विश्व की लगभग सभी भाषाओं में कराया और बाँटा था|...कहा जाता है कि यह मानव अधिकार सुरक्षा दस्तावेज फ़्रांस की क्रांति (1789-1799) में जारी किए गए मानव अधिकार मैनेफैस्टो से भी ज्यादा प्रगतिशील है|"[39]

कोहे काफ़ की जिन परियों की कहानियाँ हम पढ़ते-सुनते आए हैं, उनकी खोज में लेखक आजरबाईजान के पहाड़ों में भटकता रहा| उन्हें मध्य-पूर्व के देशों का इतिहास भी खंगालना पड़ा| लेखक ने आजरवाईजान के इतिहास का बड़ा ही रोचक वर्णन अपने यात्रा-वृत्तांत में किया है| असगर वजाहत ने बताया है- "रूस, जार्जिया, अरमीनिया, तुर्की, ईरान और कैस्पियन समुद्र से घिरे आजरबाईजान का इतिहास पुराना है| आज जो आजरबाईजान है वह इस्लाम आने से पहले काकेशिया अल्बानिया कहलाता था| फारसी और उर्दू में काकेशिया को कोहे क़ाफ़ कहते हैं| कोहे क़ाफ़ केंद्रीय ईरान से दूरदराज, काकेशियन समुद्र के किनारे पहाड़ों की एक बड़ी श्रृंखला है, जो किस्से-कहानियों और दास्तानों में बहुत रोचक, रहस्यमयी, आकर्षक और विचित्र प्रकार की होती रही है| मध्य एशिया की पुरानी कहानियों में जो हमारे देश तक भी पहुँची हैं, कोहे क़ाफ़ में बसनेवाली स्त्रियों को परियाँ कहा जाता है| यह विश्वास आज भी बना हुआ है कि 'कोहे क़ाफ़' में रहनेवाली स्त्रियाँ संसार की सुंदरतम स्त्रियाँ हैं| यही वजह है कि कहानियों और दास्तानों के शहजादे इन परियों पर आशिक हो जाते हैं और कोहे-क़ाफ़ की खाक छानते हैं|"[40]

ईरान में अरबों के आक्रमण से पूर्व अग्निपूजक बसते थे| अरबों के आक्रमण के बाद सबने इस्लाम स्वीकार किया| इन अग्निपूजकों पर हुए जुल्म का इतिहास और उनकी वर्तमान दशा का वर्णन इस यात्रा-वृत्तांत में देखने को मिलता है| अग्निपूजकों की करुण व्यथा लेखक के शब्दों में द्रष्टव्य है- "ईरान पर अरबों की विजय (सातवीं शताब्दी) के बाद अग्निपूजकों को दूरदराज के इलाकों में भागना पड़ा था| जिन्होंने इस्लाम धर्म स्वीकार नहीं किया था उन्हें देश के मुख्य भाग से खदेड़ दिया गया था| अग्निपूजक दक्षिण पूर्व के रेगिस्तान दस्ते-लूत और दश्ते-कावीर की तरफ चले गए थे| ये रेगिस्तानी इलाके तेहरान से दूर थे लेकिन बहुत अंजान और कटे हुए भी न थे| तेरहवीं शताब्दी में मार्कोपोलो ने यज्द शहर की प्रशंसा की थी| यज्द आज भी प्रशंसनीय है| शहर का अपना अलग चरित्र है जो मुख्यधारा के ईरानी शहरों से भिन्न है| यज्द में आज भी अग्निपूजक रहते हैं और उनके मंदिर हैं| इस्लामी गणराज्य में अग्निपूजकों की स्थिति बहुत अच्छी नहीं है लेकिन इस इलाके में धार्मिक सहिष्णुता और सह-अस्तित्व दिखाई पड़ता है|"[41]

हिंदुस्तान पर मुसलमानों के आक्रमण का बर्बर और खूनी इतिहास का उल्लेख इस यात्रा-वृत्तांत में मिलता है| नादिरशाह के द्वारा दिल्ली की जनता पर किए गए जुल्म की इंतहा के बारे में बात करते हुए असग़र वजाहत ने लिखा है- “एक दिन शहर में एक ख़बर उड़ी कि लाल किले में नादिरशाह की हत्या कर दी गई है| दिल्ली की जनता भड़क उठी और ईरानी सिपाहियों पर आक्रमण और उनकी हत्याएँ शुरू हो गईं| दूसरी रवायात यह है कि नादिरशाह के किसी सैनिक और दिल्ली के किसी कबूतर बेचनेवाले के बीच कहा-सुनी हो गई और परिणामस्वरूप नादिरशाह के सिपाही की हत्या कर दी गई| अपने सिपाहियों की हत्या की खबर सुनकर नादिरशाह घोड़े पर बैठकर चाँदनी चौक आया और कोतवाली के सामने अपनी म्यान से तलवार निकाल ली| यह कत्लेआम का आदेश था| सुबह नौ बजे से दोपहर दो बजे तक नादिरशाह नंगी तलवार लिए चाँदनी चौक में खड़ा रहा और इस बीच शहर के बीस हज़ार मर्द, औरत, बच्चे, बूढ़े क़त्ल कर दिए गए| तब नादिरशाह की खून की प्यास बुझी|”[42]

यह हमेशा विवाद का विषय रहा है कि मुसलमान हिंदुस्तान को लूटने नहीं आए थे, बल्कि वे यहीं बस गए| यात्रा-वृत्तांतकार की दृष्टि इससे विपरीत रही है| उन्होंने इस यात्रा-वृत्तांत में नादिरशाह के द्वारा हिंदुस्तान पर किये गए जुल्म, लूट और बर्बादी के इतिहास को दर्ज किया है| नादिरशाह की क्रूरता के प्रति लेखक का रोष उल्लेखनीय है- “हिंदुस्तान का शहंशाह बनने और अपने नाम का सिक्का चलवाने के बाद नादिरशाह लौट आया| वह अपने साथ तख्ते ताउस और कोहेनूर के साथ-साथ पंद्रह करोड़ रुपये नकद और पंद्रह करोड़ रुपये का सोना और चाँदी अपने साथ ले गया था| इसके अलावा दीगर कीमती सामान भी उसकी लूट में शामिल था| नादिरशाह के खजांची के अनुसार कुल लूट का अनुमान सत्तर करोड़ के आसपास आँका गया था| वह अपने पीछे वह उजाड़ दिल्ली, हजारों लोगों के शव, अपमानित परिवार और बेसहारा लोग, पराजित और खण्डित हिंदुस्तान छोड़ गया था और दे गया था उर्दू कविता को एक नई शैली ‘शहरे आशोब’ जिसमें शहर की तबाही, लोगों की बर्बादी का मातम किया जाता था|”[43]

3.4 राजनैतिक वर्णन परक यात्रा-वृत्तांत

साहित्य में सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक पक्षों का यथार्थ चित्रण होता है| जनजीवन के सपनों में बाधक बने तत्त्वों और सामाजिक एवं राजनीतिक भटकावों को जीवंत रूप में साहित्यकारों ने प्रस्तुत किया है| अपने युग को चित्रित करने तथा सामाजिक, राजनीतिक चेतना को अभिव्यक्त करने का महत्त्वपूर्ण कार्य साहित्यकारों ने किया है| साहित्यकार पर बहुत अधिक जिम्मेदारी होती है, क्योंकि सामाजिक, राजनैतिक एवं जनता की विचारधारा को साहित्यकार ही अपनी लेखनी के माध्यम से विस्तृत, स्पष्ट और यथार्थ रूप में प्रस्तुत कर सकता है| साहित्य के माध्यम से ही जन-जन तक सामाजिक, राजनैतिक विचारधाराएँ पहुँचती हैं|

साहित्य का राजनीति से विरोध नहीं बल्कि उनके जनहितकारी मुद्दों को लेकर मत वैभिन्य होता है| इसलिए जो लोग सोचते हैं कि इन दोनों में दुराव की भावना होनी चाहिए, सदभाव की नहीं तो दरअसल उन्हें साहित्य की भूमिका को लेकर भ्रान्ति है| साहित्य की भूमिका को संकीर्णता में नहीं अपितु व्यापकता में देखने की जरूरत है| कुछ आलोचक साहित्य और राजनीति के सम्बन्ध का विरोध करने के लिए प्रगतिशील लेखक संघ के स्थापना सम्मेलन में दिए गए प्रेमचंद के अध्यक्षीय भाषण के एक अंश का सहारा लेते हैं, जिसमें उन्होंने कहा था कि 'साहित्य राजनीति के आगे चलने वाली मशाल है| लेकिन वे इस बात पर ध्यान नहीं देते कि खुद प्रेमचंद ने अपनी किताबों को स्वतंत्रता आंदोलन का अंग माना है|

राजनीति सिर्फ राजनीति नहीं होती है बल्कि सत्ता और शासन भी होती है और सत्ता द्वारा लिए गए निर्णय नागरिक को प्रभावित करते हैं| उनके अविवेकपूर्ण निर्णय समाज को गलत दिशा में ले जा सकते हैं| इसीलिए सत्ता के प्रतिरोध में साहित्यकार अपनी कलम की ताकत दिखाता रहता है|

दुनिया का कोई भी भू-भाग हो वहाँ का साहित्य, वहाँ की राजनीति से प्रभावित होता है| साहित्य की कोई भी विधा हो, उसमें राजनीति के पुट दीख ही जाते हैं और अगर सभी विधाएँ राजनीति से प्रभावित हैं तो यात्रा-वृत्तांत भी इससे अछूता नहीं है| कई यात्रा-वृत्तांतकारों ने राजनैतिक उद्देश्यपरक यात्रा-वृत्तांत लिखे हैं| उन्होंने देश विदेश की राजनैतिक व्यवस्था और उथल-पुथल को अपने यात्रा-वृत्तांत का विषय बनाया है|

यशपाल:लोहे की दीवार के दोनों ओर

वियना में 'विश्व शांति कांग्रेस' का आयोजन किया गया था, जिसमें यशपाल भारतीय शांति कमेटी की तरफ से गए थे| इसी दरम्यान यशपाल ने रूस, इंग्लैंड, जार्जिया, आस्ट्रिया और स्विट्जलैंड की यात्रा की थी और अपने यात्रानुभवों को 'लोहे की दीवार के दोनों ओर' में संकलित किया है| यह यात्रा-वृत्तांत छः अध्यायों में विभाजित है, जिसमें उन्होंने समाजवादी और पूँजीवादी देशों की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक व्यवस्था का चित्रण किया है| यशपाल की यह यात्रा राजनैतिक यात्रा थी, इसीलिए उनके यात्रा-वृत्तांत में राजनैतिक पक्षों के चित्रण पर जोर है|

यशपाल ने अपने यात्रा-वृत्तांत में समाजवादी और पूँजीवादी देशों की तुलना प्रस्तुत की है| उन्होंने जगह-जगह समाजवादी और पूँजीवादी देशों की अलग-अलग विशेषताओं और भिन्नताओं का जिक्र किया है| यशपाल ने दो पृथक विचारधारा और संस्कृति के कलाकारों के बारे में चर्चा करते हुए लिखा है- "समाजवादी सोवियत के चित्रकार और पूँजीवादी समाज के चित्रकार भी रेखाओं और रंगों द्वारा अपनी कल्पनाओं और भावों की अभिव्यक्ति करते हैं| सौंदर्य की प्रतिष्ठा और भावों की अभिव्यक्ति के लिए दोनों ही चित्रकला के माध्यम को अपनाते

हैं परन्तु इस एक ही माध्यम द्वारा प्रकट दो पृथक विचारधाराओं और संस्कृतियों के कलाकारों की भावनायें और मूर्त पृथक-पृथक हैं|"[44]

रूस में मजदूर संघ की स्थिति बहुत मजबूत है, जिसका वर्णन लेखक ने इस यात्रा-वृत्तांत में किया है| मजदूर संघ की चुनावी प्रक्रिया, मजदूरों की स्थिति, उनकी मजदूरी, सुविधाएँ आदि का भी उल्लेख यशपाल ने किया है| यशपाल ने रूस के मजदूर संघ की भूमिका का हवाला देते हुए बताया है- "मजदूर औद्योगिक संघ का सदस्य बनाने के लिए कानूनन विवश नहीं हैं| अधिकांश मजदूर सदस्य हैं परन्तु अपनी इच्छा से| उन्हें संघ का चंदा अपनी आय का एक प्रतिशत ही देना पड़ता है| सदस्य न होने पर मजदूरों को किसी असुविधा का सामना नहीं करना पड़ता| वे सदस्यों को प्राप्त होने वाली सभी सुविधाओं को पाते हैं अलबत्ता वे संघ के चुनावों और निर्णयों में मत नहीं दे सकते| सदस्य न होने पर उन्हें इस प्रकार की सुविधायें दूसरों के निर्णय या दया से ही प्राप्त होती हैं| इन निर्णयों में भाग ले सकने के लिये, अपने भाग्य का निर्णय स्वयं कर सकने के लिये मजदूर संघ के सदस्य स्वयं ही बन जाते हैं|"[45]

जारशाही के समय स्तालिन चोरी-चुपके छापाखाना चलाता था| तरह-तरह की पाबंदियों के बावजूद स्तालिन कुएँ में गुप्त छापाखाना चलाकर अपने विचारों को लोगों तक पहुँचाता रहा था, जिसका उल्लेख इस यात्रा-वृत्तांत में मिलता है| स्तालिन के संघर्ष और क्रांति का वर्णन करते हुए यशपाल ने लिखा है- "1903 में जब का. स्तालिन जारशाही की जेल में थे, उन्होंने इस छापेखाने की योजना बनाकर भेजी थी| उस विकट दमन के समय जब मुंह खोलते ही आदमी की गोली का शिकार हो जाता था, क्रांति के प्रचार का साधन गुप्त साहित्य ही हो सकता था| गुप्त साहित्य को छापना टेढ़ी समस्या थी| कोई प्रेस छापने के लिए तैयार न होता| प्रेसों पर जारशाही की इतनी कड़ी नजर रहती थी कि क्रांतिकारियों के लिए साधारण अवस्था में अपना प्रेस बना लेना संभव नहीं था|"[46]

यशपाल रूस की समाजवादी व्यवस्था को सफल मानते हैं| उनकी नजर में यही एक ऐसी व्यवस्था है, जिसके माध्यम से आम जन तक सभी चीजों की पहुँच संभव है| लेखक ने इस पुस्तक में समाजवादी व्यवस्था की हर जगह वकालत की है|

उन्होंने सोवियत रूस की समाजवादी व्यवस्था की सफलता को इंगित करते हुए लिखा है- "पूँजीवादी देशों के असहयोग के बावजूद हमारी समाजवादी व्यवस्था की सफलता को देख कर हमें रोगी नहीं कहा जा सकता| आज पूँजीवादी समाज को हमारे रोग से नहीं बल्कि अपने स्वास्थ्य से डर है| आज अपना रोग हमारे देश में फैलाने में लगे हैं| हम उन्हें ऐसा अवसर नहीं देते तो वे आइरन करटेन या लोहे की दीवार की शिकायत करते हैं| हम देखते-सुनते विषैले साँपों को अपने घर में घुस कर उत्पात करने का अवसर नहीं दे सकते|"[47]

अनिल यादव:वह भी कोई देस है महराज

पेशे से पत्रकार अनिल यादव का चर्चित यात्रा-वृत्तांत 'वह भी कोई देश है महराज' सिर्फ पूर्वोत्तर भारत नहीं बल्कि, सम्पूर्ण भारत की राजनैतिक स्थिति की हकीकत को बयान करता है| इस यात्रा-वृत्तांत में लेखक ने सत्ता के स्वरूप, वहाँ की दलीय स्थिति, चुनाव प्रक्रिया, न्याय व्यवस्था, आर्थिक नीति, बाजार व्यवस्था, उत्पादन, वितरण, बेरोजगारी, आतंकवाद इत्यादि को बहुत ही बारीकी से वर्णन किया है| लेखक का मुख्य उद्देश्य राजनैतिक स्थिति का चित्रण करना नहीं, बल्कि उसके सामाजिक प्रभाव का ही अधिक चित्रण करना है|

अनिल यादव ने इस यात्रा-वृत्तांत में पूर्वोत्तर के राजनैतिक हालात, उसके लिए जिम्मेदार नेताओं और उग्रवादी संगठनों का वर्णन किया है| असम गण परिषद और कांग्रेस, जो मुसलमानों को अपना वोट बैंक मानने के कारण उल्फा की मदद कर रहे थे, जिसका भी जिक्र इस पुस्तक में मिलता है| लेखक ने लिखा है, ये दोनों पार्टियाँ भाजपा के वोटर हिंदी भाषियों को भगाना चाहती थीं| राजनैतिक पार्टियाँ और उग्रवादी संगठनों ने पूर्वोत्तर में कितनी भयावह स्थिति कर रखी थी, जिसे हम लेखक के शब्दों में समझ सकते हैं- "अख़बार देखे तब समझ में आया कि जैसा ट्रेन में लगा था, हालत उससे कहीं बदतर है| पूर्वोत्तर दिल्ली की मीडिया की चिंता के

दायरे से बाहर है| दरअसल उसे ब्लैकआउट कर दिया गया है| यहाँ कश्मीर से कहीं जटिल और भयावह स्थिति है| 22 अक्टूबर को दुलियाजान और काकोजान में सोलह, 27 को नलवाड़ी में दस, 8 नवंबर को बरपेटा में दस, 16 नवंबर को बेटावर के बोंगाइगांव में दस, हिंदी भाषी मारे गये थे| इनके आलावा दूरदराज की जगहों में कम-से-कम सात हत्याएँ हुईं थीं जिन्हें रिपोर्ट नहीं किया गया था|"[48]

अनिल यादव ने पूर्वोत्तर की यात्रा के दौरान नेताओं से मिलकर राजनैतिक हालातों का जायजा भी लिया है| इस यात्रा-वृत्तांत में उन्होंने पूर्वोत्तर के नेताओं का दृष्टिकोण एवं समाज के लिए किए गए उनके योगदान का भी वर्णन किया है| अनिल यादव की यात्रा का उद्देश्य उनके शब्दों में द्रष्टव्य है- "राजा से मिलने के बाद नए राजा यानी मुख्यमंत्री ईके मावलांग से मिलना जरूरी था ताकि जाना जा सके कि राज बहाली आन्दोलन के बारे में उनकी सरकार क्या सोच रही है? उनके गृहमंत्री टीएच रंगाद हिमा मिलियम के दरबार में जाकर पुराने राजा के प्रति अपनी निष्ठा सार्वजनिक कर आए थे|"[49]

पूर्वोत्तर आज भी दिल्ली की चकाचौंध से दूर अलग-थलग है| वहाँ के लोग भी सामाजिक, राजनैतिक रूप से शेष भारत से अलग महसूस करते हैं| अनिल यादव के यात्रा-वृत्तांत में पूर्वोत्तर के लोगों के मन में शेष भारत की राजनैतिक व्यवस्था के प्रति आक्रोश का वर्णन मिलता है| दिल्ली के नेताओं और अफसरों के प्रति बेहद गलत धारणा का भी चित्रण मिलता है| नागाओं की राजनैतिक समझ पर प्रकाश डालते हुए यात्रा-वृत्तांतकार ने लिखा है- "उनकी नजर में जयप्रकाश नारायण (जेपी) अकेले भारतीय नेता थे जिन्हें नागा समस्या की समझ थी| जेपी असम के मुख्यमंत्री विमल प्रसाद चालिहा, मिशनरी माइकल स्काट के साथ पीस मिशन के सदस्य थे जिसे चर्च की पहल पर नागालैंड में शांति के उपाय खोजने के लिए छठे दशक के अंत में बनाया गया था| नागा समस्या हल करने के नाम पर अपने पूर्वाग्रहों के खेल खेलने वाले दिल्ली के अफसरों के बारे में उनकी राय बेहद ख़राब थी जिसके वे खुद भुक्तभोगी रह चुके थे|"[50]

दिल्ली की राजनैतिक व्यवस्था से पूर्वोत्तर के लोगों का मोहभंग जगजाहिर है| वे सरकार के प्रति विरोध प्रदर्शन का कोई भी मौका छोड़ना नहीं चाहते हैं, जिसका उल्लेख इस यात्रा-वृत्तांत में भी मिलता है| पूर्वोत्तर के लोगों के विरोध प्रदर्शन का अराजक रूप दिखाते हुए अनिल यादव ने लिखा है- "भीड़ खड़ी विधानसभा ताप रही थी| सिगरेट और क्वाय के वेंडर आ गए थे| छोटे गोल घेरों में बैठे लोग शराब पी रहे थे| एक कोना पुलिस ने घेर रखा था ताकि मुख्यमंत्री, अफसर और विधायक जी भर कर देख सकें| इतने भयानक अग्निकांड के बावजूद लोग खुश थे कि भ्रष्ट, पाखंडी नेताओं की ताकत का एक प्रतीक उनके सामने जल रहा है|"[51]

जवाहरलाल नेहरु की बहुत सारी नीतियों को लेकर आज हिंदुस्तान में विरोध का भाव देखा जाता है| इनमें से एक नीति मणिपुर से जुड़ी हुई है, जिसका वर्णन इस यात्रा-वृत्तांत में मिलता है| मणिपुर के लोग जवाहर लाल नेहरू को नापसंद करते हैं, क्योंकि नेहरु की नीति उनके लिए अहितकारी हुई है| मणिपुर के लोगों के मन में नेहरु की जिस नीति को लेकर नाराजगी है, उसे रेखांकित करते हुए अनिल यादव ने लिखा है- "यहाँ जवाहर लाल नेहरू खलनायक हैं| मैतेई कहते हैं कि उन्होंने अंतरराष्ट्रीय नेता की छवि बनाने की झक में 1200 वर्ग किलोमीटर की उपजाऊ कबौ घाटी बर्मा को दान में दे दी थी| अंग्रेज-बर्मा युद्ध के बाद हुई 1826 की यांदबू की संधि से पहले के तीन सौ साल तक अवा (वर्मा) और मणिपुर के राजाओं के बीच कबौ घाटी की छीना-झपटी चली जिसके कारण लम्बा युद्ध काल रहा था| मणिपुर के पूर्वी छोर और वर्मा की चिदविन नदी के बीच का यह इलाका पंद्रहवीं शताब्दी से संधि के बीच के काल में कभी यहाँ कभी वहाँ के राजा के अधीन रहा| 1834 में अंग्रेजों ने अपने सम्राट की इच्छानुसार कबौ घाटी अवा के राजा को दे दी और मुआवजे के रूप में मणिपुर दरबार का भत्ता बांध दिया था| भारत सरकार मणिपुर दरबार को यह भत्ता 1953 में नेहरू द्वारा बर्मा के प्रधानमंत्री ऊ नू को इम्फाल बुलाकर औपचारिक तौर पर घाटी सौंपने तक देती रही है|"[52]

3.5 प्रकृति चित्रण परक यात्रा-वृत्तांत

प्रकृति व्यापकतम अर्थ में प्राकृतिक, भौतिक, पदार्थिक जगत या ब्रह्माण्ड है| प्रकृति का सम्बन्ध भौतिक जगत और सामान्य जीवन से भी हो सकता है| मानव, पशु, पक्षी आदि प्रकृति की ही देन हैं| सांख्यदर्शन तो मानव की उत्पत्ति ही प्रकृति से मानता है| अन्य दर्शन पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश नामक नामक जिन पांच तत्त्वों से सृष्टि की उत्पत्ति और विकास मानते हैं, वे भी तो अपने मूल स्वरूप में प्रकृति के ही अंग हैं| यह मान्यता भी प्रचलित और प्रसिद्ध है कि साहित्य सर्जन की प्रेरणा व्यक्ति को प्रकृति के रहस्यमय कार्यों एवं गतिविधियों को देखकर ही मिली थी| इस तथ्य में थोड़ा भी संदेह नहीं कि अपने आरंभ काल में मानव की सहचरी और आश्रय-दात्री एकमात्र प्रकृति ही थी, उसी की गोद में ही मानव जाति ने जीना सीखा|

मानव स्वभाव से ही प्रकृति प्रेमी माना गया है| वैदिक काल में तो चाँद, सूर्य, उषा, संध्या, नदी, वृक्ष, पर्वत आदि प्रकृति के विविध रूपों को देवत्व तक प्रदान कर दिया था| प्रकृति के प्रति देवत्व का यह भाव आज भी किसी-न-किसी रूप में हमारी अंतश्चेतना में बना हुआ है| आज भी हम उसके कई रूपों की पूजा-अर्चना करते हैं| मानव और प्रकृति का सम्बन्ध अनादि और चिरंतन है| इसी कारण मानव जीवन की महानतम उपलब्धि साहित्य और प्रकृति का सम्बन्ध भी उतना ही अनादि, चिरंतन और शाश्वत है, जितना कि मानव और प्रकृति का|

भारतीय साहित्य में प्रकृति चित्रण की एक लम्बी परम्परा रही है| हिंदी साहित्य भी प्रकृति चित्रण से भरा पड़ा है| यह अकारण नहीं है| प्रकृति और मानव का सम्बन्ध उतना ही पुराना है, जितना कि सृष्टि के उद्भव और विकास का इतिहास| प्रकृति की गोद में ही प्रथम मानव शिशु ने आँखें खोली थी, उसी की गोद में खेलकर बड़ा हुआ है| इसीलिए मानव और प्रकृति के इस अटूट सम्बन्ध की अभिव्यक्ति धर्म, दर्शन, साहित्य और कला में चिरकाल से होती रही है|

साहित्यकार की सृजनात्मक प्रवृत्ति ने साहित्य में प्रकृति चित्रण की परम्परा विकसित की| साहित्यकार ने प्रकृति के रहस्यमयी स्वरूप का अवलोकन किया| उसने पाया कि विशाल धरती पर ऊँचे-ऊँचे पहाड़, पर्वत श्रृंखलाएँ, कलकल करती नदियाँ, पहाड़ों को चीर कर ऊँचाई से प्रवाहित झरने, हरीतिमायुक्त धरती तो कहीं लाल तो कहीं धूसर रंग की धरती, घने जंगल जिसमें शक्तिशाली पशुओं का विचरण, घास के मैदान, विस्तृत समुद्र और आकाश, आकाशीय और जलीय पशु-पक्षी तथा अनेक प्रकार के जीव-जन्तु विद्यमान हैं| साथ ही अनेकों परिस्थितियाँ और मौसम| वर्षा, शिशिर, वसंत, गर्मी, रात-दिन, सुबह-शाम, आँधी-तूफान, झंझावात, प्रलय, जलप्लावन, भूकम्प आदि विद्यमान हैं, जो उसकी रचना के मूलाधार हैं|

साहित्य मानव जीवन का प्रतिबिम्ब है, अतः उस प्रतिबिम्ब में उसकी सहचरी प्रकृति का प्रतिविम्बित होना स्वाभाविक है| साहित्यकार की विशिष्ट दृष्टि प्रकृति के सौंदर्य का अन्तर्मन से अवलोकन करती है, जिससे उसके अचेतन मन में प्रकृति के प्रति साहचर्य भाव उत्पन्न होता है| कलाकार की दृष्टि उसे आत्मसात कर उसमें सौन्दर्य के गुण ढूँढती है, जिससे उसे आनन्द की अनुभूति होती है, तब वह साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्त करता है|

विष्णु प्रभाकर:हँसते निर्झर:दहकती भट्ठी

विष्णु प्रभाकर का यात्रा-वृत्तांत इस युग की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है| यह यात्रा-वृत्तांत गुण और मात्रा दोनों ही दृष्टि से श्रेष्ठ है| विष्णु प्रभाकर ने अपनी यात्रा की कलात्मक भावात्मक अभिव्यक्ति की है| उन्होंने यात्रा-वृत्तांत में विविध भावों, विचारों तथा घटनाओं को विविध शैली में रोचकता के साथ प्रस्तुत किया है| विष्णु प्रभाकर ने हिंदुस्तान एवं दक्षिण पूर्व के एशियाई देशों की प्रकृति, संस्कृति, भूगोल, इतिहास, समाज, भाषा, धर्म आदि के अनेक पक्षों का उद्घाटन किया है| लेकिन

विष्णु प्रभाकर का मन प्रकृति चित्रण में ही अधिक रमा है| प्रकृति चित्रण में उनका सौंदर्य बोध एवं वर्णन कौशल देखते ही बनता है|

विष्णु प्रभाकर ने गंगोत्री की यात्रा का बहुत ही रोचक वर्णन इस यात्रा-वृत्तांत में किया है| उन्होंने हिमानी के नाना रूपों का बहुत ही मनमोहक चित्रण किया है| गंगोत्री की हिमानी का चित्रण विष्णु प्रभाकर के शब्दों में द्रष्टव्य है- “मन नहीं चाहता, लेकिन लौटना तो है ही| तुरंत खड़े हो गए| एक बार जी भरकर उस रूप को देखा| वह वर्णनातीत रूप, वह पारदर्शी हिमानी, उड़ते जल-सीकर, निरंतर रिमझिम-रिमझिम टपकती बूँदों से बनी झाड़फानूस-सी सहस्त्रों सीटियाँ और उन सब पर पड़ती सूर्य की किरणें, जो प्रतिक्षण असंख्य इन्द्रधनुषों का निर्माण करती हैं| प्रकृति का यह अनंत मुक्त विस्तार, यह निर्विकल्प सत्ता की बोधमयता, कैसे लिखूँ! क्या आनंद था वह! ब्रह्मानंद सहोदर ऐसा ही तो होता होगा|”[53]

कश्मीर को ‘धरती का स्वर्ग’ के नाम से संबोधित किया जाता है| जहाँ आज भी प्राकृतिक संपदा और प्राकृतिक सौंदर्य अनंत काल से अपने यौवन रूप में विराजमान है| लेखक ने अपने यात्रा-वृत्तांत में कश्मीर के प्राकृतिक सौंदर्य का बहुत ही रोमांचक चित्रण किया है- “लेकिन इस सौंदर्य के उपवन में आज मैं दर्शन की बात नहीं करना चाहता| झरने के प्रवाह में उतर जाता हूँ| चीड़ के वनों से होकर बहने वाली स्वास्थ्यवर्धक वायु का तरल शीतल स्पर्श मुझे स्फूर्ति से भर देता है| खनिज-संपत्ति से संपन्न इस निर्झर का जल पीने से मन नहीं अघाता| इसका संगीत चिंतन की सलवटों को सहला-सहलाकर मानो सम करता है| रात्रि की नीरवता में जब चंद्र-किरणें यहाँ अमृत बरसाती होंगी तो आकुल स्वर में गाते ये निर्झर, पुष्पाच्छादित ये सँकरी पगडंडियाँ प्रेमियों को उन्मत्त कर देती होंगी|”[54]

बदरीनाथ हिन्दुओं का विशिष्ट धार्मिक केंद्र है, जहाँ लाखों, करोड़ों की संख्या में हिंदू जाते हैं| विष्णु प्रभाकर ने अपने यात्रा-वृत्तांत में बदरीनाथ की यात्रा का हृदयस्पर्शी वर्णन किया है| उन्होंने बदरीनाथ के प्राकृतिक सौंदर्य का मानवीय रूप में चित्रण किया है| बदरीनाथ का मनमोहक चित्रण यात्रा-वृत्तांतकार के शब्दों में प्रस्तुत है- “अंधकार जैसे-जैसे गदराता गया, वैसे-वैसे ही उन शिखरों का रंग पलटता गया| पहले उषा और फिर अरुद्ध किरणों ने जैसे ही उनका स्पर्श किया, प्रकृति झट अँगड़ाई लेकर उठ बैठी| अब तक एक के बाद एक शिखर स्मित हास्य से लगभग जगमग कर उठा जैसे अप्सराएँ खिलखिला उठी हों, उनकी इन्द्रधनुषी साड़ी

हवा में उड़ने लगी हो| बुरांस के फूल झूम-झूमकर नाचने लगे| पक्षी संगीत संजोने लगे| गंगोत्री, जमनोत्री, केदारनाथ, बदरीनाथ, चौखंबा, सभी रजतशिखर सूर्य के प्रकाश में चमक रहे थे| चौखंबा तो ऐसा लग रहा था जैसे देवताओं के खेल के मैदान को किसी कुशल चित्रकार ने धवल रंग में लिख दिया हो| रजत, स्वर्ण, प्लातिनम का ठोस रूप लेते इन्हीं हिमशिखरों को देखने यात्री इतने कष्ट उठाकर आते हैं|”[55]

कश्मीर के प्राकृतिक सौंदर्य का रसपान करते हुए विष्णु प्रभाकर की आँखें नहीं थकतीं| उन्होंने कश्मीर के प्राकृतिक सौंदर्य का जितना जीवंत चित्रण इस यात्रा-वृत्तांत में किया है, मानो पाठक भी उनके साथ वहाँ की वादियों में सैर करने लगता है| कश्मीर की प्रकृति के नाना रूपों का दिव्यात्मक चित्रण करते हुए विष्णु प्रभाकर ने लिखा है- “प्रकृति के पुजारियों के लिए कश्मीर स्वर्ग है, इसीलिए जब हम कश्मीर के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन करते हैं, तब अनायास ही कवि हो उठते हैं| साधारणतया हम जिन स्थलों की चर्चा करते हैं, उनमें प्रमुख हैं, मुस्कुराते मुगल उद्यान निशात और शालीमार आदि| हम उनके मोहक विस्तार, नानारंग-पुष्पों की इन्द्रधनुषी मुस्कान और विशाल चिनारों के गरिमामय कुंजों के गीत गाते नहीं थकते| इन कुंजों में भोर की बयार अठखेलियाँ जो करती है|”[56]

मोहन राकेश:आखिरी चट्टान तक

मोहन राकेश ने ‘आखिरी चट्टान तक’ में गोवा से कन्याकुमारी तक की यात्रा का वर्णन बहुत ही ईमानदारी एवं भावुकता से किया है| इस यात्रा-वृत्तांत में मोहन राकेश का व्यक्तित्व एवं विभिन्न व्यक्तियों के साथ व्यतीत किये समय का लेखा-जोखा भी है| इस यात्रा-वृत्तांत में अनेक व्यक्तियों की मनःस्थितियों एवं चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन है| मोहन राकेश ने इसमें काव्यात्मक वर्णन के साथ दृश्यों का आकर्षक विधान बुना है| इसमें एक ओर रेखाचित्र के गुण हैं तो दूसरी ओर काव्यमयता एवं चित्रात्मकता के भी गुण हैं| प्राकृतिक सौंदर्य की दृष्टि से यह यात्रा-वृत्तांत उच्च कोटि का है| इसमें कहीं जल की तरल गति है तो कहीं जलाशयों का

तरल सौंदर्य है| कहीं झरनों का मधुर संगीत है तो कहीं नौका विहार का स्वर्णिम दृश्य| कहीं सूर्योदय है तो कहीं सूर्यास्त|

मनुष्य के लिए समुद्र हमेशा से आकर्षण का विषय रहा है| मोहन राकेश के मन में भी बचपन से ही समुद्र के प्रति आकर्षण रहा है, इसीलिए उन्होंने ज्यादातर यात्राएँ समुद्री इलाकों में की हैं| मोहन राकेश ने अपने यात्रा-वृत्तांत में प्राकृतिक सौंदर्य का अद्‌भुत चित्रण किया है| लेखक ने समुद्र के प्राकृतिक सौंदर्य का चित्रण करते हुए लिखा है- "खुला समुद्र-तट| दूर-दूर तक फैली रेत| रेत में से उभरी बड़ी-बड़ी स्याह चट्टानें| पीछे की तरफ एक टूटी-फूटी सराय| खामोश रात और एकटक उस विस्तार को ताकती एक लालटेन की मटियाली रौशनी|"[57]

रात्रि, भोर, संध्या, तारे, चाँद, बादल, हवा, सूर्योदय, सूर्यास्त आदि साहित्यकारों के लिए हमेशा प्रेरक तत्त्व रहे हैं| मोहन राकेश भी इससे अछूता नहीं हैं| उन्होंने इस यात्रा-वृत्तांत में सूर्यास्त और रात्रि के सौंदर्य का बहुत ही मनमोहक चित्रण किया है| सूर्यास्त के सौंदर्य का चित्रण लेखक के शब्दों में देखिए- "पूर्वी आकाश में रात हो गई थी और तारे झिलमिलाने लगे थे, पर पश्चिम की ओर अरब सागर के क्षितिज में अभी साँझ शेष थी| परन्तु साँझ के वे बादल जो कुछ देर पहले सुर्ख और तांबई थे और जिनके कारण सूर्यास्त सुन्दर लग रहा था, अब स्याही में घुलते जा रहे थे| समय साँझ के सौंदर्य से आगे बढ़ आया था-रात के एक नये सौंदर्य को जन्म देने के लिए|"[58]

मोहन राकेश ने अपने यात्रा-वृत्तांत में नीलगिरी के प्राकृतिक सौंदर्य का भी चित्रण किया है| नीलगिरी बहुत ही खूबसूरत जगह है, जो तमिलनाडु, कर्नाटक और केरल की सीमा पर अवस्थित है| बादल की अठखेलियों का चित्रण लेखक के शब्दों में द्रष्टव्य है- "नीलगिरी की ऊपरी चोटियों से बादल के बड़े-बड़े सफ़ेद टुकड़े इस तरह हमारी तरफ आ रहे थे जैसे कोई थोड़ी-थोड़ी देर बाद उन्हें एक-एक करके गुब्बारों की तरह हवा में छोड़ रहा हो| उनके सायों से घाटी में धूप और छाँह की शतरंज-सी बन रही थी| हमारे रास्ते में कुछ क्षण धूप रहती, फिर छाया आ जाती| सड़क हल्के बलखाती हुई लगातार नीचे को उतर रही थी|"[59]

लेखक ने इस यात्रा-वृत्तांत में सूर्य के सौंदर्य की विभिन्न भंगिमाओं के सुंदर नजारा का चित्रण किया है| उन्होंने प्रकृति के मोहक रूप को सर्वत्र प्रकट किया है,

जो पाठक को आनंद एवं आकर्षण पैदा करता है| सूर्य की मोहक लालिमा की तुलना स्वर्ण से करते हुए मोहन राकेश ने लिखा है- “सूर्य का गोला पानी की सतह से छू गया| पानी पर दूर तक सोना-ही-सोना ढुल आया| पर वह रंग इतनी जल्दी-जल्दी बदल रहा था कि किसी भी एक क्षण के लिए उसे एक नाम दे सकना असंभव था| सूर्य का गोला जैसे एक बेबसी में पानी के लावे में डूबता जा रहा था| धीरे-धीरे वह पूरा डूब गया और कुछ क्षण पहले जहाँ सोना बह रहा था, वहाँ अब लहू बहता नजर आने लगा| कुछ और क्षण बीतने पर वह लहू भी धीरे-धीरे बैजनी और बैजनी से काला पड़ गया| मैंने एक बार फिर मुड़कर दायीं तरफ पीछे देख लिया| नारियलों की टहनियाँ उसी तरह हवा में ऊपर उठी थीं, हवा उसी तरह गूँज रही थी, पर पूरे दृश्यपट पर स्याही फ़ैल गयी थी| एक-दूसरे से दूर खड़े झुरमुट, स्याह पड़कर, जैसे लगातार सिर धुन रहे थे और हाथ-पैर पटक रहे थे| मैं अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ और अपनी मुट्ठियाँ भींचता-खोलता कभी उस तरफ और कभी समुद्र की तरफ देखता रहा|”[60]

अमृतलाल वेगड़:सौंदर्य की नदी नर्मदा

अमृतलाल वेगड़ ने अपनी पहली यात्रा सन 1977 में शुरू की थी और अन्तिम यात्रा 1987 में की थी| इन दस सालों की दस यात्राओं का विवरण इस पुस्तक में है| अमृतलाल वेगड़ ने अपनी यात्रा में केवल लोक या नदी के बहाव का सौन्दर्य वर्णन ही नहीं किया है, बल्कि बरगी बाँध, इंदिरा सागर बाँध, सरदार सरोवर आदि के कारण आ रहे बदलाव, विस्थापन की भी चर्चा की है| यह यात्रा-वृत्तांत नर्मदा के प्राकृतिक सौंदर्य के माध्यम से हमें और हमारी आने वाली पीढ़ियों को भी नदियों के प्रति हमारे व्यवहार को सुधारने और उनका निरादर करने से रोकने की कोशिश करता है| अमृतलाल वेगड़ ने कहा था कि जीवन में रोटी से पहले पानी जरूरी है|

हमारे लिए पानी का मतलब नर्मदा से है| नर्मदा को हमारी ज़रूरत नहीं, बल्कि हमें नर्मदा की जरूरत है|

अमृतलाल वेगड़ ने नर्मदा नदी के किनारे-किनारे पूरे चार हजार किलोमीटर की यात्रा पैदल की थी| कोई साथ मिला तो ठीक, ना मिला तो अकेले ही| कहीं जगह मिली तो सो लिए, कहीं अन्न मिला तो पेट भर लिया| सब कुछ बेहद मौन, चुपचाप और जब उस यात्रा से यात्रा-वृत्तांत सामने आया तो नर्मदा का सम्पूर्ण स्वरूप निखरकर सामने आ गया| इस पुस्तक को पढ़ने के बाद नर्मदा को समझने की नई दृष्टि तो मिलती ही है, लेखक की अन्य दो पुस्तकों को पढ़ने की उत्कंठा भी जागृत होती है| इस यात्रा-वृत्तांत की सबसे बड़ी बात यह है कि यह महज जलधारा की बात नहीं करती, बल्कि उसके साथ जीवन पाते जीव-जंतु, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे, वनस्पति, खेत-खलिहान, मानव जीवन एवं प्रकृति वर्णित करता है| यह बताता है कि नदी महज एक जल संसाधन नहीं, बल्कि मनुष्य के जीवन से मृत्यु तक का मूल आधार है|

यह यात्रा-वृत्तांत नर्मदा नदी के माध्यम से पूरे प्राकृतिक जीवन का वर्णन करते चलता है| नदी यहाँ प्रकृति बचाने का, प्रकृति के सदुपयोग का माध्यम है| इस पुस्तक में नदी के सौंदर्य चित्रण के माध्यम से अद्‌भुत प्राकृतिक सौंदर्य उभरकर आया है| अमृतलाल वेगड़ ने नर्मदा के सौंदर्य का चित्रण करते हुए लिखा है- “नर्मदा सौंदर्य की नदी है| यह नदी वनों, पहाड़ों और घाटियों में से बहती है| मैदान इसके हिस्से में कम ही आया है| सीधा-सपाट बहना तो यह जानती ही नहीं| यह चलती है इतराती, बलखाती, वन प्रांतरों में लुकती-छिपती, चट्टानों को तराशती, डग-डग पर सौंदर्य की सृष्टि करती, पग-पग पर सुषमा बिखेरती!”[61]

अमृतलाल वेगड़ की नर्मदा का बहना सिर्फ पानी का बहना नहीं है बल्कि नदी के माध्यम से पूरी सभ्यता और संस्कृति का बहना है| बहते हुए पानी का सौंदर्य, अठखेलियाँ और उसके विकराल रूप का चित्रण लेखक के शब्दों में दर्शनीय है-

“अजीब है यह पानी| इसका अपना कोई रंग नहीं, पर इन्द्रधनुष के समस्त रंगों को धारण कर सकता है| इसका अपना कोई आकार नहीं, पर असंख्य आकार ग्रहण कर सकता है| इसकी कोई आवाज नहीं, पर वाचाल हो उठता है तो इसका भयंकर वज्र-निनाद दूर-दूर तक गूंज उठता है| गतिहीन है, पर गतिमान होने पर तीव्र वेग धारण करता है और उन्मत्त शक्ति और अपार उर्जा का स्रोत बन जाता है| उसके शांत रूप को देखकर हम ध्यानावस्थित हो जाते हैं, तो उग्र रूप को देखकर भयाक्रांत| जीवनदायिनी वर्षा के रूप में वरदान बन कर आता है, तो विनाशकारी बाढ़ का रूप धारण कर जल-तांडव भी रचता है| अजीब है यह पानी!”[62]

लेखक ने नर्मदा को मानवीय रूप में प्रस्तुत किया है| उन्होंने नर्मदा का बहना, उसकी गति, संरचना, इतिहास, भूगोल एवं सौंदर्य आदि का वर्णन इस यात्रा-वृत्तांत में किया है| नर्मदा के मानवीय सौंदर्य का चित्रण लेखक के शब्दों में प्रस्तुत है- “इसी धुआंधार से नर्मदा संगमरमर की कुंजगली में प्रवेश करती है| संगमरमर की चट्टानों को चीरती हुई तंग घाटी में से बहती है और एक अद्‌भुत सौंदर्य लोक की सृष्टि करती है| कनक छरी सी इकहरे बदन की नर्मदा एक जगह इतना सिमट गई है कि इस स्थान को बंदरकूदनी कहते हैं| यहाँ नर्मदा मानो सुस्ता रही है या अत्यंत मृदु गति से बह रही है| संगमरमर की विशाल दूधिया चट्टानें, आलस गति से बहती नीरव नर्मदा और निपट एकांत-लगता है किसी नक्षत्र लोक में आ गए हैं|”[63]

अमृतलाल वेगड़ ने नर्मदा की परिक्रमा न सिर्फ दिन में बल्कि रात में भी की थी| उन्हें जहाँ-जब मन हुआ रात्रि में नर्मदा तट पर या किनारे के गाँवों में विश्राम किया फिर चल पड़े| उन्होंने इस यात्रा-वृत्तांत में नर्मदा किनारे की चाँद और चाँदनी रात का बहुत ही मनमोहक चित्रण किया है| चाँद और चाँदनी रात के अप्रतिम सौंदर्य का वर्णन लेखक ने इस प्रकार किया है- “चाँद ने अपनी जादू की पिटारी खोल दी थी और चाँदनी धार बांधकर बरस रही थी| कभी उस आसमानी जादूगर को देखता, कभी चाँदनी से नहाती पहाड़ियों को देखता, तो कभी चाँदी सी झिलमिलाती नदी को देखता|...जो चाँद कल तक अनगढ़ सा लग रहा था, वह आज

सुगढ़ और परिपूर्ण हो गया है| अब वह हर तरह से सुगढ़ और संपन्न नजर आ रहा था| संपन्न तो इतना कि कहीं अपनी ही चाँदनी के भार से टूट न जाए|...मुझे लगा, चाँद आज बहुत धीरे-धीरे चल रहा है| उसे शायद पता चल गया है कि आज उसके भीतर का समस्त अमृत छलक-छलककर बाहर आ रहा है| वह शायद अधिक-से-अधिक समय तक इस अमृत को लुटाते रहना चाहता है|"[64]

निर्मल वर्मा:चीड़ों पर चाँदनी

चीड़ों पर चाँदनी निर्मल वर्मा का पहला यात्रा-वृत्तांत है, जिसमें उनकी यूरोप यात्रा का वर्णन है| इस यात्रा-वृत्तांत में निर्मल वर्मा ने खुद की आँख से दुनिया को खोजने का प्रयास किया है| यह यात्रा-वृत्तांत द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद के यूरोपीय समाज का जीता-जागता दस्तावेज है| किताब का ज्यादातर हिस्सा यूरोप की यात्रा का है और शीर्षक हिंदुस्तान के घर से लिया गया है, जहाँ खिड़की से बाहर दिख रहे चीड़ पर बर्फ के बाद गिरी चाँदनी की तारीफ की है| किताब के शीर्षक से इस बात का अंदाजा लगाना थोड़ा मुश्किल है कि किताब किस बारे में हैं| लेकिन फिर भी यह तो समझा ही जा सकता है कि लेखक ने शीर्षक में खूबसूरती की बात की है| इतना ही नहीं, बल्कि पूरा यात्रा-वृत्तांत प्राकृतिक सौंदर्य चित्रण से से भरा पड़ा है|

निर्मल वर्मा ने आइसलैंड की यात्रा की थी, जिसका वर्णन उन्होंने इस यात्रा-वृत्तांत में किया है| लेखक ने आइसलैंड के प्राकृतिक सौंदर्य का बहुत ही रोमांचक वर्णन किया है| ग्लेशियर के प्राकृतिक सौंदर्य का चित्रण करते हुए लेखक लिखता है- "अब तक जो धूमिल रेखा जान पड़ती थी, वह अब एक ठोस पथरीली सफेदी में बदल गई थी...बादलों से कहीं अधिक ठोस| सहसा हम सबकी साँस जैसे रुक-सी गई, हम अनायास चुप हो गए थे और हमारी भूखी निगाहें बीच का अन्तराल निगलते हुए स्तंभित-सी ठिठक गई थीं, एक सुदूर बिंदु पर|...और तब सबके हाथ अनायास एक ही दिशा में उठ गए...समुद्र के छोर पर एक विराट, सफ़ेद

सी चीज धीरे-धीरे ऊपर उभर रही थी...जैसे समुद्र की अंतहीन गहराइयों को चीरती हुई कोई जलपरी ऊपर आ रही हो-स्तब्ध, सफ़ेद निरावृत!"[65]

आइसलैंड की नदियाँ बहुत ही खूबसूरत होती हैं, जिनमें ज्यादातर बर्फ से आच्छादित रहती हैं| लेखक ने उन नदियों का इतना सजीव चित्रण इस यात्रा-वृत्तांत में किया है, मानों पाठक भी उनके साथ सैर पर निकल पड़ता है| आइसलैंड की हवीता नदी और उसके बहते हुए पानी के सौंदर्य का वर्णन निर्मल वर्मा ने इस तरह से किया है- "सामने दिखाई दी हवीता नदी| पत्थरों और चट्टानों के बीच लुढ़कते हुए पानी के कुण्डल| नंगी शिलाओं पर भँवर बनाता फेनिल झाग...और ऊँची ढलान से गिरती धार की बूँदें| एक ख़ास कोण से देखने पर हवा में छितरती ये बूँदें इन्द्र-धनुषी रंगों का जाल बुनती-सी दिखाई देती हैं|"[66]

पहाड़ी की चाँदनी रात का सौंदर्य हमेशा अप्रतिम होता है| निर्मल वर्मा ने अपने यात्रा-वृत्तांत में पहाड़ी की चाँदनी रात का बहुत ही मनमोहक चित्रण किया है| खिलनमर्ग की चाँदनी रात का चित्रण लेखक के शब्दों में चित्रित है- "कमरे में हल्की, फीकी-सी चाँदनी बिखर आई थी| आँखें खिड़की के बीच के तरल अँधेरे को लाँघती हुई खिलनमर्ग की हिमाच्छादित चोटियों पर जा टिकीं| चाँदनी के छुई-मुई से झिलमिलाते कण ऊपर से नीचे तक बर्फ पर फिसल रहे थे| सबकुछ एक-दूसरे में चुपचाप सिमट आया था| लगता था, जैसे संगमरमर के सफ़ेद चूरे की हल्की-हल्की बारिश हो रही हो| एक पीला उजला-सा आलोक होटल के बाहर पोलोग्राउंड की घास पर फैलता हुआ हवा में बार-बार काँप उठता था| बादल, बर्फ़, चाँदनी...तीनों के अलग-अलग रंग थे, अलग-अलग लय थी|"[67]

निर्मल वर्मा जन्मजात पहाड़ी थे| पहाड़ उनके जीवन का अभिन्न अंग है| पहाड़ी जीवन को उन्होंने नजदीक से देखा-परखा है और उसकी विशेषताओं को रेखांकित भी किया है| लेखक ने इस यात्रा-वृत्तांत में पहाड़ की प्रकृति के नाना रूपों का वर्णन किया है| पहाड़ की कुदरती सौंदर्य का रोमांचक वर्णन यात्रा-वृत्तांतकार के शब्दों में प्रस्तुत है- "पश्चिमी आकाश में कुहरे के ऊपर अँधेरा अलग था, बादल अलग

थे और दोनों के बीच सिंदूरी रंग की लम्बी विशालकाय व्हेल मछली-सी रेखा खिंच आई थी| किन्तु कुछ ही क्षणों में यह मछली हवा में घुल गई, एक नीली धुन्ध की झीनी-सी चादर पहाड़ियों पर बिछल आई है| लगता है, जैसे रात ऊपर से नीचे नहीं बल्कि नीचे घाटियों की अतल गहराइयों से निकलती हुई ऊपर आकाश की और आ रही है| धुन्ध के छोटे-छोटे रेले धूप और चाँदनी दोनों को ही अपने में समो लेते हैं, डाक-बँगले के लम्बे कॉरिडोर का दूसरा सिरा दिखाई नहीं देता| नीली-सलेटी परतों में लिपटी यह धुन्ध इतनी सघन और ठोस है कि उसे चाकू से तराशा जा सकता है| मेरी सारी देह किसी अदृश्य धुएँ की अनंत तहों में दबी रह गई है| मुझे लगता है, मानो बरामदे की कुर्सी पर मैं नहीं बैठा हूँ, केवल मेरा ओवरकोट धुन्ध की नीली दीवार पर टंगा रह गया है|”[68]

मृदुला गर्ग:कुछ अटके कुछ भटके

‘कुछ अटके कुछ भटके’ में मृदुला गर्ग ने हिंदुस्तान, मालदीव, सूरीनाम तथा अमेरिका की यात्रा का रोचक वर्णन किया है| इस पुस्तक का एक विशिष्ट पहलू यह है कि इसमें लेखिका ने अपने हर अनुभव को अपने सहज स्वभावानुसार व्यक्त किया है| इस यात्रा-वृत्तांत में आप भटकने के दौरान कहीं-कहीं मृदुला गर्ग को करीब पाएँगे| यह यात्रा-वृत्तांत लिखकर लेखिका ने अपनी यात्रा को कृतार्थ किया है, साथ ही इसे पढ़ने वालों के मन में यात्रा की ललक जगाने में भी वह कामयाब रही हैं| मृदुला गर्ग ने अपने यात्रा-वृत्तांत में विभिन्न देशों की संस्कृति, धर्म, पर्व-त्यौहार, रहन-सहन, आचार-व्यवहार, भूगोल, जीव-जंतु, पशु-पक्षी एवं प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन किया है|

कालीदास का ‘मेघदूत’ भारतीय साहित्य परम्परा का एक उत्कृष्ट सृजन माना जाता है| मृदुला गर्ग ने अपने यात्रा-वृत्तांत में ‘मेघदूत’ का जिक्र किया है| लेखिका ने प्राकृतिक सौंदर्य के चित्रण का उदाहरण पेश करते हुए कालीदास के ‘मेघदूत’ की कुछ पंक्तियाँ उधृत की हैं| मृदुला गर्ग ने लिखा है- “मेघ रामगिरी पर्वत

से चल, आम्रकूट पर्वत, नर्मदा नदी पार कर दषार्ण देश (आज का मध्यप्रदेश) की राजधानी विदिशा पहुँचा, नीचगिरि पर विश्राम और निर्विंध्या, क्षिप्रा, वेत्रवती, गंभीरा नदियों में स्नान करते हुए, उज्जयिनी, अवंती नगरियों का भोग-विलास चखकर, देवगिरी पर पुनः विश्राम किया| पहले जामुन और केवड़े के फूल देखे तो चलते-चलते कदंब और चमेली के दर्शन किए| आगे चमर्णवती नदी में नहा कर दशपुर नगर में कुंद कुसुम देख ब्रह्मावत देश के कुरुक्षेत्र में प्रवेश कर सरस्वती नदी में भी डुबकी लगा ली| कनखल के निकट शैलराज के नीचे उतरती गंगा में स्नान किया और हिमालय की तरफ बढ़ लिए| कस्तूरी मृग देखे, कीचक जाति के बांस देखे| हिमालय के तट पर क्रौचरंध्र द्वार से प्रवेश करके तिरझे रहकर उत्तर दिशा में गए और मानसरोवर के स्वर्ण कमलों के बीच ताजादम हो कर अलकापुरी जा पहुँचे| हर नदी के जल का रंग अलग तरह का था, वन-संपदा अलग थी; मेघ का अपना रूप अलग था| दिशा सदैव उत्तर रही उत्तोरतर उत्तर| और निरुत्तर है बाद का समय कि कालीदास को इतनी जानकारी मिली कैसे?"[69]

मृदुला गर्ग ने इस यात्रा-वृत्तांत में सूरीनाम की यात्रा का भी रोमांचक वर्णन किया है| उन्होंने सूरीनाम की प्राकृतिक विशेषताओं का वर्णन करते हुए, वहाँ के पेड़-पौधे, वनस्पतियाँ, जंगल, झील, तालाब और बारिश का वहाँ के जीवन में उपयोग आदि का चित्रण किया है| उदाहरण लेखिका के शब्दों में द्रष्टव्य है- "हम सबाना पार्क पहुँच गए| सरहद पर कोला-क्रीक थी| काले पानी की झील| स्थिर, रहस्यमयी| आसपास उगी कॉफ़ी, कोको और अनगिनत जड़ी-बूटियों के पत्ते झील में गिरते हैं और पानी में घुलमिल कर, उसे काला बना देते हैं| यह गंदा पानी नहीं, आयुर्वेदिक, औषधि युक्त अमृत है, फ्रेंक ने कहा, 'यूँ भी यहाँ का पानी वर्षा का शुद्ध, सात्विक पानी है| वर्षावन है यह| यहाँ हर वक्त बूंदा-बांदी हुआ करती है और रोज, एकाध बार, तेज बौछार|"[70]

लेखिका ने इस यात्रा-वृत्तांत में अपनी सिक्किम यात्रा का भी मनमोहक वर्णन किया है| उन्होंने गंगटोक के सूर्यास्त का मानवीय रूप में चित्रण किया है| सिक्किम के सूर्योदय का चित्रण लेखिका के शब्दों में प्रस्तुत है- "सुबह के सवा छह

बजे थे, जब अचानक धुंध ने अपने सफ़ेद बाल इधर-उधर छितरा कर मांग मुझे दिखलाई| सिंदूरी तो नहीं थी, सूरज ने उस सुबह उसमें सिंदूर भरा नहीं था| पर पहाड़ों की काली चोटियों की अठखेलियों ने उसे इतना चौड़ा जरूर कर दिया था कि मेरी खिड़की दृश्य-यान बन गई और एक अद्‌भुत नजारा मुझे दिखला गई| काश, गगन जगी होतीं और उन्होंने भी बादल, धुंध और पहाड़ों की लुकाछिपी देखी होती| पर वे गहरे सोई थीं|”[71]

इस यात्रा-वृत्तांत के एक अध्याय का शीर्षक ‘घर बैठे सैर’ है| इस अध्याय में यात्रा-वृत्तांतकार ने अपने घर-परिवार और पास-पड़ोस की तमाम गतिविधियों एवं प्रकृति का वर्णन किया है| उन्होंने अपने घर में लगा शाल्मली बृक्ष और उसके फूलों के अद्‌भुत सौंदर्य का चित्रण करते हुए लिखा है- “फिर वसंत आ गया| समझ में आया, बेचारा पड़ोसी क्यों रो रहा था| शाल्मली पर शबाब आ गया| बेशुमार, शोख, लाल-अंगार फूल हर शाख पर खिल आए| बड़े इतने कि मानों चार पंखुडियां पूरा-का-पूरा चूल्हा समेटे हों| पहली सुबह देखा तो दिल धक से रह गया| सूरज के हजार टुकड़े तो नहीं हो गए! हफ़्ते-दो-हफ़्ते में, वे पंखुड़ियाई लपटें इस कदर जवान हो गईं कि जब-जब फाल्गुनी हवा चले, हमारे अहाते में कूद लें| यह पतझड़ के सूखे, हवाई पत्तों का झड़ना नहीं था, हजूर| पचास फूट की ऊँचाई से पाव भर पक्का, रस से लबरेज फूल, इतनी तेजी से नीचे गिरता कि उसके वजनी धक्के से, अहाते में खिले पौधों का दिल चाक हो जाता|”[72]

उमेश पंत:इनरलाइन पास

‘इनरलाइन पास’ उमेश पंत का चर्चित यात्रा-वृत्तांत है| इसमें उमेश पन्त के मैदानी इलाके से पहाड़ की चोटी तक पहुँचने का यात्रा विवरण है, लेकिन इसे सिर्फ यात्रा-वृत्तांत या विवरण नहीं कहा जा सकता| यह अनुभव की एक श्रृंखला है, जो मैदानी

इलाके से होकर पहाड़, गलियारों तक चलती है| उसी अनुभव श्रृंखला को लेखक ने 'इनरलाइन पास' में रखा है| इस यात्रा-वृत्तांत में भारत और चीन की सीमा रेखा पर स्थित एक ऐसे क्षेत्र की यात्रा का वर्णन है, जो सुरक्षा, पर्यावरण और संरक्षित क्षेत्र होने के नाते बेहद संवेदनशील समझा जाता है|

इस यात्रा-वृत्तांत में 2013 में आई केदारनाथ आपदा का भी जिक्र है| लेखक ने इसके साथ भारत-नेपाल के बीच के व्यापार की कड़ी और दोनों देश के व्यापारिक संबंधों का भी जिक्र किया है| इसमें वर्णित धारचूला में कलकल बहती काली नदी और चारों ओर हरे भरे पहाड़ की सुंदरता पाठक के मन को मोह लेती है| किताब पढ़ने के बाद ऐसा महसूस होता है कि आप पहाड़ की उन वादियों में घूम रहे हैं, जहाँ दूर-दूर तक हरियाली-ही-हरियाली है| लगभग 200 किलोमीटर की यह पद-यात्रा मैदानी क्षेत्र के लिए भी एक चुनौती है और पहाड़ी दुर्गम इलाके के लिए तो और भी जोखिम भरी है| इस यात्रा-वृत्तांत में लेखक इसी चुनौती को स्वीकारते हुए अपनी दुनिया में निकल जाता है| दिल्ली से लेकर कैलाश मानसरोवर तक की यात्रा को पढ़ते वक्त मन रोमांचित हो उठता है और आँखों के सामने विहंगम दृश्य अपने आप बनते चले जाते हैं| ऐसा लगता है कि लेखक की नजर से पाठक खुद यात्रा कर रहा है|

शहरी जीवन की भाग-दौड़ से जब भी कोई इंसान ऊबता है, तब वह प्रकृति की शरण में ही सुकून पाता है| इसी सुकून की तलाश में लेखक उत्तराखंड के पहाड़ों में भटकता रहा, जिसका वर्णन इस यात्रा-वृत्तांत में मिलता है| उमेश पन्त ने पहाड़ों के प्राकृतिक सौंदर्य का सजीव चित्रण करते हुए लिखा है- "अभी दो किलोमीटर भी नहीं चले थे एक सुंदर बुग्यालनुमा ढलान मखमली हरी घास ओढ़े हमें ललचाने लगी| धूप इतनी धुली हुई और प्यारी थी कि हम जाकर उस ढलान पर पसर गए|...एकदम हरी मखमली घास का बिस्तर और सर पर धुले हुए नीले आसमान की चादर| और आस-पास की हवा, जैसे कोई पंखा झल रहा हो| हवा की आवाज किसी लोरी-सी हमारे कानों में आ रही थी| ये लोरी सुनाने वाली अदृश्य आवाजें काश हमारे साथ दिल्ली तक आ पातीं| शहर के शोर से जब भी मन ऊबता

तो कानों में इयरप्लग लगाकर ही सही ये बेशब्द लोरियाँ हमारे जेहन को ताजा कर सकतीं| काश!”[73]

इस यात्रा-वृत्तांत में पाठक शुरू से अंत तक लेखक के साथ प्राकृतिक सौंदर्य का रसपान करता चलता है| लेखक ने ग्लेशियर का अद्भुत सौंदर्य वर्णन किया है| पहाड़ों के गाँव और ग्लेशियर के सौंदर्य का समन्वय स्थापित करते हुए उमेश पंत लिखते हैं- “यह एक घाटी पर बसा गाँव था और गाँव के ठीक ऊपर के पहाड़ों पर कई ग्लेशियर दिखाई दे रहे थे| हरी चट्टानों के बीच-बीच में ये सफ़ेद धारी वाले ग्लेशियर ऐसे लग रहे थे जैसे प्रकृति कोई स्वेटर बुन रही हो ताकि जब ठंढ बढ़ जाए तो पूरा गाँव उसे ओढ़ सके| इस गाँव को देखकर मुझे कुरुसावा की ड्रीम सीरीज की फ़िल्में याद आ रही थीं| ‘विलेज ऑफ़ द वाटरमिल्स’ के उस बूढ़े का गाँव-सा था यह हिमालयी गाँव| एकदम साफ़-सुथरा| जैसे दुनिया की बुराइयों से अनजान कोई मासूम बच्चा|”[74]

पहाड़ों की झील, नदी, तालाब, झरना आदि का सौंदर्य भी अनुपम होता है| इसी अनुपम सौंदर्य को हम उमेश पंत के यात्रा-वृत्तांत में देख पाते हैं| कैलास पर्वत की झील के अद्भुत सौंदर्य का चित्रण यात्रा-वृत्तांतकार के शब्दों में द्रष्टव्य है- “टीले की दूसरी तरफ बर्फ़ से ढके आदि कैलास के पैरों पर एक शांत और एकदम साफ़-सुथरी झील बह रही थी| इसी झील का नाम था पार्वती सरोवर| इस झील में आदि कैलास पर्वत की परछाईं दिखाई दे रही थी| जैसे इस जनशून्य इलाके में जमीन पर कोई साफ़-सुथरा आईना बिछा हो जिसमें आस-पास के पहाड़ उचक-उचककर अपनी परछाईं देख रहे हों| इस वक्त मैं कह सकता था कि इतना ख़ूबसूरत नजारा मैंने आज तक अपनी आँखों के सामने इससे पहले कभी नहीं देखा था|”[75]

प्रकृति की गोद में ही मानव जन्म लिया और पला-बढ़ा है, इसी कारण उसे प्रकृति से विशेष लगाव है| साहित्य में भी प्रकृति के मानवीकरण करने की लम्बी परम्परा है| उमेश पंत ने भी अपने यात्रा-वृत्तांत में प्रकृति का मानवीकरण किया है| पहाड़ों के सौंदर्य का मानवीकरण करते हुए लेखक ने लिखा है- “बूदी पहुँचते-पहुँचते करीब पाँच बज गया था| ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों की तलहटी में चारों ओर गहरी हरियाली बिखरी हुई थी| उस हरियाली के ऊपर कोहरे की एक सफ़ेद चादर थी|

ऐसा लग रहा था जैसे अभी-अभी नहाकर लौटे पहाड़ों ने नई-नई हरी सूट के ऊपर सफ़ेद दुपट्टा ओढ़ लिया हो| यह दुपट्टा सरककर कंधे से फिसल गया हो और पहाड़ उसके इस तरह बेतरतीब हो जाने से लापरवाह अपनी धुन में खोया हुआ हो|"[76]

3.6 युद्ध परिवेश संबंधी यात्रा-वृत्तांत

युद्ध कैसा भी हो, उसके भीतर मात्र भय, जख्म, ध्वंस और आग ही है| युद्ध की परिणति हमेशा भयानक तबाही में ही होती है| युद्ध का इतिहास मानव सभ्यता के उदय के साथ ही शुरू हो जाता है| दुनिया के युद्ध पर गौर करें तो पता चलता है कि युद्ध सदैव सत्ता, साम्राज्य विस्तार और स्त्रीभोग की लिप्सा के कारण ही हुए हैं| दुनिया का इतिहास इसी तरह के अमानवीय कृत्यों से भरा पड़ा है| इन युद्धों के कारण लाखों, करोड़ों लोगों की जाने गईं| लाखों स्त्रियों की अस्मतें लुटी गईं, लेकिन यह अमानवीय कृत्य आज भी निरंतर जारी है| युद्ध के कारण होने वाली समस्याओं से पूरी दुनिया पहली बार प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान चिंतित हुई, फिर भी दूसरा विश्वयुद्ध हुआ और आज भी युद्ध हो रहे हैं| वर्तमान समय में भी दुनिया युद्ध से मुक्त नहीं हुई है, बल्कि आज भी इससे त्रस्त होकर मानवता त्राहिमाम-त्राहिमाम कर रही है|

दुनिया का साहित्य युद्ध के रक्तरंजित इतिहास से भरा हुआ है| भारत में भी बहुत लम्बे समय से युद्ध की विभीषिका का चित्रण साहित्य में हो रहा है| महाभारत, रामायण, रासो साहित्य आदि में युद्ध का चित्रण मिलता है| आधुनिक युग में भी बहुत सारे साहित्यकारों ने दुनिया में हुए युद्ध और भारत-पाकिस्तान बंटवारे की त्रासदी को अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त किया है| कुछ साहित्यकारों ने अपने भोगे हुए यथार्थ को भी शब्द दिए हैं| खुशवंत सिंह की कृति 'ट्रेन टू

पाकिस्तान', भीष्म साहनी की 'तमस' और अमृता प्रीतम की 'पिंजर', शहादत हसन मंटो की 'गोश्त' जैसी रचनाएँ साहित्य होते हुए भी युद्ध के ऐतिहासिक दस्तावेज हैं| युद्ध की विभीषिका का चित्रण नाटकों में भी देखने को मिलता है, जिनमें धर्मवीर भारती कृत- 'अंधायुग', रामेश्वर प्रेम कृत- 'कैंप', बंगला नाटककार बादल सरकार कृत- 'हिरोशिमा' आदि हैं| इन रचनाओं में आतंक, उत्पीड़न और नफरत से जानवर बनते मनुष्य के उदाहरणों के दृश्यों, शब्दों से गुजरते हुए पाठक भी सिहर जाता है| युद्ध की त्रासदी का चित्रण यात्रा-वृत्तांतों में भी देखने को मिलता है, जिनमें- नासिरा शर्मा कृत- 'जहाँ फव्वारे लहू रोते हैं', गरिमा श्रीवास्तव कृत- 'देह ही देश' आदि महत्त्वपूर्ण हैं|

नासिरा शर्मा:जहाँ फव्वारे लहू रोते हैं

नासिरा शर्मा का चर्चित यात्रा-वृत्तांत 'जहाँ फव्वारे लहू रोते हैं' में इराक, ईरान, फ़िलिस्तीन, पेरिस, अफगानिस्तान और पाकिस्तान की यात्रा का वर्णन है| नासिरा शर्मा ने ईरान-इराक युद्ध के समय वहाँ की यात्रा की थी, जिसका आँखों देखा हाल उन्होंने इस यात्रा-वृत्तांत में दर्ज किया है| उन्होंने इराक, ईरान, फ़िलिस्तीन, अफगानिस्तान और पाकिस्तान जैसे तमाम देशों में जाकर युद्ध की विभीषिका का आकलन कर इस यात्रा-वृत्तांत में दर्ज किया है| नासिरा शर्मा ने इस किताब में समाज में व्याप्त युद्ध का भय, युद्ध में झोंकी जा रही युवा पीढ़ी का दर्द, असहाय हो रही स्त्रियाँ एवं बच्चों की पीड़ा, युद्ध में दुनिया की संलिप्तता एवं युद्ध की वैश्विक समस्या पर गंभीर चिंता व्यक्त की है|

नासिरा शर्मा को इस यात्रा में बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था| उन्होंने जोखिम उठाते हुए अपनी जान की परवाह किए वगैर यात्रा की थी| इराक-ईरान के शासकों से धमकियाँ सुनी थीं, लेकिन नासिरा शर्मा की न यात्रा रूकी और न ही कलम, बल्कि इन प्रतिरोधों से उनके लेखन को ताक़त मिली, क्योंकि नासिरा

शर्मा के लेखन में युद्ध में घर्षित दुनिया की चिंता थी| उन्होंने यात्रा मनोरंजन के लिए नहीं, बल्कि युद्ध में मानव जनित मौत के खूनी मंजर को दुनिया के सामने लाने के लिए की थी|

ईरान-इराक युद्ध की समस्या कोई नैसर्गिक नहीं बल्कि मानव जनित है, जो दशकों से आज भी उसी स्थिति में बनी हुई है| नासिरा शर्मा ने उन समस्याओं का बखूबी अपने यात्रा-वृत्तांत में वर्णन किया है| ईरान-इराक की यात्रा करना और फिर युद्ध की विभीषिका को लिपिबद्ध करना वाकई लेखिका के लिए सर पर कफ़न बाँधने के समान था| नासिरा शर्मा ने अपनी भूमिका में ही लिखा है- "एक तरफ यकीन करना मुश्किल हो रहा था कि इस सबसे गुजरने वाली मैं ही थी जो इब्नबतूता बनी, सर पर कफ़न बाँधे इन इलाकों में घूम रही थी| या फिर दूसरी तरफ आश्चर्यमिश्रित अविश्वास में डूब उतर रही थी कि क्या वास्तव में ईरानी क्रांति का वह समय इस हद तक अंकुश, आतंक, अत्याचार एवं अमानवीय घटनाओं से भरा हुआ था? इस दिमागी कैफ़ियत का असर यह हुआ कि जो पुस्तक साल भर के अन्दर आनी थी वह पूरे तीन साल बाद आई क्योंकि प्रूफ पढ़ते हुए कोई भी लेख या रिपोर्ताज पूरा करने से पहले ही मैं उत्तेजना से भर जाती| बदन में गर्म-गर्म खून दौड़ने लगता, आँखें तन-सी जातीं नसें चिटखने सी लगतीं और मैं कई-कई दिन तक मेज की तरफ जाने का हौसला नहीं बना पाती थी| शहादत, हादसा, युद्ध के जरिये मरने वाले मित्रों की शक्लें आँखों के सामने घूमने लगतीं जो मुझसे सवाल करतीं कि मैंने ईरान की सियासत पर लिखना क्यों बंद कर दिया?"[77]

ईरान के गृहयुद्ध में पूरा ईरान दमन के कुचक्र में पीस रहा था| कॉलेज, विश्वविद्यालय भी उससे अछूता नहीं थे, जिनका जिक्र नासिरा शर्मा ने इस यात्रा-वृत्तांत में किया है| तेहरान विश्वविद्यालय की भयावह घटना का जिक्र करते हुए नासिरा शर्मा ने लिखा है- "लगभग एक वर्ष होने को आया फिर भी ईरान के सारे विश्वविद्यालय बंद पड़े हैं| मशहद, तेहरान, सीसतान, बिलोचिस्तान तथा अहवाज में इस तरह से लड़कों की लाशों का अम्बार लगा हुआ था और किताबें जलायी गई थीं कि कुछ लोगों को अहसास हुआ कि जिस तरह से शाह के जमाने में विश्वविद्यालय फसाद की जड़ कहलाते थे, इंकिलाब के आरम्भ दिसंबर, 1997 को

तेहरान विश्वविद्यालय में कोई छः सौ लड़के दो घंटे में भून कर रख दिए गए थे और ईरान की तारीख में 16 आज़र (दिसंबर) एक यादगार दाग बन गया था|"[78]

युद्ध अपने साथ कत्लेआम ही लेकर आता है और इसमें हर वर्ग किसी-न-किसी रूप में प्रभावित होता है| ईरान के युद्ध में भी हर वर्ग का कत्लेआम हुआ| बुद्धिजीवियों को चुन-चुन कर मारा गया, जिसकी ओर इशारा करते हुए लेखिका ने लिखा है- "कुर्दिस्तान में बड़े पैमाने पर पासदार व इंकिलाबी मारे गए हैं| इंजीनियर, डॉक्टर, कवि, लेखक, एक-एक दिन में आठ-आठ, दस-दस एक पंक्ति में खड़ा करके उड़ाए गए थे| एक डॉक्टर ने बताया उसकी बारह सहकर्मी एक दिन में उड़ाई गई थीं| वह कोमले समुदाय की थीं| कुर्दिस्तान व उत्तरीय| ईरान में साम्यवादी प्रभाव बहुत भीषण है मगर तोदे पार्टी की वह सारे समुदाय आलोचना करते हैं, जबकि तोदे पार्टी सोवियत लैण्ड की समर्थक है इतनी बड़ी सीमा रेखा 'सोवियत लैण्ड' से मिलने के बाद भी तोदे पार्टी के लोग बड़े-बड़े पोस्ट पर हैं| सरकार जानती है कि भले ही उनका लिबास इस्लामी हो मगर वह किसी के नहीं हैं जो रूस कहेगा वही वह करेंगे|"[79]

ईरान के गृहयुद्ध की भयावह स्थिति, जो हमें झकझोर कर रख देती है| समाज को सोचने पर मजबूर करती है कि आखिर इस्लामी गणतंत्र की कट्टरता और संकीर्णता कब दूर होगी, जो समाज को रसातल में ले जा रही है? इस यात्रा-वृत्तांत में नासिरा शर्मा ने इस्लामी गणतंत्र की क्रूरता और बर्बरता पर क्षोभ इन शब्दों में प्रकट किया है- "रात का सन्नाटा, तारे टूटने जैसी आवाजें आती हैं लगता है कहीं किसी के सीने में गोली लगी खून का फव्वारा फूटा फिर लगातार तग-तग मशीनगन के चलने की आवाज, बदन के सारे रोंगटे खड़े हो जाते हैं किसी के द्वारा बयान किया गया दृश्य आँखों के सामने कौंध जाता है, ऐविन जेल का तहख़ाना, राहदारी और भागते सियासी कदम जिनको एक पंक्ति में खड़ा करके कहा जाता है "दौड़ो|" फिर

दौड़ते क़दमों पर मशीनगन से छूटती आग की चिगारियाँ फिर लड़खड़ाते क़दमों के साथ सिसकी और एक-दूसरे पर ढेर होते तड़पते बदन!! इतना जुल्म! इतना जुल्म तो शाह ने भी नहीं किया था| लड़कियों की लाशें! सीने जो नए जीवन को जीवन पान कराते इस्तरी से जले हुए थे, पेट के नीचे के हिस्से का भी यही हाल था और पूरा शरीर सिगरेटों के विभिन्न धब्बों से झुलसा हुआ, यही शरीर, नर्म नाजुक संवेदनशील, गजब की शक्ति या वीरता की कविता होते मगर अब केवल इस्लामी गणतंत्र के जुल्म के सनद थे|”[80]

शिया-सुन्नी विवाद लम्बे अरसे से दुनिया में बना हुआ है| ये अपने आगोश में प्रत्येक वर्ष हजारों, लाखों मौतें लेकर आता है| नासिरा शर्मा ने अपने यात्रा-वृत्तांत में शिया-सुन्नी विवाद पर भी लम्बी चर्चा की है| पाकिस्तान के शिया-सुन्नी दंगों की हकीकत लेखिका के शब्दों में देखिए- “पाकिस्तान एथेनिक दंगों का गहवारा है| आपसी मुठभेड़ें दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही हैं, उनमें सबसे ज्यादा भयानक सुन्नी-शिया फसाद है जो अक्सर मोहर्रम के जमाने में अपना शोला भड़काती है और फैलती आग कई सौ लोगों को ख़ाक व खून में लथाड़ देती है| यह मौतें किसी भी समुदाय की हों मगर अफ़सोस हर वर्ष कर्बला का भयानक दृश्य उपस्थित करती हैं, बजाय उस सहिष्णुता के जो कर्बला के युद्ध द्वारा संप्रेषित होता है कि धैर्य, बलिदान, सद्भावना, अधिकार संघर्ष का सही मार्ग और मानवता का पालन कैसे करना चाहिए|”[81]

इस्राइल और फिलिस्तीन का युद्ध लम्बे समय से अनवरत जारी है| यह युद्ध न सिर्फ लेखिका की यात्रा के समय बल्कि आज भी सैंकड़ों, हजारों जानें ले रहा है| इस यात्रा-वृत्तांत में नासिरा शर्मा ने इस्राइल और फिलिस्तीन के युद्ध पर भी

प्रकाश डाला है, जो उनके शब्दों में द्रष्टव्य है- "पिछले दिनों गाजा पट्टी एवं पश्चिमी तट इलाके में फिलिस्तीनी एवं इस्राइली फ़ौजों में मुठभेड़ें हुईं| इसकी शुरुआत 17 सितम्बर को हुई जब 'साबरा' एवं 'शातिला' में हुए कत्लेआम की बरसी फिलिस्तीनी मना रहे थे| उस समय वातावरण तनावपूर्ण हो उठा और फिलिस्तीनी जवानों ने तैश में आकर चन्द इस्राइली फ़ौजियों पर हमला किया और भाग निकले| क्रोधित फौजी दस्ता उन्हें खोजने के लिए इन इलाकों में पहुँचा और कर्फ्यू के बावजूद 'नाबलिस' नामक इलाके में लगभग 50 घरों को सील कर दिया| बाहर निकले फिलिस्तीनी लोगों के ऐतराज से पहले ही उन्हें मशीनगन से भून दिया गया|"[82]

दुनिया के किसी भी युद्ध में समझौता एवं शांति के नाम पर अमेरिका अपना वर्चस्व बनाए रखने की कोशिश में रहता है और इसमें बहुत हद तक सफल भी रहा है| अफगानिस्तान के गृहयुद्ध में भी अमेरिका की भूमिका किसी से छिपी नहीं है, जिसका वर्णन इस यात्रा-वृत्तांत में मिलता है| अमेरिका द्वारा पहले युद्ध को बढ़ावा देना और फिर रोकने के नाम पर आम नागरिकों का दमन आज भी अफगानिस्तान में जारी है| अमेरिका के वर्चस्व की क्रूर राजनीति पर बात करते हुए नासिरा शर्मा ने लिखा है- "जिस बेदर्दी से अफगानिस्तान पर अमेरिका के बमों ने गिरकर देश का भौगोलिक नक्शा बदला है, उसने उससे कहीं ज्यादा गहरे तरीके से औरतों के दिलों में शिगाफ़ किया है| उनकी गोदें वीरान और घर बर्बाद हो गए| किसी-किसी घर में तो मर्द के नाम पर बच्चा तक नहीं बचा आखिर पच्चीस वर्ष से चली आ रही यह लड़ाई जहाँ मर्दों को निगल रही है वहीं पर औरतों को भटकने पर मजबूर कर रही है| इसका सबसे दर्दनाक नमूना नब्बे साल की कवयित्री समनबू हैं जो आज हेरात की सड़कों पर अपना पहला गजल संग्रह हाथ में पकड़े भीख माँगती नजर आती हैं| उनकी इस हालत के पीछे तो सच्चाइयाँ हो सकती हैं पहली यह कि

वह हालात की मार से सनक गईं हों और गहरे मानसिक संताप के कारण उनका संतुलन बिगड़ गया हो और दूसरा कारण यह हो सकता है कि उनका घरबार गृहयुद्ध के कारण उजड़ गया हो| लाल फौजों के आने से लेकर आज अमेरिका बमबारी तक गाँव के गाँव जल कर राख में बदल गए हैं| पिछले बीस वर्षों में कभी कोई हादसा 'समनबू' को बेसहारा कर गया है|"[83]

गरिमा श्रीवास्तव:देह ही देश

अपने दो साल के क्रोएशिया प्रवास के दौरान गरिमा श्रीवास्तव ने युगोस्लाविया विखंडन में हताहत हुए स्त्रियों के त्रासदी को इस यात्रा-वृत्तांत में दर्ज किया है| इस पुस्तक में लेखिका ने शोध करके सभी ज़रूरी आंकड़ों और प्रवाहमय भाषा शैली के साथ विस्थापन, सेक्स ट्रैफिकिंग से लेकर पुनर्वास तक हर पक्ष की गहरी पड़ताल की है| इसमें बड़ी ही सूक्ष्मता और व्यापकता से युद्ध के बाद के परिदृश्यों का आंकलन किया है| अंतरराष्ट्रीय स्वयंसेवी और स्त्रीवादी संगठनों के मानवाधिकार मानकों पर प्रश्नचिह्न भी खड़ा किया है| क्रोएशिया, बोस्निया के युद्ध में पीड़ित स्त्रियों के साथ हुए हैवानियत और बर्बरता को इस यात्रा-वृत्तांत में चित्रित किया गया है| लेखिका ने जो कुछ भी देखा-सुना, उसे इस यात्रा-वृत्तांत के माध्यम से पाठक तक पहुँचाने की कोशिश की है|

हर युद्ध अपने पीछे जनसंहार, विस्थापन, विनाश और भुखमरी की विभीषकाएं छोड़ता है, लेकिन युद्धों से उपजे कुछ ऐसे अमिट घाव भी होते हैं, जिन्हें अक्सर इतिहास के पन्नों में जगह नहीं मिलती| संयुक्त यूगोस्लाविया विखंडन

के बाद स्त्रियों से बलात्कार, हिंसा और पवित्रीकरण के नाम पर जबरन वीर्य वहन कराते वक्त उनकी चीखों से ऐसे ही घाव बने, जो आज तक नहीं भर पाए| यह यात्रा-वृत्तांत इन्हीं घावों को उघाड़ता चलता है| लेकिन इसमें केवल यूरोप की स्त्रियों का दर्द नहीं है, बल्कि दुनिया के सभी युद्ध में घर्षित स्त्रियों की त्रासदी का चित्रण मिलता है| युद्ध में घर्षित और बलात्कृत स्त्रियों की त्रासदी और उनके प्रति सरकार की उदासीनता को गरिमा श्रीवास्तव के शब्दों में समझा जा सकता है- "युद्ध के दौरान बलात्कार, यौन-हिंसा के हजारों मामले आए, कुछ मामले सरकारी फाइलों में दब गए, कुछ भुला दिए गए और कुछ शिकायतें वापस ले ली गयीं| कुछ स्त्रियाँ मार दी गयीं| कुछ अवसाद और अन्य रोगों का शिकार हो गयीं| हालाँकि जेनेवा कन्वेंशन में युद्ध के दौरान यौन हिंसा और सैनिकों द्वारा स्त्रियों के एकल या सामूहिक बलात्कार को मानवता के विरुद्ध जघन्य अपराध माना गया लेकिन पूरे विश्व में युद्ध नीति के तहत स्त्रियों के प्रति यौन-हिंसा एक अलिखित चर्या है| युद्धकाल के बलात्कार सामान्य बलात्कारों से अलग माने जाते रहे हैं| इनमें से बहुत से वाकयों की तहकीकात भी नहीं हो पाती| कई बार शोषिताएँ और घर्षिताएँ सामने भी नहीं आतीं|"[84]

प्राचीन काल से ही युद्ध में हमेशा स्त्रियों को सबसे ज्यादा नुकसान उठाना पड़ा है| इतिहास में अनेकों ऐसे युद्ध भी हुए हैं, जिनका सम्बन्ध स्त्रियों के अस्तित्व से रहा हैं| इस यात्रा-वृत्तांत में भी हम देखते हैं कि युद्ध के दौरान स्त्रियों का बलात्कार, घर्षण को एक हथियार के रूप में इस्तेमाल किया जाता रहा है| दुनिया के ऐसे युद्ध, जिनमें बड़े पैमाने पर स्त्रियों को बलात्कृत और घर्षित किया गया, उनकी तरफ इशारा करते हुए गरिमा श्रीवास्तव ने लिखा है- "विश्व के कई देशों, मसलन सोवियत यूनियन ने द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद जर्मनी पर आधिपत्य जमाने

के लिए 'बलात्कार' का हथियार के रूप में इस्तेमाल किया| इसी तरह बांग्लादेशी स्त्रियों का पाकिस्तानी सैनिकों द्वारा बड़े पैमाने पर घर्षण किया गया, युगांडा के सिविल वार और ईरान में स्त्रियों से जबरदस्ती यौन सम्बन्ध बनाकर अपमानित करने की घटनाओं से हम सब वाकिफ़ हैं| चीन के नानकिंग में जापानी सेना द्वारा स्त्रियों का सामूहिक यौन-उत्पीड़न, दमन और श्रीलंकाई स्त्रियों के यौन-शोषण के हजारों मामले 'नव साम्राज्यवाद' को फ़ैलाने के लिए जोरदार और कारगर हथियार बने|"[85]

बोस्निया के युद्ध के दौरान और उसके उपरांत हजारों, लाखों स्त्रियाँ माँस के लोथड़ों में बदली नजर आती हैं| इस यात्रा-वृत्तांत में क्रूरता का ऐसा भयावह यथार्थ है, जो मनुष्य को झकझोर कर रख देता है| क्या इंसान के पतन और उसके अधोलोक की कोई सीमा नहीं है? बोस्निया के युद्ध का भयावह सच लेखिका के शब्दों में वर्णित है- "बोस्निया की ही एनिसा ने, जिसे सितम्बर 1992 में 16 वर्ष की उम्र में अपनी आँखों के सामने बूढ़े दादा और पिता का क़त्ल देखना पड़ा, छिपने और भागने की कोशिश की, सब व्यर्थ| सर्ब सैनिक घर में घुसकर नकदी, आभूषण, महँगी वस्तुएँ खोजते और जो स्त्री जिसको पसंद आ जाती वही हत्थे चढ़ जाती| ये सैनिक अपने प्रतिवेशियों के शांत स्वभाव से अच्छी तरह परिचित थे| सुन्दर, कोमल, पाकीजा धर्मभीरु मासूम लडकियाँ, जो युद्ध छिड़ने के ठीक पहले तक कल्पना भी नहीं कर सकती थीं कि स्त्री शरीर धारण करना अभिशाप है|"[86]

दुनिया में किसी भी स्त्री की देह पर हिंसा का ऐसा शर्मनाक कहर ढ़हता है तो कहीं-न-कहीं इंसानियत शर्मसार होती है| यह यात्रा-वृत्तांत मानव जनित क्रूरता की ऐसी दस्तावेज़ है, जो मानवीय संवेदना को झकझोर कर रख देती है| इस यात्रा-वृत्तांत में स्त्रियों पर न ख़त्म होने वाले जख्म और जुल्म को रेखांकित करते हुए गरिमा श्रीवास्तव ने लिखा है- "जिबा से बात करते हुए मुझे यह कविता बेतरह याद हो आयी है, जो आज भी अपने बचपन के स्कूल के जिम्नेजियम को थर्राहट के साथ याद करती है, क्योंकि वहाँ सौ से भी अधिक औरतें अपने छोटे दुधमुँहे बच्चों के साथ

कैद कर ली गयी थीं| इन स्त्रियों की उम्र 15 से 35 वर्ष की थी, यानी जब स्त्री की प्रजनन क्षमता पूरे उठान पर होती है- बंदूक की नोकों और ग्रेनेड के भय के साए में औरतें जिम्नेजियम में बंद कर दी गयीं, इसके बाद शुरू होना था वह जिसके सामने क्रूरता भी शर्मिंदा हो जाये| जिबा बताती हैं कि सैनिकों और सेना कमांडरों ने पहले गर्भवती स्त्रियों के समूह को अलग कर दिया, दूसरा समूह उन औरतों का बनाया गया, जिनके बच्चे थे और तीसरे समूह में तत्काल गर्भधारण के लिए संभावित स्त्रियों को रखा गया|"[87]

3.7 स्त्री स्वतंत्रता संबंधी यात्रा-वृत्तांत

यह तो सर्वविदित तथ्य है कि हमारा भारतीय समाज पुरुष प्रधान समाज रहा है, जहाँ आज भी स्त्रियों को उतनी स्वतंत्रता नहीं है, जितनी अन्य विकसित देशों में है| समाज के दो पहलू स्त्री-पुरूष एक दूसरे के पूरक हैं| किसी एक के अभाव में दूसरे का अस्तित्व नहीं है| उसके बाद भी पुरूष समाज ने स्त्री समाज को अपने बराबर के समानता से वंचित रखा| आज अगर स्त्रियाँ पढ़-लिखकर अपने बलबूते पर आगे आ रही हैं तो भी स्त्री-पुरुष असमानता विद्यमान है| योग्य होते हुए भी आज भी लिंगभेद के कारण स्त्रियों को पुरुषों के बराबर अधिकार प्राप्त नहीं है| आज़ भी कामकाजी स्त्रियाँ अपने ऑफिस में बॉस और पुरुष सहकर्मियों की प्रताड़ना का शिकार होती हैं| चाहे वह प्रताड़ना शारीरिक हो या मानसिक| घरेलू हिंसा का ग्राफ तो दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है| तब विचारणीय प्रश्न उठता है कि स्त्री स्वतंत्र हो कैसे?

वर्तमान संदर्भों में झांककर देखने से एक सत्य निकल कर सामने आता है कि तथाकथित आधुनिक कही जाने वाली कुछ स्त्रियों ने स्त्रियोचित गुणों के परित्याग को ही स्त्री स्वतंत्रता का पर्याय मान लिया है और यही उनकी सबसे बड़ी भूल है| स्वतंत्रता और स्वच्छंदता दो अलग-अलग शब्द ही नहीं बल्कि व्यापक

अवधारणाएं हैं और दोनों के अर्थ में बहुत बड़ा अंतर है| स्त्री सही मायने में तभी स्वतंत्र और सशक्त हो सकती है जब उसके विचार स्वतंत्र हों, वह शिक्षित हो, अंधविश्वासों को प्रश्रय देने वाली न हो| उसे अपने विचारों को व्यक्त करने की स्वतंत्रता हो, स्व निर्णय का अधिकार हो| उसकी सोच सकारात्मक हो और दूसरों को सही दिशा देने वाली हो|

21वीं सदीं आधी दुनिया यानी स्त्रियों की सदी है| स्वतंत्र भारत में भी स्त्रियों की स्वतंत्रता के लिए बहुत सारे ठोस कार्य हुए हैं और निरंतर जारी है| आज के समय में स्त्रियों को स्वन्त्रता मिल रही है तभी वह पुरुषों से कंधे से कंधा मिला कर चल रही हैं| आज कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं हैं, जहाँ महिलाओं ने अपनी सफलता का परचम न लहराया हो, लेकिन इसके लिए उन्हें लड़ने की जरुरत पड़ी है| आज के इस प्रतिस्पर्धात्मक युग में स्त्रियाँ अपने अधिकारों के प्रति पहले से अधिक सचेत हैं| स्त्रियों की स्थिति में सुधार ने देश के आर्थिक और सामाजिक सुधार के मायने भी बदल कर रख दिया है| दूसरे विकासशील देशों की तुलना में हमारे देश में स्त्रियों की स्थिति काफी बेहतर है| यद्यपि हम यह नहीं कह सकते कि स्त्रियों के हालात पूरी तरह बदल गए हैं, पर पहले की तुलना में काफी बेहतर हैं|

हिंदी साहित्य की लेखिकाएँ हों या अन्य भारतीय साहित्य की, उनका लेखन भारतीय समाज और संस्कृति के रुढ़िवादी पुरुषसत्तात्मक ढाँचे के बहुस्तरीय विद्रूपताओं को उजागर करते हुए सामने आ रहा है| हिंदी साहित्य में महिला लेखन के रूप में विभिन्न कहानियों, कविताओं, आत्मकथाओं एवं यात्रा-वृत्तांतों में स्त्री की दैहिक पीड़ा से परे जाकर उसकी वर्गीय, जातीय एवं लैंगिक पीड़ा का वास्तविक स्वरूप प्रतिबिंबित हो रहा है| हिंदी साहित्य में स्त्री स्वतंत्रता की मांग अब इस जगह पर पहुँच गयी है, जहाँ स्त्री अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व की पहचान कर पाने में सक्षम है| यही वह आधार है, जहाँ से सामाजिक और लैंगिक विभाजन के स्थान पर मनुष्यता की पहचान शुरू होती है|

अनुराधा बेनीवाल:आजादी मेरा ब्रांड

‘आज़ादी मेरा ब्रांड’ कोई टूरिस्ट गाइड किताब नहीं है और न ही यह एक ट्रैवलर की डायरी है| यह यात्रा-वृतांत से कहीं अधिक है| यह आपकी रगों में आजादी के अहसास जैसा है| अनुराधा बेनीवाल की जिंदगी किसी उपन्यास की कहानी से कम नहीं है, लेकिन उन्होंने अपनी यात्रा के बारे में लिखना पसंद किया ताकि वह लड़कियों को उनके सपनों के प्रति प्रेरित कर सकें| अनुराधा बेनीवाल ने अपनी किताब के अंत में हमवतन लड़कियों के नाम एक ख़त लिखा है| यह उन सभी लड़कियों के लिए जो खुद या फिर समाज की बनाई हुई बेड़ियों में जकड़ी हुई हैं|

यह यात्रा-वृत्तांत प्रेरणा हो सकता है, उन लोगों के लिए, जो भ्रम पाले हुए हैं कि अपनी जिन्दगी, अपनी पसंद की जिन्दगी जीना कोई विलासिता है| यह यात्रा-वृत्तांत प्रेरणा हो सकता है, उन लड़कियों के लिए, जो भ्रम पाले हुए हैं कि अपनी जिन्दगी जीना विद्रोह है, या समझौता है, या विलासिता है| इस किताब में आम लड़की के साधारण शब्द हैं, जो सीधे संवाद करते हैं, साहित्यिक पंडिताऊपन ऊब नहीं है| कई जगह शब्दों की कमी खल सकती है, मगर बेपरवाह रहा जा सकता है| यह सिर्फ घुमक्कड़ी का संस्मरण नहीं है, घुमक्कड़ हो जाने की यात्रा है| अनुराधा बेनीवाल ने इस यात्रा-वृत्तांत में स्त्रियों से सामाजिक बंदिशें और रूढ़ियों को तोड़ने की वकालत करते हुए लिखा है- “एक अकेली बेकाम, बेफ़िक्र, बेटैम फिरती लड़की में एक अलग-सी ताकत होती है| एक अलग-सा साहस होता है| वह साहस जो किसी (बाप, भाई, पति) का हाथ पकड़ कर निकलने में कहीं छुप जाता है| वह साहस जिससे हमारा समाज घबराता है| वह साहस जिसे कभी बाहर निकलने का मौका ही नहीं दिया गया| वही साहस ढूँढ़ने तुम निकलोगी| तुम फिरोगी उस साहस को जीने| वो तुम्हारा ही है| जब निकलोगी, तब पाओगी|”[88]

भारतीय समाज में आज भी लड़कियों को अच्छी लड़की, संस्कारी लड़की का तमगा बचपन से ही लगाया जाता है| उसे संस्कारी बनाने की प्रक्रिया में उसकी वैयक्तिक स्वतंत्रता का अनायास हनन किया जाता है| अनुराधा बेनीवाल ने अपने

यात्रा-वृत्तांत में इन सामाजिक रूढ़ियों पर क्षोभ प्रकट करते हुए लिखा है- “मैं जिस समाज में पैदा हुई, पली-बढ़ी, उसमें व्यक्तिगत स्वतंत्रता जैसी कोई चीज नहीं थी| वहाँ किसी घर में कोई संतान पैदा हुई नहीं कि उसे ‘संस्कारी’ और ‘लायक’ बनाने की हर कोशिश उसके माता-पिता, परिवार और रिश्तेदार-सबकी तरफ से शुरू हो जाती| उसके कोरे दिमाग में समाज के कायदे-कानून और रिवाजों-परम्पराओं को पूरा का पूरा उतार देने के सभी जाने-पहचाने तरीके आजमाए जाते| बच्चों को अपनी पारिवारिक और सामाजिक मान्यताओं के अनुकूल ढाल देना-बस यही होती ‘संस्कार’ की शिक्षा भी!”[89]

आज बहुत सी लेखिकाएँ दैहिक स्वतंत्रता को ही स्त्री स्वतंत्रता का पर्याय मानती हैं, लेकिन अनुराधा बेनीवाल की स्वतंत्रता उससे कहीं आगे है| उनकी धारणा बिल्कुल अलग है| उनके लिए दैहिक स्वतंत्रता से आगे बहुत कुछ है, जिसकी जरूरत स्त्रियों को है| इस यात्रा-वृत्तांत में इसी स्वतंत्रता की पहल को लेखिका के शब्दों में समझा जा सकता है- “मेरी निजता सिर्फ मेरी देह के मुक्त होने भर में नहीं-यह मैंने बहुत जल्द समझ लिया था| वह भी जरूरी है, आज भी मानती हूँ| लेकिन असली आजादी का बोध उतने भर में सीमित नहीं| देह की आजादी को पाना आसान है|...मेरे जीवन में सारी मुश्किलें तब तक थीं, जब तक पाँव दोनों नावों में साधे रखने की कोशिश बनी हुई थी| एक तरफ मान्यताओं और पाबंदियों से आजाद भी होना था और दूसरी तरफ खुद को ‘संस्कारी’ भी कहलवाना था| देह और मन की भी सुननी थी और समाज की भी| लेकिन जब मैंने निश्चय कर लिया कि मुझे कैसा होना है या कैसे जीना है, यह केवल मैं तय करूँगी-तो जाने किस तरह से आस-पास के परिचित, दोस्त-रिश्तेदार भी मेरे अनुकूल होते चले गए! मेरी बेपरवाही ने मेरा जीना आसान कर दिया|”[90]

अनुराधा बेनीवाल ने अपने यात्रा-वृत्तांत में स्त्रियों की स्वतंत्रता के लिए मुखर रूप से आवाज उठाई है| उन्होंने स्त्रियों से बाहर निकलने और अपनी प्राथमिकता को अहमियत देने का आह्वान भी किया है| लेखिका ने स्त्रियों को आत्मनिर्भर बनने की राह दिखाते हुए लिखा है- “सीधी-सी बात है, घूमना मेरी प्राथमिकता है तो मैंने हमेशा उसी दिशा में काम किया है| अब मैं घूम रही हूँ| उसके

लिए मेरी सबसे पहली जरूरत थी-आत्मनिर्भर होना| पापा या पति से पैसे माँगकर अकेले कितने दिन घूमती? आजादी बड़ी अनोखी-सी चिड़िया है, यह है तो आपकी, लेकिन समय-समय पर इसको दाना डालना होता है| अगर आपने दाना उधार लिया तो चिड़िया भी उधार की हो जाती है| आत्मनिर्भरता के दाने पर पलती है यह, और इसे किसी महँगे या ख़ास दाने की जरूरत भी नहीं होती| बस अपना हो, अपने खुद के पसीने से कमाया हुआ कैसा भी दाना| उसी में मस्त रहती है|"[91]

स्त्रियों को वैयक्तिक स्वतंत्रता धीरे-धीरे मिल रही है| उन्हें यह स्वतंत्रता भले कम मिली हो और इसकी गति भी धीमी है, लेकिन लेखिका को उम्मीद है कि इसे एक दिन पाकर रहेंगी| इस यात्रा-वृत्तांत में उनका विश्वास स्पष्ट दिखता है कि इस आजादी को एक दिन चारों ओर पहुँचाना है| अनुराधा बेनीवाल का विश्वास, उनकी प्राथमिकता उनके शब्दों में द्रष्टव्य है- "मैं उस चीज के बिना वापस नहीं जाऊँगी! मुझे इस आजादी को अपने खेतों, अपने गाँवों अपने शहरों में महसूस करना है| मुझे यूँ ही निश्चिन्त बेफ़िक्र घूमना है, रोहतक की गलियों में| मुझे वह चीज 'विकास नगर' की उस गली में छोड़ देनी है, जहाँ वह लड़का मेरी छाती पर हाथ मारकर भाग गया था| सोनीपत बस स्टैंड के उस मोड़ पर छोड़ देनी है, जहाँ से गुजरते वक्त मुझे गंदे इशारों, टिप्पणियों से नवाजा जाता था| दिल्ली की उन बसों में छोड़ देनी है, जहाँ वह आदमी जिप खोलकर मेरे पीछे रगड़ने की कोशिश कर रहा था| उस घर में छोड़ देनी है, जहाँ मेरी दोस्त के पिता ने मेरा कद और बदन नापने के बहाने मेरे पूरे शरीर पर अपना लिजलिजा हाथ फिराया था| उस ट्रेन के स्लीपर कोच में छोड़ देनी है, जहाँ वह आदमी रात को मेरी चादर के नीचे कुछ ढूँढ़ने आ गया था|"[92]

पाद टिप्पणी

1. नरेश मेहता:कितना अकेला आकाश, पृष्ठ- 23
2. उपरिवत, पृष्ठ- 32
3. उपरिवत, पृष्ठ- 45
4. उपरिवत, पृष्ठ- 65
5. कृष्णनाथ:स्पीति में बारिश, पृष्ठ- 20
6. उपरिवत, पृष्ठ- 60
7. उपरिवत, पृष्ठ- 111-112
8. उपरिवत, पृष्ठ- 183
9. उपरिवत, पृष्ठ- 196
10. राहुल सांकृत्यायन:एशिया के दुर्गम भूखंडों में, पृष्ठ- 52
11. उपरिवत, पृष्ठ- 152
12. उपरिवत, पृष्ठ- 179-180
13. उपरिवत, पृष्ठ- 184
14. उपरिवत, पृष्ठ- 202
15. श्रीरामवृक्ष बेनीपुरी:पैरों में पंख बाँधकर, पृष्ठ- 61
16. उपरिवत, पृष्ठ- 115-116
17. उपरिवत, पृष्ठ- 131
18. उपरिवत, पृष्ठ- 186
19. उपरिवत, पृष्ठ- 196
20. सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय':अरे यायावर रहेगा याद, पृष्ठ- 19

21. उपरिवत, पृष्ठ- 41

22. उपरिवत, पृष्ठ- 53

23. उपरिवत, पृष्ठ- 137

24. उपरिवत, पृष्ठ- 177

25. सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन ‘अज्ञेय’:एक बूँद सहसा उछली, पृष्ठ- 35

26. उपरिवत, पृष्ठ- 94

27. उपरिवत, पृष्ठ- 145

28. उपरिवत, पृष्ठ- 184

29. उपरिवत, पृष्ठ- 205

30. कुसुम खेमानी:कहानियाँ सुनाती यात्राएँ, पृष्ठ- 48-49

31. उपरिवत, पृष्ठ- 86-87

32. उपरिवत, पृष्ठ- 123

33. उपरिवत, पृष्ठ- 137

34. उपरिवत, पृष्ठ- 178

35. ओम थानवी:मुअनजोदड़ो, पृष्ठ- 23

36. उपरिवत, पृष्ठ- 39

37. उपरिवत, पृष्ठ- 45

38. उपरिवत, पृष्ठ- 87

39. असगर वजाहत:चलते तो अच्छा था, पृष्ठ- 7-8

40. उपरिवत, पृष्ठ- 56-57

41. उपरिवत, पृष्ठ- 115

42. उपरिवत, पृष्ठ- 125
43. उपरिवत, पृष्ठ- 126
44. यशपाल:लोहे की दीवार के दोनों ओर, पृष्ठ- 135
45. उपरिवत, पृष्ठ- 143-144
46. उपरिवत, पृष्ठ- 183
47. उपरिवत, पृष्ठ- 177
48. अनिल यादव:वह भी कोई देस है महराज, पृष्ठ- 18
49. उपरिवत, पृष्ठ- 33
50. उपरिवत, पृष्ठ- 66-67
51. उपरिवत, पृष्ठ- 93
52. उपरिवत, पृष्ठ- 136
53. विष्णु प्रभाकर:हँसते निर्झर:दहकती भट्ठी, पृष्ठ- 20
54. उपरिवत, पृष्ठ- 26
55. उपरिवत, पृष्ठ- 105
56. उपरिवत, पृष्ठ- 119
57. मोहन राकेश:आखिरी चट्टान तक, पृष्ठ- 13
58. उपरिवत, पृष्ठ- 45
59. उपरिवत, पृष्ठ- 79
60. उपरिवत, पृष्ठ- 107
61. अमृतलाल बेगड़:सौंदर्य की नदी नर्मदा, पृष्ठ- 1

62. उपरिवत, पृष्ठ- 7

63. उपरिवत, पृष्ठ- 51

64. उपरिवत, पृष्ठ- 133

65. निर्मल वर्मा:चीड़ों पर चाँदनी, पृष्ठ- 62

66. उपरिवत, पृष्ठ- 78

67. उपरिवत, पृष्ठ- 130

68. उपरिवत, पृष्ठ- 133

69. मृदुला गर्ग:कुछ अटके कुछ भटके, पृष्ठ- xv-xvi

70. उपरिवत, पृष्ठ- 22

71. उपरिवत, पृष्ठ- 67

72. उपरिवत, पृष्ठ- 106

73. उमेश पंत:इनरलाइन पास, पृष्ठ- 77-78

74. उपरिवत, पृष्ठ- 94

75. उपरिवत, पृष्ठ- 107

76. उपरिवत, पृष्ठ- 147

77. नासिरा शर्मा:जहाँ फव्वारे लहू रोते हैं, पृष्ठ- 7

78. उपरिवत, पृष्ठ- 66

79. उपरिवत, पृष्ठ- 119

80. उपरिवत, पृष्ठ- 152

81. उपरिवत, पृष्ठ- 288

82. उपरिवत, पृष्ठ- 339

83. उपरिवत, पृष्ठ- 390

84. गरिमा श्रीवास्तव, देह ही देश: पृष्ठ- 51

85. उपरिवत, पृष्ठ- 59

86. उपरिवत, पृष्ठ- 110

87. उपरिवत, पृष्ठ- 137

88. अनुराधा बेनीवाल:आजादी मेरा ब्रांड, पृष्ठ- xiv

89. उपरिवत, पृष्ठ- 8

90. उपरिवत, पृष्ठ- 10

91. उपरिवत, पृष्ठ- 60

92. उपरिवत, पृष्ठ- 186

चतुर्थ अध्याय

हिंदी के चयनित यात्रा-वृत्तांतों का आलोचनात्मक अध्ययन

4.1 भारत संबंधी यात्रा-वृत्तांत

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय':अरे यायावर रहेगा याद
विष्णु प्रभाकर:हँसते निर्झर:दहकती भट्ठी
मोहन राकेश:आखिरी चट्टान तक
अमृतलाल वेगड़:सौंदर्य की नदी नर्मदा
कृष्णनाथ:स्पीति में बारिश
मृदुला गर्ग:कुछ अटके कुछ भटके
कुसुम खेमानी:कहानियाँ सुनाती यात्राएँ
अनिल यादव:वह भी कोई देस है महराज
उमेश पंत:इनरलाइन पास

4.2 पड़ोसी राष्ट्र संबंधी यात्रा-वृत्तांत

ओम थानवी:मुअनजोदड़ो

4.3 एशिया संबंधी यात्रा-वृत्तांत

राहुल सांकृत्यायन:एशिया के दुर्गम भूखंडों में
यशपाल:लोहे की दीवार के दोनों ओर
असगर वजाहत:चलते तो अच्छा था
नासिरा शर्मा:जहाँ फव्वारे लहू रोते हैं

4.4 यूरोप संबंधी यात्रा-वृत्तांत

श्रीरामवृक्ष बेनीपुरी:पैरों में पंख बाँधकर
सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय':एक बूँद सहसा उछली
नरेश मेहता:कितना अकेला आकाश
निर्मल वर्मा:चीड़ों पर चाँदनी
गरिमा श्रीवास्तव:देह ही देश
अनुराधा बेनीवाल:आजादी मेरा ब्रांड

यात्रा-वृत्तांत ने हमारे लिए दुनिया का एक बड़ा दरवाजा खोला है| इसके पास दुनिया के किसी भी संदर्भ को आधार देने की क्षमता है| यात्रा-वृत्तांत ने हमारे सामने जानने और समझने की एक बड़ी दुनिया खड़ी की है| हमारी देखने समझने की सीमाओं में वह अनंत विस्तार किया है, जिसकी कल्पना वह व्यक्ति नहीं कर सकता, जो इससे महरूम है| यात्रा-वृत्तांत ने देश और समाज के कितने सारे पहलू उजागर किए हैं| राहुल सांकृत्यायन की यायावरी को कौन भूल सकता है, जिन्होंने देश और दुनिया के कई अनछूए पहलुओं को उजागर किया| निर्मल वर्मा के जरिए हम पूर्वी यूरोप से परिचित होते हैं तो अज्ञेय के साथ यायावर बन कर असम से पेशावर तक की यात्रा करते हैं| कृष्णनाथ की हिमालय यात्राओं ने लद्दाख, हिमाचल और अरुणाचल के दुर्गम इलाकों से हमारा परिचय कराया है, तो अनिल यादव के जरिये हमने पूर्वोत्तर को जाना और समझा है| हम अमृतलाल बेगड़ के साथ चलकर ही यह जान पाते हैं कि अमरकंटक से निकल कर खम्बात की खाड़ी में गिरने वाली नर्मदा को 'सौन्दर्य की नदी' क्यों कहा जाना चाहिए? असगर वजाहत की यात्राओं ने ईरान का अर्थ समझाया है और उन्हीं के जरिए हम यह जान पाए हैं|

यात्राओं के जरिए हम उन तमाम जाने-अनजाने लोगों से प्रत्यक्षतः रू-ब-रू होते हैं, जिनसे हमारा पूर्व में सीधा साहचर्य नहीं होता| हम इन मुलाकातों में जहाँ एक तरफ प्रकृति से सीधे जुड़ते हैं, वहीं दूसरी तरफ यह भी जान पाते हैं कि दुनिया

के हर हिस्से के मनुष्य में प्रेम, दया, क्षमा, करुणा और परोपकार का भाव ही प्रधान होता है| कोई भी लेखक उत्कृष्ट रचनाकार तभी बनता है जब वह जीवन को समीप से देखता है और जीवन को समीप से देखने का सबसे सरल माध्यम यात्रा करना है| रचनात्मक लेखन करने वाला हर लेखक अपने साहित्य में किसी-न-किसी रूप में यात्रा-साहित्य का सृजन करता है| हिंदी गद्य के साथ-साथ इसने भी पर्याप्त विकास किया है| अधिकांश लेखकों ने इस विधा को अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया है| गोविंद मिश्र ने लिखा है- "अलग-अलग प्रदेशों, देशों और महाद्वीपों के सामाजिक स्तर, रहन-सहन, आचार-विचार, भाषा, पहनावा, रीति-रिवाज और जीवन पद्धति में आश्चर्यजनक भिन्नताएँ होती हैं, इसलिए एक अंचल के व्यक्ति को अन्य क्षेत्रों या दूसरे देशों की सभ्यता-संस्कृति को देखने और जानने की उत्सुकता होना स्वाभाविक है|"[1]

4.1 भारत संबंधी यात्रा-वृत्तांत

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय':अरे यायावर रहेगा याद

राहुल सांकृत्यायन के बाद यात्रा-वृत्तांत में बहुमुखी प्रतिभा के धनी कवि-कथाकार 'अज्ञेय' का नाम बड़े सम्मान से लिया जाता है| अज्ञेय अपने यात्रा-वृत्तांत को यात्रा-संस्मरण कहना पसंद करते थे| इससे उनका आशय यात्रा-वृत्तांतों में संस्मरण का समावेश कर देना था| उनका मानना था कि यात्राएँ न केवल बाहर की जाती हैं बल्कि वे हमारे अंदर की ओर भी की जाती हैं| 'अरे यायावर रहेगा याद' (सन 1953) उनके द्वारा लिखित यात्रा-वृत्तांत की प्रसिद्ध कृति है| 'अरे यायावर रहेगा याद' में उनके भारत भ्रमण की यात्राओं को शब्दबद्ध किया गया है| अज्ञेय अपनी यात्रा में लाहौर, कश्मीर, पंजाब, औरंगाबाद, बंगाल, असम आदि प्रदेशों की प्रकृति और भूमि से गुजरते हुए अपनी कथात्मक शैली और भाषा की ताजगी से सिर्फ

गणित को हल करने का द्वन्द और अकथ उद्यम इस पुस्तक को लोकप्रिय कृति बनाते हैं|

'अरे यायावर रहेगा याद' को मिली लोकप्रियता से स्वयं अज्ञेय भी आश्वस्त थे| पुस्तक के परवर्ती संस्करण की भूमिका में लेखक का यह उद्गार पुस्तक की सफलता का द्योतक है- "अरे यायावर रहेगा याद' की बढ़ती हुई लोकप्रियता यदि इस बात का संकेत है कि पाठकों में अपने देश को एक समग्र इकाई के रूप में पहचानने की उत्सुकता बढ़ रही तो वह मेरे लिए विशेष सुखद बात है| भ्रमण या देशाटन केवल दृश्य-परिवर्तन या मनोरंजन न होकर सांस्कृतिक दृष्टि के विकास में भी योग दे, यही उसकी वास्तविक सफलता होती है|"[2]

इस पुस्तक को पढ़ते-पढ़ते पाठक लगभग एक यात्रा ही कर लेता है, इतना सजीव चित्रण किया गया है| अज्ञेय का तो जीवन ही घुमक्कड़ी करते बीता है| उन्होंने भौतिकशास्त्र की पढ़ाई से लेकर सेना में नौकरी तक की, जिसमें उन्हें जीवन के विभिन्न आयामों, विभिन्न पहलुओं का ज्ञान हुआ और यह उनकी लेखनी में भी झलकता है| अज्ञेय की भाषा संस्कृतनिष्ठ है| यात्रा-वृत्तांत की शैली कहानीमय है| ऐसा लगता है जैसे अज्ञेय कोई कहानी कह रहे हैं, हम सब जिसके पात्र हैं और उत्सुकता से अपना भाग आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं| बीच बीच में अज्ञेय ने संस्कृत में सूक्तियाँ भी लिखी हैं और कविताएँ भी रची हैं| रेखा प्रवीण उप्रेती ने यात्रा-वृत्तांत में अज्ञेय के योगदान को बताते हुए लिखा है- "अज्ञेय और मोहन राकेश ने यात्रा-साहित्य को तथ्यात्मकता से उबार कर उसे मानवीय मन की सूक्ष्म संवेदनाओं और व्यक्ति के अंतर्जगत के विविध आयामों से जोड़ा और इस विधा को सृजनात्मक स्वरूप देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई|"[3]

'अरे यायावर रहेगा याद' के कई लेखों में ललित निबंध सी विशेषताएँ मिल जाती हैं, लेखक पाठक से सीधी बातें करते हैं| ऐसी पंक्तियाँ बड़ी आकर्षक होती हैं| एक उदाहरण देखिए- "बचपन में एक नाम पढ़ा था 'अमरकंटक' : यह नाम ही इतना पसंद आया कि मैंने चुपके से कम्बल और दो-चार कपड़ों का बंडल बना लिया कि अभी चल दूँगा वहाँ के लिए! वह जाना नहीं हुआ, अभी तक भी

अमरकंटक नहीं देखा है और इस प्रकार का कांटा अभी तक सालता ही है, पर नक्शे की यात्रा तो कई बार की है और अमरकंटक के बारे में उतना सब जानता हूँ जो वहाँ जाकर जान पाता| ऐसा ही एक और नाम था तरंगमबाड़ी-यों नक्शों में उसका रूप विकृत हो कर त्रांकुबार हो गया है| 'तरंगों वाली बस्ती'- सागर के किनारे के गाँव का यह नाम सुन कर क्या आपके मन में तरंग नहीं उठती कि जा कर देखें?"[4]

अज्ञेय ने एक लेख में पर्यटकों को ज़िम्मेदारियों का भी बोध कराया है| लाहौली लोगों में अपनी संस्कृति के प्रति अभिमान और बाहर से आने वाले लोगों में उसके प्रति अनभिज्ञता का वर्णन भी अज्ञेय ने किया है| उन्होंने इस बात पर चिंता भी व्यक्त की है कि बाहर से आने वाले लोग किस प्रकार से नशा, व्यसन इत्यादि यहाँ पर लेकर आते हैं| माना कि पहाड़ी जनजातियाँ पर्यटकों की जीवन पद्धति के अनुसार विकसित नहीं हैं लेकिन उनमें विकृतियाँ तो नहीं हैं| बिगड़ती परस्थितियों से लेखक का साक्षात्कार कई बार हुआ जब उनके निरुद्देश्य विचरण को कुत्सित मानसिकता वाले लोगों ने अपने ढंग से समझने की कोशिश की|

उत्कृष्ट यात्रा-वृत्तांत में वहाँ के जीवन की सांस्कृतिक झाँकियाँ भी देखने को मिलती हैं| इस यात्रा-वृत्तांत में संकलित कई लेखों में अज्ञेय ने भारतीय संस्कृति की झाँकियाँ भी प्रस्तुत की हैं| एक उदाहरण प्रस्तुत है- कुलू प्राचीन हिन्दू सभ्यता का गहवारा है| यहाँ प्रत्येक कस्बे और ग्राम के अपने-अपने देवता हैं, जो अपने-अपने मंदिरों में बैठे हुए ही लोगों की पूजा पाते हैं और साल में एक बार अपने-अपने रथों में बैठकर कुलू के रघुनाथ मंदिर में प्रतिष्ठित राम की उपासना के लिए जाते हैं| सैंकड़ों देवी-देवताओं और उनके मंदिरों के कारण, और इस विराट् देव-सम्मलेन के कारण ही, कुलू प्रदेश का नाम 'देवताओं का अंचल' (वैली ऑफ़ द गॉड्स) पड़ा है| ये सब असंख्य देवी-देवता और ऋषि-मुनि यहाँ के आदिम निवासियों द्वारा पूजे जाते थे| वे आर्य थे या नहीं इस बात का झगड़ा यहाँ नहीं है, लेकिन आर्य-धर्म के जिस रूप को हिन्दू धर्म के नाम से हमने जाना वह यहाँ विजेता के रूप में आया|"[5]

अज्ञेय के यात्रा-वृत्तांतों में पर्यावरण, इतिहास, साहित्य का चिंतन देखने को मिलता है| उन्होंने प्रचलित ऐतिहासिक गाथा को उपलब्ध प्राकृतिक अवरोधों से तौलने की कोशिश की है और सोचा है कि उस समय क्या हुआ होगा| अब यह चिंता सिर्फ ऐतिहासिक बातों तक ही सीमित हो ऐसा तो नहीं है| साहित्यिक चिंतन यथेष्ट

है| अज्ञेय के यात्रा-वृत्तांतों में एक खास बात उनकी विश्वसनीयता होती है| पाठक को एक बार यही लगता है कि वह लेखक के साथ उन पहाड़ों में, उन नावों में घूम रहा है, जिनका वर्णन इस यात्रा-वृत्तांत में है| अज्ञेय ने स्थानीय लोगों के साथ उनकी भाषा में बात करके कई स्थानों के बारे में प्रचलित किंवदंतियों के बारे में भी बताया है| साथ-ही-साथ आज़ादी मिलने के कुछ वर्ष पहले पश्चिमी पंजाब के कुछ इलाक़ों में बढ़ती हुई विभाजन की माँग का भी ज़मीनी तौर पर आँखों देखा हाल मिलता है| इसके साथ ही अज्ञेय को अपने क्षेत्र का भी ज्ञान है, जैसा कि हमने 'किरणों की खोज में' में उनको भौतिकी के विभिन्न पहलुओं को छूते हुए देखा है|

अज्ञेय ने अपने यात्रा-वृत्तांत में ऐतिहासिक घटनाओं पर विचार व्यक्त करते समय अपने विचार और अनुभूति को भी कहीं-कहीं साकार रूप दिया है| ऐतिहासिक तथ्य के अनुसार औरंगजेब ने भी अन्य शासकों की भाँति अपनी समाधि बनवा ली थी| दूसरी ओर एलोरा की गुफाएँ मिलती हैं, जो भारतीय संस्कृति की धरोहर हैं| दोनों की तुलना करते हुए 'अज्ञेय' ने लिखा है- "अपनी समाधि पहले बनवा रखने की बात औरों को भी सूझती रही, ठीक है,-मृत्युपूजक और भी रहे-पर तुमने यह स्थल क्यों चुना?...तुम्हारी और तुम्हारे भ्रातृघाती, पितृघाती, अपत्यघाती, कुलद्रोही कुनबे की कब्रें आज भी चक-चक लिपी पुती हैं| लेकिन एलुरा आज भी एक अचरज है बल्कि रंग न होने से उसका मूल सौंदर्य और उभर आया है; और तुम-तुम्हारी समाधियाँ?"[6]

कोई भी यात्रा मात्र व्यक्ति की यात्रा नहीं होती| अगर वह जिस रास्ते पर चल रहा है, वह रास्ता भी यात्रा में शामिल है| 'अरे यायावर रहेगा याद' एक ऐसा ही यात्रा-वृत्तांत है, जिसमें रास्ते शामिल हैं| इसलिए यह पुस्तक अपने काल के भीतर और बाहर एक प्रक्रिया, एक विचार और एक विमर्श भी है| अनदेखे और अछूते को यात्रा की अभिव्यक्ति और उसकी कला में मूर्त करना कोई 'अज्ञेय' से सीखे| 'अज्ञेय' की यह दृष्टि ही थी कि यात्रा, भ्रमण के बजाय एक ऐसी घटना बन सकी जिसकी क्रिया-प्रतिक्रिया में अपना कुछ अगर खो जाता है तो बहुत कुछ मिल भी जाता है| अपना बहुत कुछ खोने, पाने और सृजन करने का नाम है- 'अरे यायावर रहेगा याद'|

विष्णु प्रभाकर:हँसते निर्झर:दहकती भट्ठी

विष्णु प्रभाकर के व्यक्तित्व का प्रभाव ही है कि उनका यात्रा-वृत्तांत श्रेष्ठ बन पड़ा है| उनके यात्रा-वृत्तांत में उनका विनोदी स्वभाव, देश-प्रेम, इतिहास, संस्कृति एवं प्रकृति के प्रति अनुराग सर्वत्र छन-छनकर मुखर हुआ है| विष्णु प्रभाकर का यात्रा-वृत्तान्त अपनी सूक्ष्मदृष्टि, जीवन के प्रति राग और प्रभावी अभिव्यक्ति के कारण विशेष उल्लेखनीय हैं| लेखक के व्यक्तित्व की बहुत-सी विशेषताएं उनके यात्रा-वृत्तांत में प्रकट हुई हैं| विष्णु प्रभाकर के यात्रा-वृत्तांत में सर्वत्र सहज, सरल, रोचक एवं बोधगम्य भाषा मिलती है| उनके यात्रा-वृत्तांत में काव्यात्मक, भावात्मक, तुलनात्मक, चित्रात्मक, दार्शनिक आदि विविध शैलियों का सफल प्रयोग हुआ है| लेखक ने पुस्तक की भूमिका में ही अपने यात्रा-वृत्तांत की शैली एवं स्वरूप को स्पष्ट करते हुए लिखा है- “इनमें जानकारी देने का प्रयत्न इतना नहीं है, जितना अनुभूति का वह चित्र प्रस्तुत करने का है, जो मेरे मन पर अंकित हो गया है| इन अर्थों में ये सब चित्र मेरे अपने हैं| कहीं मैं कवि हो उठा लगता हूँ, कहीं दार्शनिक, कहीं आलोचक, कहीं मात्र एक दर्शक| मैं जानता हूँ कि हुआ मैं कुछ नहीं हूँ| मुझे मात्र दर्शक रहना चाहिए था| लेकिन मन की दुर्बलता कभी-कभी इतनी भारी हो उठती है कि उससे मुक्त होना असंभव हो जाता है| शायद यही किसी लेखक की असफलता है| मेरी भी है| लेकिन एक बात निश्चय ही कही जा सकती है कि इस पुस्तक में विविधता की कमी पाठकों को नहीं मिलेगी|”[7]

विष्णु प्रभाकर ने प्रकृति चित्रण पर जोर दिया है| प्रकृति चित्रण में उनका सौंदर्य-बोध एवं वर्णन कौशल देखते ही बनता है| प्रकृति चित्रण में उनकी भावुकता प्रखर हो जाती है और शैली आलंकारिक| हँसते निर्झर दहकती भट्ठी की गोमुख की यात्रा के वर्णन में लेखक हमें वहाँ के भूगोल के परिचय के साथ वनस्पतियों, जड़ियों-बूटियों से भी परिचय कराता है| विष्णु प्रभाकर के यात्रा-वृत्तांत में प्रकृति की विविध छवियां अपनी जीवंतता के साथ प्रकट हुई हैं| लेखक ने प्रकृति को रंग, रूप, गंध, स्वाद, बनावट, उपयोगिता गुण-दोष आदि के साथ चित्रित किया है| उनके यात्रा-वृत्तांत में प्रकृति का स्वतंत्र रूप से वर्णन हुआ है, लेकिन प्रकृति-चित्रण

में लेखक की कलात्मकता, सौंदर्य-बोध और वर्णन कौशल देखते बनता है| उन्होंने प्रकृति को मानवीय रूप में प्रकट किया है| लेखक प्रकृति में मानव की अनेक क्रियाओं का दर्शन करता है| विष्णु प्रभाकर ने प्रकृति को उर्जा का स्रोत माना है और जीवनदायिनी शक्ति स्वरूप माना है, जो मनुष्य की पीड़ा-नाशक है, शक्ति-प्रदाता है और उसे शांति, स्फूर्ति व जीवन जीने की प्रेरणा प्रदान करती है|

विष्णु प्रभाकर ने प्रकृति का दार्शनिक रूपों में भी चित्रण किया है| विष्णु प्रभाकर प्रकृति की क्रियाओं में जीव-जगत के संबंधों की भी झलक देखते हैं| लेखक ने हिमालय क्षेत्र में मिलने वाले जीव-जंतुओं, वनस्पतियों, फूलों, प्राकृतिक स्थलों के रंग, रूप, स्वाद, गंध, गुण, आकार, बनावट, स्वभाव, उपयोगिता आदि का भी ज्ञानवर्धक एवं रोचक वर्णन किया है| उन्होंने प्रकृति के दिव्यात्मक रूप अनेक जगह प्रकट किया है| उन्होंने हिमालय की एश्वर्यपूर्ण प्रकृति में स्वर्गिक रूप की कल्पना की है| लेखक को यात्रा में प्रकृति की ओर विशेष आकर्षण रहा है और उन्होंने प्राकृतिक वातावरण को अनेक चित्रों व बिम्बों के रूप में अपनी रचनाओं में प्रकट किया है| लेखक ने कहीं-कहीं प्रकृति को उद्दीपक रूप में प्रकट किया है, जो प्रकृति लेखक को रम्य रूप में दिखाई देती है, वही उनमें भय की भावना भी पैदा करती है|

विष्णु प्रभाकर ने सामाजिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक मुद्दों पर भी कलम चलाई है| देश में व्याप्त ऊँच-नीच, जाति व्यवस्था जैसी कुरीतियों पर भी कटाक्ष किया है| उन्होंने कलकत्ता की यात्रा का वर्णन के माध्यम से वहाँ हो रही वेश्यावृत्ति जैसे संवेदनशील विषय को उठाया है| उसके कुचक्र में घिसती कम उम्र की लड़कियों की सामाजिक, आर्थिक स्थिति का भी वर्णन किया है| लेखक ने कलकत्ता की विविधता का वर्णन बहुत ही बारीकी से किया है| लेकिन उनके मन में वहाँ की सड़ांध भरी जिंदगी के प्रति क्षोभ भी है, जिसे लेखक के शब्दों में समझा जा सकता है- “छिः-छिः, योगी और वेश्या, ‘सागर-संगम’ की वह धर्मभीरु कुलीन माता और वेश्या की वह अनाथ लड़की! कलकत्ता यही तो है| मनुष्य यही तो है| बहुरूपी मनुष्य| कैसा है यह देश! आकाश में चिमनियाँ धुआँ उगलती हैं, आदमी शोर उगलता है| धरती पर अबाध गति से शरीर के ऐनोटोमी की परीक्षा होती है| और गांधी की यह गतिमय प्रतिमा सब कुछ को मौन देखती रहती है| रवींद्र और शरत,

राममोहन और रामकृष्ण, देशबंधु और नेताजी सुभाष, शिशिर और सत्यजित राय- उन सबके इस नगर में क्या नहीं होता है? नाटक होते हैं, होते ही रहते हैं| शादियाँ होती हैं तो बाढ़ आ जाती है| आंदोलन उठते हैं तो उन्हें कोई रोक नहीं सकता| भावुकता उभरती है तो आँसुओं का सैलाब आ जाता है...|”[8]

इस यात्रा-वृत्तांत में विष्णु प्रभाकर ने वैशाली के प्राचीन इतिहास और मिथक का भी वर्णन किया है| उन्होंने महावीर जैन और भगवान बुद्ध की के बहाने वैशाली के संक्षिप्त इतिहास का उद्घाटन किया है| लेखक ने दुनिया का पहला गणतंत्र वैशाली के लोकतांत्रिक मूल्यों एवं ऐतिहासिक महत्त्व का भी बखूबी चित्रण किया है| उन्होंने लिखा है- “तो यह है वैशाली (आज बसाढ़)...ये आड़ी-तिरछी रेखाएँ-ये अरूप को रूप देने वाले खंडहर-मैं अकेला पड़ गया| अनजाने, अनचीन्हे की चाह मुझे यहाँ तक खींच लाई थी, वह अतृप्त रह गई| यंत्रवत एक मील तक फैले टीले (चेटक का गढ़) पर चढ़ा, दौड़-दौड़कर भूगर्भ से निकले खंडहरों को देखा-कहीं स्तूप, कहीं कलापूर्ण विशाल भवन, कहीं वीथिकाएँ, आगे बढ़ता, ठिठक जाता-यहीं तथागत ने वैशाली के क्षत्रियों को देखा होगा, यहीं वैशाली की नगर-वधू अपनी मादक रूप-सुरा से यौवन को बेबस बनाती होगी, यहीं कहीं वह गर्वोन्मिता राजपुरुषों के रथ के पहियों से पहिये रगड़कर आगे बढ़ी होगी| इन्हीं-किन्हीं भवनों में गणतंत्र के वे प्रहरी राजकीय विषयों पर वाद-विवाद करते होंगे|”[9]

विष्णु प्रभाकर का यात्रा-वृत्तांत विविधताओं से भरा पड़ा है| उन्होंने न सिर्फ हिंदुस्तान बल्कि रूस, थाईलैंड, बर्मा की भी यात्राओं का भी वर्णन किया है| विष्णु प्रभाकर इस यात्रा-वृत्तांत में रूस की समाजवादी व्यवस्था की सम्पन्नता का वर्णन करते हैं तो थाईलैंड के जन-जीवन की सरलता एवं सहजता पर भी कलम चलाते हैं| थाईलैंड के इतिहास में जाते हुए वहाँ के हिन्दू साम्राज्य एवं बौद्ध साम्राज्य की संस्कृति को टटोलते हैं तो बर्मा के लोगों के जीवन पर भारतीय संस्कृति के प्रभाव का भी वर्णन करते हैं| थाईलैंड के इतिहास में जाकर विष्णु प्रभाकर लिखते हैं- “ईसा की पहली सदी से लेकर चौदहवीं सदी तक इन देशों में खमेर, श्रीविजय और मज्जापत्तम जैसे महान हिन्दू और बौद्ध साम्राज्य पुष्पित और पल्लवित होते रहे हैं| उसके बाद जैसा कि भारत में हुआ, ये देश मुस्लिम संस्कृति और साम्राज्य से प्रभावित हुए और अंत में पश्चिम के देशों ने उन पर अपना अधिकार जमा लिया| इस शताब्दी में प्रथम महायुद्ध के बाद जैसा कि एशिया के

दूसरे देशों में हुआ, इन देशों में भी स्वाधीनता के लिए तड़प पैदा हुई और धीरे-धीरे आज वे सब देश स्वतंत्र हो चुके हैं|”10

विष्णु प्रभाकर को देश-विदेश में, नगरों में और प्रकृति के प्रांगण में जब-जब और जहाँ-जहाँ यात्रा करने का अवसर मिला है, उन सबकी चर्चा उन्होंने यात्रा-वृत्तांत में की है| इसमें जानकारी देने का प्रयत्न इतना नहीं है, जितना अनुभूति का वह चित्र प्रस्तुत करने का है, जो उनके मन पर अंकित हो गया है| इस यात्रा-वृत्तांत में विविधता की कमी पाठकों को नहीं मिलेगी| कहीं विहँसते निर्झर, मुस्कराते उद्यान उसका स्वागत करेंगे तो कहीं विगत के खँडहर उसकी ज्ञानपिपासा को शांत करेंगे, कहीं उसे भीड़ के अंतर में झाँकने की दृष्टि मिलेगी तो कहीं नई सभ्यता का संगीत भी सुनने को मिलेगा| इस यात्रा-वृत्तांत में पाठक उनके साथ कंटकाकीर्ण दुर्गम-पंथों पर चलते-चलते सुरम्य उद्यानों में पहुँच जाता है तो कहीं विस्तृत जल राशि पर नावों में तैरने लगता है| कहीं पृथ्वी के नीचे तीव्रगामी रेलों में दौड़ने लगता है तो कहीं वायु के पंखों पर सवार होकर विद्युत और मेघों द्वारा निर्मित तूफान को झेल रहा होता है|

मोहन राकेश:आखिरी चट्टान तक

मोहन राकेश का यात्रा-वृत्तांत उत्तर से प्रारंभ होकर देश की दक्षिण सीमा पर समुद्र की लहरों के बीच खड़ी अटल चट्टान पर बने विवेकानंद के मंदिर पर समापन होता है| मोहन राकेश की मस्ती अलग प्रकार की है| वे कोई भी निश्चित कार्यक्रम बनाकर यात्रा नहीं करते| यात्रा में हो रही घटनाएँ और उन पर प्रतिक्रियाएँ ही उनका कार्यक्रम निर्धारित करती हैं| इससे उनके यात्रा-वृत्तांत में एक ऐसी निस्संगता आ जाती है, जो उनके संवेदनशील मन को घटनाओं से संपृक्त रखते हुए भी एक तटस्थ दृष्टा का भाव देती है, साथ ही यात्रा से प्राप्त अनुभूतियों के प्रति एक संतुष्टि का भाव देती है| मोहन राकेश लिखते हैं- “कालीकट से अर्णाकुलम जाते हुए मैं रास्ते में उतर गया-वडक्कुनाथन का मंदिर देखने के लिए| मंदिर के पश्चिमी गोपुरम के बाहर बने

विशाल स्तम्भ के पास रुककर मैं कई क्षण उसकी भव्यता को मुग्ध आँखों से देखता रहा|"[11]

'आखिरी चट्टान तक' के माध्यम से यह सामने आता है कि यायावर को एक नियत कार्यक्रम बनाकर उस पर कठोरता से नहीं चलना चाहिए| जहाँ मन हो, जितनी देर के लिए हो, रुककर उसका आनंद या अनुभूति लेते हुए चलना चाहिए| ऐसी यायावरी में परिस्थितियाँ ही यायावर को भ्रमण कराएँगी| ऐसी यात्रा में जो घटनाएँ एक के बाद दूसरी घटेंगी उनमें संबद्धता शायद ही हो| इसी तरह कनाकोर से कालीकट रेल से जाते हुए आसमान के नीले सागर और समुद्रतट की पीली रेत के आकर्षण से वे तेल्लीचरी स्टेशन पर उतर जाते हैं| वे नीला आसमान तथा पीली रेत के संयोग को भूल जाते हैं और उस मलयालम प्रदेश में भाषा के सहारे बिना इशारों की सहायता से भ्रमण कर डालते हैं| मोहन राकेश ने अपने यात्रा-वृत्तांत में लिखा है- "कनाकोर से कालीकट जाते हुए रास्ते में मैं तेल्लीचेरी स्टेशन पर उतर गया| यह एक सनक ही थी| कनाकोर से चल देने का निश्चय अचानक ही कर लिया था|...पीली रेत-दूर-दूर तक फैली हुई| नारियलों के घने झुंड और नंगी रेत| समुद्र का नीला पानी और चिकनी रेत| खिड़की से दिखाई देती वह तट की रेत इतनी आकर्षक लग रही थी कि मन हुआ उसे पास से देखने के लिए क्यों न वहीं कहीं उतर पड़ूँ? क्या पता आगे कहीं रेत उतनी पीली, उतनी चिकनी और उतनी एकांत मिलेगी या नहीं| जब गाड़ी तेल्लीचेरी स्टेशन पर रुकी, तो मैंने बिना ज्यादा सोचे अपना सामान गाड़ी से उतरवा लिया|...डेढ़-दो का समय था| गाड़ी चली गयी, तो प्लेटफार्म और पटरियों पर फैली धूप को देखकर मुझे वहाँ उतर पड़ने के लिए अफ़सोस होने लगा|"[12]

मोहन राकेश हिंदी साहित्य के उन अग्रणी लेखकों में गिने जाते हैं, जिनकी दृष्टि अधिकांशतः व्यक्ति विशेष पर ही केन्द्रित रहती है| यही कारण है कि उनके यात्रा-वृत्तांत में भी उनकी दृष्टि विशेष रूप से चरित्रों पर टिकी हुई दिखाई देती है| एक मनमोहक उदाहरण देखिए- "ढलान से घाटी की तरफ झुके एक पेड़ के नीचे से दो आँखें सहसा मेरी तरफ देखती हैं| उन आँखों में सारस का विस्मय है और दरिया की उमंग| साथ एक चमक है जो कि उनकी अपनी है| "यह रास्ता कहाँ जाता है?" मैं

पूछता हूँ| लड़की अपनी जगह से उठ खड़ी होती है| उसके शरीर में कहीं ख़म नहीं है| साँचे में ढले अंग-एक सीधी रेखा और कुछ गोलाईयाँ| आँखों में कोई झिझक या संकोच नहीं| "तुम्हें कहाँ जाना है?" वह पूछती है| "यह रास्ता जहाँ भी ले जाता हो...|" वह हँस पड़ती है| उसकी हँसी में भी कोई गाँठ नहीं है|...यह रास्ता हमारे गाँव को जाता है," लड़की कहती है| सूर्यास्त के कई-कई रंग उसके हँसिये में चमक जाते हैं|"[13]

मोहन राकेश का यात्रा-वृत्तांत इस युग की निधि है| मोहन राकेश ने अपनी यात्रा की अनुभूतियों को बहुत ही आत्मीयता एवं रोचकता से प्रकट किया है| वे यात्रा-वृत्तांत में यात्रा के बाह्य विवरणों के स्थान पर मानवीय संवेदनाओं और अनुभूतियों को प्रकट करने वाले अग्रणी यात्रा-वृत्तांतकारों में से एक हैं| उनके यात्रा-वृत्तांत में मानवीय संवेदना का एक उदाहरण देखिए- "वह मुझसे सब कुछ पूछ चुकने के बाद अब अपने बारे में बता रहा था| वह वहाँ से कुछ मील दूर एक गाँव में रहता था| "हमारे गाँव का जमींदार बहुत ज़ालिम आदमी है," वह कह रहा था| "मगर ऊपर तक उसकी इतनी पहुँच है, कि कभी उस पर कोई जाँच नहीं आती| सारा इलाका उससे थर-थर काँपता है| किसानों पर झूठे मुक़दमे बनाना, उन्हें पिटवाना या जान से मरवा देना और उनकी बहू-बेटियों की इज्जत उतारना, ये सब उसके रोज के कारनामे हैं| क्या किसी तरह उस आदमी की रिपोर्ट पंडित नेहरू तक नहीं पहुँचायी जा सकती?"[14]

हिंदी यात्रा-वृत्तांत के संदर्भ में मोहन राकेश को बड़ा हस्ताक्षर माना जाता है| उन्होंने यात्रा-वृत्तांत को नए अर्थों से समन्वित किया है| मोहन राकेश द्वारा लिखित 'आखिरी चट्टान तक' (सन 1953) में दक्षिण भारत का विस्तार से वर्णन किया गया है| दक्षिण भारतीय जीवन पद्धति के विविध बिम्बों को इसमें लेखक ने यथावत् प्रस्तुत किया है| उनके यात्रा-वृत्तांत की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें कहानी की-सी रोचकता और नाटक का-सा आकर्षण देखा जा सकता है|

अमृतलाल वेगड़:सौंदर्य की नदी नर्मदा

अमृतलाल वेगड़ मूल रूप से चित्रकार हैं और उन्होंने गुरू रवीन्द्रनाथ टैगोर के शान्ति निकेतन से 1948 से 1953 के बीच कला की शिक्षा ली थी, फिर जबलपुर के एक कॉलेज में चित्रकला के अध्यापन का काम किया| तभी उनके यात्रा-वृत्तांत में इस बात की बारीकी से ध्यान रखा गया है कि पाठक जब शब्द बाँचे तो उसके मष्तिष्क में चित्र उभरे| उनके भावों में यह भी ध्यान रखा जाता रहा है कि जो बात चित्रों में कही गई है उसकी पुनरावृत्ति शब्दों में ना हो, बल्कि चित्र उन शब्दों के भाव विस्तार कर काम करते हैं| अमृतलाल वेगड़ ने करीब चार हजार किलोमीटर लम्बी नर्मदा नदी की परिक्रमा की और अपनी तीन यात्रा-वृत्तांतों 'सौंदर्य की नदी नर्मदा', 'अमृतस्य नर्मदा', 'तीरे-तीरे नर्मदा' में इसके अनुभवों और नदी के अद्‌भुत सौंदर्य को सहज और प्रभावी तरीके से समेटा है|

दुबली-पतली काया, करीब पाँच फीट का सामान्य कदकाठी, आँखों पर मोटे फ्रेम का चश्मा पहने अमृतलाल वेगड़ ने अपनी पत्नी के साथ हजारों किलोमीटर नर्मदा के साथ-साथ पहाड़ों, जंगलों और उबड़-खाबड़ रास्तों को अपने मजबूत इरादे से पैदल यात्रा करते हुए नापा है| उन्होंने इसके जिस अलौकिक सौंदर्य को हमारे सामने रखा है, उसका बड़ा अभिप्राय नदियों के सिर्फ आध्यात्मिक दृष्टि से ही पूजने या सम्मान की पैरवी नहीं करता बल्कि उसे पर्यावरण सम्पन्न दृष्टि से देखने और बिगड़ते हुए स्वरूप पर गहरी चिन्ता के साथ उसे बचाने के लिये समाज को सचेत और सजग बनाने की भी वकालत करता है| उन्होंने अपना पूरा जीवन नर्मदा को समर्पित कर दिया था|

नर्मदा के तटों की परिक्रमा करते हुए, जीवन के कितने ही रूपों और रंगों की आवाजाही की भीड़ में किसी समाधिलीन साधक से, वे वह सब कुछ उसी निगाह से निहारते-परखते रहे, जैसा वह सचमुच था| यही उनकी साफगोई भी थी, ईमानदारी भी| अपना कोई रंग मनमाना, उन्होंने उस पर थोपा ही नहीं| न ही उसके रंग को अपनी कलाकारी से रंगा और पोता| इसलिए वह अपने स्वभाव में हैं वहाँ, भले ही कहने को यह नर्मदा के बहाने से हो| अमृतलाल वेगड़ ने लिखा है-

“फिर भी जो देखा वह भी तो कम नहीं| मैंने नर्मदा को प्रकट होते देखा, अन्य नदियों से पुष्ट होते देखा और समुद्र में लुप्त होते देखा| नर्मदा को मैंने किनारों से बतियाते सुना, चट्टानों पर लिखते देखा और रेत पर बेल-बूटे काढ़ते देखा|...सुबह से शाम तक मैं चलता रहता और साँझ होने पर अनजान आदमियों के दरवाजे खटखटाता| मैं उन भोले-भाले ग्रामीणों के घर रहा, जिनके निश्छल हृदयों में नर्मदा की छवि पाई| उनके प्यार की अनुभूति सदा के लिए मेरे मन में बनी रहेगी| मुझे लगता है कि वहाँ से उनका प्यार आज भी मुझ पर बरस रहा है| मैं उन परकम्मावासियों के साथ भी चला, जो रूखा-सूखा, पेट-अधपेट खाकर लंबी तानकर सोते थे और सवेरा होते ही अपने कंधे पर गठरी लादकर आगे बढ़ते थे| मैं नर्मदा का आंशिक सौंदर्य ही देख सका| पर सोचता हूँ, जब आंशिक सौंदर्य इतना है, तब पूर्ण सौंदर्य कितना होगा!”[15]

नदी, चाँद, आदिवासी, गाँव के लोग, लोक-जीवन, पर्व-त्यौहार और दंतकथाएँ, नर्मदा की कौन सी ऐसी चीज थी, जो वेगड़ जी ने सौंदर्य की नदी नर्मदा को अर्पित न कर दी हो| इस किताब में वे अपने आपको पूरा उलीच देना चाहते थे, ताकि कुछ छूट न जाए और यह भी लिखते जाते थे कि अगली बार आऊंगा तो यह सब नहीं मिलेगा, यह सब नर्मदा में डूबने वाला है| इसलिए इस स्मृति को अमिट करने के लिए वे रेखाएँ भी काढ़ देते थे| नदी किनारे नहाती, कुएँ में पानी भरती गाँव की महिलाएँ, कहीं नदी में छपाके लगाते बच्चे, तो कहीं गाँव के मंदिर की दालान में बिखरी चाँदनी और आसमान में खेलता चाँद, सबकुछ को उन्होंने अपने वर्णन में सजीव बना दिया है| उन्होंने न सिर्फ नर्मदा के सौंदर्य का वर्णन किया है बल्कि उसके किनारे की सभ्यता और संस्कृति का भी चित्रण किया है| सत्यदेव परिव्राजक ने भी लिखा है- “यात्री की जिज्ञासा केवल देश के प्राकृतिक परिदृश्य तक ही सिमित नहीं रहती, वह वहाँ की सभ्यता और संस्कृति को भी समझना चाहती है|”[16]

अमृतलाल वेगड़ ने नर्मदा को आखिरी साँस तक जिया और उसकी चिंता करते रहे| नर्मदा उनके व्यक्तित्व में घुल-मिल गई थी| चित्रकार और लेखक के रूप में उन्होंने नर्मदा की यश गाथा और उसके सौन्दर्य को दूर-दूर तक पहुँचाया| उन्होंने इस यात्रा-वृत्तांत में नर्मदा का सिर्फ गौरव गान ही नहीं किया है, बल्कि नर्मदा के

बिगड़ते स्वरूप को लेकर अपनी चिंता भी व्यक्त की है| उन्होंने इस यात्रा-वृत्तांत की भूमिका में ही लिखा है- "नर्मदा तट का भूगोल तेज़ी से बदल रहा है| बरगी बाँध के कारण नर्मदा तट के कई गाँवों का अस्तित्व नहीं रहा| नर्मदा-सागर और सरदार सरोवर बाँधों के कारण अनेक गाँवों का तथा नर्मदा के सैकड़ों किलोमीटर लंबे किनारों का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा| जब मैंने ये यात्राएँ की थीं, तब एक भी गाँव डूबा नहीं था| नर्मदा बहुत कुछ वैसी ही थी, जैसी लाखों वर्ष पूर्व थी। मुझे इस बात का संतोष रहेगा कि नर्मदा के उस विलुप्त होते सौंदर्य को मैंने सदा के लिए इन पृष्ठों पर संजोकर रख दिया है| इसमें जो कुछ अच्छा है, वह नर्मदा का है| सौन्दर्य उसका, भूलचूक मेरी|”[17]

अमृतलाल वेगड़ ने नर्मदा की सभ्यता, संस्कृति, लोकाचार और न जाने कितनी परंपराओं को वक्त रहते पूरी शिद्दत से समेट लिया| वे इस काम को जितनी जल्दी हो सके, उतनी जल्दी पूरा करना चाहते थे, क्योंकि उन्हें साफ दिख रहा था कि आधुनिक विकास नाम का दैत्य बहुत तेजी से चला आ रहा है, जो नए बांधों की शक्ल में नर्मदा की संस्कृति और लोकजीवन को अपने भीतर समा लेगा और हुआ भी ठीक वैसा ही| नर्मदा पर बड़े-बड़े बाँध बन जाने के कारण उसका प्राकृतिक सौंदर्य नष्ट हो गया, जिसकी गहरी पीड़ा और आक्रोश भी लेखक के मन में है|

अमृतलाल वेगड़ वह मनीषी हैं, जिन्होंने नर्मदा का साक्षात्कार उसके भरपूर सौंदर्य के साथ किया| नर्मदा लेखक के कार्यों में भी प्रतिबिंबित होती रही है| कथावाचक जैसी रोचक शैली में नर्मदा परिक्रमा के अनुभव को समेटे यह यात्रा-वृत्तांत वास्तव में साहित्य और पर्यावरण हितैषी समाज की धरोहर है| नर्मदा की विशेषताओं और पौराणिक महत्त्व को बताते हुए लेखक ने लिखा है- “नर्मदा तट के छोटे-से-छोटे तृण और छोटे-से-छोटे कण न जाने कितने परिव्राजकों, ऋषि-मुनियों और साधु-संतों की पदधूलि से पावन हुए होंगे| यहाँ के वनों में अनगिनत ऋषियों के आश्रम रहे होंगे| वहाँ उन्होंने धर्म पर विचार किया होगा, जीवन मूल्यों की खोज

की होगी और संस्कृति का उजाला फैलाया होगा| हमारी संस्कृति आरण्यक संस्कृति रही| लेकिन अब? हमने उन पावन वनों को काट डाला है और पशु-पक्षियों को खदेड़ दिया है या मार डाला है| धरती के साथ यह कैसा विश्वासघात है!"[18]

अमृतलाल वेगड़ के कहने का सार है कि हमारी चिंता सिर्फ नदियों को पूजने की न होनी चाहिए, बल्कि हम यह फिक्र करें कि नदियाँ कैसे सदा नीरा रहे? नर्मदा की रेत भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण है, जितनी जल धारा और इसमें मछली भी उतनी ही अनिवार्य है, जितना उसके तट पर आने वाले मवेशियों के खुरों से धरती का मंथना| अमृतलाल वेगड़ होने का अर्थ नदी को उसके पूरे रूप-संसार के साथ जानना है और उनके न होने का अर्थ है पर्यावरण के ऐसे सपूत का न होना, जो हमें प्रकृति के कई-कई अर्थों से वाकिफ करवा रहा था|

यात्रा करते हुए यायावर स्थान विशेष के प्राकृतिक सौंदर्य को देखता है, उसका संगीत सुनता है और उसकी चेतना का अनुभव करता है| परिणामस्वरूप उसकी रचना में भी प्रकृति की जीवंत छवियाँ चित्रित होती हैं| अमृतलाल वेगड़ ने भी नर्मदा के साथ-साथ बाह्य परिवेश और वातावरण का चित्रण अपने यात्रा-वृत्तांत में बहुतायत से किया है| स्थान विशेष के प्राकृतिक सौंदर्य, रीति-रिवाज, आचार-विचार, आमोद-प्रमोद, जीवन-दर्शन और नर्मदा के रंग-बिरंगे लोकजीवन को भी लेखक ने वर्णित किया है| मार्ग के विभिन्न दृश्य, प्रकृति की विभिन्न छवियाँ, संस्कृति का सौंदर्य ऐसे अवयव हैं, जिन्हें शब्दबद्ध करने के लिए लेखक ने भाषा में चित्रात्मकता का सहारा लिया है| इसी कारण पाठक इस पुस्तक में अंकित दृश्यों या परिवेश के विविध रूपों की अनुभूति का भरपूर रसपान करता है| इस यात्रा-वृत्तांत के होने का अर्थ नदी को उसके पूरे रूप-संसार के साथ जानना है और इतना ही नहीं बल्कि यह हमें प्रकृति के अनेकों अर्थों से भी वाकिफ कराता है| आज जब नर्मदा को गहरे संकट से बचाने और उसे पुनर्प्रतिष्ठित करने की आवश्यकता है तो ऐसे समय में नर्मदा नदी का वह यायावर हमारे बीच नहीं है| सहारा है तो बस इतना कि उनकी पुस्तकें और रेखांकन भविष्य में हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे|

कृष्णनाथ:स्पीति में बारिश

यह पुस्तक कृष्णनाथ की हिमालय कथात्रिक का पहला पद है| दूसरा पद 'किन्नर धर्मलोक' और तीसरा 'लद्दाख में राग-विराग' है| जिस तरह वामन ने तीन पदों में तीनों लोकों को पार कर लिया था, उसी तरह कृष्णनाथ ने समग्र हिमालय को समेटना चाहा है| कृष्णनाथ जहाँ की यात्रा करते हैं, वहाँ वे सिर्फ पर्यटक नहीं होते बल्कि तत्त्ववेता की तरह अध्ययन करते चलते हैं| स्थान विशेष से जुड़ी हुई स्मृतियों को उघाड़ते चलते हैं| ये स्मृतियाँ इतिहास के प्रवाह में स्थानीय होकर रह गई हैं, लेकिन जिनका सम्पूर्ण भारतीय जन मानस से गहरा रिश्ता है|

कृष्णनाथ का यात्रा-वृत्तांत केवल जानकारी ही प्रदान नहीं करता बल्कि सर्वत्र लेखक की स्वच्छंदता, प्रवाह, मस्ती और उल्लास की भावना भी झलकती दिखाई देती है| उन्होंने अपने यात्री-जीवन में लगातार, अबाध गति से यात्राएँ की हैं और यात्रा के अनुभवों को जगह-जगह प्रकट किया है| कृष्णनाथ के यात्रा-वृत्तांत में वैचारिकता सर्वत्र दिखाई देती है| यात्रा के दौरान प्रसंगवश अनेकानेक विषयों पर लेखक की विचार श्रृंखला मुखर हुई है| विचारों के दौरान लेखक के व्यक्तित्व, जीवन-दर्शन, चिंतन, अनुभव, रुचि, स्वभाव आदि की श्रेष्ठ अभिव्यक्ति मिलती है| उनका यात्रा के प्रत्येक क्षण के साथ तादात्म्य देखने को मिलता है| कृष्णनाथ यात्रा के दौरान हमेशा सहज ही रहते हैं, लेकिन चिंतन के दौरान गंभीर हो जाते हैं| उनके यात्री-जीवन, यात्रा-लेखन, यात्रागत-उद्देश्य देखने के बाद उच्च कोटि के घुमक्कड़ साबित होते हैं|

इस यात्रा-वृत्तांत में कृष्णनाथ स्पीति के लोगों से मिलते-जुलते, उनके तीज-त्यौहार, उत्सवों में भाग लेते चलते हैं| स्पीति के प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लेते, स्पीतिवासियों के मानस में पैठते हुए वे पाठक का अनोखे लोक से साक्षात्कार कराते हैं| एक उदाहरण देखिए- "लाहुल के रास्ते जाने-पहचाने हैं, मध्य हिमालय की यह छोटी-सी दुनिया है| इसके इस पार से उस पार तक हम हो आये हैं| सिर्फ सड़क-सड़क नहीं, डाक बँगलों में नहीं, गाँवों में, उनके हृदयों में हम रहे हैं| इसलिए लौटते हुए जगह-जगह लोग विदा कर रहे हैं| जीप पर एक सफ़ेद खदक बाँध देते हैं जो शांति के धर्म-ध्वज की तरह फहरता है| लोग उसे देख कर, बल्कि सुन कर, दौड़ कर सड़क पर आ जाते हैं| जुले-जुले कहते हैं| नमस्कार करते हैं| हम भी उन्हें जुले-जुले कहते हैं| इशारे से विदा लेते हैं|"[19]

ऐसे विरले यायावर होते हैं जो हिमालय की आत्मा को वहाँ के नदी-नालों में, पहाड़ों में, हरियाली तथा हिमगिरियों में, वहाँ के अदम्य निवासियों में, वहाँ की संस्कृति में, उनके सुख-दुःख में खोजते हैं| कृष्णनाथ उसी दिशा में चलने वाले यायावर हैं| कृष्णनाथ वहाँ के जीवन के सभी पक्ष, उद्देश्य एवं समग्र जीवन की अभिव्यक्ति करते हुए एक महत्त्वपूर्ण यात्रा-वृत्तांत रचते हैं| इस यात्रा-वृत्तांत में कृष्णनाथ वीरान-से-वीरान, सघन-से-सघन स्थान में प्राण डालते चलते हैं| स्पीतिवासियों द्वारा पूजा में हिंदू, बौद्ध तथा आदिम धर्मों के मिश्रण को कृष्णनाथ बारीकी से देखते चलते हैं| वहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य और मानस की सहृदयता का आनंद लेते चलते हैं तथा पाठकों को उस अद्भुत अनजाने प्रदेश में भ्रमण कराते हैं| फिर ताबो पहुँचकर, लगभग एक हजार वर्ष पुराने गुनपा तथा निकट स्थित 'फू' की गुफाओं के रंगीन भित्तिचित्रों से परिचय कराते हैं और वे भित्तिचित्र अपनी अद्भुत कथा सुनाते हैं, जिससे उनका सौंदर्य और निखर कर सामने आ जाता है| कृष्णनाथ बिना किसी पूर्वप्रबंध के इन विरले ऊँचाइयों, दुर्गम तथा कष्टसाध्य स्थानों में वहाँ के सांस्कृतिक, सामाजिक परिवेश का अध्ययन करने निकल पड़ते हैं|

कृष्णनाथ इस पुस्तक में लामाओं से विचार-विमर्श भी करते हैं और बौद्ध धर्म की गत्यात्मकता के लिए बौद्ध विद्यालय खोलने की वकालत करते हैं| आधुनिक शिक्षा के आलावा बौद्ध धर्म पर भी अध्ययन-अध्यापन की बात करते हैं| लाहुल और स्पीति में बौद्ध धर्म क्षीण हो चला है, उसपर चिंता प्रकट करते हुए वहाँ के लोगों को समझाते चलते हैं कि आधुनिकता को अपनाएँ लेकिन अपने धर्म, उसकी पद्धतियों, नीतियों, दर्शन तथा भोटी भाषा यानी अपनी मातृभाषा को सीखने एवं उसके महत्त्व को समझने पर जोर डालते हैं| उन्होंने लिखा है- "मैंने भोटी भाषा के प्रश्न पर बहुत विचार किया| मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि भोटी की पढ़ाई प्राथमिक से लेकर माध्यमिक स्तर तक हो| विशेष अध्ययन-अनुसंधान के कुछ केन्द्रों में भोटी भाषा और साहित्य की खोज हो| ग्रंथों का संस्करण हो| कोश छपें| भारतीय भाषाओं में, विशेषकर हिंदी भाषा और देवनागरी लिपि में अनुवाद हो| भोटी प्रेस हो| त्रैमासिक शोध पत्रिका हो| साहित्यिक और सांस्कृतिक मासिक पत्र-पत्रिकाएँ हों| लोकप्रिय दैनिक और साप्ताहिक समाचार पत्र भोटी में प्रकाशित हों| आकाशवाणी से भोटी के प्रसारण की अवधि और आवृत्ति अधिक हो| किंतु शिक्षा का माध्यम हिंदी हो|"[20]

लोक-जीवन तो हर जगह अपना होता ही है, पर इस क्षेत्र के पहाड़ और घाटियां बाक़ी हिमालय से बहुत जुदा हैं| स्पीति के पार बाह्य हिमालय दिखता है| इसकी एक चोटी 23,064 फीट ऊँची बताई जाती है| लेखक चोटियों से होड़ लगाने के पक्ष में नहीं है| इन ऊँचाइयों से होड़ लगाना मृत्यु है| कभी-कभी उनका मान-मर्यादा करना मर्द और औरत की शान है| लेखक ने इस यात्रा-वृत्तांत में अपनी इच्छा भी व्यक्त की है| वह चाहता है कि देश-दुनिया के मैदानों व पहाड़ों से युवक-युवतियाँ आकर अपने अहंकार को गलाकर फिर चोटियों के अहंकार को चूर करें| माने की चोटियाँ बूढ़े लामाओं के जाप से उदास हो गईं हैं| युवक-युवतियाँ यहाँ आकर किलोल करें तो यहाँ आनंद का प्रसार हो|

लेखक ने लिखा है कि ऊँचे दर्रों व कठिन रास्तों के कारण इतिहास में इसका नाम कम ही रहा है| आजकल संचार के आधुनिक साधनों में वायरलेस के जरिए ही केलग व काजा के बीच संबंध रहता है| केलग के बादशाह को हमेशा अवज्ञा या बगावत का डर रहता है| यह क्षेत्र प्राय: स्वायत्त रहा है चाहे कोई भी राजा रहा हो| इसका कारण यहाँ का भूगोल है| भूगोल ही इसकी रक्षा तथा संहार करता है| जोरावर सिंह हमले के समय स्पीति के लोग घर छोड़कर भाग गए थे| उसने यहाँ के घरों और विहारों को लूटा था| स्पीति नदी तिब्बत की तरफ से आती है तथा किन्नौर जिले से बहती हुई सतलुज में मिलती है| यह क्षेत्र अत्यंत बीहड़ और वीरान है| लेखक ने इस यात्रा-वृत्तांत में आश्चर्य भी प्रकट किया है कि आखिर यहाँ लोग रहते कैसे हैं? यह क्षेत्र आठ-नौ महीने शेष दुनिया से कटा रहता है| वे एक फसल उगाते हैं तथा लकड़ी व रोजगार भी नहीं है, फिर भी वे यहाँ रह रहे हैं, क्योंकि वे यहाँ रहते आए हैं| यह तर्क से परे की चीज है|

कृष्णनाथ ने बताया है कि स्पीति में एक ही फसल होती है जिनमें जौ, गेहूँ, मटर व सरसों प्रमुख हैं| सिंचाई के साधन पहाड़ों से बहने वाले झरने हैं| स्पीति नदी का पानी काम में नहीं आता| स्पीति की भूमि पर खेती की जा सकती है बशर्ते वहाँ पानी पहुँचाया जाए| यहाँ फल, पेड़ आदि नहीं होते| भूगोल के कारण स्पीति नंगी व वीरान है| वर्षा यहाँ एक घटना है| लेखक ने अपने यात्रा-वृत्तांत में एक घटना का

वर्णन किया है| वह काजा के डाक बंगले में सो रहा था| आधी रात के समय उसे लगा कि कोई खिड़की खड़का रहा है| उसने खिड़की खोली तो हवा का तेज झोंका मुँह व हाथ को छीलने-सा लगा| उसने पल्ला बंद किया तथा आड़ में देखा कि बारिश हो रही है| बर्फ की बारिश हो रही थी| सुबह उठने पर पता चला कि लोग उनकी यात्रा को शुभ बता रहे थे| यहाँ बहुत दिनों बाद बारिश हुई थी|

इस यात्रा-वृत्तांत में पाठक वहाँ के स्त्रियों, पुरुषों, लामाओं, रानी पार्वती, रानी दमयंती, कैप्टन भीमसिंह का सैन्य कौशल एवं चतुराई, पर्वतों-नदियों, कुंजम या द्रौपदी दर्रे से संवाद तथा हिमालय की शाश्वत उदात्त आत्मा से साक्षात्कार करता है| तिब्बत में बौद्ध धर्म के निष्कासन जनित लाहुल-स्पीति में जो सांस्कृतिक शून्य आ गया था तथा जिसे ऊँचे पहाड़ों ने भारत की हिंदू संस्कृति से यथासमय भरने नहीं दिया, उसके निदान एवं उपचार हेतु तथा उसे भारत की मुख्यधारा से जोड़ने हेतु क्या करणीय है, इन सबके अवलोकन, अध्ययन तथा कार्य-योजना का निर्माण हेतु कृष्णनाथ ने यह यात्रा-वृत्तांत लिखा|

इस यात्रा-वृत्तांत में हिमालय के दुर्गम क्षेत्रों में बसने वाली जातियों लाहुलियों, स्पीतिवासियों के जीवन में बौद्ध धर्म, संस्कृति के प्रभाव एवं स्वरूप का वर्णन मिलता है| लेखक की मूल दृष्टि बुद्धत्व को जानने में रही है| उन्होंने लिखा है- "लेकिन मैं दुःख से घबराकर प्रभुओं के सामने, बुद्धों, बोधिसत्वों, डाक-डाकिनियों के सामने हाथ जोड़कर बारम्बार प्रणाम नहीं कर सकता| मुझमें वह भक्ति नहीं है, शरणागति नहीं है, इसलिए मेरे दुखों की सद्यः निवृत्ति नहीं है| मैं तो इन दुखों को, दुःखव्यवस्था के मूल को जानना चाहता हूँ| यह बुद्धत्व क्या है? मैं इस खोज में हूँ|"[21]

लेखक ने लिखा है वहाँ बौद्ध संस्कृति के अलावा शेष भारत की तरह पांडव कथा भी छाई है| परशुराम ने उसे भी केरल, गोवा तथा असम जैसे सीमांतों की तरह बसाया है| वहाँ हिंदू तांदी के पश्चिम में त्रिलोकनाथ आदि स्थान पर रहते हैं, लेकिन ब्राह्मण नहीं रहते| हिन्दू भी अपने धर्म का ज्ञान नहीं रखते तथा उनके धार्मिक अवसरों पर बौद्ध लामा ही कर्मकांड करते हैं| वहाँ हिंदु और बौद्ध मिलकर घनिष्ठता से रहते हैं| हिंदू को पुजारी नहीं मिलने पर बौद्ध लामाओं से कार्य संपन्न

कराते हैं| वहाँ बौद्ध और हिंदू नाम एक जैसे मिलते हैं| लेकिन कृष्णनाथ उन्हें सिर्फ बौद्ध नाम रखने की ही हिदायत देते हैं, जबकि बुद्ध हिन्दुओं के दस अवतारों में से एक हैं| महाभारत की कथा भी विराजमान है| वहाँ मान्यता है कि पांडवों का स्वर्गारोहण स्पीति-लाहुल की चंद्रभागा नदी के तट पर हुआ था|

उन्होंने जर्जर होती बौद्ध परम्परा पर भी बात की है| कृष्णनाथ अपना यात्रा-वृत्तांत में बताते हैं कि लाहुल-स्पीति शेष भारत से मात्र रोहतंग तथा कुंजम से जुड़ा रहने के कारण शेष भारत से उसका सम्बन्ध क्षीण है| वे दर्रे भी वर्ष के शीतकाल के 8-9 माह के लगभग अलंघ्य हो जाते हैं| इस दुर्गम क्षेत्र में कृष्णनाथ यात्रा करते हैं और स्पीति के प्राकृतिक दृश्यों, विपाशा नदी, व्यास नदी एवं उसके पौराणिक आधारों का वर्णन करते हैं| पुत्रशोक से व्याकुल वशिष्ठ जब अपने को पाश में बाँधकर विपाट नदी में समर्पित कर देते हैं तब वह विपाट नदी उनके पाश खोलकर उन्हें तट पर ला देती है और तब से उस नदी का नाम विपाशा पड़ जाता है| कृष्णनाथ वहाँ की सच्चाइयों, कठिनाइयों का वर्णन मात्र नहीं करते, स्पीति नदियों की लहरों के साथ, उनसे संवाद करती वहाँ की नदियाँ, उपदेश देता हिमालय सबका वर्णन करते हैं|

राहुल सांकृत्यायन की भांति कृष्णनाथ की यात्राएँ भी ज्ञान की खोज में हुई हैं| उनके यात्रा-वृत्तांत में हिमालय क्षेत्र के लोक-जीवन का जीवंत चित्रण हुआ है, लेकिन उनकी यात्रा का मूल उद्देश्य हिमालय क्षेत्र में सुरक्षित बौद्ध धर्म और संस्कृति की खोज रही है| उन्होंने यात्रा-वृत्तांत में लाहुली, स्पीतिवासियों के जीवन में बौद्ध धर्म एवं संस्कृति के स्वरूपों, चिह्नों, कला, दर्शन के जीवंत केंद्रों का वर्णन किया है| लेखक ने इन जातियों की लोक-संस्कृति, रहन-सहन, वेश-भूषा, खान-पान, परिवार-व्यवस्था, स्वभाव, परम्पराओं, विश्वास, मान्यताओं, गीत-नृत्य, उत्सवों, मेलों आदि को चित्रित किया है|

मृदुला गर्ग:कुछ अटके कुछ भटके

अपने अनुभव को लिखते हुए लेखक उतना ही संतुष्ट होता है, जितना उस अनुभव को जीते हुए, किन्तु पाठकों की संतुष्टि उनकी अपनी समस्या है| इस यात्रा-वृत्तांत को पढ़ते हुए लगता है कि यात्रा करने से कहीं अच्छा है भटकना| कहना ना होगा कि यह यात्रा-वृत्तांत अटकाती तो नहीं है पर कहीं-कहीं भटकाती अवश्य है| यहाँ लेखिका का भटकाव कहीं-कहीं यात्रा बन पड़ा है, वो बात अलग है| ज़िंदगी में घुमक्कड़ नहीं बने तो समझिए आपने ज़िंदगी को पूरा जिया ही नहीं| अपने इस घुमक्कड़पन का अगर दस्तावेज़ीकरण नहीं किया तो समझिए आपने ज़िंदगी को पूरा पढ़ा ही नहीं| हम पाठकों का तो पता नहीं लेकिन लेखिका इस हिसाब से इस भूल से बच निकली हैं|

मृदुला गर्ग ने बहुत ही संवेदनात्मक यात्रा-वृत्तांत लिखा है| उनके यात्रा-वृत्तांत में प्रकृति प्रेम, भारतीय जन-जीवन, संस्कृति, खान-पान, रहन-सहन, पर्व-त्यौहार एवं साहित्य की झलक मिलती है| कालीदास के बहाने संस्कृत साहित्य का भी परिचय मिलता है| मृदुला गर्ग काफी साहसिक यात्री रही हैं| उनके यात्रा-वृत्तांत की सबसे बड़ी विशेषता वर्णित जगह की सामाजिक, राजनैतिक जीवन में हस्तक्षेप है| वे सच्चाईयों को चुप-चाप देखती नहीं हैं, बल्कि दृढ़ता के साथ बयाँ करती हैं|

इस यात्रा-वृत्तांत में लेखिका ने उद्देश्यपूर्ण यात्रा के महत्त्व पर भी चर्चा की है| उन्होंने यात्रा की सार्थकता, उद्देश्य और इसके अलग-अलग किस्मों पर प्रकाश डालते हुए लिखा है- “यात्राएँ भी, पाप की तरह, अलग किस्मों की होती हैं| मोटी-मोटी दो किस्में| प्रयोजन युक्त और प्रयोजन मुक्त| अपने सम्राट अशोक ने बेटे-बेटी समेत ठठ-के-ठठ भारतवासी, श्रीलंका, चीन, अफगानिस्तान भेजे तो प्रयोजन युक्त यात्रा के तौर पर, ऊपरी मकसद था बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार और असली अपने प्रभाव क्षेत्र का विस्तार| दूसरे देशों पर आधिपत्य| हर राजा-महाराजा-राजप्रमुख की यही महत्त्वाकांक्षा होती है| सम्राट अशोक बला के कूटनीतिज्ञ थे, गांधी जी के सच्चे पूर्वज| खून का एक कतरा गिरा नहीं और पूरा मुल्क और उसकी जनता अपने कब्जे में|”[22]

लेखिका ने हिरोशिमा के इतिहास, युद्ध के बाद विध्वंसित शहर, उठती चीख और चीत्कार का वर्णन करते हुए हिरोशिमा की विशेषता, वर्तमान ख्याति, सौंदर्य, वहाँ के रंगमंच, उद्यान एवं कला-कौशल का भी चित्रण किया है| केरल के

पेड़-पौधे, नारियल, मसाले की उपज, मछली और समुद्री जीव-जंतु, झील, पुल, ओणम त्यौहार, वहाँ के मंदिर, मस्जिद, चर्च, गाँव, शहर का सौंदर्य, शास्त्रीय नृत्य, कन्याकुमारी का भौगोलिक परिदृश्य और समाज में हिंदी के प्रति व्याप्त नफरत तक को लेखिका ने रेखांकित किया है| इस यात्रा-वृत्तांत में हजारीबाग के जंगल से लेकर काजीरंगा का विशाल जंगल भी देखने को मिलता है| वे तमिलनाडु के मधुमलाई जंगल से लेकर, कर्नाटक के बांदीपुर, ऊटी तक का सैर पाठक को करा लाती हैं| मधुमलाई से लेकर काजीरंगा जंगल का सौंदर्य, हिंसक-अहिंसक पशुओं का सामना, चहकते चिड़िया, पक्षी, जंगल का जीवन, वहाँ की मस्ती, काजीरंगा के तमाम वैभव एवं नैसर्गिक सम्पदा, चाय के तरह-तरह के प्रकार एवं इतिहास तथा चाय बगान की खूबसूरती का बहुत ही सुंदर वर्णन मिलता है|

मृदुला गर्ग जहाँ भी गईं, वहाँ के समाज की पड़ताल बहुत ही बारीकी से की है| इस यात्रा-वृत्तांत में मालदीव का बहुत ही सुन्दर वर्णन मिलता है| उन्होंने मालदीव के भौगोलिक परिदृश्य का वर्णन करते हुए वहाँ के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक सौंदर्य का भी चित्रण किया है| मालदीव में शराब बंद है, लेकिन यह पर्यटकों के लिए नहीं, क्योंकि मालदीव की अर्थव्यवस्था का बहुत बड़ा हिस्सा पर्यटकों पर निर्भर करता है| लेखिका ने लिखा है- "बाकी वक्त महंगे पानी के बजाय शराब पी| सस्ती वह भी नहीं थी क्योंकि दोस्तों ने जो ड्यूटी फ्री दुकान से खरीदी थी, वह मालदीव हवाई अड्डे पर कस्टम वालों ने धरवा ली| कहा, लौटते वक्त लेते जाइएगा, मालदीव में नशाबंदी कानून लागू है, पर खनखन सैलानियों के लिए नहीं|"[23]

असम की यात्रा का वर्णन में लेखिका ने वहाँ की राजनीतिक अस्थिरता, बांग्लादेश से आकर बसे लोगों के कारण असम के मूल निवासियों की आपसी समस्याओं को भी उठाया है| असम में खनिज सम्पदा होने के बावजूद असम की स्थिति ख़राब है तो उसके लिए वहाँ की सरकार जिम्मेदार है| असम में तेल, कोयला, वन-संपदा नदियों का अकूत पानी, बुनाई, कताई, रंगाई और कलाकारी में बेजोड़ असम की खासियत है, जिसकी ओर लेखिका ने ध्यान आकर्षित किया है| वहाँ के जंगल, हरियाली और प्रकृति के अनुपम सौंदर्य का भी वर्णन उन्होंने किया है| असम की प्रसिद्ध चाय, ब्रह्मपुत्र नदी का विशाल कलरव, बिहू नृत्य की विशेषता एवं उसके प्रकार ये सब इस यात्रा-वृत्तांत में देखने को मिलते हैं| पूर्वोत्तर भारत की यात्रा का वर्णन करते हुए लेखिका ने धर्म-निरपेक्षता की भी वकालत की है| उन्होंने

सिक्किम के बौद्ध मठ, हिन्दू मंदिर, भारतीय फ़ौज के बहाने चीनी सैनिकों के हाथों शहीद हुए प्रतापी बाबा हरभजन सिंह के मंदिर, इतिहास और सरकार का उनके परिवार के प्रति योगदान की भी चर्चा की है|

सूरीनाम में आयोजित होने वाले विश्व हिंदी सम्मलेन में मृदुला गर्ग को जाने का अवसर मिला था| लेखिका ने वहाँ के जन-जीवन और प्रकृति का बहुत ही बारीकी से वर्णन किया है| चाहे वह सूरीनाम की मूसलाधार बारिश हो, वहाँ की अप्रतिम हरियाली से घिरे जन-जीवन, आदिवासी लोगों का इतिहास और शारीरिक बनावट, कॉफ़ी, कोको और अनगिनत जड़ी-बूटियों, वहाँ के मशहूर चिड़िया, संयुक्त परिवार की वाहवाही, झील, जंगल, तालाब आदि का बहुत ही सुंदर वर्णन किया गया है| सूरीनाम की मूसलाधार बारिश का वर्णन के माध्यम से लेखिका का अमेरिका की वर्चस्ववादी नीति पर कटाक्ष देखिए| मृदुला गर्ग ने लिखा है- “आखिर इतनी हबड़-धबड़ में हवाई अड्डे भागने की क्या तुक थी, मैं सोचे जा रही थी कि बाहर शोर उठ खड़ा हुआ| जैसे जंग छिड़ गई हो| बंदूकें, तोप, हथगोले चल पड़े या सिर्फ यह हुआ कि बारिश ने हमला बोल दिया| यूँ बरसी जैसे कभी अर्जुन का गांडीव बरसा होगा या इराक में अमेरीकी तोप के गोले| नहीं जी, मूसलाधार नहीं, मूसल की मार में भला वह धार कहाँ?”[24]

घर बैठे शीर्षक अध्याय में लेखिका ने अपने घर-परिवार और पास-पड़ोस के तमाम-गतिविधियों का वर्णन किया है| इस पुस्तक में लेखिका ने अपने शहर के प्रति अतिरिक्त लगाव को दिखाया है| उन्होंने न सिर्फ दिल्ली के जन-जीवन का चित्रण किया है बल्कि दिल्ली के सरकारी तंत्र का माखौल उड़ाते हुए, पुरानी दिल्ली की गरीबी और नई दिल्ली के बाबुओं के आरामदायक जीवन पर भी कटाक्ष किया है| लेखिका ने इंदिरा गांधी की हत्या के बाद दिल्ली के सिख विरोधी दंगा का बहुत ही मार्मिक एवं आँखों देखा वर्णन किया है| मृदुला गर्ग ने देश विभाजन की त्रासदी और दिल्ली पर उसके परिणाम का भी वर्णन किया है| पाकिस्तान से हजारों, लाखों की संख्या में हिन्दू शरणार्थी दिल्ली आए थे, जिनका दुःख अवर्णनीय था| लेकिन समय के साथ उनके घाव भरते गए और उनका जीवन पटरी पर आया| लेखिका ने पाकिस्तान से दिल्ली आए शरणार्थियों की त्रासदी एवं उनके वर्तमान स्थिति का उल्लेख करते हुए लिखा है- “1947 में मुल्क के तक्सीम होने के बाद, मुहाज़िरों की दिल्ली में जो आमद हुई; उसने उसकी चाल बिल्कुल बदल दी|...और वही फ़र्क 1947 के बाद, दिल्ली को नया अवतार दे गया| विभाजन के बाद, विस्थापित लोगों

के काफ़िले पर काफ़िले दिल्ली आए और यहीं बस गए| दिल्ली से उखड़ कर जाने वाले कम थे; अपनी जमीन पर बेदख़ल होकर दिल्ली आने वाले ज्यादा| उखड़ कर आए लोग, जब नई ज़मीन पर बसते हैं तो उसका काम सुस्त चाल से नहीं चलता| जो सुरक्षा और सम्मान अपनी धरती पर सोए-सोए मिल जाता है, वह पराई जमीन पर ज़बरदस्त मेहनत-मशक्कत और जद्दोजहद के बाद मिल पाता है| इसलिए शरणार्थियों की मानसिकता हमेशा आक्रामक और बाजार से साठ-गांठ करने वाली रहती है| जड़ों से कटने पर, परिवार के अलावा अपने होते हैं, सिर्फ द्रव्य और वस्तु|...यूँ दिल्ली वाले दिल से गए दिल्ली में और आने वाले, बिना दिल लगाए, कमाई के सहारे दिल्ली वाले बनते गए|"[25]

इस यात्रा-वृत्तांत में रचनाकार के समाज से जुड़े सरोकार भी स्पष्ट बिंबित हैं| असम के प्राकृतिक सौंदर्य से लेखिका अभिभूत है, लेकिन वहाँ के आमजन की समस्याओं पर विचार करने को विवश है, जिसमें विशेष रूप से, वहाँ के युवाओं का भोलेपन की सीमा को लाँघ एक आतंकी बनने की ज़द्दोजहद शामिल है| दिल्ली का दर्द सिर्फ़ दिल्ली वाले ही बयाँ कर सकते हैं सो यहाँ भी लेखिका ने बड़े ही भोलेपन के साथ व्यक्त किया है| पुस्तक में कहीं चरमराते सरकारी तंत्र की खिल्ली है तो कहीं दिल्ली के दिखावे को संस्कृति मानने वाले दिलजलों का मखौल है| कहीं कर्नाटक और केरल के लोगों के धर्म का विवेचन है तो कहीं जंगलों को शहरों से बचाने की कोशिशों की कहानी है| कहीं हिरोशिमा की दुखद यादें हैं तो रामायण और महाभारत काल के स्थानों का भी रोचक वर्णन है| मृदुला गर्ग जहाँ गईं वहाँ का बहुत कुछ सुनहरा-धुँधला लिखने की कोशिश की हैं|

कुसुम खेमानी:कहानियाँ सुनाती यात्राएँ

अगर घुमक्कड़ी खून में शामिल हो जाए तो फिर इस पर किसी का वश नहीं चलता, इस पर किसी का जोर नहीं चलता| क्या उम्र, क्या बंदिशें! घुमक्कड़ी की कशिश ही कुछ ऐसी होती है| जिसे इस कशिश का स्वाद लग गया, वह फिर अपने पैर पीछे

नहीं करता, चाहे उम्र कितनी ही आगे क्यों न बढ़ जाए| कुसुम खेमानी की 'कहानियाँ सुनाती यात्राएँ' पढ़कर ऐसा ही महसूस होता है| अपने दो शब्द में वे स्वयं कहती हैं-यात्राओं ने मेरे जीवन की बुनावट के रचाव-बनाव में एक सार्थक भूमिका निबाही है और मुझे अत्यधिक आनंद दिया है| दरअसल, आदमी घुमक्कड़ी केवल अपने दो पैरों और दो आँखों के सहारे नहीं करता, बल्कि उसके कई-कई जोड़े पैर निकल आते हैं, कई-कई जोड़ी आँखें निकल आती हैं| उसकी आत्मा के पाँव उग आते हैं, उसके मन, हृदय, प्राण की आँखें उग आती हैं और वह चर-अचर, मूर्त-अमूर्त, दृश्य-अदृश्य, सुगम-दुर्गम, जल-थल-नभ सब में समान रूप से सहज ही विचरण करने लगता है|

कुसुम खेमानी हर बात, हर प्रसंग, हर अवसर में घुमक्कड़ी की गुंजाइश तलाश लेती हैं| अगर गुंजाइश न मिले तो वे गुंजाइश बना लेती हैं| कभी मान-मनौव्वल से, कभी रार-इसरार से, कभी अपने संपर्कों से तो कभी अपने साधनों से और घुमक्कड़ी के अपने इसी जज्बे, इसी जुनून की बदौलत वह धरती पर उत्तर-दक्षिण, पूरब-पश्चिम नाप लेती हैं| कभी वह हिमालय की ऊँचाइयों पर पहुँच जाती हैं, तो कभी कश्मीर की घाटियों में| वह कभी गोवा के सागर-तट पर पहुँच जाती हैं, तो कभी पृथ्वी के सुदूर उत्तरी ध्रुव पर| कभी गांधी के कदमों की निशान तलाशती वह जोहान्सबर्ग पहुँच जाती हैं, तो कभी महाकाल के दर्शन को उज्जैन पहुँच जाती हैं और ऐसा करते हुए वह केवल वहाँ के भूगोल, वहाँ के समाज, वहाँ की संस्कृति, वहाँ के लोक, वहाँ के इतिहास की कथा नहीं सुनाती हैं, बल्कि इसी के समानांतर वह अपने बचपन, अपने जीवन, अपनी स्मृतियों से जुड़ी कई-कई कहानियाँ सुनाती चलती हैं, जो किसी महाआख्यान में विराम की तरह लगती हैं|

इस यात्रा-वृत्तांत की शैली बतरस की है और अंदाजे-बयां किस्सागोई का| प्राकृतिक सौंदर्य के वर्णनों को चाक्षुष-दृश्यमान बनाने के लिए कुसुम खेमानी बेहद प्रांजल भाषा और सहज-सुग्राह्य बिंबों का प्रयोग करती हैं और इससे वर्णनों की पठनीयता बढ़ गई है| एक उदाहरण देखिए- "दरअसल पेड़ के पीछे छिपा, पश्चिम में

ढलता सूरज अपने सुनहरे तेज से आकाश को...धरती को...और चारों दिशाओं को तेजस्वी बनाना चाहता था| लेकिन ढलते यौवन में सौंदर्य की तीव्रता तो हो सकती है, पर जवानी की उत्तेजना नहीं, शायद इसलिए उस चौंध में उत्ताप नहीं था|...यों लग रहा था कि जैसे सूरज अपनी नई नवेली 'नार' प्रकृति को स्वर्णाभूषणों से इस प्रकार विभूषित कर रहा है कि उसका रोम-रोम ढँक जाए| हालाँकि इस स्वर्णिम आभा के बीच बार-बार लालिमा यों झाँकने लगती थी, मानो दुष्यंत (सूर्य) के प्रथम दर्शन से छुई-मुई शंकुतला (धरती) अपने अनुराग को छिपा न पा रही हो|"[26]

इस यात्रा-वृत्तांत में भूटान जहाँ सन्नाटा एक दैवीय धुन सुनाता है, वहीं स्विट्जरलैण्ड की धवल पृष्ठभूमि पर नीली आभा के बीच शीतल कांति विद्यमान है, जो इस बात की परिचायक है कि स्वर्ग जाने का मार्ग यहीं से गुजरता है| परन्तु एक भारतीय होने के नाते जो अपनापन मॉरिशस में मिलता है वो अन्यत्र नहीं| मॉरिशस ऐसा देश है जिसमें सम्पूर्ण भारतीयता तिरोहित है| वहाँ जाकर ही कुसुम खेमानी जान पाती हैं कि पश्चिमी देशों में भी एक देश ऐसा है जो कोहिनूर की तरह चमक बिखेर रहा है| उन्हें मॉरिशस को 'छोटा भारत' कहते हुए सुनना एक सुखद अनुभूति का एहसास कराता है| लेकिन वहाँ से निकलकर जब 'लोहे के पर्दे से झांकता मॉस्को' पर दृष्टिपात करते हैं तो बड़ी विकलता होती है| कारण कि न सिर्फ मॉस्को बल्कि पूरे रूस को जिसे लेनिन ने अप्रतिम योगदान से दुर्भेद्य बना दिया था और बाद में ट्रॉटस्की, खुश्चेव, ब्रेजनेव तथा गोर्वाच्योव ने भी बारी-बारी से मॉस्को को अंलकृत किया था वो आज सेंट पीटर्सवर्ग के आगे नतमस्तक हो गया है| उसके अस्तित्व पर सवाल खड़े किए जा रहे हैं कि अगर इस शहर को टॉलस्टॉय और गांधीजी मिलकर बनाए होते तो इसका प्रारूप कैसा होता|

देश और देश के बाहर की गई इन यात्राओं में लेखिका का आनुभूतिक धरातल देश के भीतर की गई यात्राओं में अपेक्षाकृत ज्यादा सघनता से विस्तार पाता है और लेखिका भी इन यात्राओं के समानांतर अपेक्षाकृत ज्यादा सघनता के साथ अपनी अंतर्यात्रा कर पाती हैं| देश के भीतर की गई यात्राओं के वर्णन में भी उनकी भाषा ज्यादा प्रांजल, ज्यादा सहज और ज्यादा स्वत:स्फूर्त हो पाती है| इस

यात्रा-वृत्तांत की भूमिका में एकांत श्रीवास्तव ने लिखा है- “पाठक इन यात्रा-निबंधों को पढ़ते हुए यह अनुभव करेंगे कि ये यात्राएँ जितनी बाहर की हैं, उससे कहीं अधिक भीतर की भी हैं| भौगोलिक धरातल पर लेखिका सौ कदम चलती हैं तो आनुभूतिक धरातल पर हजार कदम|”[27]

व्यक्ति अपने देश, अपनी माटी, अपने लोक, अपनी संस्कृति से अनायास ही एक आत्मीय संबंध बना लेता है, जबकि व्यक्ति किसी पराए देश, पराए लोक, पराई संस्कृति में ऐसा लाख कोशिशों के बावजूद भी नहीं कर पाता है| हाँ इतना अवश्य है कि यूरोपीय देशों की तुलना में लेखिका भूटान, मॉरिशस, त्रिनिनाड जैसे एशियाई देशों में ज्यादा सहज महसूस करती हैं और वहाँ के यात्रा-वर्णनों के दौरान उनका अंत:प्रेक्षण भी ज्यादा सहज-स्वभाविक प्रतीत होता है| ऐसा इसलिए है क्योंकि इन देशों में होली, दीवाली, तुलसी-संझा-बाती, हिंदी-भोजपुरी जैसे कई देशी तत्त्व वहाँ की लोक-संस्कृति और बोली-बानी में पहले से ही रचे-बसे हैं और उन्हें वहाँ पाकर लेखिका स्वत:स्फूर्त ही वहाँ का हिस्सा बन जाती हैं| अपनी यात्रा के दौरान जब कुसुम खेमानी मॉरिशस की यात्रा पर जाती हैं तो सहज ही भारतीय माटी की खुशबू आने लगती है| उन्होंने लिखा है- “यह सही है कि भारतीय किसानों से भरे ये जहाज मॉरीशस से आगे डरबन, केपटाऊन, जोहानिसबर्ग, त्रिनिडाड, टोबैगो, सूरीनाम तक गए थे और इधर फिजी तक...और इन सभी जगहों में भारतीय मूल के निवासियों ने अपने परिश्रम और सूझबूझ से इन देशों में अपनी आर्थिक स्थिति काफी सुधार ली पर इनके समाज और संस्कृति की स्थिति उतनी सुडौल नहीं रह पाई, जितनी मॉरिशस की| वैसे तुलसी का बिरवा, हनुमान मंदिर और ध्वजाएँ तो आपको सभी जगह दिख जाएँगी पर हिंदी भाषा और संसद में भारतीय मूल का वर्चस्व मॉरिशस में ही दिखेगा|”[28]

कुसुम खेमानी को विदेश में भी एक अपनापन झलकता है| नहीं तो डरबन में ‘भारत हमारा देश है’, ‘भारत भूमि स्वर्ग से महान है’, ‘जन्मभूमि भारत माँ की जय’, तथा ‘हमें भारत पर गर्व है’ के गगनभेदी नारे नहीं लगाए जाते| लेकिन रोम के ऐश्वर्य को निहारते हुए उनके मानसपटल पर जरूर भारत की रवानगी, प्रवणता,

प्रवाह और सौन्दर्य की अद्वितीयता दस्तक देती है, जो एलोरा की गुफा, कोणार्क-खजुराहो, जैसलमेर के 'पटुओं की हवेली', रणकपुर और दिलवाड़ा के मंदिरों में विद्यमान है, लेकिन उन्हें इस बात का क्षोभ भी है कि कला के सभी आयाम मौजूद होने के बाद भी हमें दिखाने नहीं आता| परन्तु देश के अंदर की कुछ यात्राएँ मसलन हरिद्वार, कश्मीर, हैदराबाद, उज्जयिनी, कोलकाता, गोवा जरूर राहत देती है और विश्वसभ्यता के साथ कदमताल करती है, जिसमें हैदराबाद और उज्जयिनी की यात्रा ऐतिहासिकता, गोवा की यात्रा प्राकृतिक और आधुनिकता तथा हरिद्वार और शांतिनिकेतन की यात्रा तो मोक्ष का द्वार ही खोल देती है और एक अद्भुत रोमांच पल्लवित करती है|

कुसुम खेमानी के साथ इस यात्रा-वृत्तांत में अंकोरवाट में भारतीय मंदिरों का ठाठ देखते हैं तो निःसंकोच भारतीय परम्परा, शैली, नक्काशी की प्रतिभूति दिखने लगती है| यात्रा के क्रम में उज्जयिनी के 'मृत्यु और प्रेम के जीवन-उत्सव' से जब बाहर निकलते हैं तो मिस्त्र की वो पिरामिडें मृत्यु का नहीं बल्कि अमरता के ऐश्वर्य को परिभाषित करती हैं| वहाँ बने अजायबघर मृत्यु से साक्षात्कार कराते हुए जीवन की नई राह दिखा रहे हैं| कुछ ऐसे ही रास्ते अलास्का के शुभ्र धवल खंड दिखा रहे हैं|

इन सभी यात्राओं में अगर सबसे ज्यादा कोई देश या शहर छाप छोड़ता है तो वो रोम (इटली) है, क्योंकि कुसुम खेमानी वहाँ के हवाईअड्डे पर जिस मुसीबत में फंसती हैं और वहाँ के अधिकारी जो दरियादिली दिखाते हैं वो शायद ही किसी अन्य देश में दिखता है| रोम की यात्रा उन्हें एक नई अनुभूति प्रदान करती है| जहाँ तक इस शहर की बात है तो यहाँ के पुरातन चर्च, संग्रहालय, स्मारक खुद अपनी सौन्दर्य को बयां करते हैं| इटली ऐसी कलाकृतियों से भरा है मानो किसी चित्रकार ने एक बड़े कैनवास पर एक चित्ताकर्षक चित्र बना दिया हो| इस प्रकार 'कहानियाँ सुनानी यात्राएँ' लगभग सभी जगहों को शब्दों के माध्यम से एक भौगोलिक कैनवास पर उकेरी गई चित्रकथा है, जो यह बताती है कि घुमक्कड़ी जैसा कुछ नहीं|

कुसुम खेमानी वहाँ-वहाँ का हिस्सा बन जाती हैं, जहाँ-जहाँ हमारा देश, हमारा लोक जीवंत है, जीवित है| लेकिन वह वहाँ-वहाँ केवल और केवल एक पर्यटक भर रह जाती हैं, जहाँ-जहाँ हमारा देश, हमारा लोक मौजूद नहीं है| इस लिहाज से भूटान, त्रिनिडाड, मॉरिशस के यात्रा-वृत्तों के साथ-साथ कोलकाता, उज्जैन, गोवा, शांति निकेतन, शिलांग के यात्रा-वृत्तों का अध्ययन पाठक को एक नई दृष्टि और रोमांच पैदा करता है| इस यात्रा-वृत्तांत में जो बात सबसे ज्यादा अहम है, वो यह कि किसी भी देश की सभ्यता, संस्कृति, ऐतिहासिकता आदि को यात्रा के माध्यम से ही संजोया जा सकता है|

अनिल यादव:वह भी कोई देस है महराज

अनिल यादव पेशे से पत्रकार हैं| उन्होंने आदिवासी जीवन के अध्ययन के लिए उत्तर पूर्व समेत देश के अनेक हिस्सों में यात्राएँ की हैं| 'वह भी कोई देश है महाराज' उनका चर्चित यात्रा-वृत्तांत है, जो 57 बिन्दुओं में विभाजित है| यह यात्रा-वृत्तांत राहुल सांकृत्यायन, सचिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' जैसे महान रचनाकारों और उनके यात्रा-वृत्तांतों की श्रेणी में अपना नाम दर्ज कराया है| इस यात्रा-वृत्तांत में भारत के पूर्वोत्तर राज्यों का मार्मिक एवं विचारणीय वर्णन किया गया है| इसके माध्यम से पूर्वोत्तर राज्यों की सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक, भाषिक असमानता, बेरोजगारी, नशाखोरी, उग्रवाद, जातीय स्वाभिमान एवं अस्मिता, कबीलाई मान्यताएँ एवं आदर्श, संसाधनों की कमी, प्राकृतिक सुन्दरता आदि को उजागर किया गया है| यह यात्रा-वृत्तांत रहस्य, रोमांच एवं असंभावनाओं से ओतप्रोत है|

इस यात्रा-वृत्तांत की भाषा सहज एवं सरल है| लेखक एक पत्रकार है, इसलिए इसकी शैली भी रिपोर्टिंग शैली है| यात्रा-वृत्तांत को बिन्दुओं में विभाजित हो जाने के कारण कहीं-कहीं आभाषित होता है कि डायरी विधा का भी प्रयोग किया गया है| यात्रा-वृत्तांत की शुरुआत ब्रह्मपुत्र मेल से होती है, जहाँ उसके सहयात्रियों वीरेंदर सिंह, सजल बैसाख, सहुआइन आदि के द्वारा पूर्वोत्तर की स्थिति

को उजागर किया गया है| सर्वप्रथम वीरेंदर सिंह के द्वारा वहाँ की राजनैतिक स्थिति की चर्चा शुरू की गई| उन्होंने बताया कि वहाँ उग्रवादी ऐसे घूमते हैं जैसे पानी में मछली| सहुआइन उसे भाषा आधारित हिंसा से वाकिफ कराती है| सजल बैसाख उसे वहाँ की प्राकृतिक विशिष्टता के बारे में बताता है| पूर्वोत्तर के हालात को बताते हुए सहुआइन कहती हैं- "बिना दाढ़ी-मोंछवाला छोटा-छोटा लड़का मलेटरी-पुलिस सबके सामने आता है| टैक्स माँगता है| नहीं तो जान से मार देगा| हमारी दुकान के आगे एक मास्टर को मार दिया| बहुत शरीफ मास्टर था| सबसे प्रेम से बोलता था लेकिन तीन महिना से टैक्स नहीं दिया था| हम लोगों की भाषा बोलने पर रोक लगा दिया है| कहता है कोई भाषा बोलो हिंदी मत बोलो| भूल से जबान फिसल जाए तो गाली देता है|"[29]

अनिल यादव ने पूर्वोत्तर के समाज को जितनी बारीकी से दिखाने का प्रयास किया है, वह अत्यंत सराहनीय है| इसमें एक तरफ हमें पूर्वोत्तर के मातृसत्तात्मक समाज, राजनीतिज्ञों तथा अधिकारियों की सादगी का पता चलता है तो दूसरी तरफ बेरोजगारी, नशाखोरी, बाजार और सिनेमा का प्रभाव, भुखमरी का कारण, वेश्यावृत्ति में उतरी महिलाओं की स्थिति तथा विभिन्न संस्कृतियों के बीच के द्वंद्व का भी पता चलता है| लेखक कोहिमा के एक बाजार का वर्णन करते हुए लिखता है कि यहाँ वनस्पतियाँ हैं और आदमी की बस्तियाँ हैं| इस वाक्य के माध्यम से समझ सकते हैं कि जितनी तरह की वनस्पतियाँ हैं उतनी ही सामाजिक, सांस्कृतिक विभिन्नताएं भी हैं| इस विभिन्नता को इस बात से समझ सकते हैं कि अरुणाचल में ही 60 से अधिक आदिवासी जातियाँ हैं और 50 से भी अधिक ज्ञात भाषाएँ हैं| पूर्वोत्तर के राज्यों में हाफलांग हिंदी अस्तित्व में आई है, क्योंकि हिंदी बोलने पर टैक्स लगाना, हिंदी बोलने वालों की हत्या करना तथा हिंदी भाषियों को हिंदी बोलने पर निरंतर चेतावनी देना आम बात है| हिंदी भाषी और बिहारियों के प्रति नफरत के बारे में अनिल यादव ने असम के जमीनी लोगों से बातचीत कर निष्कर्ष प्रस्तुत किया है| उन्होंने लिखा है- "बड़ी मशक्कत से उसने सड़क पर हवा में लुढ़कती सिगरेट का पीछा कर उसे पकड़ा| एक लम्बा कश लेकर इत्मीनान से बताने लगा, "असमिया मानुह बहुत सुकुमार होता है| बंसी बजाएगा, गाना गाएगा, थियेटर करेगा, साफ़ गमछा ओढ़कर दिन भर तामुल खाएगा और गप्प करेगा लेकिन खेत के कीचड़ कादो में नहीं जाएगा| नौकरी वह भी सिर्फ सरकारी करके भात टानना (खाना) चाहता है| खेती नहीं करेगा| बिहारियों ने यहाँ आकर अपनी

मेहनत से खेत, मकान, दुकान बना लिया है| असमिया को लगने लगा है कि ये भुच्चड़ असम को हड़प कर बिहार बना डालेंगे|"[30]

दुनिया में बहुत सारे ऐसे क्षेत्र होते हैं, जहाँ आम-जन की पहुँच कठिन होता है| ऐसे क्षेत्र हमेशा उपेक्षित होते हैं| वहाँ की सरकार भी उस ओर कम ध्यान देती है और वह भी सिर्फ राजनीति फायदे के लिए| भारत में भी ऐसे कुछ क्षेत्र हैं, जो आज भी उपेक्षित हैं| वहाँ उद्योग से लेकर यातायात और आम विकास भी कम देखने को मिलता है| इस क्षेत्र को हम पूर्वोत्तर के नाम से जानते हैं, जिसमें लगभग सात राज्य शामिल हैं- असम, मेघालय, नागालैण्ड, मणिपुर, त्रिपुरा, मिजोरम और सिक्किम| इन राज्यों की यात्रा करके अनिल यादव ने, जो पुस्तक हमारे सामने प्रस्तुत की है, वह निश्चय ही बहुत खोज और छान-बीन का परिणाम है|

यह यात्रा लेखक ने पुस्तक रचना के क़रीब दस साल पूर्व छः महीने की अवधि में की थी| पुस्तक पढ़कर ही यह समझा जा सकता है कि छः महीने के अनुभवों को समेटने में दस वर्ष का अन्तराल क्यों है? इस पुस्तक में पूर्वोत्तर का इतिहास, संस्कृति, राजनीति, भूगोल, पर्यावरण सब कुछ समाहित है, लेकिन ये किसी विषय की तरह अपने उपस्थित होने का आभास तक नहीं देते| पुस्तक को पढ़ते समय आपने कब लेखक के साथ-साथ राजनीति से इतिहास और इतिहास से लोककथाओं, मिथकों से गुजरते हुए पूरे पूर्वोत्तर की भौगोलिक-सांस्कृतिक और राजनीतिक यात्रा कर ली, इसका भान भी नहीं होता|

दरअसल यह पुस्तक बहुकोणीय चित्रों की एक श्रृंखला का निर्माण करती है| हर चित्र अपने आप में संपूर्ण भी है और इसमें क्रमबद्धता भी है| उदाहरण के लिए पूर्वोत्तर के विभिन्न राज्यों और जगहों के वर्णन में उनकी अपनी अलग पहचान भी है और एक अंतः संचरित एकता भी| यह पहचान और एकता पूर्वोत्तर के अपने विशिष्ट अंतर्विरोधों के कारण हैं| सामान्यतः यह माना जाता है कि पूर्वोत्तर के राज्यों का भारतीय शासन व्यवस्था से मुख्य अंतर्विरोध है| पेट्रोल, डीजल, गैस, कोयला, चाय देने वाले पूर्वोत्तर को हमारी सरकार बदले में वर्दीधारी फौजों की

टुकड़ियाँ भेजती रही हैं| इस तथ्य से किसी को इंकार नहीं है, परन्तु पूर्वोत्तर भारत का यह एक मात्र सत्य या अंतर्विरोध नहीं है| वहाँ की जनजातियों के आपसी अंतर्विरोध और भी गहरे हैं| एक जगह जो समुदाय शोषित-पीड़ित दिखता है दूसरी जगह वही शोषक भी है| इस यथार्थ की खूबसूरत प्रस्तुति लेखक की रचनात्मक तटस्थता के कारण संभव हो पाई है| यह यथार्थवाद बिल्कुल भिन्न तरह का यथार्थवाद है, जो सत्ता और जनता के अंतर्विरोध के साथ-साथ जनता के आपसी अंतर्विरोधों की प्रस्तुति करता है| इस तरह के यथार्थ को रचनात्मक रूप देना लेखकीय तटस्थता से ही संभव है| विचारजन्य आत्मीयता की जगह परिस्थितिजन्य आत्मीयता से लेखक ने पूरे पूर्वोत्तर के दर्द को इतिहास, समाज, संस्कृति और भूगोल के माध्यम से पाठक के सामने मूर्त रूप दिया है| अनिल यादव ने अपने यात्रा-वृत्तांत में लिखा है- “शिलांग नवधनिकों के बच्चों की शिक्षा का बड़ा केंद्र है लेकिन यहाँ बीच में स्कूल छोड़ देने वाले आदिवासी बच्चों की तादाद बढ़ी है| मेघालय में बेरोजगारी, शराबखोरी, ड्रग्स और एड्स बड़ी सामाजिक समस्याएँ बन कर उभर रहे हैं| झूम की खेती सबको रोजगार दे नहीं सकती| जिस जंगल को जलाकर खेत बनाए जाते हैं वह कई साल के लिए बंजर हो जाता है| सरकारी नौकरी सबको मिल नहीं सकती| आदिवासियों के बीच आरक्षण के लिए मारामारी चल रही है| राज्य में खासी जयंतिया को साझे में चालीस प्रतिशत और गारो को अकेले चालीस प्रतिशत आरक्षण है| बचे बीस प्रतिशत में अन्य जातियाँ हैं| खासी स्टूडेंट्स यूनियन (केएसयू) सबका कोटा बराबर करने के लिए आन्दोलन चला रही है| आन्दोलन गरमाता है तो गारो अलग राज्य माँगने लगते हैं| उन्हें डर है अगर कोटा बढ़ा तो ज्यादा पढ़े-लिखे खासी सारी नौकरियाँ घेर लेंगें| अपने देश में बेरोजगारी कहाँ नहीं है लेकिन क्या सचमुच यहाँ के लड़कों ने पिंडारी गिरोह बना लिए हैं| नागा कंडक्टर से पूछा, “क्या सचमुच लूट लेंगें?”[31]

इस यात्रा-वृत्तांत में पूर्वोत्तर की बदलती संस्कृति, नए-पुराने, भीतरी-बाहरी इन सब द्वंद्वों को पाठक भी महसूस करता है| इस प्रक्रिया में रस के सभी स्थायी भाव पाठक के ह्रदय में उद्बुद्ध होते हैं| उत्साह, क्रोध, जुगुप्सा, रति, विस्मय, भय, शोक, शांत जैसी भावनाओं का निरंतर गतिशील प्रवाह पाठक के

भीतर चलायमान रहता है| ऐसा वर्णन के लिए आत्मीय भाषा के प्रयोग से ही संभव हो सका है| एक पौराणिक कथावाचक या सूत्रधार की तरह लेखक आपके सामने प्रकट होता है और कथा का पात्र होते हुए भी परिदृश्य से गायब हो जाता है| शब्दों के माध्यम से लेखक पाठक का सीधा साक्षात्कार पूर्वोत्तर से कराता है| पाठक को ऐसा लगता है कि लेखक नहीं बल्कि वह स्वयं यात्रा पर है|

इस यात्रा-वृत्तांत की एक अन्य खासियत यह है कि सामान्य बातचीत की भाषा की शक्ति का उपयोग साहित्यिक भाषा में किया गया है| लेखक द्वारा गौ मांस खाने का वर्णन भी अद्‌भुत है| यहाँ परम्परा-संस्कार टूटने की भावना को संवेदनपूर्ण शब्द प्रदान किया गया है| मनुष्य-मनुष्य के द्वंद्व को ही नहीं बल्कि प्रकृति और मनुष्य के द्वंद्व को भी लेखक ने उसी आत्मीयता से शब्द दिए हैं| माजुली, नामदाफ, चेरापूंजी और लोकटक को बिगाड़ने, बचाने और संवारने की कवायद की निरर्थकता को यह पुस्तक बहुत ही सामान्य भाषा में बयान करती है| इस पुस्तक की भाषा के बारे में अगर एक पंक्ति में कुछ कहना हो तो इसी पुस्तक का एक वाक्य सटीक है कि 'पढ़ने वाले की आंख निकल कर पेपर पर गिर पड़ती है|'

यह पुस्तक राजनीति, इतिहास, वर्तमान, भूगोल, परम्परा, संस्कृति, मिथक, लोकगाथा आदि का साहित्यिक अन्तर्गुम्फन है| पुस्तक पढ़ते समय आप कब कहाँ हैं, निश्चय नहीं कर पाएँगे| आप कब दिल्ली से चलते-चलते उत्तरपूर्व के दूरदराज में पहुँचते जाते हैं पता ही नहीं लगता| सजल वैशाख के विस्मय से शुरू हुई यात्रा रबर के बागानों की मधुमक्खियों के डंकों के विस्मय पर समाप्त होती है, परन्तु विस्मय का अंत नहीं होता क्योंकि पूर्वोत्तर के बारे में हमारे संचित ज्ञान भंडार को यह पुस्तक विस्मृत करती है|

उमेश पंत:इनरलाइन पास

उत्तराखंड में आदि कैलाश पर्वत के नाम से विख्यात पहाड़ों की यात्रा का रोचक वर्णन इस यात्रा-वृत्तांत में मिलता है| कुमायूं क्षेत्र के धारचूला कस्बे से आरम्भ उनकी यह पद-यात्रा लगभग 18 दिनों में 200 किलोमीटर का सफ़र तय करती है| एक तरफ वे समुद्र तल से 3000 फीट की ऊँचाई से अपनी यात्रा शुरू करते हैं तो दूसरी तरफ 16000 फीट की ऊँचाई तक पहुँचते हैं| यह यात्रा-वृत्तांत 40 डिग्री तापमान वाली दिल्ली से निकलकर शून्य डिग्री वाला आदि कैलाश तक पहुँचने की कहानी भी बयां करता है| यह यात्रा रोमांचक तो है ही, साथ-ही-साथ हिमालय के विभिन्न आयामों को समझने में मददगार भी है| संयोगवश लेखक पहाड़ से आता है और जीवनयापन की तलाश में पहाड़ से निकल कर किसी महानगर में जीवन व्यतीत कर रहा होता है| यह यात्रा उन्हें अपनी जड़ों से जुड़ने का अवसर देती है तो वे इसे दोनों हाथ से लपकते हैं| पहाड़ पूरी शिद्दत से उनके जीवन में दिखाई देता है और पहाड़ियों का जीवन, जो अत्यंत विपरीत परिस्थितियों में भी दुनिया को सिखाता है कि उसके भीतर का आदमी कैसा है और उसे कैसा होना भी चाहिए?

उमेश पन्त धारचूला पहुँच कर इतिहास और भूगोल के उन सवालों से भी टकराते हैं कि कैसे किसी दौर का समाज किन्हीं कल्पित रेखाओं के माध्यम से मानव जाति को भी विभाजित कर देता है| राष्ट्र की सीमाएं यदि हमें एक तरफ जोडती हैं तो दूसरी तरफ उनके द्वारा एक विभाजन भी पैदा किया जाता है| मसलन आदि कैलाश के इस क्षेत्र को ही लिया जाए तो इतिहास में कभी यह क्षेत्र नेपाल और तिब्बत का हिस्सा हुआ करता था| मगर समय ने उसे भारत के साथ जोड़ दिया है| बेशक कि प्रकृति आज भी उस पूरे इलाके को एकसूत्र में ही पिरोती है| आगे उमेश पंत लिखते हैं- "मैं और मोहन भाई गेस्ट हाउस की छत पे खड़े अँधेरे में डूबे धारचूला के उस हिस्से को देख रहे थे जिस तक हमारी नजर पहुँच रही थी| काली नदी के किनारे आकाश से ऊँचे पहाड़ झाँककर जैसे हमें ही देख रहे हों| पहाड़ पर बिखरी हुई झिलमिलाती बिजली अहसास करा रही थी कि पहाड़ों पर शरण ढूँढ़ते लोग किस दुरूहता तक बसे हुए हैं| मोहन भाई की नजरें उन दुरूह बसावटों से भी दूर पहाड़ों को लाँघती हुई कहीं इतिहास में जा पहुँची| उन्होंने बताया कि नेपाल देश गोरखाओं से जीतकर कुमाऊँ के इस हिस्से को ईस्ट इंडिया कंपनी ने उन्नीसवीं शताब्दी में यहाँ अपना शासन स्थापित किया| अगर अंग्रेज न होते तो अभी कुमाऊँ

का एक बड़ा हिस्सा नेपाल में होता| और हम भी नेपाल के राजनीतिक संकट से ग्रस्त नागरिक होते| वो अतीत जिसमें हमारा अस्तित्व भी नहीं होता हमारे भविष्य को अपनी तरह से बना रहा होता है|”[32]

यह यात्रा-वृत्तांत इस बात को रेखांकित करता है कि हमारी अपनी दुनिया में हाशिए का समाज किस तरह से अभी भी अपनी मूलभूत जरुरतों के लिए जूझ रहा है| सत्ता के केन्द्रों ने उस समाज का सामाजिक और पर्यावरणीय ढांचा बिगाड़ दिया है| उससे प्रकृति का उसका रिश्ता छीन लिया है| उसकी आत्मनिर्भरता छीन ली है| ऐसा लगता है कि जैसे व्यवस्था की यह मंशा हो कि इन लोगों को अपनी जड़ों से उखाड़कर किसी महानगर में पटक दिया जाय, जहाँ वे उस महानगर में पिसते रहें और वह महानगर उनके कंधे पर बैठकर ऐश गांठता फिरे| यात्रा-वृत्तांत यह भी बताता है कि हम जिस समाज के लिए इतने अधिक कांटे बो रहे हैं, वही समाज हमारे जीवन में मनुष्यता की याद भी दिला रहा है| उमेश पंत सोचते हैं कि जिस जीवन के पास इतनी मनुष्यता बची हो, उसे देखने में आने वाली दुश्वारियों को किनारे किया जा सकता है| वे देख सकते हैं कि एक साधारण काम के लिए भी लोग कैसे दसियों किलोमीटर की चढ़ाई-उतराई रोज दिन करते हैं|

उमेश पंत वहाँ की भोटिया जनजाति का जिक्र करते हुए बताते हैं कि उत्तराखंड के इस उत्तरी हिस्से में एक त्रिकोण बनता है, जिसका अधिकतर हिस्सा भारत और तिब्बत के बीच आता है| इस त्रिकोण में सात नदी घाटियाँ आती हैं, जिसे भोट प्रदेश भी कहा जाता है| इसी भोट प्रदेश की एक घाटी के रहने वाले पहाड़ के सबसे विलक्षण यायावर ‘नैन सिंह रावत’ भी थे| अंग्रेजी शासन ने उनकी प्रतिभा को पहचानते हुए उन्हें हिमालय के अन्वेषण का कार्य सौंपा| यह कमाल की बात है कि पद-यात्रा के द्वारा ही उन्होंने मध्य एशिया का 13 हजार मील की दूरी नापते हुए मानचित्र तैयार कर दिया| यह उचित ही है कि हिमालय के इतिहास में उन्नीसवी सदी का मध्यान्ह उनके इस प्रयास के लिए याद रखा जाएगा| भोटिया समुदाय की सामाजिक स्थिति, आर्थिक स्थिति और उनके व्यापार के बारे में बात करते हुए उमेश पंत ने लिखा है- “पुराने समय से ही भोटिया समुदाय के निवास स्थल नदी घाटियों के ऊपरी हिस्सों पर हुआ करते थे| आज भी यह समुदाय इन हिस्सों में रहते हैं और मौसमी पलायन या ऋतु-प्रवास की जीवनशैली अपनाए हुए

हैं| ये सर्दियों में नदी घाटियों के निचले हिस्सों में आ जाया करते हैं| ये लोग तिब्बत के व्यापारियों से सदियों से व्यापारिक संबंध में हैं| एक वक्त था जब भारत और तिब्बत के बीच होने वाला पारंपरिक व्यापार इन इलाकों की संपन्नता की वजह था| ये भोटिया व्यापारी भारत की मंडियों से गुड़, अनाज, तंबाकू जैसे सामान खरीदते जिनकी तिब्बत की मंडियों में माँग होती और वहाँ से ऊन, नमक बोरेक्स और जानवरों की खाल ख़रीदकर लाते| तिब्बत की मंडियों से होने वाले इस व्यापार की वजह से भोटिया समुदाय एक संपन्न समुदाय बना रहा| वस्तु विनिमय यानी किसी सामान को दूसरे सामान के एवज में ख़रीदने की यह परंपरा पुराने समय से रही है|”[33]

यात्रा-वृत्तांत की शुरुआत में उमेश पंत ने एक अनंत यात्रा की बात की है, जो कि बिना कहीं घूमे-फिरे, बिना कुछ नया देखे, पुराने ढर्रे पर खत्म हो जाती है| इसमें लेखक ने एक और बात कही है कि हम जिन उत्पादों की निर्माण प्रकिया का हिस्सा होते हैं, वो उत्पाद घुमा फिरा कर हमें ही बेच दिया जाता है| बहुत से लोग ये सच जानते हुए भी इससे बचकर निकल नहीं पाते हैं और अपने आप को मजबूर समझकर बँधे रहते हैं| इस यात्रा-वृत्तांत में किसी इंसान का दर्द तो किसी की खुशी, किसी का डर तो किसी की मजबूरी सबकुछ मिलता है|

उमेश पंत नोट करते हैं कि इस इलाके में लोगों का जीवनयापन स्थानीय रूप से आत्मनिर्भर होता था| उसमें बाहरी हस्तक्षेप बहुत कम होता था| जरुरतें सीमित थीं और उनके अनुरूप| फिर तिब्बत के साथ व्यापार से भी जीवन की गाड़ी कुछ आगे बढती रहती| लेकिन अब उनके जीवन पर दोहरी मार पड़ी है| अव्वल तो व्यापार का फैसला दिल्ली और बीजिंग में तय होता है, जिसमें यहाँ के लोग मात्र दर्शक बनकर रह गए हैं और फिर शहरीकरण और पर्यटन से उपजे दबावों ने उनके इलाकों का पर्यावरण भी असंतुलित कर दिया है| प्रकृति पर निर्भर यह समाज अब उसके कोपभाजन का निशाना बना हुआ है| अब उससे साहचर्य कम, त्रासदी अधिक मिलती है| जाहिर है वह त्रासदी उन्हें पलायन की तरफ भी धकेलती है| पहाड़ी लोगों के जीवन की त्रासदी को लेखक के शब्दों में देखें- “यहाँ दूर से हमें एक गाँव नजर आने लगा था| पास ही से गुजर रहे एक चरवाहे ने बताया कि यह गर्बियांग गाँव है| इस गाँव के बारे में खास बात यह थी कि कई साल पहले यह गाँव जिस

पहाड़ पर मौजूद था वो भूस्खलन के चलते एक मलबे में तब्दील हो गया| और पूरा-का-पूरा गाँव धँसकर कई फीट नीचे आ गया| यह कितनी बड़ी त्रासदी रही होगी इसका अंदाजा लगाना आज मुश्किल है, लेकिन इस बात का अंदाजा जरूर लगाया जा सकता है कि इस पूरे इलाके के पहाड़ कितने संवेदनशील हैं| कोई तेज बारिश कब पूरे इलाके के भूगोल को बदल दे यहाँ यह कहना बहुत मुश्किल है| इस लिहाज़ से देखें तो इन इलाकों का जनजीवन मृत्यु और आपदाओं से घिरा हुआ है| न जाने वो कौन सी जिजीविषा है कि यहाँ के लोग आज भी अपनी ज़मीन से जुड़े हैं! अपनी धरती से प्यार है या फिर किसी किस्म की मजबूरी यह जो भी है कोई बहुत मजबूत भावना है| इतनी मजबूत कि पहाड़ दरक जाते हैं और यह भावना तब भी नहीं दरकती|”[34]

लौटते वक़्त बारिश ज्यादा होने की वजह से सफर की मुश्किलों के साथ कुटी गांव में ठहरना| अगले दिन आगे चलते हुए उस गांव को देखना जो लगभग 200 साल पुराने सभ्यता को अपने में समेट रखा था| मकानों की दीवार पर सीमेंट के बजाय दाल के लेप की चिनाई थी| पहाड़ों में बारिश के दिनों भूस्खलन ज्यादा होता है| उस झंझावातों से निकलकर यात्रा के संपूर्ण अनुभवों को बताता यह यात्रा-वृत्तांत बहुत ही रोचक अनुभव देता है| लेखक ने अपने अनुभवों को बेहद ही बारीकी से समेटा है| इसे पढ़ने के बाद आप सचमुच उसी आदि कैलास की यात्रा तक जा सकते हैं जहाँ लेखक खुद घूमकर आया है|

इस यात्रा-वृत्तांत के माध्यम से उत्तराखंड की खूबसूरती का पता चलता है| इसके माध्यम से केदारनाथ आपदा में हुई त्रासदी का दंश झेल रहे क्षेत्र के बारे में विस्तार से जान सकेंगे| इस यात्रा के दौरान होने वाली चुनौतियों को कैसे पार किया जाता है, इसका अनुभव बेहतर मिलता है| भारत-तिब्बत-नेपाल के बीच की कड़ी को बारीकी से समझ सकते हैं| इसके साथ ही पहाड़ों में बारिश में हो रहे भूस्खलन जैसी प्राकृतिक आपदा से निकलकर आए अनुभवों को भी जान पाते हैं| 18 दिन में 200 किलोमीटर की पैदल यात्रा के अनुभव के साथ आदि कैलास पर्वत की बारीक जानकारी मिलती है| लेखक ने इसमें एक खास अनुभव को भी शामिल किया है कि कैसे उन्होंने और उनके दोस्त ने एक पूरी रात ऐसे जंगल में गुजारी, जहाँ लगातार बारिश हो रही थी व ठंड ऐसी की शरीर को गला कर रख दे| ऊपर से चौबीस घंटों से बिना कुछ खाए-पिए| ऐसे विषम परिस्थितियों में दोनों ने अपना

हौसला बनाए रखा और मौत को शिकस्त दी| वास्तव में उनकी यह रात डराने के साथ-साथ उन्हें कुछ सिखाकर भी गई|

4.2 पड़ोसी राष्ट्र संबंधी यात्रा-वृत्तांत

ओम थानवी:मुअनजोदड़ो

'मुअनजोदड़ो', पत्रकार, लेखक ओम थानवी का चर्चित यात्रा-वृत्तांत है| श्रेणी के लिहाज से यात्रा-वृत्तांत, आस्वाद की दृष्टि से कविता, पाठ की दृष्टि से दर्शन, भावुकता, संवेदनशीलता और इन सबसे बनी दृष्टि का एक भरपूर दृश्य| हर चौथे पन्ने पर पसरे रेखाचित्र इस आस्वाद को और भी गाढ़ा कर देते हैं| किताब की शुरुआत रोचक है, बल्कि पूरी किताब में इस गुण को बनाए रखा गया है| ओम थानवी अपनी कराची से मोअनजोदड़ो वाया लाड़काणा यात्रा का जिक्र करते हैं| इसकी शुरुआत में ही उन्हें आधिकारिक सलाह मिलती है| कराची से बाहर बिना हथियारबंद गार्ड के यात्रा न करें| डाकुओं का खतरा है| इस खतरे के बावजूद दो दोस्तों का जत्था धुंध को धता बताता हुआ प्रागैतिहासिक काल की जान पड़ती बस में आगे बढ़ता है| शुरू में ही लेखक को याद आती है माँ की ताकीद और फिर एक सबक| बुजुर्गों के मन में जो इलाका इतना दूर चला गया, अभी करीब लौटा नहीं|

ओम थानवी का यह एक संस्मरणात्मक यात्रा-वृत्तांत है| ओम थानवी ने इस संस्मरणात्मक यात्रा-वृत्तांत को जिस भाषा शैली में लिखा है, वह पाठक को ऐसी अनुभूति कराती है, मानो पाठक स्वयं उसी प्राचीन महानगर में खड़ा है| उसकी गलियों में घूम रहा हो| वहाँ के घरों को, वहाँ की सभ्यता और संस्कृति को महसूस कर रहा हो| ओम थानवी के शब्दों में हृदयस्पर्श वर्णन देखिए- "मुअनजोदड़ो की

खूबी यह है कि इस आदिम शहर की सड़कों और गलियों में आप आज भी घूम-फिर सकते हैं| यहाँ की सभ्यता और संस्कृति का सामान चाहे अजायबघरों की शोभा बढ़ा रहा हो, शहर जहाँ था, अब भी वहीं है| आप इसकी किसी भी दीवार पर पीठ टिका कर सुस्ता सकते हैं| वह कोई खंडहर क्यों न हो, किसी घर की देहरी पर पाँव रख कर सहसा सहम जा सकते हैं, जैसे भीतर अब भी कोई रहता हो| रसोई की खिड़की पर खड़े होकर उसकी गंध महसूस कर सकते हैं| शहर के किसी सुनसान मार्ग पर कान देकर उस बैलगाड़ी की रुन-झुन भी सुन सकते हैं जिसे आपने पुरातत्त्व की तस्वीरों में मिट्टी के रंग में देखा है| यह सच है कि किसी आँगन की टूटी-फूटी सीढ़ियाँ अब आपको कहीं ले नहीं जाती; वे आकाश की तरफ जाकर अधूरी ही रह जाती हैं| लेकिन उन अधूरे पायदानों पर खड़े होकर अनुभव किया जा सकता है कि आप दुनिया की छत पर खड़े हैं; वहाँ से आप इतिहास को नहीं, उसके पार झाँक रहे हैं|”[35]

पूरी यात्रा के दौरान ओम थानवी मानवीय वृत्तियों पर हास में लिपटी मगर तीखी टिप्पणियाँ करते चलते हैं| इसके साथ-ही-साथ ही इस महादेश, जिस पर खिंची लकीरों के बाद अब भारत पाकिस्तान से नाम हो गए हैं, उसकी साझा विरासत का उल्लेख करते रहते हैं| मसलन, सिंध का इतिहास शाहबाज कलंदर और उनकी अरदास में गाई जाने वाली कव्वाली के बहाने| इसके साथ ही स्थानीय भूगोल को लेकर चले ऐतिहासिक द्वंद्व का भी जिक्र आता है|

साहित्य के पाठक को मुअनजोदड़ो अपने नाम से किसी उपन्यास या कहानी का संकेत करता है| लेखक अपनी यात्रा की शुरुआत कराची से करते हुए दुनिया की सबसे प्राचीन सभ्यता के खण्डहरों के बारे में कई विचार करता है| आखिर वह वहाँ जा ही क्यों रहा है? अतीत की उस साम्यवादी सभ्यता, जहाँ सब बराबर थे, वह हथियारों की नहीं औजारों की सभ्यता थी| हर इंसान अपने हुनर को तराशने में विश्वास रखता था न कि साम्राज्यवाद की तरह दूसरों पर शासन करने में| सिंध का वह इलाका जहाँ रात में जाना किसी खतरे से खाली नहीं था, वहाँ लेखक रात में बस से अपने साथियों के साथ प्रस्थान करता है| पाकिस्तान की तत्कालीन भयावह स्थिति को लेखक के शब्दों में समझा जा सकता है- “पाकिस्तान

के पर्यटन-स्थलों की एक मार्गदर्शिका मेरे झोले में थी| देखा कि उसमें सिंध सूबे के हिस्से में 'कराची से बाहर' का ब्योरा कुछ यों शुरू होता था: "आपको सलाह दी जाती है कि कराची से बाहर किसी हथियारबंद गार्ड के बगैर न निकलें|" आगे इसका खुलासा भी था: "नब्बे के दशक से सिंध में कुछ सुरक्षा की समस्या है| डाकुओं के गिरोह, जो कई दफा जमीदारों के साए में काम करते हैं, लूट के लिए बसों-रेलगाड़ियों को रोक लेते हैं या कारों को अगवा कर लेते हैं|"[36]

सिंधु सभ्यता की लिपि को अभी तक पढ़ा नहीं जा सका है| इस कारण भी कई गुत्थियाँ अनसुलझी हैं| विभाजन के बाद राजनीतिक कारणों से भी इन सभ्यताओं के आगे के खोज कार्य में निरंतर बाधा आती रही है| मुअनजोदड़ो की खुदाई बंद कर दी गई है| ऐसे में दोनों देशों की सरकारों से यही उम्मीद की जा सकती है, वे अपने राजनीतिक भेदभाव को परे रखकर इतिहास के तथ्यों की पड़ताल करने में मददगार बने न की बाधक| जब तथ्य अपने आप में पवित्र होते हैं तो यह जरूरी हो जाता है कि तथ्यों की पड़ताल पूरी निष्ठा के साथ की जाए| सिंधु घाटी सभ्यता की खुदाई का विवाद आज तक बना हुआ है, जिसे रेखांकित करते हुए लेखक ने लिखा है- "अनुभव हुआ कि सिंधु घाटी सभ्यता को लेकर खुदाई कम हुई है, विवादों की जड़ें ज्यादा खोदी गई हैं| यह बहस ज्यादा मायने नहीं रखती कि हड़प्पाई लोग आर्य थे या अनार्य; वेद पहले लिखे गए या बाद में| वेद भले बाद में लिखे गए हों या लोग 'बाहर' से आए हों, लेकिन यह मानना मुश्किल होगा कि हड़प्पा सभ्यता-जिसका देशज होना स्थापित है-लुप्त हुई तो ख़त्म भी हो गई| खेती, पशुपालन और नगर नियोजन में तो सभ्यता एक विराट क्रांति थी ही| इसके साथ सभ्यता के वे चिह्न भी अहम हैं जिन्होंने हमें कुदरत और अपने पर्यावरण से तालमेल की एक अनूठी जीवन-शैली दी| कुछ विद्वानों ने शिवलिंग, हवनकुण्ड, स्वस्तिक और कमण्डल जैसे प्रतीकों के जरिए हड़प्पा सभ्यता को हिन्दू सभ्यता साबित करने का बहुत जतन किया है| लेकिन इसमें भावना का पुट ज्यादा, विवेक कम है|"[37]

इतनी उजड़ जगह की यात्रा करते हुए लेखक महज यायावरी ही नहीं करता वरन वहाँ के बारे में तथ्यों के माध्यम से विश्लेषण करता चलता है| वे किसी इतिहासकार की तरह वहाँ की हर एक घटना से बहुत गहरे से परिचित हैं और वहाँ उन तथ्यों की तलाश करते हैं, जिनसे अपनी बात को प्रमाणित कर सकें| लेखक इस

तथ्य की ओर संकेत पहले करता है कि इतिहास तथ्यों के सहारे चलता है न कि गल्प के सहारे, इसलिए इतिहास की किसी बात को गल्प के माध्यम से सिद्ध करना इतिहास के साथ अन्याय है| हाँ साहित्य इतिहास से लेकर अपने को समृद्ध करता रहा है पर इतिहास में वह संभव नहीं है| मुअनजोदड़ो पर आज तक जो शोध हुआ है, लेखक उन तथ्यों का क्रमबद्ध विश्लेषण करता चलता है| ओम थानवी ने लिखा है- "ज़ाहिर है, वह मुअनजोदड़ो ही था जिसने सबसे पहले भारत के इतिहास को पुरातत्त्व का वैज्ञानिक आधार दिया| मुअनजोदड़ो रवाना होने से पहले कराची से लेखक ने पर्यटक गाइड खरीदी थी, उसमें दर्ज था: "जब यूरोप के लोग जानवरों की खाल ओढ़ा करते थे और अमेरिका महज आदिम जातियों का इलाका था, यहाँ (सिंधु घाटी) के लोग धरती पर एक अत्यंत परिष्कृत समाज का हिस्सा थे...और नगर निर्माण में सबसे आगे|"[38]

अपनी यात्रा में लेखक ने उस सभ्य अतीत को महसूस किया| उसकी गंध को वह आज भी उसको वहाँ महसूस करता है| इस किताब को पढ़ते हुए बार-बार एहसास होता है कि अतीत की इस सबसे प्राचीन सभ्यता का सभ्य होना, अपने हुनर से समृद्ध होना है, न कि अपनी हिंसा से| वहीं आज की सभ्यता का हथियारों से लैस होना उसके आगे कितने बौने होने का प्रमाण देता है| मनुष्य अपने नैतिक मानदण्डों से महान बनता है और सभ्यता भी, लेकिन इस सभ्यता का आवरण इतना मोटा होता गया कि उसमें बाहर से मनुष्य भरता गया और अंदर से उतना ही रितता गया|

ओम थानवी ने लिखा है, मुअनजोदड़ों में मिली ज्यादातर मूर्तियों की आँखें यूँ ही अधमुँदी नहीं है, उसके पीछे योग का दर्शन छिपा है| लेखक के शब्दों में कहें तो, आँख होने के अहंकार का विलय कर आँखें बंद करना और भीतर की आँख से खुद को और दुनिया को देखना| शब्दों के पार मौन में अर्थ ढूँढना| दो पांव से दुनिया नापने की महत्त्वाकांक्षा के बरक्स पालथी मार कर बैठना और काल की दूरी नापना| यात्रा-वृत्तांत में वह गौरव भी कूट-कूट कर भरा है, जो हमारे पुरखों ने हमें मुहैया कराया| इससे हम कुछ बेहतर, कुछ सरल, कुछ गरिमामय और कुछ अहम से मुक्त होते हैं| मुअनजोदड़ो इस मामले में भी एक नया ही अनुभव है कि पुस्तक की तरह कृष्णनाथ की लिखी हुई भूमिका भी समृद्धि दे जाती है| शुरुआत में ही कृष्णनाथ

मानो किताब नहीं पूरे परिदृश्य के सिलसिले में ही एक सूत्र दे देते हैं| वह लिखते हैं, आप किताबें पढ़ें, सिर्फ देखें नहीं| आज-कल तो पढ़ते नहीं; देखते हैं|

इस यात्रा-वृत्तांत में वर्णन के क्रम में दर्शन भी आता है| इससे पूरे वृत्तांत का लालित्य बढ़ जाता है, मानो कोई निबंध पढ़ रहे हों| मुअनजोदड़ो को लेखक एक आदितीर्थ मानता है और इसके भग्नावशेषों के बीच घूमने के क्रम में अपनी मौजूदा जड़ों का भी सुमिरन करता है| एक लालसा, एक छटपटाहट दिखती है, उस तारतम्यता या क्रमिक विकास को रेखांकित करने की, जो तब से अब तक पसरी हुई है| वर्णन के क्रम में लेखक सिंधु सभ्यता से जुड़े ऐतिहासिक विवादों मसलन, इसके खत्म होने की वजहें, इसका सरस्वती से रिश्ता या फिर इसके सैन्य स्वरूप को लेकर भी अपना मत रखता है| इन सबके बीच ओम थानवी वर्तमान के ज्ञान की रौशनी में भी सब विचारते देखते हैं| उन्हें सारे वैचारिक घमासान के बीच जॉर्ज ऑरवेल की उक्ति याद आती है| अतीत पर जिसका कब्जा होगा, भविष्य उसी के काबू में होगा और जो वर्तमान पर काबिज है, अतीत पर उसी का काबू होगा|

यात्रा वृत्तांत-की भाषा कविता मय है| छोटे-छोटे वाक्य बहुलता में हैं| इससे शब्द चित्रात्मकता की लय में बंध जाते हैं| मुकाम पर पहुँचते ही जैसे लेखक अपने उरूज में आ जाता है| ओम थानवी न सिर्फ तसल्ली से अपनी पहली सभ्यता के अवशेषों को निहार रहे हैं, बल्कि पाठकों को भी अपने वर्णन से सहयात्री बना ले रहे हैं| इन सबके बीच मुअनजोदड़ो में मिलने वाली चीजों के बारे में बात होती है| वहाँ होने वाली खुदाई और उनके कुल जमा निष्कर्षों पर बात होती है| इतिहास लेखन और उसको लेकर चलने वाली विचारधारा की लड़ाई पर भी भरपूर रौशनी डाली गई है| हर विवरण के साथ रेखाचित्र की शक्ल में तस्वीरें हैं, जो समझने में सहायक सिद्ध होती हैं| यह तथ्य भी बहुत उपयोगी है कि इस सभ्यता के लोग साक्षर थे और उनके पास औजार थे, हथियार नहीं| आज की उन्नत सभ्यता के लिए यह तथ्य प्रेरणादायी है कि वह मनुष्य के कल्याणकारी औजारों को महत्त्व दे न कि हथियारों को| मुअनजोदड़ो प्राकृतिक कारणों से नष्ट हुआ, लेकिन आज की सभ्यता स्वयं अपने ही कारणों से नष्ट होने की स्थिति में है|

4.3 एशिया संबंधी यात्रा-वृत्तांत

एशिया के दुर्गम भूखंडों में:राहुल सांकृत्यायन

राहुल सांकृत्यायन का योगदान यात्रा-वृत्तांत में अद्वितीय एवं अग्रणी है| उन्होंने भारत ही नहीं बल्कि विदेश का भी भ्रमण किया| उनकी यह यात्रा जानलेवा भी साबित हुई, किन्तु वह उससे बच गए| वे दुर्गम घाटी, दर्रा, पहाड़ी, पठार आदि पर भी यात्रा करने से नहीं हिचकिचाते थे| इतिवृत्त-प्रधान शैली होने के बावजूद गुणवत्ता और परिमाण की दृष्टि से उनके यात्रा-वृत्तांत अतुलनीय हैं| राहुल सांकृत्यायन के यात्रा-वृत्तांत में दो प्रकार की दृष्टि को साफ देखी जा सकती है| उनके एक प्रकार के लेखन में यात्राओं का केवल सामान्य वर्णन है और दूसरे प्रकार के यात्रा-वृत्तांत को शुद्ध साहित्यिक कहा जा सकता है| इस दूसरे प्रकार के यात्रा-वृत्तांत में राहुल सांकृत्यायन ने स्थान के साथ-साथ अपने समय को भी लिपिबद्ध किया है| सन 1948 में उन्होंने 'घुम्मकड़ शास्त्र' नामक ग्रन्थ की रचना की जिससे यात्रा करने की कला को सीखा जा सकता है| उनका अधिकांश यात्रा-वृत्तांत सन 1926 से 1956 के बीच लिखा गया|

'एशिया के दुर्गम भूखंडों में' में चार यात्राओं का वर्णन है| इसमें लद्दाख, तिब्बत, ईरान, अफगानिस्तान की यात्राएँ संकलित हैं, जिनमें से दो यात्रा-वृत्तांत 'मेरी लद्दाख यात्रा' और 'ईरान' पृथक प्रकाशित हैं| इस यात्रा-वृत्तांत में लद्दाख के बौद्ध विहारों, मठों और लामाओं का इतिहास, प्राकृतिक सौंदर्य, रहन-सहन, वेश-भूषा, भाषा, परम्परा, रीति-रिवाज, शादी-विवाह, संस्कृति एवं सामाजिक जीवन का चित्रण किया गया है| तिब्बत के बौद्ध-विहार, मंदिरों, तिब्बत पर मंगोलों का आक्रमण, दुर्लभ पांडुलिपियाँ, अप्राप्य ग्रंथों एवं वहाँ के सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन का पत्र शैली में विस्तार से वर्णन किया गया है| उनकी यात्रा के उद्देश्य ही

मुख्यतः लुप्तप्राय ग्रंथों की खोज, दुर्लभ पुस्तकों एवं ज्ञान-विज्ञान से दुनिया को परिचित कराना रहा है| उनकी इस निष्ठा को हम लेखक के शब्दों में समझ सकते हैं- "पहले हमने पूर्व वाली किताबों की आलमारी पर ही नजर दौड़ाई| देखा, तिब्बती और भारतीय पुस्तकें मिला-जुला कर रखी हैं| तिब्बती पुस्तकें भी हस्तलिखित और पुरानी हैं| कोई-कोई तो बिल्कुल ताल-पत्र सी मालूम होती हैं| अंत में पुस्तकों को निकालना शुरू किया| एक, दो, तीन...अड़तीस| चित्त ख़ुशी के मारे नाचने लगा| रक्षकों ने कहा-पुस्तकें इस लबरडंग से बाहर नहीं जा सकतीं| हमने कहा-"यहीं सही|" छम-जे के मकान में पुस्तकों को देखना ठीक हुआ| उस दिन और चार तारीख के सारे दिन पुस्तकें देखते रहे| छोटी-सी सूची भी बनाई| यह उसी दिन मालूम हो गया कि इन पुस्तकों में धर्म-कीर्ति का वाद न्याय भी है, जिसकी टीका ल्हासा में मिली थी|"[39]

राहुल सांकृत्यायन ने अपनी यात्रा के हर कदम, हर घटना का बारीकी से वर्णन किया है| वे पंजाब, मुल्तान, डेरा गाजीरवां, सीमांत पार करते हुए जोजीला के रास्ते लद्दाख में प्रवेश करते हैं| उन्होंने अपनी इस खतरनाक लेकिन रंगीन यात्रा का रोचक वर्णन खूबसूरत रंगों में प्रस्तुत किया है| राहुल सांकृत्यायन ने अपने यात्रा-वृत्तांत में लद्दाख, तिब्बत, अफगानिस्तान, ईरान की संस्कृति, धर्म, दर्शन, इतिहास, राजनीति, समाज, प्रकृति, भौगोलिक परिवेश, मार्ग की कठिनाई, व्यक्ति चरित्र आदि पक्षों का वर्णन किया है| उन्होंने विभिन्न देशों के पेड़-पौधे, पहाड़, नदियों, मौसम खनिज संपदाओं, पशु-पक्षियों, फसलों का वर्णन किया है| राहुल सांकृत्यायन ने ईरान और तिब्बत के इतिहास से सम्बंधित महत्त्वपूर्ण घटनाओं का भी जिक्र किया है| उन्होंने अपने यात्रा-वृत्तांत में इतिहास, भूगोल, संस्कृति, साहित्य और ज्ञान-विज्ञान को प्रमुखता दी है|

इस यात्रा-वृत्तांत में ईरान के प्रसिद्ध शहरों बाकू, इस्फ़हान, शिराज, बलख का इतिहास, आर्यों का इतिहास, मंदिरों, अग्नि-देवालयों, वहाँ के राजवंशों का इतिहास, ईरानी सभ्यता, बाकू का इतिहास, अरबों का आक्रमण, इस्लामिक कट्टरता, ईरानियों का रहन-सहन, खान-पान, ईरान की राजनैतिक एवं सामाजिक स्थिति, ईरान का भारत पर ऐतिहासिक प्रभाव आदि का सविस्तार वर्णन मिलता है| राहुल सांकृत्यायन ने ईरान जाति की तत्कालीन विशेषताओं को रेखांकित करते हुए लिखा है- "दस बजे एक गाँव में हम चाय पीने के लिए ठहरे| वहाँ पर दो पारसी

सज्जन मिले| अपने कारोबार के सिलसिले में वह यहाँ आए हुए थे| वृद्ध तो ईरान से ऊब गए थे| झूठ-धोखा, फरेब, बेमुरौवती आदि सभी दुर्गुण उन्हें ईरानी में दिखाई पड़ते थे, इसलिए अपने को हिन्दुस्तानी कहना वह अधिक पसंद करते थे| पुराने ईरान, 10 वर्ष पहले के ईरान को देखे बिना जो आज के ईरान में घुसेगा उस पर भी ऐसा प्रभाव पड़ेगा| आज के ईरानियों के प्रति उसके भीतर वही भाव उत्पन्न होगा| उसे यह नहीं मालूम कि, यह वही ईरानी जाति है, जो कायिक, मानसिक, वाचिक, सत्यता (पिन्दार-नेक, गुफ्तार-नेक, करदार-नेक) का पाठ जबानी ही नहीं पढ़ती थी, बल्कि ठीक उसी के अनुसार आचरण करती थी|...ईरान की सभ्यता उस समय बहुत समुन्नत थी, जब असभ्य अरबों ने तलवार के जोर तथा स्वर्ग की अप्सराओं के लोभ से उत्पन्न एकता के बल पर ईरान को परास्त किया| यदि ईरान परतंत्र होता, किन्तु प्राचीन इतिहास से उसका विच्छेद न कराया जाता तो जातीय सदाचार की शक्ति बनी रहती|”[40]

राहुल सांकृत्यायन ने दुर्गम पहाड़, नदी, सागर को पार कर तिब्बत, अफगानिस्तान एवं ईरान के समाज, संस्कृति, साहित्य से भारतीय साहित्य को परिचय कराया| उनके यात्रा-वृत्तांत में प्राकृतिक संपदा, सांस्कृतिक पक्ष, साहित्यिक परिदृश्य, आर्थिक संपदा और इतिहास की खोज है| इस यात्रा-वृत्तांत में वन्य पशुओं, जंगली डाकुओं तथा हत्यारों से दुस्साहसिक मुठभेड़ों की रोमांचकता पठनीय है| विदेशों में घूमते हुए राहुल सांकृत्यायन का मन वहाँ के समाज, संस्कृति, प्रकृति, साहित्य में रम जाता है| वे जहाँ जाते हैं, वहाँ की परिस्थिति के अनुसार खुद को ढाल लेते हैं| राहुल सांकृत्यायन ने किन्नौर, तिब्बत तथा लद्दाख जैसे कठोर, दुर्गम कष्टदायक पहाड़ी तथा शीत मरुस्थलीय क्षेत्रों को अपनी शोध यात्रा का लक्ष्य बनाया| उन्होंने वहाँ जाकर दुर्लभ, मूल्यवान ग्रंथों की खोज की| उनके सांस्कृतिक, सामाजिक जीवन का अवलोकन कर रोचक भाषा में प्रस्तुत किया|

अफगानिस्तान की यात्रा का वर्णन करते हुए लेखक ने वहाँ के आर्यों, तुर्कों, ताजिक, उजबेक का इतिहास बताया है| उन्होंने प्रसिद्ध बामियान में बुद्ध की मूर्ति, वहाँ के मंदिरों, मठों, इस्लाम का विस्तार और अफगानिस्तान पर चंगेज खां के आक्रमण आदि पक्षों का वर्णन किया है| लेखक ने लिखा है- “लेकिन चंगेज वह तूफ़ान था, जिसके सामने न चीन ठहर सका, न रूस; न खलीफा ठहर सके, न ईसाई धर्म-गुरु! बलख वालों में बूता भी क्या था, तो भी उन्होंने लड़ाई में वीरता जरूर

दिखलाई होगी, तभी तो चंगेज को बलख जीत लेने मात्र से ही संतोष नहीं हुआ| उसने बलख की ईंट से ईंट बजवा दी| शहर में कत्ले-आम हुआ| महलों और मकानों को जलाकर राख कर दिया गया| मस्जिदों और ज़ियारतों की उसने वही गति की, जैसी 500 वर्ष पहले अरबों ने बौद्ध-विहारों और अग्निशालाओं की की थी| जिस तरह वह विहार और अग्निशालाएं फिर बलख की भूमि पर खड़ी न हो सकीं, उसी प्रकार इन ज़ियारतों और मस्जिदों को भी फिर सिर उठाने का मौका नहीं मिला|...शायद चंगेज ने अरबों को उनकी पहली क्रूरता का बदला दिया था| मंगोल बौद्धों में तो अब भी कहावत है कि धर्मरक्षक महान देवता महाकाल खुद ही चंगेज खां के रूप में संसार में आया था|"[41]

राहुल सांकृत्यायन ने कहा था कि घुमक्कड़ी से बड़ा कोई धर्म नहीं है| घुमक्कड़ होना हर आदमी के लिए बड़े सौभाग्य की बात है| घुमक्कड़ी में कभी-कभी कष्ट भी होते हैं| इसे उस तरह लेना चाहिए जैसे भोजन में मिर्च| उन्होंने घुमक्कड़ी को सर्वश्रेष्ठ वस्तु माना था| वे ताउम्र नौजवानों से बाहर निकलने का आह्वान करते रहे| यात्रा के प्रति राहुल सांकृत्यायन के दृष्टिकोण को रेखांकित करते हुए डॉ. श्यामसिंह 'शशि' ने लिखा है- राहुल जी घुमक्कड़ी को दुनिया की सर्वश्रेष्ठ वस्तु मानते हैं| उनके अनुसार डार्विन, भगवान बुद्ध, महावीर, शंकराचार्य, गुरु नानक, कोलंबस, वास्को-द-गामा, फाह्यान, ह्वेनसांग सभी प्रथम श्रेणी के घुमक्कड़ अथवा यायावर थे| उनमें कोई वैज्ञानिक था, कोई भूगोलशास्त्री, कोई इतिहासकार तो कोई धर्म-संस्थापक| बाली, जावा जैसे द्वीपों की साहित्यिक यात्राएँ, धर्म-ग्रंथों के अनुवाद, इतिहास-लेखन, अनुसंधान तथा संस्कृति पुरुषों की यायावरी के परिप्रेक्ष्य में संस्कृत में विरचित ये पंक्तियाँ कितनी सटीक लगती हैं- "एतददेश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः| स्वं स्वं चरित्रं शिक्षरेन पृथिव्यां सर्वे नवाः||"[42]

हिंदी यात्रा-वृत्तांत के आधार स्तम्भ और प्रेरणास्रोत माने जाने वाले राहुल सांकृत्यायन ने वृहत् रूप में यात्रा-वृत्तांत की रचना की है| उनके यात्रा-वृत्तांत में बुद्धिवादी दृष्टिकोण ही प्रभावी रहा है, जिसमें मानवतावादी एवं मार्क्सवादी दृष्टिकोण मुखर रूप से देखने को मिलता है| उनकी यात्रा विचार की यात्रा थी| उनकी वैचारिक यात्रा वैष्णव मत से शुरू होकर आर्य, बौद्ध से होते हुए मार्क्सवाद पर ख़त्म होती है| राहुल सांकृत्यायन के यात्रानुराग एवं यात्रानुभव ने उन्हें एक यात्रा-दर्शन प्रदान किया था| उन्होंने अनुभव किया था कि एक ही स्थान पर रहने से

मनुष्य की दृष्टि सिमित हो जाती है| भ्रमण करने से वह वृहत जगत और बहुरंगे जीवन से परिचय पाता है और उसमें ‘वसुधैव कुटुम्बकम’ की भावना पुष्ट हो जाती है| राहुल सांकृत्यायन सदैव निश्चिन्त घुमक्कड़ रहे| पारिवारिक माया-मोह और सांसारिक सुख उनकी नजर में ज्यादा महत्त्व नहीं रखते थे| राहुल सांकृत्यायन के यात्रा-वृत्तांत में हमेशा इतिहास झलकता है, लेकिन उनकी नजर वर्तमान और भविष्य पर रहती है, जिसमें सामान्यजन की चिंता, देश, समाज का सरोकार दीखता है| ज्ञान की पिपासा ने उन्हें घुमक्कड़ बनाया और घुमक्कड़ी के अनुभवों ने सोचने, समझने की एक नई दृष्टि दी एवं देश-विदेश के महापुरुषों से मिलकर ज्ञान अर्जित किया|

यशपाल:लोहे की दीवार के दोनों ओर

यशपाल का चर्चित यात्रा-वृत्तांत ‘लोहे की दीवार के दोनों ओर’ 1953 में प्रकाशित हुआ था| जैसा कि शीर्षक से स्पष्ट है यह यशपाल की राजनैतिक यात्रा थी, विशेषकर ‘विश्व शांति कांग्रेस’ की सभा में भाग लेने हेतु| यह यात्रा-वृत्तांत व्यक्तिगत तो है ही सामाजिक भी है| यशपाल ने अपने यात्रा-वृत्तांत में सोवियत संघ, जर्मनी, रोम, काबुल, रूमानिया, स्विट्जलैंड, चेकोस्लोवाकिया, लन्दन, वियाना तथा मारीशस की यात्राओं में इन स्थलों की संस्कृति, राजनीति, इतिहास, धर्म, अर्थव्यवस्था तथा युद्ध के विध्वंस आदि परिस्थितियों का वर्णन किया है|

यशपाल के यात्रा-वृत्तांत में समाजवादी व्यवस्था के प्रति आस्था सर्वत्र व्याप्त है| उन्होंने अपने यात्रा-वृत्तांत में समाजवाद की प्रशंसा की है| मधुरेश ने उनके सम्पूर्ण यात्रा-वृत्तांत पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए लिखा है- “यशपाल के यात्रा-वृत्तांतों में यह एक सूत्र शुरू से अंत तक सक्रिय दिखाई देता है कि जनता का व्यापक सहयोग और सक्रिय भागीदारी ही किसी राष्ट्र के नवनिर्माण और विकास का मुख्य कारक है| विश्व के अनेक देशों में अनेक घटनाएँ जनता की इच्छाओं के विरुद्ध और साम्राज्यवादी शक्तियों के षड्यंत्रों एवं नेताओं के स्वार्थ का परिणाम रही हैं- चाहे भारत का विभाजन हो या फिर सोवियत संघ का विघटन| लेकिन जर्मनी और

कोरिया की तरह जनता ही उन विभाजनों को ख़ारिज करने की पहल भी करती है| यशपाल सब कहीं उसी जनता के व्यापक हितों के समर्थक और संरक्षक लेखक हैं|”[43]

यशपाल ने अपने यात्रा-वृत्तांत में यात्रा-स्थलों के पीड़ित वर्ग के दर्द और उच्च वर्ग द्वारा उसके शोषण एवं अत्याचार को उजागर किया है| आम जनता के प्रति प्रेम और उनके हितों की रक्षा का भाव उनके यात्रा-वृत्तांत में सर्वत्र व्याप्त है| लेखक ने पूंजीवादी और समाजवादी व्यवस्था में समाजवादी व्यवस्था को श्रेष्ठ माना है और उनकी विशेषताओं को भी प्रकट किया है| यशपाल के यात्रा-वृत्तांत में वर्णित इतिहास पर भी उनका समाजवादी दृष्टिकोण रहा है| उन्होंने अपनी यात्रा के दौरान यात्रा-स्थलों के इतिहास को शोषक एवं शोषितों के संघर्ष के रूप में देखा है और उसे मार्मिकता के साथ प्रकट किया है| यशपाल ने शोषितों के प्रति संवेदना, सहानुभूति को प्रकट किया है और शोषकों के प्रति गुस्से की भावना व विद्रोह को प्रकट किया है|

यशपाल के यात्रा-वृत्तांत में उनके साहित्यिक विचारों की अभिव्यक्ति हुई है| उनके यात्रा-वृत्तांत में विश्व के प्रसिद्ध साहित्यकारों की छवियाँ भी अंकित हैं| लेखक ने इन छवियों के अंकन में रेखाचित्र शैली का भरपूर प्रयोग किया है| सोवियत उपन्यासकार ईलिया एहरनबर्ग का चित्रांकन लेखक ने इस प्रकार से किया है- “एहरनबर्ग की अवस्था साठ के ऊपर जान पड़ती है| सिर पर केश कम ही हैं और जो हैं वे फूले कांस के समान श्वेत| कंधे कुछ झुक गए हैं| कुछ गहरी-सी और उठी हुई भौं के नीचे थकी-सी आँखें अब भी पैनी जान पड़ती है| लाल हल्दी की गाँठ के-से रंग के मोटे ऊनी कपड़े का ढीला-सा सूट और हाथ प्रायः जेबों में| अब तक उन्हें चित्रों में पाइप पीते ही देखा था| सिगरेट यहाँ होठों में प्रायः ही देखा|”[44]

यशपाल ने इस यात्रा-वृत्तांत में व्यक्तिगत स्वतंत्रता को लेकर पाश्चिमात्य धारणा पर करारा आघात किया है| लेखक ने समाजवादी और पूंजीवादी देशों के जीवन और व्यवस्था का स्वानुभव पर तुलनात्मक विचार प्रस्तुत किया है| यशपाल ने इंग्लैंड की हर चीज की तुलना सोवियत संघ के साथ की है| वहाँ की शिक्षा, कला और साहित्य आदि पर भी विचार किया है| सोवियत संघ और इंग्लैंड की शिक्षा नीति की भिन्नता एवं कला और कलाकार की उपेक्षा का भी चित्र यशपाल ने खिंचा

है| यशपाल मानते हैं कि यूरोप ने भौतिक प्रगति जरूर की है परंतु सरल जीवनशैली, नैतिकता, संस्कृति आदि बातों में वहाँ अधिक सुधार की आवश्यकता है|

यशपाल ने यात्रा के दौरान ऐतिहासिक स्थलों से जुड़ी इतिहास की क्रूरतम घटनाओं का भी उल्लेख यात्रा-वृत्तांत में किया है| उन्होंने इतिहास से जुड़ी मानवीय संवेदनाओं को भी अभिव्यक्त किया है| यशपाल इतिहास और किंवदंतियों के बीच में मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण की प्रवृत्ति के उदाहरण खोजते हैं| उन्होंने अपने घुमक्कड़ी जीवन में आए अनुभवों को सृजनशीलता का आधार देकर चर्चित यात्रा-वृत्तांत का सृजन किया है| यशपाल ने इस यात्रा-वृत्तांत में समाजवादी और पूंजीवादी देशों का तुलनात्मक अध्ययन भी किया है| उन्होंने समाजवादी देशों की तुलना भारत से करने की अपेक्षा समृद्ध देशों से करना चाहा| यशपाल ने लिखा है- "सोचा कि पूर्वी योरूप के समाजवादी व्यवस्था अपना लेने वाले प्रजातंत्रों की तुलना पराधीनता के बंधनों के कारण पिछड़े भारत से क्या की जाए? उन देशों को देखने से पहले यदि पूंजीवादी प्रणाली पर चलनेवाले समृद्ध स्विट्जलैंड का एक आध नगर देख लिया तो तुलना का आधार अधिक उचित हो सकेगा|"45

यशपाल ने वियाना से मास्को की ओर जाते हुए द्वितीय विश्वयुद्ध के कारण वहाँ हुई तबाही और नवनिर्माण का आँखों देखा हाल प्रस्तुत किया है| जिनेवा के ग्लैमर दुनिया का भी जिक्र किया है| लेखक ने स्विट्जलैंड के व्यापार की स्थिति, पहाड़ों का सौंदर्य, रहन-सहन आदि का बहुत ही रोचक वर्णन किया है| अपने इस यात्रा-वृत्तांत में लेखक ने भ्रमण किए देशों के होटल, व्यापार, यातायात सुविधाएँ, समाज-रचना, जन-जीवन आदि का वर्णन कर अपनी जिज्ञासा और सूक्ष्मावलोकन की प्रवृत्ति का परिचय दिया है| यशपाल ने रूस और भारत के सांस्कृतिक आदान-प्रदान एवं प्राचीन संबंधों का भी वर्णन किया है|

यशपाल यात्रा के दौरान अपनी भाषा के प्रति हमेशा चिंतित रहे हैं| हिंदी को जो सम्मान मिलना चाहिए था, वो नहीं मिलने कारण उनके मन में खीझ भी है| उन्होंने मास्को भ्रमण करते समय यह अनुभव किया कि रूसी व्यक्तियों में अपनी भाषा के प्रति विशेष आदर है, जबकि हिन्दुस्तानियों में ऐसा नहीं है| उन्होंने लिखा है- "रास्ते में लौटते हुए हमलोग आपस में चर्चा करते रहे कि हमें जितने भी

सोवियत डॉक्टरों, प्रोफेसरों, वैज्ञानिकों और लेखकों से बात करने का अवसर मिला, किसी ने भी अंग्रेजी में बात करने का यत्न नहीं किया| यह मान लेना कि उनमें से कोई अंग्रेजी नहीं जानता था, कठिन था, क्योंकि प्रत्येक सोवियत विद्यार्थी अपनी भाषा के अतिरिक्त एक-न-एक विदेशी भाषा का अध्ययन अवश्य करता है| अपनी भाषा के प्रति इनलोगों में कितना आदर है| टॉलस्टॉय और तुर्गनेव के उपन्यासों की बातें याद हों तो एक समय सुसभ्य और सुसंस्कृत रूसी समाज फ्रेंच बोल सकना ही गर्व की बात समझता था जैसे हमलोग अंग्रेजी और फारसी के शब्दों का व्यवहार संस्कृति का परिचायक मानते हैं| मजा यह है कि जब हमलोग अपनी भाषा न बोलने के अपने व्यवहार पर खेद प्रकट कर रहे थे, तब भी बात अंग्रेजी में ही हो रही थी|”[46]

इस यात्रा-वृत्तांत में ‘विश्व शांति कांग्रेस’ में भाग लेने गए प्रतिनिधि लेखक, देशी-विदेशी भाषा, उनके ठहरने एवं भोजन व्यवस्था आदि का भी वर्णन मिलता है| यशपाल ने महत्त्वपूर्ण घटनाओं एवं क्रिया-कलापों का वर्णन तिथिगत एवं ब्यौरेवार तरीके से किया है| यशपाल ने सोवियत संघ का जिक्र करते हुए मास्को, स्तालिनग्राद, लेनिनग्राद, वहाँ के मेट्रो, स्टेडियम, स्कूल, थियेटर, बाजार, संग्रहालय, पुस्तकालय, प्रेस, कला भवन, सोवियत अदालतों की कानूनी व्यवस्था, अस्पताल सोवियत संघ की आर्थिक योजनाएँ, धार्मिक स्वतंत्रता तथा अर्थ एवं शिक्षा नीति आदि का भी चित्रण किया है| रूस के विभिन्न शहरों, स्थानों, योजनाओं आदि की जानकारी के साथ समाजवादी समाज-व्यवस्था के जन-जीवन, शिक्षा पद्धति, मजदूर की स्थिति, यातायात सुविधा आदि का वर्णन किया है| यशपाल ने जार्जिया में स्तालिन द्वारा स्थापित गुप्त छापाखाना, सोवियत संघ की भाषाएँ, सोवियत संघ के किसान और संयुक्त खेती, स्तालिन की जन्मभूमि, वहाँ के सांस्कृतिक स्थान आदि का उल्लेख इस यात्रा-वृत्तांत में किया है| यशपाल का यह यात्रा-वृत्तांत आत्मीयता से परिपूर्ण है| यशपाल का दृष्टिकोण दृढ़ता, तटस्थता और बोध-गम्यता के साथ इन संस्मरणात्मक यात्रा-वर्णनों में घुल-मिल गया है| इसमें लेखक का सूक्ष्मावलोकन सराहनीय है| भाषा में कहीं बोझिल तत्त्वों का उभार नहीं

है| स्थान-स्थान पर चित्रों के प्रयोग से कथ्य को स्पष्ट करने की अनुभूति देने का भी प्रयास किया गया है|

असगर वजाहत:चलते तो अच्छा था

किसी भी देश की संस्कृति के सूत्र वहाँ के जन-जीवन और उसके क्रिया-कलापों से सम्बद्ध होते हैं, इसलिए यात्रा-वृत्तांतकार अपनी यात्रा के दौरान वहाँ के जनजीवन का सूक्ष्म अध्ययन करता चलता है| वह नागरिकों के आचरण को परखता है, उनके पहनावे को देखता है, उनके रीति-रिवाजों और आमोद-प्रमोद के साधनों का अध्ययन करता है| उनके समारोहों व उत्सवों में भाग लेता है, उनके गीतों और नृत्य शैलियों का आस्वादन करता है, उनकी लोक-गाथाएँ सुनता है और उनके पारिवारिक एवं सामाजिक संबंधों को परखता है| इसके साथ-साथ लेखक उस देश या समाज की परंपरा को, साहित्य के स्वरूप को, चित्रकला और मूर्तिकला की शैलियों को, मंदिरों, मठों, गिरिजाघरों और मस्जिदों को परखता हुआ उसकी कला-चेतना का विवेचन करता है| पुस्तकालयों और संग्रहालयों की स्थिति को देखता है| उनके धार्मिक विश्वासों और मान्यताओं को, नैतिकता के मानदंडों को, दार्शनिक विचारधाराओं को भी गहराई से समझता है तथा उन्हें अपने यात्रा-वृत्तांत में प्रस्तुत करता है| इस प्रकार यात्रा-वृत्तांत में दुनिया के विभिन्न भागों में बिखरी विविध सांस्कृतिक छवियों के दर्शन होते हैं| इस दृष्टि से यात्रा-वृत्तांत दुनिया से परिचित होने का सरस माध्यम है|

असगर वजाहत का चर्चित यात्रा-वृत्तांत 'चलते तो अच्छा था' ईरान तथा आजरबाईजान की दस्तावेज है| लेखक इसमें भारत, ईरान तथा मध्य एशिया के शिथिल पड़े हुए संबंधों को लेकर चिंतित है, क्योंकि प्राचीन काल से लेकर मध्य युग तक हिंदुस्तान और मध्य एशिया के देशों के बीच बड़े प्रगाढ़ सम्बन्ध रहे हैं| इसके कारण आज भी ईरान और मध्य एशिया में भारत की बड़ी मोहक छवि बनी हुई है| भारत और विदेश तथा मध्य एशिया के बीच के संबंध पर भी इस पुस्तक में विचार

किया गया है| पहले इन देशों के बीच सम्बन्ध कैसे थे, इसपर भी लेखक ने विचार किया है| इस यात्रा-वृत्तांत में ईरान और भारत की सांस्कृतिक आदान-प्रदान पर भी प्रकाश डाला गया है| आज के समय में भारत और ईरान के बीच साहित्यिक, सांस्कृतिक जुड़ाव लगभग नगण्य है| दोनों देशों के बीच कला, साहित्य या समाज को जानने की कोई उत्सुकता नहीं है| लेकिन आज के परिदृश्य में यह ज़रूरी है कि पड़ोस में उपलब्ध सम्भावनाओं पर ध्यान दिया जाए| यह यात्रा-वृत्तांत हमें कुछ गहरे सामाजिक और राजनीतिक सवालों पर सोचने के लिए भी मजबूर करता है| यह यात्रा-वृत्तांत यथार्थ से गुजरते हुए पाठक के मानस पटल पर गहरी छाप छोड़ता है| हिंदुस्तान और मध्य एशिया के संबंधों की कड़ी में असगर वजाहत ने अपने पूर्वजों के इतिहास का वर्णन करते हुए अपनी जड़ें ईरान से जुड़ी हुई बताया है| वे खाफ़ गए भी थे, जहाँ से उनके पूर्वज हुमायूँ की फ़ौज में आये थे| वहाँ काफी भटकने के बाद लेखक को वह गाँव मिला, लेकिन पूर्वजों के घर नहीं| उन्होंने लिखा है- “ईरान चला जाऊँगा...ईरान...जहाँ से हमारे पुरखे सैयद इकरामउद्दीन हुमायूँ की फ़ौज में हिंदुस्तान आए थे|”[47]

असगर वजाहत ने अपने यात्रा-वृत्तांत की शुरुआत ईरान के प्राचीन इतिहास से की है| उन्होंने ईरान का भौगोलिक इतिहास से लेकर आर्यों के देवी-देवता, परम्परा, संस्कृति, राजा एवं दुनिया की महान लोकतांत्रिक राजव्यवस्था का वर्णन किया है| प्राचीन राजाओं के द्वारा बनाए गए विशाल महलों, मकबरें और राजभवनों का भी वर्णन किया है| असगर वजाहत का यह यात्रा-वृत्तांत ईरान तथा आजरबाईजान के अनेक शहरों की भौगोलिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक विशिष्टताओं की सूचना देता है तो कभी गृहयुद्ध में फँसकर मारे गए लाखों ईरानी एवं वहाँ के जनमानस की त्रासदी को उभारता है| असगर वजाहत ने इसमें यह भी दिखाया है कि ईरान के द्वारा अमेरिका के विरोध के बाद भी ईरान पूरी तरह से अमेरिका और उसकी संस्कृति के चंगुल में फँसा हुआ है|

ईरान की पुरानी राजधानी इस्फ़हान का वर्णन करते हुए लेखक ने बताया है कि इस शहर में अतीत का गौरव और वर्तमान का सौन्दर्य दीखता है| कला, साहित्य, संगीत, फिल्म, स्थापत्य में यह शहर आगे है| उन्होंने इस शहर के बाग़-बगीचे, ऐतिहासिक इमारतों, बाजार, मध्यकाल के बने हुए नदियों के सुंदर पुल का चित्रण किया है| इस्फ़हान की ये विशेषताएँ ही हैं कि यूनेस्कों ने इस शहर को विश्व धरोहर में शामिल किया है| इस शहर का इतिहास बहुत पुराना है| इसका इतिहास

हिंदुस्तान से जोड़ते हुए लेखक ने लिखा है- “ढाई हजार साल पुराने इस्फ़हान का लम्बा-चौड़ा इतिहास है जिसकी कड़ियाँ भारत से भी जुड़ती हैं| शेरशाह सूरी से हारने के बाद मुग़ल बादशाह हुमायूँ यहीं आया था और उसे इसी शहर में ईरान के सम्राट शाह अब्बास सफ़वी ग्यारह साल उसकी मेहमानदारी की थी और पुनः हिंदुस्तान हासिल करने के लिए फौजी सहायता भी दी थी|...इस शहर का इतिहास उतना ही पुराना है जितना ईरान का इतिहास है| ईसा से 700 वर्ष पूर्व हखामंशी सम्राटों के साथ में और उसके बाद सासानी साम्राज्य (ई. 200 वर्ष पूर्व) में इस्फ़हान बड़ा शहर था| लेकिन इसका स्वर्ण युग शाह अब्बास सफ़वी के शासनकाल से प्रारंभ होता है|”[48]

असगर वजाहत ने तेहरान विश्वविद्यालय का इतिहास, वहाँ की क्रांति में उस विश्वविद्यालय के छात्रों का योगदान, विश्वविद्यालय में धर्म की गहरी पैठ, वहाँ नमाज अदा करने की अनिवार्यता आदि का चित्रण किया है| ईरान की इस्लामी गणराज्य का वर्णन करते हुए लेखक ने इस्लामी व्यवस्था पर अफ़सोस जाहिर किया है| शोषक और शोषित, अमीर और गरीब के बीच बड़ा अंतर को उन्होंने दिखाया है| उनका कहना है कि यह भी बताया है कि धर्म और धनाढ्यता, धर्म और ऐश्वर्य, धर्म और प्रदर्शन का जो रूप ईरान में है, वही पूरी दुनिया में है| उन्होंने ईरान की राजनीतिक उथल-पुथल, ईरान का किसी देश के साथ कूटनीतिक संबंध का नहीं होना, शिया-सुन्नी विवाद के कारण ईरान का बाकी मुस्लिम मुल्कों के साथ तनावपूर्ण स्थिति, अमेरिका और ईरान की लड़ाई, ईरान के तेल पर अमेरिका की नजर, अमेरिका का विध्वंसक रवैया, ईरानी समाज में अमेरिका के प्रति नफरत आदि का वर्णन इस यात्रा-वृत्तांत में किया है|

ईरान की इस्लामी क्रांति के बाद का बदहाल समाज, गैरबराबरी, बेरोजगारी और अयातउल्ला खुमैनी की तानाशाही पर बात करते हुए असगर वजाहत ने ईरान की सत्ता पर चोट की है| ईरान में सरकार जगह-जगह सड़कों पर बड़े-बड़े बैनर लगवा रखी है, जिसमें युद्ध करते हुए सैनिक, मृत सैनिक, उनका गुणगान और समाज को अप्रत्यक्ष रूप से युद्ध का समर्थन करता दिखाया गया है| लेखक ने लिखा है- “तेहरान की सड़कों पर ऊँची इमारतों की दीवारों पर ऐसे चित्र देखे जा सकते हैं जिनमें युद्ध का मैदान दर्शाया गया है| टैंक, लड़ाकू जहाज, गोलियाँ बरसाते सैनिकों की पृष्ठभूमि में एक ईरानी सिपाही का सिर अपनी गोद में रखे हुए ‘इमामे ज़माना’ का चित्र है और फ़ारसी में लिखा है कि शहीदों का स्थान कितना

ऊँचा है तथा स्वर्ग में जानेवाली शहादत कितनी महत्त्वपूर्ण है| इस तरह के विशाल चित्र ईरान की सड़कों पर भरे पड़े हैं|”49

असगर वजाहत ने ईरान के पुराने रंगमंच का इतिहास पर भी बात की है| हवाई अड्डे, वहाँ ठहरने का होटल, ईरान की बहुमंजिला गगनचुम्बी इमारतें, सड़क, पार्क, बाग़-बगीचे, खान-पान, ईरान के उच्च वर्ग और मध्यम वर्ग की जीवन-शैली एवं भारती के उच्च वर्ग और मध्यम वर्ग की तुलना भी प्रस्तुत की है| ईरान का समाज और उसमें महिलाओं की स्थिति की भी चर्चा लेखक ने की है| तबरेज शहर का वर्णन किया है, जहाँ रजा के द्वारा होटल में ठगे भी गए| ईरान में बॉलीवुड के हीरो-हीरोइन की प्रसिद्धि, हिंदी फ़िल्में, हिंदी गानों का चलन के बारे में उन्होंने बताया है| लेखक का कहना है कि वहाँ हिंदी फिल्मों का पूरा बाजार गैरकानूनी है| करोड़ों रुपये की सी.डी. दुबई की ब्लैक मार्केट से ईरान आती है| इससे बॉलीवुड को एक रुपया का लाभ नहीं होता है| इस्फ़हान में असगर वजाहत की कहानी का शीर्षक ‘आदमी बन्दर है और बन्दर आदमी’ देखकर उनसे से कुछ लोग उलझ पड़ते हैं, जिसका उल्लेख उन्होंने किया है| लेखक को किसी तरह वहाँ से जान बचाकर भागना पड़ा था| लेखक को फोटोग्राफी के दौरान तेहरान में गिरफ्तार भी होना पड़ा था| काफी जाँच-पड़ताल के बाद उन्हें रिहा कर दिया गया, लेकिन वे काफी डर गए थे|

इस यात्रा-वृत्तांत में फिरदौसी का मकबरा, उनका स्वाभिमान, उनका लेखन, चर्चित कृति ‘शाहनामा’ और वहाँ के बड़े कवियों की चर्चा लेखक ने की है| मशहद की चर्चा में फिरदौसी से होते हुए लेखक क्रूर, अत्याचारी, लुटेरा शासक नादिरशाह तक जाता है| उन्होंने लिखा है नादिरशाह एक लुटेरा था और वह कभी विजयी नहीं हुआ और उसका भी क़त्ल अपने सबसे बड़े विश्वासपात्र के द्वारा किया गया| लेकिन ईरान में नादिरशाह को विजेता और आदर्श के रूप में पूजा जाता है, जिसका लेखक को मलाल है| ईरान में जिसने इस्लाम स्वीकार नहीं किया था, उन अग्निपूजकों को दूर भागना पड़ा था| आज भी वे यज्द शहर में बदहाली की स्थिति में रहते हैं| उन्होंने यज्द शहर की हवा मीनार के स्थापत्य नमूना का उदाहरण दिया है| यज्द अग्निपूजक या जोराशट्रियन धर्म का केंद्र माना जाता है| यज्द का ‘आतिशगाह’ यानी अग्नि मंदिर संसार के प्रसिद्ध मंदिरों में से है, जिसके दर्शन करने दुनिया भर से पारसी जाते हैं| यहाँ अग्नि 470 ई. से जल रही है| इसका पूरा इतिहास लेखक ने बताया है और वहाँ की धार्मिक कट्टरता पर भी कलम चलाई है|

ईरान के बाद लेखक आजरबाईजान की यात्रा पर निकलता है| आजरबाईजान को आग का देश कहा जाता है| वहाँ धरती के नीचे बहुत गैस है, जो जगह-जगह निकलती रहती और जलती रहती है| उन्होंने एक अग्नि मंदिर का वर्णन किया है| उस मंदिर में अनंत सालों से लगातार आग की ज्वाला निकल रही है| लगातार एक जैसी न बुझने वाली ज्वाला| यह भी धरती के अन्दर मौजूद गैस के कारण है| इस प्राचीन मंदिर का निर्माण हिंदुस्तान के व्यापारियों ने सत्रहवीं-अट्ठारहवीं शताब्दी में किया था| आज भी वहाँ की सरकार ने इस मंदिर को सुरक्षित रखा है और 'विश्व धरोहर स्मारक' में शामिल करने की मांग कर रही है| असगर वजाहत ने लिखा है- "सामने एक मंदिर दिखाई पड़ा जिसकी छत बिल्कुल उसी तरह की है जैसी उत्तर भारतीय मंदिरों की होती है| इस छत पर त्रिशूल भी लगा दिखाई पड़ा| मंदिर के अन्दर पत्थर के एक चौकोर से कुंड के अन्दर से आग निकल रही थी| चारों तरफ कोठरियाँ बनी थीं जिनके ऊपर देवनागरी अन्य प्राचीन उत्तर भारतीय लिपियों में नाम पट्ट लगे हुए थे|...पत्थर के चौकोर हौज़ से, पत्थर के टुकड़ों के बीच से आग की ज्वाला निकल रही थी| इस आग का रंग सामान्य आग जैसा लाल नहीं था, न इसमें धुआँ था न ही इसकी लपटें रंग बदल रही थीं| यह लगातार निकल रही थी|...यह आग जमीं से निकलनेवाली गैस के कारण जल रही थी| बताया गया कि पता नहीं कब से यह आग इसी तरह निकल रही है| मंदिर की शिवाले जैसी छत के चार चिमनियों जैसे बुर्ज भी बने थे| रात में इसमें से निकलनेवाली गैस को भी जला दिया जाता है| तब मंदिर के ऊपर चार दिशाओं से आग की लपटें निकलती हैं और नीचे मुख्य मंदिर के अन्दर से भी ज्वाला फूटती रहती है|"[50]

वहाँ की चौड़ी सड़कें, हर चौराहों पर की मस्जिदों, न ख़त्म होने वाले तेल के खेत, वहाँ के विकास में तेल का योगदान, आजरबाईजान की स्त्री स्वतंत्रता पर बात करते हुए लेखक ने वहाँ की भ्रष्ट पुलिस व्यवस्था पर भी चोट की है| ईरान और आजरबाईजान सीमा पर के भ्रष्टाचार पर भी उन्होंने बात की है, जिसका लेखक खुद भुक्तभोगी रहा है| उन्होंने बताया है कि आजरबाईजान ने अपने राष्ट्रकवि को नोटों पर जगह दी है| लेखक ने बाकू के ओपन एयर ऑडिटोरियम, सुन्दर समुद्री तट, रेस्त्रां, वहाँ के प्राचीन अग्नि मंदिर, कोहे काफ की परियों का सौंदर्य वर्णन जो उन्होंने किया है, वह अद्भुत है| बाकू यूरोप के कई देशों और एशियाई स्थापत्य कला का संगम माना जाता है| पूरी दुनिया की बहुत सारी कंपनी वहाँ अपना भव्य व्यापर

पसार रही हैं, इसलिए इस देश पर दुनिया की छाप को देखा जा सकता है| बाकू को तेज हवाओं का भी देश कहा जाता है और वहाँ निरंतर बहुत तेज हवा चलती रहती है|

जहाँ फव्वारे लहू रोते हैं: नासिरा शर्मा

नासिरा शर्मा अपनी बेलाग कथात्मक अभिव्यक्ति और सौष्ठवपूर्ण रचनात्मकता के लिए जानी जाती हैं| उनका यात्रा-वृत्तांत पाठक के मन में अमिट प्रभाव छोड़ता है| इसमें नासिरा शर्मा ने अपनी उत्कृष्ट अनुभूति तथा विचारों को कलात्मक अभिव्यक्ति प्रदान किया है| इस यात्रा-वृत्तांत की एक ख़ूबी यह है कि इसे जितना पढ़ते हैं, यह उतना ही अपना लगता है| संवाद के रूप में शब्द आपके मुँह से झरते प्रतीत होते हैं| दृश्य को आप अपनी आँखों के सामने साकार होते देख रहे होते हैं| यात्रा-वृत्तांत की प्रांजलता और संप्रेषण ने हमारे समय के कई पेचीदा सत्य उजागर किए हैं| इस यात्रा-वृत्तांत में उठाए गए मुद्दे कभी नहीं लगते कि ये विदेशी ज़मीन से उठाए गए हैं बल्कि लगता है सबकुछ पास में आँखों के सामने घटित हो रहा है| नासिरा शर्मा एक ओर ईरान-इराक के सौंदर्य पर मोहित हैं तो दूसरी ओर उस देश को संचालित करने वाली राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्थाओं पर भी चोट करते चलती हैं|

इस यात्रा-वृत्तांत में एक ऐसे मुल्क की कहानी है, जहाँ मोहम्मद रजा शाह जैसे तानाशाह को हटाकर एक और ज़ुल्मी और अत्याचारी अयातुल्लाह रुहोल्ला खुमैनी ने सत्ता हथिया ली हो| जहाँ क्रांति के नाम पर मज़हबी घुट्टी पीने को मजबूर किया जा रहा हो| जहाँ की प्रगतिशीलता को पतनोन्मुख मानकर मज़हब के नाम पर कट्टरता और रूढ़िवादिता को लागू करने की बेचैनी हो, जहाँ विश्वविद्यालयों को बंदकर मस्जिदों को आबाद किए जाने की जुगत की जाती हो, जहाँ न्यायालयों के सर्वोच्च पदों पर उन मौलवियों की नियुक्ति की जाती हो, जो जोर-जबर्दस्ती के बल पर लोगों को वैज्ञानिक शिक्षा से अलग रख मजहबी अफीम चटा सकें| जो तर्क और विज्ञान की बातें करने वाले को मौत के घाट उतार सकें| इमाम खुमैनी के चंद शब्द

नासिरा शर्मा की ज़ुबानी सुनें- “इमाम खुमैनी का बार-बार यही कहना था कि हमें दक्षता की आवश्यकता नहीं है| हम दक्ष डॉक्टर, इंजीनियर लेकर क्या करेंगे, जितना पैसा उनकी शिक्षा पर खर्च करेंगे उस पैसे को लगाकर एक विद्यार्थी व्यापार करेगा जिसमें शिक्षा व दक्षता की आवश्यकता नहीं होती है और उससे कम पैसों में विद्यार्थी गण कृषि से कमा लेंगे|”[51]

इस यात्रा-वृत्तांत में नासिरा शर्मा की क़लम लगातार उन शक्तियों पर चोट कर रही है, जो धर्मनिरपेक्षता के लिए ख़तरा हैं, लोकतंत्र के लिए खतरा हैं| ये धर्मनिरपेक्षता सिर्फ़ कहने या दिखाने के लिए नहीं है, बल्कि उन्होंने अपनी ज़िंदगी में ढालने के लिए अपनाई है और यक़ीनन ऐसी धर्मनिरपेक्षता दुनिया के लिए आज न केवल ज़रूरी है बल्कि ये हमारी ताक़त भी है और यही ताक़त बेहतर दुनिया के सपनों को साकार करने के लिए ज़रूरी है| लेखिका ने इस्लामी गणतंत्र की कट्टरता एवं क्रूरता पर चोट करते हुए लिखा है- “नौजवान लड़कों के साथ बलात्कार होता व लड़कियों पर हर प्रकार का जुल्म ढहाया जाता| इस बात का सबूत बनीसद्र के भाषण से मिल गया जो उन्होंने चार लाख के मजमे में दिया था, जिसको मैंने भी पारसाल सुना था कि यह कौन सा इस्लामी गणतंत्र है जिसमें छः प्रकार के जेल हैं? लड़के-लड़कियों के सिगरेटों से जले माथे किस बात के द्योतक हैं| एक तहलका मच गया, खलखाली जो दोनों हाथों से तलवार चलवा रहे थे बीच भाषण में रंगमंच से उठकर चले गए और हर आदमी एक-दूसरे से पूछ रहा था कि “इमाम ने तो कहा था कि ईरान में जेल नाम की कोई चीज ही नहीं रहेगी|”[52]

इराक की शुरू से ही एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत रही है जिसे सद्दाम हुसैन ने काफ़ी हद तक आगे बढ़ाया| उसी विरासत को हड़पने की प्रतिस्पर्द्धा के चलते इमाम खुमैनी अपनी युद्धप्रियता और विध्वंसक अतिवादिता को प्रदर्शित करते रहे हैं| ‘जहाँ फव्वारे लहू रोते हैं’ के एक अध्याय ‘बारूद की छांव में पनपती कला और मरज़ीना का देश’ में नासिरा शर्मा मरज़ीना के साथ साक्षात्कार करती हैं| ऐसे बात करती हैं कि वो कोई ऐतिहासिक या सांस्कृतिक पात्र की तरह न होकर आज की स्थितियों पर सही, सटीक एवं प्रगतिशील दृष्टिकोण रखने वाला एक साहित्यकार हो, समाजसेवी हो, चिंतक हो या बग़दाद की गलियों और दहानों को याद करता एक आम व्यक्ति हो| मरज़ीना के साथ हुए नासिरा शर्मा के संवाद बेहद

सारगर्भित हैं, जो ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य के साथ-साथ मौजूदा दौर को भी सामने रखते हैं|

नासिरा शर्मा अपने यात्रा-वृत्तांत में उन लोगों की बात करती हैं, जो भयंकर त्रासदी के शिकार हैं| वो बार-बार उन लोगों के पास जाकर उनके दुःख-दर्द की दास्तान को कलमबद्ध करती हैं| सियासती गलियों में जाकर उन खूंखार शेरों के हल्कों में हाथ डालकर वह सब उगलवाने की कोशिश करती हैं, जो समय का सच है| यह सब वह अपने शहर, प्रांत या देश में नहीं बल्कि दूसरे मुल्क में जाकर करती हैं| अफगानिस्तान की तत्कालीन स्थितियों का वर्णन करते हुए वे लिखती हैं- "अफगानिस्तान में इस समय बुनियादी समस्याओं का कोई ओर-छोर नहीं है जैसे भूख, बेकारी, जहालत, खून-खराबा, घुटन, बीमारी आदि| सामाजिक रूप से अफगानिस्तान का ढाँचा पूरी तरह से चरमरा चुका है| ऊपर से सियासी रस्साकशी से आम इंसान का जीवन मौत से बदतर हो गया है, खासकर तालिबान को लेकर देश-विदेश दोनों स्तरों पर उसकी आलोचना हो रही है| उसका रूढ़िवादी मान्यताओं का समर्थन, औरतों पर पाबन्दी, अफ़गान हिन्दुओं को अलग रंग का कपड़ा पहनने का हुक्म, ये सब किसी भी राष्ट्र या समाज के विकास के नहीं, बल्कि पिछड़ेपन के लक्षण हैं, जो दर्शाते हैं कि उनके पास देश के विकास की कोई योजना नहीं है|"[53]

इस यात्रा-वृत्तांत में नासिरा शर्मा ने ईरान, इराक और अफगानिस्तान की तत्कालीन स्थितियों का बहुत ही मार्मिक वर्णन किया है| वहाँ की सामाजिक स्थितियों, राजनैतिक परिस्थितियों के साथ-साथ कट्टरपंथियों एवं कठमुल्लाओं के साथ उन्होंने सीधा साक्षात्कार किया है| नासिरा शर्मा ईरान, ईराक और अफगानिस्तान में हुए अपने अनुभवों को जिस तरीक़े से व्यक्त करती हैं, उनमें प्रबलता एवं आक्रोश है, लेकिन साथ ही उनके लेखन में मौजूद स्वर बेहद संयत और सधे हुए हैं| मगर एक बात स्पष्ट तौर पर सामने आती है कि नासिरा शर्मा भारतीय लोकतांत्रिक धर्मनिरपेक्षीय ढांचे को ध्यान में रखते हुए ईरान के तात्कालिक हालातों का मूल्यांकन करती हैं| अगर हम ध्यान से देखें तो वर्तमान भारत के परिदृष्य में जिस तरह का कठमुल्लापन और रूढ़िवादिता हावी हो रही है, उसका इशारा नासिरा शर्मा अपने यात्रा-वृत्तांत में कर जाती हैं| पीड़ितों के पक्ष में खड़े हो कर वो अपनी बात कहती हैं| ये पीड़ित ईरान के हों, इराक़ के हों, अफ़ग़ानिस्तान

या पाकिस्तान के या भारत अथवा किसी और देश के हों| युद्ध के ख़िलाफ़ लड़ाई और संघर्ष को तेज़ करने की बात नासिरा शर्मा अपने लेखन में करती हैं| यह लेखन निःसंदेह जब-तब मील का पत्थर साबित होगा जब मध्य-पूर्व के देशों के संबंधों की चर्चा होगी|

4.4 यूरोप संबंधी यात्रा-वृत्तांत

श्रीरामवृक्ष बेनीपुरी:पैरों में पंख बाँधकर

'पैरों में पंख बाँधकर' नामक प्रसिद्ध यात्रा-वृत्तांत में श्रीरामवृक्ष बेनीपुरी ने यूरोपीय जीवन के चित्रों को उकेरा है| यात्रा-वृत्तांत का प्रारंभ लेखक भावुकता से पगी और कल्पना की रंगीन उड़ान से शुरू करता है| छोटे-छोटे वाक्य, वाक्यांश, तद्भव और तत्सम, फारसी-अरबी के शब्दों से बने-बिगड़े जनपदीय शब्दों और मुहावरों के प्रयोग एवं सँवरी हुई भाषा से यात्रा-वृत्तांत रोचक हो गया है| इस यात्रा-वृत्तांत में श्रीरामवृक्ष बेनीपुरी ने इंग्लैंड, स्कॉटलैंड, स्विट्जर्लैंड और फ्रांस की सामाजिक परिस्थितियों एवं परिवेश, जीवन-शैली और उनकी उपलब्धियों को अपनी अनोखी शैली के द्वारा उभारने का प्रयास किया है| श्रीरामवृक्ष बेनीपुरी का कवि हृदय वहाँ के पर्वत, झील, नदी, सागर तट की भूमि और हरियाली के सौंदर्य को देखकर विचलित होने लगता है| उनके यात्रा-वृत्तांत में वीरता, संस्कृति-प्रेम, प्रकृति-प्रेम, इश्वर-प्रेम, देश-प्रेम आदि विशेषताओं का चित्रण हुआ है| लेखक ने यूरोप के लोगों, वहाँ की परिस्थितियों, जीवन-शैलियों और प्राकृतिक वातावरण का वर्णन किया है|

श्रीरामवृक्ष बेनीपुरी अपने यात्रा-वृत्तांत से एक बेहतर शुरुआत करते हैं| डायरी शैली में ब्रिटेन, स्विट्जर्लैंड तथा पेरिस की यात्राओं को अपनी जिन्दादिली से प्राणवान बनाकर प्रस्तुत करते हैं| यात्रा के सीधे वर्णन की जगह कलात्मक अभिव्यंजना करते हैं| उनके यात्रा-वृत्तांत के माध्यम से यह सन्देश मिलता है कि अब

हम स्वतंत्र हुए हैं, इसलिए अब विकास की तरफ तेजी से बढ़ें| श्रीरामवृक्ष बेनीपुरी साहित्यिक, भावात्मक, एवं कलात्मक यात्रा-वृत्तांतकार की श्रेणी में आते हैं| उनके यात्रा-वृत्तांत में आनंद की भावना, कलात्मकता एवं भावुकता देखते ही बनती है| डॉ. मुरारीलाल शर्मा ने उनके यात्रा-वृत्तांत पर विचार करते हुए लिखा है- “बेनीपुरी के यात्रा-साहित्य में निबंधों का लालित्य, व्यक्तित्व की स्पष्ट छाप और मस्ती सर्वत्र दिखाई देती है|”[54]

श्रीरामवृक्ष बेनीपुरी जी के यात्रा-वृत्तांत में प्रकृति-चित्रण में सौंदर्य-बोध, वर्णनों में चित्रात्मकता, यूरोपीय रंगमंच की मस्ती, स्त्री सौंदर्य का खुलापन और यूरोपीय जातियों की विशेषता आदि की अनुपम अभिव्यक्ति मिलती है| इस यात्रा-वृत्तांत में उनकी भावुकता और संवेदना की स्थिति विशेष रूप में प्रकट हुई है| लेखक के विदेश में रहते हुए भी अपनों के प्रति प्रेम व श्रद्धा की भावना उनके यात्रा-वृत्तांत में प्रकट हुई है| श्रीरामवृक्ष बेनीपुरी ने फ़्रांस में सांस्कृतिक स्वाधीनता कांग्रेस के सम्मेलन में भाग लिया था और वहाँ पर आए देश-विदेश के साहित्यकारों एवं कलाकारों से भेंट की और उनके चरित्र की छवियाँ भी इस यात्रा-वृत्तांत में अंकित की हैं|

श्रीरामवृक्ष बेनीपुरी ने अपने यात्रा-वृत्तांत में यूरोपीय स्त्री के सौंदर्य का मांसल एवं श्रृंगारिक वर्णन किया है| स्त्री सौंदर्य का वर्णन के दौरान उनकी कवित्व प्रतिभा फूट पड़ी है| लेखक ने यूरोप की स्त्री सौंदर्य का वर्णन करते हुए लिखा है- “तट की रेत पर यहाँ-वहाँ गुलाब खिल रहे हैं| ये अधनंगी लडकियाँ-सिर्फ कमर और छाती के कुछ हिस्से पर झीने वस्त्र| झीने वस्त्र, जो ढंकते नहीं और उभारते हैं! कितना सुडौल शरीर है इनका-अंग-अंग कसे, कसे अंगों में जैसे जवानी कसमसा रही हो| पानी में भिंगोकर अब धूप में सुखा रही हैं-जवानी की तलवार पर पानी चढ़ा रही हैं! सुनहले बाल बिखरे हैं| गोल-गोल बाहें, पुष्ट-पुष्ट जाँघें| लगता है, मोम की पुतलियाँ ढालकर सूखने को रख दी गई हों! उफ, मनु की संतति कितनी सुन्दर होती है!”[55]

लेखक ने स्पष्ट रूप से भारतीय आधुनिक महिलाओं और अपनी पत्नी के व्यक्तिगत चरित्र को भी प्रकट किया है| लेखक को प्रवास के दौरान जब सुपारी में

अपनी पत्नी की चूड़ी का टुकड़ा मिलता है तो अपनी पत्नी के प्रति प्रेम एवं श्रद्धा फूट पड़ती है, जिसमें पत्नी के चारित्रिक गुणों की प्रशंसा इन शब्दों में देखिए- “अहा, मैं कितना बड़ा सौभाग्यशाली हूँ! रानी ऐसी पत्नी मुझे मिली है! अपनी जवानी देकर उसने मुझे जवान रखा है| उस दिन दिल्ली में लेडी नी को आश्चर्य हुआ था कि मैं उनचास वर्ष का हूँ, अभी उस दिन लन्दन में उस फ्रेंच लड़की ने कहा था-आपकी उम्र पैंतीस और चालीस के बीच हो सकती है! मुझे दस-पंद्रह वर्ष छोटा करके अपने को जिसने दस-पंद्रह वर्ष अधिक बूढ़ी बना लिया है| उसकी स्मृति में मेरा सिर क्यों नहीं झुक जाए? रानी तुम धन्य हो!”[56]

इस यात्रा-वृत्तांत में यूरोपवासियों, ईरानियों और पंजाबियों के सामूहिक चित्र भी दिखाई देते हैं, लेकिन ऐसा करते हुए लेखक का उद्देश्य इनके जातिगत गुणों व विशेषताओं को प्रकट करना ही रहा है| लेखक ने शेक्सपीयर, किट्स, ह्यूगो तथा शूर्पनखा आदि ऐतिहासिक चरित्रों का वर्णन अपने यात्रा-वृत्तांत में किया है| लेखक ने जहाँ-जहाँ रचना में समूह चरित्र प्रकट किए हैं, वहाँ-वहाँ लेखक का उद्देश्य यूरोप के परिवेश से भारतीय परिवेश की तुलना करना रहा है और अपने देश की स्थिति पर चिंता भी प्रकट की है| लेखक ने प्रसंगानुकूल ऐतिहासिक चरित्रों का भी वर्णन किया है| ऐसे चरित्रों के वर्णन में लेखक द्वारा पेरिस के राजभवन को देखकर लुई चौदहवें की याद आती है| राजा के प्रति संवेदना से युक्त उनका वर्णन देखें- “बेचारा लुई चौदहवाँ! उसने सोचा होगा, चलो पेरिस के कोलाहलों से दूर, बहुत दूर एक रमणीक स्थान पर एक अति सुन्दर प्रासाद बनाकर जिंदगी के सभी साध्य-असाध्य सुख लूटें और उसकी फैशनेबुल और खूबसूरत रानी-जो उसकी वासनाओं की आग में सदा घी डालती रही और जो स्वयं एक अग्निकुण्ड बन गई, जिसमें लुई को स्वाहा होना पड़ा|”[57]

लेखक ने यूरोप के ऐतिहासिक भवनों, स्थलों, संग्रहालयों से जुड़े इतिहास को भी प्रस्तुत किया है| उन्होंने स्विट्जलैंड के प्राकृतिक सौंदर्य का अद्भुत वर्णन किया है| ज्यूरिख शहर के अप्रतिम सौंदर्य पर लेखक मुग्ध है| इस शहर पर रोम साम्राज्य की छाप है| यह शहर उद्योग और वाणिज्य का केंद्र है| लेखक ने लिखा है कि यूरोप के दोनों महायुद्धों में अगर कोई देश बचा तो सिर्फ स्विट्जलैंड| उन्होंने

विश्वयुद्ध की विभीषिका का भी वर्णन किया है| पेरिस के अद्‌भुत सौंदर्य का वर्णन लेखक ने किया है| वहाँ के विश्वविद्यालय, अधिक उम्र में भी जवान दीखते स्त्री-पुरुष, पार्क, उद्यान, बाग़-बगीचे, फूल, रंगमच, कैसिनो, ओपेरा, नेपोलियन की भव्य मूर्ति, संग्रहालय, शां जिलैजे यानी 'स्वर्ग का पथ', नौत्रदां और लग्जमबर्ग वाटिका, नैश बिहार आदि का वर्णन किया है| जिनेवा स्विट्जलैंड की श्रृंगार भूमि है| लेखक ने वहाँ की सुंदर बस्तियां, बड़े भवन, मनोरम झील, पहाड़, गिरिजाघर, ओपेराघर, म्यूजियम, पुस्तकालय, टाउनहॉल, रेस्तरां आदि का चित्रण किया है|

लंदन के ऐतिहासिक स्मारकों और इमारतें इसकी पौराणिकता को भी पुष्ट करते हैं| लेखक ने वेस्ट मिन्स्टर, वाइट हॉल, डाउनिंग स्ट्रीट, ट्राफ़लगर स्कवायर, बकिंघम पैलेस, गिल्ड हॉल, इन्स ऑफ़ कोर्ट, काउंटी हॉल, वहाँ के गाँव, खेत, खलिहान, पशु, ट्रेन, बस, ब्रिटिश म्यूजियम, लंदन यूनिवर्सिटी आदि का वर्णन अपने यात्रा-वृत्तांत में किया है| उन्होंने एडिनबरा का राजमहल, एडिनबरा का सबसे पुराना किला, चित्रकला, स्थापत्य-कला, मूर्ति-कला का वर्णन किया है| लंदन के स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय को देखने के बाद लेखक के हृदय में नालंदा विश्वविद्यालय के प्रति टिस साफ़ झलकती है| उन्होंने ऑक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय का वर्णन करते हुए लिखा है- "इंग्लैंड की इस हृदयस्थली की हरीतिमा का आनंद लेते हम ऑक्सफ़ोर्ड पहुँचे| ऑक्सफ़ोर्ड जाते ही नालंदा की याद आ गई| नालंदा की प्रारंभिक रूपरेखा ही ऑक्सफ़ोर्ड की भी रही है| वहाँ के बौद्ध विहार ही ज्ञान के केंद्र बन गए| यहाँ भी ईसाई-पादरियों ने ही इस ज्ञानपीठ का श्रीगणेश किया| अतः धर्म और ज्ञान का दोनों में ही एक-सा सम्मिश्रण हुआ था| नालंदा में हर जगह बुद्ध की मूर्ति-यहाँ हर जगह चर्च और ईसा|"[58]

श्रीरामवृक्ष बेनीपुरी ने अपने यात्रा-वृत्तांत मे प्राचीन हिन्दू संस्कृति का वर्णन किया है| हिन्दुओं से जुड़े अनेक संस्कार, मान्यताएँ, प्रथाएँ, जीवन-पद्धतियों, खान-पान आदि का वर्णन किया है| पौराणिक तीर्थ स्थलों से जुड़े कथाएँ, मान्यताएँ, विश्वासों, रहस्यों का वर्णन किया है| बौद्ध धर्म से जुड़े हुए लोगों के संस्कार, मान्यताओं का भी परिचय मिलता है| उन्होंने भारतीय परिवेश और यूरोपीय परिवेश की तुलना की है और यूरोप की संस्कृति एवं परंपराओं पर अपनी प्रतिक्रिया

व्यक्त की है| उनके यात्रा-वृत्तांत में मस्ती, उल्लास के साथ जगह-जगह उनके चिंतन को भी देखा जा सकता है- “उफ, हमें अपने देश को बनाना है; एक नया देश बनाना है, उसमें एक नया समाज बनाना है| एक ऐसा समाज जिसका हर पहलू सुखी हो, संपन्न हो, सबल हो, सुसभ्य? उसी समाज का सपना कल दिल्ली में उन हजारों आदमियों की आँखों में देखा; जो दूर-दूर से पैदल चलकर उस जुलूस में शामिल होने आए थे| मेरे पैरों में पंख बंधे थे, उनकी कल्पना में पंख लगे थे| पैरों के पंख झड़ सकते हैं, कल्पना के पंख न झड़े हैं, न झाड़े जा सकते हैं! वह नया समाज बनकर रहेगा, बनकर रहेगा!”[59]

इस यात्रा-वृत्तांत में न केवल अपने समय का वर्णन है, बल्कि इतिहास और संस्कृति के अनेक बिंदुओं को भी इसमें अभिव्यक्ति मिली है| विदेशी संदर्भों को भी उनके गद्य की सहजता बोझिल नहीं होने देती| इस यात्रा-वृत्तांत में सिर्फ अनुभूत सत्यों का विवरण नहीं है, बल्कि इसमें आत्मीयता के भावधारा का संचार इसे कलात्मक स्वरूप प्रदान करता है| यह यात्रा-वृत्तांत भावुकता, कलात्मकता, खुलापन एवं व्यक्तित्व प्रतिपादन की दृष्टि से संपन्न है| इस यात्रा-वृत्तांत में यात्रा के पड़ाव का विस्तारपूर्वक स्थूल वर्णन न होकर अंतर्मन का सूक्ष्म वर्णन मिलता है| उनके यात्रा-वृत्तांत में यात्रा किए गए देशों की संस्कृति, परंपराओं, इतिहास, राजनीति, धर्म आदि का चित्रण मिलता है| लेखक ने प्रकृति, जीवन-व्यवहार, प्रेम, त्याग, कर्तव्यपालन आदि का भी वर्णन किया है| इसमें वैचारिकता एवं चिंतन का भी समावेश है| संवेदना, अनुभूतियों और भावनात्मक परिस्थितियों के रंगों का भी मिश्रण मिलता है| इसमें आत्मीयता, सजीवता, चित्रात्मकता प्रभावी ढंग से प्रस्तुत है| यात्रा-वृत्तांत में विषय-वस्तु की विविधता और विवरणों की प्रधानता होते हुए भी रोचक एवं बहुपक्षीय जानकारी से परिपूर्ण है|

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन ‘अज्ञेय’:एक बूँद सहसा उछली

अज्ञेय को यूनेस्को द्वारा प्रायोजित यात्रा में यूरोप जाने का मौका मिला था और जब वहाँ चले गए तो सोचा कि इस यात्रा को सार्थक बनाया जाए| 'एक बूँद सहसा उछली' अज्ञेय की इसी विदेश यात्रा के मार्मिक अनुभवों को प्रस्तुत करता है| अज्ञेय के समस्त साहित्य में नए प्रयोग के प्रति एक आग्रह मिलता है और यात्रा-वृत्तांत भी इसका अपवाद नहीं है| यह यात्रा-वृत्तांत एक रूपक, ललित निबंध, आत्म-संलाप का मिला-जुला रूप है| उन्होंने कई बार यूरोप तथा अन्य देशों की यात्रा की है| अज्ञेय ने पुस्तक की भूमिका में ही स्पष्ट कर दिया है- “यह पुस्तक मार्गदर्शिका नहीं है कि इसके सहारे यूरोप की यात्रा करने वाला यह जान लेना चाहे कि कैसे वह कहाँ जा सकेगा, या कैसे मौसम के लिए कैसे कपड़े उसे ले जाने होंगे, या कि कहाँ कितने में उसका खर्चा चल सकेगा, तो उसे निराशा होगी| जो यह जानना चाहते हों कि कहाँ से नाइलान की साड़ियाँ-या कैमरे, या घड़ियाँ या सेंट, या ऐसी दूसरी चीजें जो कि भारतवासी विदेशों से उन कला-वस्तुओं के एवज में लाते हैं जो कि विदेशी यहाँ से ले जाते हैं-कहाँ से किफायत में मिल जाएँगी, उनके भी काम की यह पुस्तक नहीं होगी|”[60]

अज्ञेय ने अपने यात्रा-वृत्तांत में इटली के सौंदर्य का अद्भुत वर्णन किया है| इटली में प्राचीन स्मृति स्तंभों को सुरक्षित रखा गया है| अज्ञेय ने लिखा कि रोम में सभी सुरक्षित हैं, एक ओर अत्याधुनिक रेलवे स्टेशन को लेकर रोमवासी गौरव का अनुभव करते हैं तो प्राचीन पुरावस्तुओं को लेकर भी वे वैसे ही गौरव का अनुभव करते हैं| अज्ञेय यह सोचकर वेदना का अनुभव करते हैं कि हमने दिल्ली की पहाड़ियों को सपाट बना कर अच्छा नहीं किया| इटली का ही एक नगर है फिरेंजे जिसे अंग्रेजी में फ्लोरेंस कहा गया है| इस यात्रा-वृत्तांत में इसी को अज्ञेय ने यूरोप की पुष्पावती कहा है| फिरेंजे के उद्यान, वहाँ के पुल के दोनों ओर स्थित दुकानों की पंक्तियाँ, उन दुकानों में उपलब्ध विभिन्न आकर्षक वस्तुएँ, वहाँ से दृश्यमान खूबसूरत बलखाती हुई नदी कवि को मंत्रमुग्ध बना देती है|

अज्ञेय मूलतः कवि हैं और एक भावुक कवि जब इटली की खूबसूरत राजधानी रोम को, वहाँ की अट्टालिकाओं, सड़कों और आकर्षक बगीचों को देखता है तो और भावुक हो जाता है| अज्ञेय को रोम बायरन के द्वारा देखे गए रोम के समान ही आकर्षक लगता है| रोम के सौंदर्य को देख बायरन ने गाया था- ‘रोम, मेरा देश,

आत्मा की नगरी/ सभी अनाथ हृदय से तेरी ओर मुड़ते हैं|' सात पहाड़ियों से घिरे रोम को देख अज्ञेय को दिल्ली की याद आती है| उन्होंने लिखा है- "नई विस्तृत 'नई दिल्ली' भी शायद रोम की सात पहाड़ियों के समान सुंदर हो सकती-यदि हमने सातों पहाड़ियों को खोदकर सपाट न कर दिया होता और यदि स्थापत्य की हमारी अपनी परंपरा होती! परम्परा के नाम पर जो सहस्त्र वर्ष या उससे अधिक पुराना है उसी को इंगित करने के हम इतने अभ्यस्त हो गये हैं कि इस बात को भूल ही जाते हैं कि परम्परा में जो पूर्वापरत्व निहित है वह तभी सार्थक हो सकता है जब कि 'पूर्व' के साथ 'अपर' भी हो| हम पूर्वोमुखता के नशे में अपने से यह पूछना ही भूल जाते हैं कि अपर क्या है|"[61]

उत्तरी यूरोप के शहरों में जब लेखक को नई स्थापत्य कला दिखी तो उसने यह कहकर उसे ठुकरा दिया कि इस में कुछ भी गर्व करने लायक नहीं है| लेखक ने भारतीय पुरातत्त्वविदों के बारे में भी कहा है कि पुरानी शैली के नाम पर कुछ सौ साल पहले के ही निर्माण हमें दिख पाते हैं| इटली के शहर फिरेंजे (फ्लोरेंस) और असीसी में घूमते हुए लेखक ने अनुभव किया कि वहाँ के भवनों में अभी भी पुरानी स्थापत्य कला जीवित है और ऐसा लगता है कि भवन निर्माण की नई शैली से लोग परिचित ही नहीं हैं| यूरोप के कई देशों में घूमने के बाद उन्हें लगा कि बाहरी समानता के आधार पर यूरोप को एक महाद्वीप कह देना ठीक है लेकिन उनमें अंतर को वहाँ जाकर, वहाँ के लोगों से बातें करके ही जाना जा सकता है| कई जगह लेखक यूरोपीय जीवनयापन पद्धति से संतुष्ट दिखा तो कई जगह उसने उनके दुखों का कारण भी बताया है|

कवि हृदय अज्ञेय ने यूरोप के जनजीवन की व्यस्तता और उल्लास को ही नहीं देखा, बल्कि मृत्यु और उदासी को भी देखा और मृत्युबोध से वे पीड़ित भी हुए| अज्ञेय को यह अनुभव स्वीडन की राजधानी स्टॉकहोम से उत्तरी दिशा में काफी दूरी पर स्थित एक जगह आबिस्को में हुआ| अधिकांश यात्री वहाँ मध्यरात्रि का सूर्य देखने जाते हैं| अज्ञेय को झिल्ली और मच्छरों की गुंजार सुनाई देती है| कुछ दिन का मेहमान झिल्ली वहाँ अत्यधिक ठंड के कारण ठिठुरकर मर जाता है| फिर भी उनका उल्लास उस अत्यधिक ठंड वन प्रदेश में जारी है| भारतीय दर्शन में मृत्यु को सहज रूप में अपनाने पर बल दिया गया है| अतः यह समस्या नहीं है| परंतु पाश्चात्य में

मृत्यु एक विकट समस्या है| इस यात्रा-वृत्तांत में और भी अनेक ऐसे प्रसंग मिल जाते हैं, जो अज्ञेय के मृत्युबोध और जीवनगत जिज्ञासा को प्रस्तुत करते हैं|

अज्ञेय ने यूरोप के दर्शनीय स्थानों की भी यात्रा की है| लेखक की यात्रा का उद्देश्य धार्मिक तीर्थयात्रा न होकर मनुष्य के अनुभवों की वृद्धि था, ज्ञानार्जन था| लेखक जिनकी समानताओं की पहले चर्चा हो चुकी होती है तो स्वाभाविक है कि लेखक के मन में भी इन तथाकथित समानताओं के बारे में कुछ विचार तो आएंगें| स्विट्ज़रलैंड और कश्मीर की तुलना को व्यर्थ बताते हुए अज्ञेय ने कहा है कि दोनों ही प्रदेशों का अपना सौंदर्य है और उनको यथा अवस्था में रखते हुए उनका अवलोकन किया जाए न कि यह सोचते हुए कि यदि यह पैमाना यहाँ होता तो यह भी उस जगह के जैसे लगता| उन्होंने लिखा है- “पहाड़ की ऊँचाई की तुलना में भी स्विट्जलैंड के पहाड़ उतने नगण्य तो नहीं हैं| और पहाड़ी समाजों में जो एक सहज आत्मसंतोष और स्वतः सम्पूर्णता होती है, वह जितनी हमारे देश के पहाड़ी समाजों पायी जा सकती है उतनी ही स्विट्जलैंड में भी मिलेगी| फिर भी भारत में प्रायः जो तुलना की जाती सुनी थी, उसे जब-जब मन ने दुहराया तब-तब कुछ द्विविधा हुई- यह कहने को मन नहीं हुआ कि स्विट्जलैंड यूरोप का कश्मीर है, या कि कश्मीर भारत का स्विट्जलैंड है| एक बार इतना कहा था कि कश्मीर के कुछ प्रदेशों को साबुन से खूब धो लें तो कुछ-कुछ स्विट्जलैंड-से लगने लगेंगे| यह बात किसी हद तक ठीक है, पर इसका भी पूरा अभिप्राय उसी की समझ में आ सकता है जिसने दोनों देशों को देखा हो|”[62]

कुछ ऐसे व्यक्ति जो यात्रा के दौरान लेखक के संपर्क में आते हैं और उसके आत्मीय बन जाते हैं, वे या तो अपनी चारित्रिक विशेषताओं के कारण लेखक को प्रभावित करते हैं या अपने आचरण से अपनी जाति, प्रान्त या देश का प्रतिनिधित्व करते हैं| ऐसे अनेक चरित्रों का समावेश यात्रा-वृत्तान्त में स्वतः ही हो जाता है| यद्यपि आंशिक छवि ही यात्रा-वृत्तान्त में उभरती है और इनका प्रभाव भी सिमित रहता है| ये चरित्र परिवेश के बीच से उभरकर आते हैं और उसी में विलीन हो जाते हैं, फिर भी ये व्यक्ति-चित्र परिवेश के रंगों को गहराई प्रदान करने तथा उसमें आत्मीयता का संचार करने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं| अज्ञेय बहुत से कवियों,

विचारकों और दार्शनिकों से मिले और वहाँ पर संसार और इस लोक से पर की बातों पर चर्चा की| मनुष्य के अस्तित्व के मूलभूत सवालों पर चर्चा की और अंजान लोगों से मिलकर बातें करने का आनंद लिया| लेखक ने दार्शनिक कार्ल यास्पर्स से अपनी मुलाकात का भी जिक्र किया है, जिसमें यास्पर्स पूछ बैठते हैं कि भारतीय दार्शनिकों में अपनी मौलिक विचारधारा का अभाव क्यों है? अज्ञेय ने यास्पर्स से अपनी मुलाकात का वर्णन करते हुए लिखा है- "यास्पर्स से मिलते ही एक स्निग्ध अनुकूल भाव मेरे भीतर उदित हुआ जो बातचीत के अंत तक बना रहा| अंतःसंघर्ष यूरोपीय चरित्र का अनिवार्य अंग जान पड़ता है और उसकी प्रतिच्छाया प्रत्येक यूरोपीय चेहरे पर दीख जाती है-बल्कि जब से यूरोप में उतरा था तब से बराबर यह प्रश्न मेरे मन में उठता रहा था कि ये सब लोग ऐसे संत्रस्त क्यों दीखते हैं, कौन-सा भीतरी संघर्ष इन्हें खाये जा रहा है-किस समस्या ने इनके चित्त को ऐसा विभाजित कर दिया है कि दोनों खंड बराबर एक-दूसरे से तने रहते हैं और किसी स्तर पर भी उनका मेल नहीं होता? यास्पर्स का चेहरा देखते ही पहली बात जो मेरे मन में आयी वह यही थी कि यह चेहरा दोहरा नहीं है, यह व्यक्तित्व विभाजित नहीं है| जैसा कि मैंने भेंट के बाद बाहर निकलकर अपनी द्विभाषिका से कहा था, "दिस मैन इज एट पीस विद हिमसेल्फ़|"[63]

इस यात्रा-वृत्तांत में अज्ञेय ने यूरोपीय जीवन-शैली की बात करने के क्रम में बताया है कि फ्रांस में हर एक आदमी किसी दूसरे के जीवन में दखल नहीं देता है, लेकिन लेखक को इसका कारण एक दूसरे की परवाह न होना लगा| वहीं लेखक ने स्वीडन आदि देशों में निजी स्वतंत्रता दूसरे व्यक्ति की सोच और कार्यों का सम्मान होना बताया है| यूरोप में जीवन की इकाई व्यक्ति होता है और भारत में यही इकाई समाज होता है, समाज से इतर व्यक्ति का कोई अस्तित्व नहीं है| लेखक ने इस बात को भी रेखांकित किया है कि पहले कला और धर्म समान विचारधारा से चलते थे| पंद्रहवीं शताब्दी के आसपास पुनरुत्थान (रेनेसां) के समय कला और धर्म अलग हो गए| कलाकार सिर्फ दस्तकार रह गया| उसके हुनर से दिखने में सुन्दर अनेक वस्तुएँ बनीं लेकिन उनमें वैचारिक शक्ति का अभाव था| अज्ञेय ने यात्रा-वृत्तांत के क्षेत्र में काफी योगदान दिया है| उनका मानना था-यायावर को भटकते हुए चालीस वर्ष हो गए किन्तु इस बीच न तो वह अपने पैरों तले घास जमने दे सका है, न ठाठ जमा सका है, न क्षितिज को कुछ निकट ला सका है, उसके तारे छूने की तो बात ही क्या?

यायावर न समझा है कि देवता भी जहाँ मंदिर में रूके कि शिला हो गए और प्राण संचार की पहली शर्त है कि गतिः गतिः गतिः|

नरेश मेहता:कितना अकेला आकाश

दुनिया भौगोलिक और सांस्कृतिक भिन्नताओं तथा अलग-अलग राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्थाओं के कारण कई धरातलों पर एक-दूसरे से भिन्न है और अपनी विशिष्ट पहचान रखती है| अलग-अलग स्थानों, प्रान्तों या देशों में रहने वाले लोगों का सामाजिक स्तर, रंग-रूप, वेश-भूषा, रहन-सहन, भाषा, संस्कार इत्यादि एक-दूसरे से पृथक तथा कभी-कभी सर्वथा विपरीत या असंपृक्त होते हैं, लेकिन तमाम असमानताओं के बावजूद कुछ ऐसे मूलभूत तत्त्व हैं, जो अलग-अलग परिवेश में पले-बढ़े मानव को एक सूत्र में बाँधते हैं| यात्रा-वृत्तांतकार अपने भ्रमण के क्रम में अलग-अलग परिवेशों के बीच विद्यमान असमानताओं और समानताओं के सूत्रों की पहचान करता है और साथ ही विभिन्न संस्कृतियों और व्यवस्थाओं का तुलनात्मक अध्ययन करता है| दूसरे देशों की प्रगति का अवलोकन करते हुए अपने देश की स्थिति को परखता है| दूसरी संस्कृति को समझते हुए उसके सामानांतर अपनी संस्कृति की विशेषताओं को भी अधिक बारीकी से देखता है|

'कितना अकेला आकाश' नामक यात्रा-वृत्तांत में प्राकृतिक और सांस्कृतिक छवियों की अपेक्षा राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, शैक्षणिक और अर्थशास्त्रीय विश्लेषणों पर अधिक बल दिया गया है| इसमें लेखक शुद्ध कला-यात्री न होकर एक सजग विश्लेषक भी बन गया है| इसमें सामाजिक और शैक्षणिक परिस्थितियाँ प्रधान हैं| नरेश मेहता ने अपने यात्रा-वृत्तांत में सामाजिक, नैतिक, ऐतिहासिक, आर्थिक, राजनीतिक, शैक्षणिक, भौगोलिक और सांस्कृतिक स्थितियों का वर्णन करते हुए अपने निजी विचारों से भी पाठकों को अवगत कराए हैं|

नरेश मेहता ने जब काव्य समारोह के समापन सत्र में अपनी कविता में 'रामायण' और 'महाभारत' की अपौरुषेयता, कालिदास की सांस्कृतिक रम्यता और

रवीन्द्रनाथ की अलभ्य भू-माधुरी का अपूर्व रसायन प्रस्तुत किया तब उन्हें भारत के पारंपरिक औदात्य, पवित्रता और सौंदर्य-चेतना का प्रतीक मानकर महान ग्रीक परंपरा की वाहक सेडोनियन जनता ने तालियों की गड़गड़ाहट से स्वागत करके अभिभूत कर दिया| उस क्षण मेहता जी को लगा कि देश का प्रतिनिधित्व करना कितना बड़ा आदर होता है| लेखक इस आदर को महसूस करता है और खुद को सौभाग्यशाली समझता है, जब लोगों ने इण्डिया, इंडिया बोलकर जयकारा लगाकर उनका स्वागत किया|

इस यात्रा में नरेश मेहता को सबसे ज्यादा दिक्कत भाषा को लेकर हुई, जिसका वर्णन उन्होंने इस यात्रा-वृत्तांत में किया है| वे जिनसे मिलते थे, उनमें से एक-दो ही ऐसे थे, जिन्हें अंग्रेजी आती थी| उन्हें न तो अन्य यूरोपीय भाषाओं की जानकारी थी और न ही हिंदी या अंग्रेजी आती थी| ऐसी स्थिति में लोगों का सारा अपनत्व उनकी आँखों में ही छलक रहा था| नरेश मेहता ने लिखा है कि हमारे देश में ऐसा भ्रम है कि पूरी दुनिया अंग्रेजी के पीछे भाग रही है जबकि हकीकत ऐसा नहीं है| आपको विदेश में भाषा और सम्प्रेषण की समस्या आती है| उन्होंने लिखा है- "अंग्रेजी के बारे में हमें हमारे नेताओं ने बड़ी ग़लतफ़हमी में रखा है| साम्यवादी देशों में तो अंग्रेजी न कुछ के बराबर ही मिलती है| हाँ, फ्रांसीसी भाषा अवश्य सम्मानजनक मानी जाती है|"[64]

नरेश मेहता ने यूरोप में स्थित मुस्लिम देश अल्बानिया के मुसलमानों और उनके जन-जीवन पर प्रकाश डाला है| यूरोप में होने के बावजूद अल्बानिया के मुसलमान एशियाई मुसलमान की तरह ही पिछड़े हैं| उनका व्यवहार भी काफी कट्टर है| वे खुद में कोई परिवर्तन करना नहीं चाहते हैं| अल्बानिया के बहाने लेखक ने दुनिया के मुसलमानों की धार्मिक कट्टरता पर विचार किया है| उन्होंने मध्य-पूर्व के इस्लामिक देशों की कट्टरता, उनकी जीवन-दृष्टि के बारे में लिखते हुए कहा है- "मध्य-पूर्व, जो कि इस्लाम प्रधान भूखंड है, केवल प्राकृतिक दृष्टि से ही रेगिस्तान नहीं है बल्कि यहाँ के लोगों, मूल्यों, जीवन-दृष्टि तथा ऐतिहासिक व्यक्तित्व तक में मार्दवहीन रेगिस्तान दीखता है| चिलचिलाता, बल्कि खूँख्वार भी| अपनी आदिम जीवन-पद्धतियाँ, मान्यताओं के ऐसे अमानवीय दुर्ग की उपस्थिति का भाव लगता है जिसमें केवल आतंक-ही-आतंक है| दुनिया में न जाने कितने परिवर्तन हुए पर यह

इस्लामी मध्य-पूर्व आज भी न जाने कैसे अपनी आदिमता को न केवल वहन करता है बल्कि किसी भी प्रकार के नयेपन को स्वीकार करने को तैयार ही नहीं लगता बल्कि आक्रामक रूप से अपने आदिम खानाबदोशीपन की मानसिकता को यथावत रखे हुए है| अपनी मान्यताओं के आदिम अंधेरों में सिवा अपनी एक पवित्र किताब और पैगम्बरी हठधर्मिता के किसी अन्य विचार को अपने पास नहीं फटकने देते हैं, लेकिन क्यों? इस मनोग्रंथि का क्या कारण है? इस्लाम क्यों इतना कट्टर है अपने आदिमपन के प्रति?"[65]

लेखक ने काव्य-गोष्ठी में उपस्थित सभी कवियों का परिचय, उनका व्यवहार-स्वभाव, उनकी रचना, उनके देश-काल की परिस्थिति, विभिन्न देशों के कवियों के काव्य-पाठ का तरीका, उनकी रचना और व्यवहार में धर्म की छाप, हिंदुस्तान के लेखन पर पश्चिम की अनुकृति का आरोप, यूरोप में गांधी और रवीन्द्रनाथ ठाकुर की ख्याति जैसे तमाम मुद्दों पर इस यात्रा-वृत्तांत में अपनी बात रखी है| उन्होंने लिखा है कि कई कवियों ने तो मंच से खुलकर कहा कि आपकी भाषा में आधुनिकता के नाम पर पश्चिम का जूठन लिखा जा रहा है| लेकिन दूसरी तरफ भारतीय लेखन परम्परा की तारीफ भी हुई| काव्य-गोष्ठी में हंगरी के कम्युनिस्ट कवि ने भारतीय लेखन परम्परा की काफी तारीफ की थी और कहा था कि दुनिया में अगर मानवता का कोई त्राता बन सकता है तो सिर्फ भारत| उन्होंने रामायण, महाभारत, कालिदास, रवीन्द्रनाथ की काफी सराहना की|

लेखक ने बेलग्रेड, ओहरिड, स्त्रूगा के ऐतिहासिक महत्त्व एवं संत सेफिया के प्रति सम्मान प्रकट किया है| उन्होंने वहाँ के इतिहास को भी उधेड़ा है| युगोस्लाविया पर मुसलमानों के दमनकारी, आक्रमणकारी और बर्बर हमले को रेखांकित करते हुए नरेश मेहता ने लिखा है- "ओहरिड का महत्त्व ज्यादा है| यहाँ रोमन काल के एक किले के परकोटे अभी भी खड़े थे| साथ ही तुर्किस्तान के आटोमन साम्राज्य के दुर्दमनीय दमन और आक्रमण को इस बस्ती ने काफी झेला था| मुसलमानों ने जिस नृशंस तरीके से इसे ध्वस्त किया था उसका कुछ-कुछ प्रभाव अभी भी यहाँ की पुरानी इमारतों पर स्पष्ट था| वैसे हम भारतीयों ने भी इस दुर्दान्तता को देखा और भोगा है परन्तु काल के साथ वह घाव किसी सीमा तक भर भी गया है जबकि यहाँ लोगों ने उसे आज भी जीवंत बनाये रखा है| वे भूले नहीं हैं

कि तुर्किस्तान ने इस भू-भाग का सबसे प्रसिद्ध संत सेफिया का चर्च ही विनष्ट और भ्रष्ट नहीं किया बल्कि कई सुंदर प्राचीन मठ तक ध्वस्त किए|"[66]

लेखक ने झील, पर्वत, पर्वतीय लूग्र का जीवन, हिल-स्टेशन आदि का भी वर्णन किया है| वहाँ की पहाड़ियाँ, जंगल, तम्बाकू के खेत, सेब के बागीचे, पुल, सड़क, सुरंग, पुस्तकालय, वहाँ के बाल-पुस्तकों की खासियत, स्थापत्य-कला, वास्तु-कला एवं स्मारक का सुंदर वर्णन लेखक ने किया है| वहाँ के चर्च की बनावट, उनकी कलाकृतियाँ, भित्ति-चित्र, मठ आदि का भी चित्रण किया है| पर्वतीय यात्रा, मेघ, बारिश, सूर्योदय, वृष्टि का भी मनमोहक वर्णन मिलता है| लेखक ने विभिन्न चरित्रों बुदिमका, एनी, सदिता, यासना, स्तेयानोव आदि के साथ बिताए अविस्मरनीय पलों का भी मार्मिक वर्णन किया है|

उन्होंने युगोस्लाविया के व्यवस्थित जीवन से हिंदुस्तान की अव्यवस्था की तुलना भी की है| उन्होंने वहाँ के लोगों के सौंदर्य-दृष्टि की तारीफ की है और अफ़सोस जताया है कि जो चीजें हमें उनसे सीखनी चाहिए थी, वे नहीं ग्रहण कर पाए, लेकिन जो नहीं ग्रहण करना था उसे आत्मसात कर लिए| लेखक ने यूगोस्लाविया की कम्युनिस्ट सत्ता की सराहना की है, लेकिन उन्होंने दूसरे देशों के कम्युनिस्ट सत्ता की तानाशाही एवं क्रूरता के बारे में भी लिखा है- "चूँकि मार्शल टीटो के ज़माने से ही युगोस्लाविया में कम्युनिज्म का वह क्रूर, अमानवीय स्वरूप नहीं था जैसा कि रूस, चीन या अन्यत्र देखा-सुना जाता रहा|"[67]

लेखक ने विदेश जाने से पूर्व की तैयारियों और अपनों से मिलना-बिछड़ना एवं सह-यात्रियों की स्मृतियों को भी याद किया है| रोम एअरपोर्ट का सौंदर्य, वीसा, पासपोर्ट, खाने-पीने की चीजों का वर्णन किया है| यूरोप में शाकाहारी लोगों को खाने-पीने की समस्या होती है, जिसका लेखक भी भुक्तभोगी रहा है| लेखक ने वहाँ के महिलाओं की स्वतंत्रता, उनकी सामाजिक स्थिति, उनका पोशाक, रंगमंच, नृत्य, संगीत का भी वर्णन किया है| निश्चय ही पचहत्तर पृष्ठों में समाप्त होने वाला यह यात्रा-वृत्तांत एक महान उपलब्धि है, जिसके माध्यम से हम विदेशों में होने वाली काव्य-संगोष्ठियों और साहित्यिक वैठकों की उपलब्धियों को समझ सकते हैं| नरेश मेहता ने गोष्ठी की तमाम विशेषताओं पर प्रकाश डाला है| यूरोप के लोगों के

व्यवस्थित जीवन के बारे में भी लेखक ने लिखा है| उनका मौज-मस्ती, घूमना-टहलना, काम, क्रिया-कलाप पर भी प्रकाश डाला है| इस यात्रा-वृत्तांत में लेखक ने युगोस्लाविया की समाजवादी व्यवस्था, वहाँ के रहन-सहन, खान-पान, शहर की बसावट, भवनों की व्यवस्था, रेस्त्रां, होटल, पार्क, लाउंज आदि का भी वर्णन किया है|

निर्मल वर्मा:चीड़ों पर चाँदनी

निर्मल वर्मा को वर्ष 1959 से 1972 तक यूरोप में प्रवास करने का अवसर मिला था और इस दौरान उन्होंने लगभग समूचे यूरोप की यात्रा करके वहाँ की भिन्न-भिन्न संस्कृतियों का नजदीक से परिचय प्राप्त किया था| निर्मल वर्मा का यूरोप प्रवास पूर्व नियोजित नहीं था बल्कि हुआ यह था कि उनके बड़े भाई प्रसिद्ध चित्रकार राम कुमार वर्मा की चित्र प्रदर्शनी प्राग में आयोजित हुई थी| इस प्रदर्शनी में प्राग के ओरिएंटल इंस्टीट्यूट के प्रसिद्ध विद्वान डॉसे ने राम कुमार से मुलाकात के दौरान कहा था कि हमें एक ऐसे भारतीय की तलाश है, जो प्राग आकर पहले चेक भाषा सीखे और फिर समकालीन चेक रचनाओं का हिंदी में अनुवाद का काम हाथ में ले| निर्मल वर्मा उन दिनों राज्यसभा में अनुवादक के पद से त्यागपत्र देकर एक विदेशी शब्दकोश पर काम कर रहे थे| बड़े भाई के माध्यम से उक्त प्रस्ताव मिलने पर वह शब्दकोश का काम बीच में छोड़कर अचानक प्राग चले गये| खुद निर्मल वर्मा मानते हैं कि उनके जीवन की ये जादुई किस्म की यात्राएँ किसी चमत्कार से कम नहीं हैं| प्रसिद्ध नाटककार ब्रेख्त द्वारा आइसलैंड चलने के प्रस्ताव को पहले उन्होंने गंभीरता से नहीं लिया| वे कहते हैं, भारत से यूरोप आना ही मुझे इतना असंभव नहीं लगा था जितना आइसलैंड जाने की कल्पना करना| मेरे लिए आइसलैंड की यात्रा आउट स्पेस को छूने से कम चमत्कारपूर्ण नहीं थी|

'उत्तरी रोशनियों की ओर' नामक स्मृतिखंड में संकलित चार यात्रा-वृत्त निर्मल वर्मा द्वारा अपने आइसलैंडी मित्रों के साथ आइसलैंड की यात्रा के दौरान लिखी गई विस्तृत डायरी पर आधारित है| डायरी लिखने का सुझाव और आग्रह

उनके यूरोपीय मित्रों का था| यह यात्रा-वृत्तांत उनके संवेदनशील सूक्ष्म पर्यवेक्षण के साक्षी हैं| इस यात्रा-वृत्तांत में ऐसे बहुत से प्रसंग आते हैं, जब उनका मन अनायास ही भारत और यूरोप की संस्कृतियों की तुलना करने लगता है| कहीं वह यूरोपीय संस्कृति की कुछ खूबियों को देखकर अभिभूत हो उठते है और उनका मन प्रश्न करने लगता है कि आखिर ऐसा अपनी भारतीय संस्कृति में भी क्यों नहीं है? तो कहीं वह दोनों संस्कृतियों के बीच कुछ अप्रत्याशित समानताओं को देखकर सुखद आश्चर्य में पड़ जाते हैं|

बर्लिन में ब्रेख्त का नाटक देखने के बाद उनका ध्यान भाषा और प्रेम के संबंध में आइसलैंड और भारत की कुछेक सूक्ष्म समरूपताओं पर जाता है और वे तुरंत दोनों की तुलना में तन्मय हो जाते हैं| उन्होंने लिखा है- "आइसलैंडी का दो चीजों के प्रति गहरा लगाव अद्‌भुत है-बीयर और अपनी भाषा| अपनी भाषा के प्रति ललक और प्यार मैंने अपने देश में बंगालियों में और यूरोप में आइसलैंड-निवासियों से अधिक और कहीं नहीं देखा, कुछ ऐसा संयोग रहा है कि भारत में मेरे सबसे स्नेही और आत्मीय मित्र बंगाली और यूरोप में आइसलैंडी रहे हैं-दोनों ही मंडलियों में घंटों गुजारने का अवसर मिला है और वे हमेशा आपस में अपनी अपनी भाषा में बातचीत करते है| मैंने कभी उनके बीच अपने को अकेला महसूस नहीं किया|"[68]

निर्मल वर्मा ने अपनी यात्रा के दौरान पूरी आत्मीयता से हमें अपने साथ रखा है| निर्मल वर्मा जर्मनी और कोपेनहेगन की यात्रा में आइसलैंड का वर्णन करते हैं, जिसके माध्यम से हमें वहाँ की संस्कृति तथा इतिहास और जीवन का परिचय घटनाओं के माध्यम से मिलता है| आइसलैंड की स्त्रियों की स्वाधीनता की बात भी उन्होंने की है| आइसलैंड के शांत और मिलनसार जन-जीवन पर भी गहरा प्रकाश डाला है| बादल, बर्फ, चाँदनी की अमूर्त-सी अनुभूति तो रहस्यमय है, जिसमें कुछ भय है रात्रि के अन्धकार का और तेज हवा का, किन्तु जो चाँदनी के सौंदर्य को और मधुर बना देता है| इस रहस्यमय अनुभूति को किस तरह मायावी रचना से, कितनी प्रभावी शैली से वे हमारे ह्रदय तक संप्रेषित कर देते हैं| प्रकृति के सौंदर्य की अनुभूति का वर्णन जैसा निर्मल वर्मा ने किया है, अन्यत्र दुर्लभ है| यात्रा-वृत्तांत को साहित्यिकता के ऊँचे शिखर तक पहुँचाने का उनका यही रहस्य है|

नोबेल पुरस्कार से सम्मानित आइसलैंडी लेखक लैक्सनेस को उनके आइसलैंडी मित्र और आम आइसलैंडी नागरिक जिस दोस्ताना अंदाज में याद करते हैं, ये निर्मल वर्मा को हैरत की बात लगती है| वे लिखते हैं- "आइसलैंड के अलावा कोई दूसरा देश नहीं देखा, जहाँ लोग इतने खुले, मुक्त और आत्मीय ढ़ंग से अपने सबसे महान लेखक के संबंध में बात करते हों-आदर और स्नेह का प्रदर्शन भी एक मुक्त व्यंग्यभाव द्वारा किया जा सकता है-बिना बार-बार 'श्री' और 'जी' का इस्तेमाल किए-यह कोई उनसे सीखे|"[69]

निर्मल वर्मा को कहीं-न-कहीं यह बात कचोटती जरूर है कि आखिर भारत के आमजन में इस तरह का सांस्कृतिक अनुराग क्यों नहीं है| भारतीय क्यों नहीं अपने महान लेखकों को मुक्त हृदय से याद कर पाते हैं| यद्यपि निर्मल वर्मा इसके कारण से भली भांति अवगत थे| उनका मानना है कि 'भूख और संस्कृति प्रेम' एक साथ नहीं रह सकते| जिन्हें गेहूँ पहले से नसीब है वही गुलाब की ओर ध्यान देता है| उनका कहना है कि हालाँकि हमारे 'एलिट वर्ग' में संस्कृति प्रेम तो है लेकिन आडंबरपूर्ण, खोखला और महज दिखावे के लिए है| ड्रांइग रूम की शोभा बढ़ाती एक से बढ़कर एक कलाकृतियाँ, महँगे पेंटिंग्स, खजुराहो-ताजमहल की यात्राएँ, खुशवंत सिंह, चेतन भगत और शोभा डे आदि की पुस्तकों की चर्चा यहाँ भी एलिट वर्ग में देखी जा सकती है, लेकिन निर्मल वर्मा जिस मुक्तहृदयता और आत्मीयता की बात करते हैं, वह इस वर्ग में नहीं पाई जाती|

निर्मल वर्मा दुनिया में सैर करते हुए जब शहरों पर निगाह डालते हैं तो सहज ही किसी लेखक की पंक्तियाँ उनकी आँखों के सामने आ जाती हैं| आइसलैंड जाने के दौरान प्राग के बारे में सोचते रहते हैं और उन्हें टॉलस्टॉय के 'वार एण्ड पीस' का कथन याद आता है- "जब हम किसी सुदूर यात्रा पर जाते हैं-आधी यात्रा पर पीछे छूटे हुए शहर की स्मृतियाँ मंडराती हैं, केवल आधा फासला पार करने के बाद ही हम उस स्थान के बारे में सोच पाते हैं जहाँ हम जा रहे हैं| किन्तु ऐसे लमहे भी होते हैं, जब हम बहुत थक जाते हैं-स्मृतियों से भी-और तब खाली आँखों के बीच का गुजरता हुआ रास्ता ही देखना भला लगता है...शायद, क्योंकि बीच का रास्ता हमेशा बीच में बना रहता है...स्मृतिहीन और दायित्व की पीड़ा से अलग|"[70]

निर्मल वर्मा ने इसमें क्षणभंगुर जीवन पर भी प्रकाश डाला है| उनका मानना है कि जीवन क्षण के साथ बदलता भी है और नहीं भी बदलता है| निर्मल वर्मा ने लिखा है 1914 की पेरिस तथा 1960-62 के पेरिस में दीखते विशाल अंतर के बावजूद भी कोई अंतर नहीं है| निर्मल वर्मा का यात्रा-वृत्तांत नवीनता का परिचायक है| उनके यात्रा-वृत्तांत में विषय-वस्तु एवं शिल्प के नवीन प्रयोग देखने को मिलते हैं| निर्मल वर्मा के गद्य साहित्य के बारे में डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी ने लिखा है- “निर्मल वर्मा के गद्य में कहानी, निबंध, यात्रा-वृत्त और डायरी की समस्त विधाएँ अपना अलगाव छोड़कर अपनी चिंतन क्षमता और सृजन-प्रक्रिया में समरस हो जाती हैं...आधुनिक समाज में गद्य से जो विविध अपेक्षाएँ की जाती हैं, वे यहाँ सब एक बारगी पूरी हो जाती है|”[71]

निर्मल वर्मा अपने यात्रा-वृत्तांत में केवल वर्णन अथवा तथ्यों का यथार्थ चित्रण न करके उसकी संवेदनात्मक अभिव्यक्ति करते हैं| लेखक ने यात्रा-वृत्तांत में चेकोस्लोवाकिया, जर्मनी, डेनमार्क, आस्ट्रिया, फ़्रांस, आयरलैंड आदि देशों की साहित्यिक गतिविधियों, विश्वयुद्ध के प्रभाव, वहाँ की परिस्थितियों और जीवन-शैलियों का वर्णन किया है| आयरलैंड के लोगों का साहित्यिक प्रेम का उल्लेख करते हुए लेखक ने लिखा है- “साहित्य के प्रति यह लगाव केवल बुद्धिजीवियों तक ही सीमित नहीं है, एक इंजिनियर से लेकर मछली पकड़ने वाले बूढ़े तक अपने देश के हर लेखक और कवि के भूत और भविष्य में कुछ इस तरह दिलचस्पी लेते हैं, जितना हमारे देश के युवक-युवतियां फ़िल्मी सितारों की जिन्दगी में|”[72]

निर्मल वर्मा ने अपने यात्रा-वृत्तांत में यूरोप के देशों एवं हिंदुस्तान की प्रकृति का सुन्दर चित्रण किया है| लेखक ने प्रकृति को कहीं पृष्ठभूमि के रूप में तो कहीं प्रमुखता से चित्रित किया है| लेखक के प्रकृति चित्रण में काव्यात्मक, आलंकारिक, कलात्मक, कल्पनात्मक, एवं बिम्बात्मक रूप की विशेषता सर्वत्र दिखाई पड़ती है| लेखक ने प्रकृति को एक गुरु के रूप में प्रकट किया है, जिससे लेखक जीवन जीने की कला सीखता है| निर्मल वर्मा ने प्रकृति को दार्शनिक रूप में भी प्रकट किया है| लेखक प्रकृति के सानिध्य में रहते हुए उसमें विराट बोध के दर्शन करता है| उन्होंने प्रकृति को उपदेशात्मक रूप में भी चित्रित किया है जो मनुष्य के

लिए अनेक सन्देश प्रदान करती है| लेखक ने प्रकृति के उदार रूप को भी चित्रित किया है, जो मनुष्य में उदात्त भावना व सकारात्मक दृष्टिकोण को पैदा करती है और मानवता एवं दया की सृष्टि करती है|

युद्ध की विभीषिका और द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद की जर्मनी का आँखों देखा हाल का भी वर्णन इस यात्रा-वृत्तांत में मिलता है| वहाँ के समाज में व्याप्त घुटन और पीड़ा की छाप स्पष्ट देखने को मिलती है| इस यात्रा-वृत्तांत में पूर्वी बर्लिन तथा पश्चिमी बर्लिन के जीवन की विसंगतियों तथा विशेषताओं की तुलना भी मिलती है| उनकी बर्लिन यात्रा की अनुभूतियाँ ब्रेख्त और एक उदास नगर के द्वारा पाठक को आनंद भी देती हैं और झकझोरती भी हैं| निर्मल वर्मा के यात्रा-वृत्तांत में सर्वत्र उनके चिन्तनशील व्यक्तित्व का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है| उन्होंने अपने यात्रा-वृत्तांत में अपने चिंतन व विचारों को प्रमुखता से उजागर किया है| निर्मल वर्मा ने अपने यात्रा-वृत्तांत में यूरोपीय जीवन के चित्रों को उकेरा है| उनके यात्रा-वृत्तांत में न केवल अपने समय का वर्णन है, बल्कि इतिहास और संस्कृति के अनेक बिंदुओं को भी इसमें अभिव्यक्ति मिली है| विदेशी संदर्भों को भी उनके गद्य की सहजता बोझिल नहीं होने देती| इस यात्रा-वृत्तांत में जैसे सचमुच रहस्यमयी किरणें चीड़ों के वक्ष पर खेलती हैं तथा वातावरण कण-कण को प्राणवंत बना देती हैं| यह वर्णन यात्रा-वृत्तांत को साहित्यिकता के ऊँचे शिखर पर ले जाता है|

गरिमा श्रीवास्तव:देह ही देश

अपने दो साल के क्रोएशिया प्रवास के दौरान गरिमा श्रीवास्तव ने युगोस्लाविया विखंडन में हताहत हुए आख्यानों को अपने यात्रा-वृत्तांत में दर्ज करने की कोशिश की है| यह यात्रा-वृत्तांत वस्तुतः रक्तरंजित स्मृतियों का तीखा और सच्चा बयान है, जो सर्ब-क्रोआती-बोस्नियाई संघर्ष के दौरान वहाँ के स्त्री जीवन की विभीषिका और विवशता को परत-दर-परत खोलता नज़र आता है| इस संघर्ष में भीषण रक्तपात

हुआ और लगभग बीस लाख लोग शरणार्थी हो गए| क्रोएशिया और बोस्निया के खिलाफ़ सर्बिया के पूरे युद्ध का एक ही उद्देश्य था कि यहाँ के नागरिकों को इतना प्रताड़ित किया जाए कि वो अपनी जमीन और देश छोड़कर चले जाएँ और विस्तृत सर्बिया का सपना पूरा हो सके| सामूहिक हत्या, व्यवस्थित बलात्कार और यातना शिविर भी इसी सोची समझी रणनीति के तहत बनाए गए और औरतों को एक कॉमोडिटी के रूप में इस्तेमाल किया गया| सर्ब कैम्प रातों रात 'रेप कैम्पों' में तब्दील हो गए और क्रोआती बोस्नियाई औरतें योनिओं में सिमट आईं| फ़िर शुरु हुआ शारीरिक और मानसिक प्रताड़ना का घृणित खेल|

यह यात्रा-वृत्तांत अप्रत्याशित रूप से पाठक को उन यात्राओं पर ले चलती हैं जहाँ यातनाएँ हैं, हत्याएँ हैं, क्रूरता है, सिहरन है, विचलन है, विक्षिप्ति है, एक ऐसी यात्रा जहाँ हर क़दम पर पाठक की संवेदनाएँ सुन्न पड़ती जाती हैं, जड़ हो जाती हैं बौद्धिकता| पाठक रुकता है, झिझकता है, फिर सम्भल कर आगे बढ़ता है और फिर एक हठात सा सच सामने आकर खड़ा हो जाता है| गरिमा श्रीवास्तव ने अपने यात्रा-वृत्तांत में लिखा है- "उसे बाद में पाट्रीजन स्पोर्ट्स हॉल में, अलग-अलग उम्र की लगभग साठ अन्य स्त्रियों के साथ बंधक बनाकर रखा गया| वे बारी-बारी सर्ब सैनिकों द्वारा ले जाई जातीं और बलात्कार के बाद लुटी-पिटी घायल अवस्था में स्पोर्ट्स हॉल में बंद कर दी जातीं| सर्ब सेनाओं ने घरों, दफ्तरों और कई स्कूलों की इमारतों को यातना-शिविरों में बदल डाला था| एक बोस्नियाई स्त्री ने बताया कि पहले दिन हमारे घर पर कब्ज़ा करके परिवार के मर्दों को खूब पीटा गया| मेरी माँ कहीं भाग गयी-बाद में भी उसका कुछ पता नहीं चल पाया, बहुत ढूँढा हमने| वे मुझे नोचने, खसोटने लगे| डर और दर्द से मेरी चेतना लुप्त हो गयी...जब जगी तो मैं पूरी तरह नंगी और खून से सनी हुई फ़र्श पर पड़ी थी...यही हाल मेरी भाभी का भी था...मैं जान गयी कि मेरा बलात्कार हुआ है...कोने में मेरी सास बच्चे को गोद में लिए रो रही थी|"[73]

युद्ध में बलात्कार को हमेशा से ही एक हथियार के तौर पर इस्तेमाल किया जाता रहा है| पाकिस्तानी सैनिकों द्वारा बांग्लादेशी औरतों का बलात्कार हो या युगांडा व ईरान में औरतों का यौन शोषण या सर्बों द्वारा क्रोआतियों, बोस्नियाईयों

पर बर्बरता, इतिहास ऐसे तमाम किस्सों से अटा पड़ा है| उग्रराष्ट्रवाद के नाम पर निर्वासन, उत्पीड़न एवं शोषण के ये आख्यान विभस्त और संक्रामक हैं| फिक्रेत, मेलिसा, दुष्का, लिलियान-हर नाम के साथ रूह कंपा देने वाली कहानी है| युद्ध क्या होता है यह वही जान सकता है जिसने युद्ध की विभीषिका झेली हो| इतिहास कहानी और संख्या बता सकता है, लेकिन बलात्कार की पीड़ा लिखना इतिहास के लिए शायद मुमकिन नहीं| सैनिकों का इतना क्रूरतम और भयंकर चेहरा भी हो सकता है, इसे इस यात्रा-वृत्तांत में देखा जा सकता है| उन्होंने जिस तरह से परत-दर-परत को खोलकर हमारे सामने रखा है, वह हमें आश्चर्य में डाल देता है|

यायावरी लेखन में बेहद नए आयाम रचता यह यात्रा-वृत्तांत भोगे गए यथार्थ का दस्तावेज़ है, जिनमें खून में सनी औरतें और बच्चियाँ हैं| क्षत-विक्षत और छलनी जिस्म हैं| जबह होते मासूम हैं और ज़बरन गर्भवती होती स्त्रियाँ भी, जो टॉयलेट में, तहख़ानों में और छावनियों में घसीटी जा रही हैं| जो धकेली जा रही हैं सरहदों के पार, बेची खरीदी जा रही हैं जानवरों की तरह| औरतें जो वहशियों से खुद को बचाने के लिए नदी में डूब रही हैं, जमीन में कब्र बनाकर छिप रही हैं| पढ़ते-पढ़ते आप पथराने लगते हैं तो कभी दर्द से फफक उठते हैं| जख्मी जिस्म के अनगिनत घाव आपके शरीर पर रिसने लगते हैं| अनुपस्थित होकर भी हर कहानी में आप उपस्थित होते हैं| एकदम मूक और मौन| धीरे-धीरे आप एक उदास उचाटपन में घिरते चले जाते हैं और तभी गरिमा श्रीवास्तव हमें कहानी से माकूल बैठती कुछ संदर्भित कविताएँ सुना देती हैं| शांतिनिकेतन और जाग्रेब के मनमोहक लुभावने परिवेश की सैर करा देती हैं| अपने दोस्तों और परिवार से मिला लाती हैं| घर-परिवार में अपने बिताए हुए बचपन की स्मृतियाँ दुहराने लगती हैं| अपनी माँ की अल्पकालिक मृत्यु का जिक्र कर हमारी आँखें भिगो जाती हैं- “लगभग पैंतीस वर्ष पहले वो कौन थी जो अपनी नन्हीं बेटियों को पढ़ते-लिखते देख सब कुछ भूल जाती थी, भूल जाती थी कि देबू बाबू की बेटी ने पुत्ररत्न पैदा नहीं किया, बेटियों को जी-जान से अंग्रेजी, गणित पढ़ाया करती, थाली में साग काटते, मटर छीलते पहाड़े रटवाया करती, भरी-चिनाट दोपहरी में हमें होमवर्क करवाया करती, लेख लिखा करती, प्रार्थनाएँ सिखाती| बत्तीस वर्ष चार महीने की कुल उम्र और तीन बेटियाँ,

बेटे का सपना आँखों में लिये-लिये दिल्ली के कपूर हॉस्पिटल से अधूरी कहानी खत्म|”[74]

यात्रा-वृत्तांत में लेखिका सिमोन द बउआर के समानांतर चलती दिखती हैं| स्त्रीवाद के वैचारिक और राजनीतिक विमर्श वक़्त के कालखंडों पर व्यावहारिक पक्ष की पड़ताल करते दिखते हैं| सिमोन द बउआर के आत्मकथात्मक उपन्यासों के साथ गरिमा श्रीवास्तव के ज़ाग्रेब के व्यापक जीवनानुभवों से होकर गुजरना दिलचस्प और रोमांचक लगता है| बोजैक जिनकी आठ वर्षीय बेटी और पत्नी के साथ सैनिकों ने इस हद तक क्रूरता दिखाई कि बेटी रक्तरंजित हो तड़पती रही और फिर भी सैनिक उसकी देह से खेलते रहे| वह मर गई और पत्नी कुछ समय बाद दिल की बीमारी और सदमे से मर गई| एमिना जिन्हें युद्ध के उपहार के रूप में गहरी शारीरिक और मानसिक पीड़ा के बाद दो जुड़वां बच्चों का गर्भ मिला| एक परिवार से दादी, चार बहुएँ और पाँच पोतियाँ सभी सर्ब सैनिकों के रेप का भाजन बनीं| पुरुषों और बच्चों को ज़िंदा जला दिया गया| परिवार की मंझली बहू ही एकमात्र पोती के साथ अब तक जीवित है| ऐसे ना जाने कितने मामले जिनका वर्णन इस किताब में पढ़ते हुए रूह रोती और शरीर थरथरा जाता है| गरिमा श्रीवास्तव लिखती हैं- “लिलियाना और बोजैक मेरे साथ हैं| बोजैक बोस्नियाई विद्यार्थी है, जो ज़ाग्रेब में पढता है साथ ही कुछ रोजगार भी| उसकी उम्र पचास के ऊपर ही है| उसके सामने ही उसकी आठ वर्षीया बेटी और पत्नी को बार-बार घर्षित किया गया| बच्ची तीन दिन तक रक्त में डूबी रही, सैनिक उससे खेलते रहे| इस बीच कब उसने अंतिम साँस ली, पता नहीं| बोजैक वह जगह दिखाता है जहाँ उसकी पत्नी दिल की बीमारी और अवसाद से मर गयी| ‘लाइफ मस्ट गो ऑन’ कहकर बोजैक फटी आँखों से हँसता है और अगला युद्ध कैम्प दिखाने चल पड़ता है| बच्ची को खोकर, बाद के वर्षों में उसकी पत्नी ईसा से अपने अनकिये पापों के लिए दिन भर क्षमा माँगा करती| उसका पाप क्या था? इसके उत्तर में बोजैक कहता है- “औरत होना...|”[75]

इस यात्रा-वृत्तांत में क्रोएशिया प्रवास की घटनाओं का जिक्र है| क्रोएशिया, बोस्निया की युद्ध पीड़िताओं के साथ हुए बर्बर और हैवानियत को इस यात्रा-वृत्तांत में दर्शाया गया है| यात्रा-वृत्तांत की शुरुआत एयरपोर्ट और फिर विमान की यात्रा से हुई है| फिर एक नए देश, नई बोली और खानपान के साथ आने वाली दिक्कतें, लेकिन जल्द ही लेखिका वहाँ की महिलाओं के साथ हुए वीभत्स अत्याचारों की

कहानियाँ कहने लगती हैं| गरिमा श्रीवास्तव द्वारा उनके क्रोएशिया प्रवास के दौरान लिखा गया यात्रा-वृत्तांत से गुजरते हुए सबसे पहली बात यह निकल कर आती कि इसमें जितने सूक्ष्म विवरण मौजूद हैं और गहराई में जाकर जिस प्रकार इतिहासबोध के साथ इसे रचा गया है, उससे साफ़ जाहिर होता है कि यह रचना एक बेहतर स्त्रीवादी विश्वदृष्टि के तहत की गई है| सच तो यह है कि इस यात्रा-वृत्तांत में भारतीय नज़रिए से यूरोपीय जीवन का यथार्थ देखने-दिखाने के साथ ही यूरोप में बैठकर भारत को समझने की भी एक सफल कोशिश है|

अनुराधा बेनीवाल:आजादी मेरा ब्रांड

अनुराधा बेनीवाल का स्त्रियों की दुखद स्थिति को लेकर, पुरुषों और समाज में सकारात्मक बदलाव की जरुरत को लेकर सरोकार गहरे हैं, जो जब तब किसी-न-किसी बहाने उनके ये सरोकार इस यात्रा-वृत्तांत में सामने आते हैं| अनुराधा बेनीवाल जानना चाहती हैं कि लाखों मील की दूरी पर बसे देशों में आखिर वह क्या चीज है, जो वहाँ की महिलाओं को इतनी आजादी, सुरक्षा, आत्मनिर्भरता, बेपरवाही और बेफिक्री देती है| अनुराधा बेनीवाल इस यात्रा-वृत्तांत के माध्यम से समाज से बहुत सारे सवाल पूछती हैं, आखिर एक लड़के को एक लड़की के साथ बेहतर जीवन जीने की तैयारी पहले से क्यों नहीं करनी चाहिए? जितनी सुरक्षा हमें अपने घर और अपने देश के भीतर नहीं मिलती, उससे कहीं ज्यादा सुरक्षित हम अंजान देश के अंजान लोगों के बीच क्यों हैं?

जितनी बड़ी दुनिया बाहर है, उतनी ही बड़ी एक दुनिया हमारे अन्दर भी है, इसलिए अपने ऋषियों-मुनियों की कहानियाँ सुनकर लगता है कि वे सिर्फ भीतर ही चले होंगे| यह यात्रा-वृत्तांत इन दोनों दुनिया को जोड़ता हुआ चलता है| यह महसूस कराते हुए कि भीतर की मंजिलों को हम बाहर चलते हुए भी छू सकते हैं,

बशर्ते अपने आप को लादकर न चल रहे हों| इस यात्रा-वृत्तांत में आप ज्ञान से भारी नहीं होते, बल्कि सफ़र से हल्के होते हैं| इस यात्रा-वृत्तांत में एक सामाजिक, सांस्कृतिक प्रश्न-यात्रा चलती है, जो शुरू इस बात से होती है कि आखिर कोई भारतीय लड़की अच्छी भारतीय लड़की के खांचों-सांचों की पवित्र कुंठाओं के जाल को क्यों नहीं तोड़ सकती? बाहर की इस यात्रा में वह भीतर के कई दुर्लभ पड़ावों से गुजरती है और अपना समाज और संस्कृति के पैमानों पर प्रश्न खड़ा करती है| जिंदगी के अनेक खुशनुमा पल इस सफ़र में अनुराधा बेनीवाल ने पकडे हैं और उत्सव की तरह जिया है| इनमें सबसे बड़ा उत्सव है निजता का, निजी स्पेस का, जो उन्हें भारत में नहीं दिखा| अनुराधा बेनीवाल समाज से स्त्रियों के सम्मान की अपेक्षा करती हैं और इसके लिए वे समाज में बदलाव की जरुरत भी महसूस करती हैं, जिसे लेखिका के शब्दों में समझा जा सकता है- "खैर, यह तो बात हुई बाहरी बदलाव की| क्या इंसान अन्दर से भी बदलता है? समाज बना तो हमसे ही है न? जो इतने सारे माँ-बाप और हम उनकी संतानें मिलकर यह समाज बनाते हैं, क्या हमारे बदलने से समाज बदल नहीं जाएगा? फिर यह इंतजार क्यों कि समाज बदलेगा तभी हम बदलेंगे? खैर, जरुरत के साथ-साथ बदलाव भी आएगा ही| अभी तो मैं बुडापेस्ट के समाज में थी और अकेले होकर भी सहज थी, डरी हुई नहीं थी| यह मेरे लिए किसी भी 'हनीमून' से कम न था! बल्कि उससे बढ़कर था, क्योंकि जहाँ जैसे थी, वह मैं खुद अकेली थी, बेफ़िक्र|"[76]

इस यात्रा-वृत्तांत के बारे में यह नहीं कहा जा सकता कि यह उच्च कोटि की किताब है, यहाँ तक कि ये भी कहा जा सकता है कि जरा कच्चा लिखा गया है, पर इस कच्चेपन के ही कारण आप इस यात्रा-वृत्तांत को एक ही सांस में पढ़ जाएँगे| शायद यह किताब छपने के लिए लिखी भी नहीं गयी थी| लेखिका ने अपने यूरोप ट्रिप को ऐसे बताया है जैसे उसने शायद अपनी डायरी में लिखा होगा| इस यात्रा-वृत्तांत का मकसद यह भी नहीं है कि आप इसे अपनी पसंदीदा किताबों की लिस्ट में चढ़ा लें, लेकिन यह जरूर होगा कि आप भी अपनी डायरी उठाएं और उसमें अपना ट्रिप प्लान करें और ट्रिप के बारे में लिखें| यह यात्रा-वृत्तांत थोडा बेहतर तरीके से जीने की सीख देता है|

यह यात्रा-वृत्तांत लड़कियों को संबोधित करता प्रतीत होता है| लेखिका खुद एक स्त्री हैं, इसलिए उनका खुद को जानना, पारिवारिक और व्यक्तिगत खुशियों के बीच अंतर करके देख पाना, उस अंतर की जकड़नों से उभरकर अपनी आजादी को ढूँढना और उस आजादी की कीमत पहचानने का भी नाम है 'आजादी मेरा ब्रांड'| लेखिका पूरी किताब में लड़कियों को आजादी पाने के लिए घर से निकलने का आह्वान करती हैं| वे लिखती हैं- "मैं अकेली थी और अपने-आप के साथ थी| मैंने अपना रास्ता ढूँढ़ा, अपने रहने के ठिकाने ढूँढ़े, अपनी मंजिलें, अपने साथी और अपनी तन्हाई, अपनी ख़ुशी और अपने गम भी-सबकुछ ढूँढ़ा| जैसलमेर से कुलधरा गाँव तक साइकिल चलाते हुए मुझे लगा कि जैसे मेरा दिल नाच रहा है| मैं रेत के टीलों पर बने रोड पर साइकिल चलाती जा रही थी-अकेले, एकदम अकेले और खुश थी! वह ख़ुशी किसी और पर निर्भर नहीं थी| वह बस मेरी थी| ख़ुशी अब मुझे अपने अंदर मिल गई थी| मैं पूरे एक साल भी घूम सकती थी और पूरी उम्र भी|"[77]

इस यात्रा-वृत्तांत की भाषा बहुत ही सरल और रोचक है, जो किसी को भी समझ में आ जाए| लेखन की शैली भी बहुत सराहनीय है| लेखिका लड़कियों की स्थिति को लेकर भारतीय समाज को लताड़ती हैं, वो भी काफ़ी सराहनीय है और इतने सलीके से कहती हैं कि पढ़ने वाला भी सोच में पड़ जाए| इस किताब में बात आवारगी, बेपरवाही, पर्यटन, विद्रोह और स्त्रीवाद से हटकर है| बात आजादगी और घुमक्कड़ी की है| बात आसमान में उड़ने की नहीं, धरती को छूने की है| इसमें दो परों वाली नहीं, दो पैरों वाली लड़की आजादी, आत्मनिर्भरता, आत्मविश्वास और आत्मचेष्टा के साथ अपने स्वांत को अलग-अलग स्थानों पर जी रही है| आम यात्रा-वृत्तांतों से जुदा, यह प्रयोगों और अनुभवों की किताब है| इस घुमक्कड़ी में भटकन नहीं है और नक्शा भी इंसान पर हावी नहीं है|

अनुराधा बेनीवाल ने इस यात्रा-वृत्तांत में उन चीजों को रेखांकित करने में कोई गुरेज नहीं किया, जिन्हें हम पुरानी परंपराओं और रूढ़ियों के कारण लिए चल रहे हैं और दुनिया में आए बदलावों की तरफ आँख बंद करके बैठे हैं| लेखिका ने

पुरुषवादी समाज की कूपमंडूकता पर भी कटाक्ष किया है| उसकी पुरातन सोच और संकीर्णता पर व्यंग्य करते हुए उन्होंने लिखा है- "और लड़के, उनका क्या? 'शरीफ' से 'शरीफ' लड़के को 'उस जगह' की जानकारी तो कम-से-कम होती ही है| जाएँ न जाएँ, अलग बात| इंडिया में जहाँ लीगल भी नहीं है, वहाँ भी मुमकिन है| मेरी पहचान में तो कम-से-कम ऐसा कोई न था, जिसने एक बार 'उस जगह' के दर्शन न किए हों| जो इंडिया में शराफ़त का लिबास ओढ़े रहते थे, उनको मैंने लंदन में नंगे फिरते देखा| जिन्हें बुधवार पेठ (पुणे) या जीबी रोड (दिल्ली) से घिन आती थी, वे बैंकॉक में घिनौने हो जाते हैं| नहीं-नहीं, यह बात नहीं है कि मैं उन्हें घिनौना समझती हूँ| अपनी-अपनी पसंद, वह अपनी जगह है| बस, जब शराफ़त का चोला पहनकर औरों को गरियाते हैं, तब दिक्कत होती है| कितनी बार तो मुझे खुद ऐसा लगा कि यह जिस्म का बाजार पुरुषों का भी होता तो एक चक्कर लगाया जा सकता था| नहीं? क्या हर्ज है!"[78]

इस यात्रा-वृत्तांत की रोचक बात यह भी है कि उन्हें आसरा देने वाले उनके अनूठे होस्ट| इन सबसे बेबाक मिलती विभिन्न मुद्दों पर बहस करती हुई शहर के म्यूजियम, रेड लाइट एरिया, शहर से बहती झील, घरों से होते हुए पहाड़ी रास्ते, अलग-अलग देश के अलग-अलग मौसम, संस्कृति, खान-पान, रहन-सहन सबकुछ का वर्णन करती लेखिका आगे बढ़ जाती हैं| अनुराधा बेनीवाल को रास्ते में लिफ्ट देने वाले पात्र हों या महँगी ट्रेन टिकट बुक कराने से पहले की झिझक, इन सबसे रोचक है लेखिका का विदेशी शहरों की गलियों में पैदल घूमना, कभी रास्ता भटक जाती थीं तो कभी किसी के गलत बताए रास्ते पर जाने के बाद लौटना या कभी रास्ता पता नहीं होने के कारण भी पहाड़ी पर यह सोचकर चढ़ जाना कि उतरना चढ़ने की अपेक्षा आसान रहेगा| ये कुछ ऐसे रोचक वर्णन हैं, जिनसे पाठक भी सोचता रह जाता है कि काश हम भी उन रास्तों में भटका करते| अनुराधा बेनीवाल ने लिखा है- "अब मुझे पहाड़ी से नीचे उतरना था| अँधेरा हो गया था और बारिश भी शुरू हो चुकी थी| कैसे उतरना है, कहाँ से बस जाएगी, कब आएगी, इसकी जानकारी मुझे नहीं थी| लेकिन बस जाएगी, यह पता था| पहाड़ी है तो रास्ता नीचे उतरने का एक ही होगा, यह सोचकर आगे की मुझे ज्यादा फ़िक्र नहीं थी| तभी पीछे से एक गाड़ी आती दिखाई देती है| नीचे आ रही है और नीचे है शहर, वहाँ से होस्ट के घर भी पहुँच जाऊँगी| मैंने हाथ बढ़ाकर लिफ्ट माँगी और गाड़ी रुक रही| बड़ी

गाड़ी लगती है| अंदर देखकर लगता है, जनाब गोल्फ-वोल्फ खेलकर आ रहे हैं| 'मुझे शहर छोड़ देंगे,' मैंने पूछा तो वे झट से मान गए| चलो, यह बढ़िया हुआ, बस का इंतजार भी नहीं करना पड़ा|"[79]

अनुराधा बेनीवाल ने इस किताब में यूरोप की यात्रा का वर्णन किया है| इस यात्रा-वृत्तांत में आजादी शब्द इस किताब को नया आयाम देता है| अनुराधा बेनीवाल अपनी यात्रा पेरिस से शुरू करती हैं और ब्रस्सल्स, एम्स्टर्डम, बर्लिन, प्राग, ब्रातिस्लावा, बुडापेस्ट, इंस्ब्रुक और बर्न होते हुए फिर पेरिस लौट आती हैं| यात्रा-वृत्तांत की लेखन शैली को देखकर नहीं लगता कि यह अनुराधा बेनीवाल की पहली किताब है| इसमें कहानी सुनाने का अंदाज रोचक है और जहाँ जरुरत हुई, वहाँ पाठक से सीधा संवाद करते हुए अपनी बात रख दी| इस यात्रा-वृत्तांत में लेखिका कभी भी एक घुमक्कड़ के ऊपर हावी नहीं हुईं और न ही घुमक्कड़ अपनी प्रस्तुति को लेकर बहुत चिंतित है| जो जैसा था, वैसा ही सामने आता प्रतीत होता है| अनुराधा बेनीवाल ने इस यात्रा-वृत्तांत में चर्चा ही नहीं की है बल्कि रास्ता भी दिखाया है, जिसका अनुसरण कर लड़कियों को आगे बढ़ना है|

पाद टिप्पणी

1. गोविन्द मिश्र:धुँध भरी सुर्खी, पृष्ठ-2
2. सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय':अरे यायावर रहेगा याद, पृष्ठ- 7
3. रेखा प्रवीण उप्रेती:हिंदी का यात्रा साहित्य(1960 से 1990 तक), पृष्ठ- 24
4. सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय':अरे यायावर रहेगा याद पृष्ठ-161-162
5. उपरिवत, पृष्ठ- 110
6. उपरिवत, पृष्ठ-141
7. विष्णु प्रभाकर:हँसते निर्झर:दहकती भट्ठी, पृष्ठ-7
8. उपरिवत, पृष्ठ- 35-36
9. उपरिवत, पृष्ठ- 57
10. उपरिवत, पृष्ठ- 86
11. मोहन राकेश:आखिरी चट्टान तक, पृष्ठ- 83
12. उपरिवत, पृष्ठ- 72
13. उपरिवत, पृष्ठ-14
14. उपरिवत, पृष्ठ- 101
15. अमृतलाल वेगड़:सौंदर्य की नदी नर्मदा, पृष्ठ- 175
16. सत्यदेव परिव्राजक:मेरी जर्मन यात्रा, पृष्ठ-106
17. अमृतलाल वेगड़:सौंदर्य की नदी नर्मदा, पृष्ठ- भूमिका
18. उपरिवत, पृष्ठ- 98-99
19. कृष्णनाथ:स्पीति में बारिश, पृष्ठ- 129

20. उपरिवत, पृष्ठ- 218

21. उपरिवत, पृष्ठ- 62-63

22. मृदुला गर्ग:कुछ अटके, कुछ भटके, पृष्ठ- xi

23. उपरिवत, पृष्ठ- 7

24. उपरिवत, पृष्ठ- 14

25. उपरिवत, पृष्ठ- 43-44

26. कहानियाँ सुनाती यात्राएँ:कुसुम खेमानी, पृष्ठ- (155-156)

27. उपरिवत, पृष्ठ- 7

28. उपरिवत, पृष्ठ- 100-101

29. वह भी कोई देस है महराज:अनिल यादव, पृष्ठ- 12

30. उपरिवत, पृष्ठ- 27
31. उपरिवत, पृष्ठ- 75
32. उमेश पंत:इनरलाइन पास, पृष्ठ- 29
33. उपरिवत, पृष्ठ- 38-39
34. उपरिवत पृष्ठ- 62
35. ओम थानवी:मुअनजोदड़ो, पृष्ठ- 49-50
36. उपरिवत, पृष्ठ- 16
37. उपरिवत, पृष्ठ- 109

38. उपरिवत, पृष्ठ- 38
39. राहुल सांकृत्यायन:एशिया के दुर्गम भूखंडों में, पृष्ठ- 76
40. उपरिवत, पृष्ठ- 146
41. उपरिवत, पृष्ठ- 186
42. यायावर साहित्य शास्त्र:श्यामसिंह 'शशि', पृष्ठ- 14
43. मधुरेश:इन्द्रप्रस्थ भारती, पृष्ठ- 136
44. लोहे की दीवार के दोनों ओर:यशपाल, पृष्ठ- 57
45. उपरिवत, पृष्ठ- 12
46. उपरिवत, पृष्ठ- 156
47. असगर वजाहत:चलते तो अच्छा था, पृष्ठ- 18
48. उपरिवत, पृष्ठ- 108
49. उपरिवत, पृष्ठ- 27
50. उपरिवत, पृष्ठ- 84-85
51. नासिरा शर्मा:जहाँ फव्वारे लहू रोते हैं, पृष्ठ- 90
52. उपरिवत, पृष्ठ- 115
53. उपरिवत, पृष्ठ- 369
54. मुरारीलाल शर्मा:हिंदी यात्रा-साहित्य:स्वरूप और विकास, पृष्ठ- 50
55. पैरों में पंख बाँधकर:श्रीरामवृक्ष बेनीपुरी, पृष्ठ- 206
56. उपरिवत, पृष्ठ- 110
57. उपरिवत, पृष्ठ- 199

58. उपरिवत, पृष्ठ-144

59. उपरिवत, पृष्ठ- 212

60. सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय':एक बूँद सहसा उछली, पृष्ठ- 7

61. उपरिवत ,पृष्ठ- 24

62. उपरिवत, पृष्ठ- 46

63. उपरिवत, पृष्ठ- 53

64. नरेश मेहता:कितना अकेला आकाश, पृष्ठ- 16

65. उपरिवत, पृष्ठ- 8

66. उपरिवत, पृष्ठ- 37

67. उपरिवत, पृष्ठ- 30

68. निर्मल वर्मा:चीड़ों पर चाँदनी, पृष्ठ- 24

69. उपरिवत, पृष्ठ- 26

70. उपरिवत, पृष्ठ- 17

71. निर्मल वर्मा:धुंध से उठती धुन, पृष्ठ- मुख्य पृष्ठ से

72. निर्मल वर्मा:चीड़ों पर चाँदनी, पृष्ठ- 85

73. गरिमा श्रीवास्तव:देह ही देश, पृष्ठ- 62-63

74. उपरिवत, पृष्ठ- 95-96

75. उपरिवत, पृष्ठ- 59-60

76. अनुराधा बेनीवाल:आजादी मेरा ब्रांड, पृष्ठ- 154

77. उपरिवत, पृष्ठ- 170

78. उपरिवत, पृष्ठ- 76

79. उपरिवत, पृष्ठ- 164

उपसंहार

मनुष्य की प्रगति का इतिहास यायावरी वृत्ति में ही है| दुनिया का बड़ा-से-बड़ा यायावर साहित्यिक कोटि का रहा है- फाहियान, ह्वेनसांग, हुट्टली, इत्सिंग, बर्नियर, मार्कोपोलो, अलबरूनी, इब्नबतूता आदि जितने प्रसिद्ध घुमक्कड़ या देश-विदेश के अन्वेषक हुए हैं सब साहित्यिक यायावर जान पड़ते हैं| महावीर जैन, गौतम बुद्ध, इसा मसीह और रामानुजाचार्य जैसे महान दार्शनिकों ने भी घूम-घूम कर अपने ज्ञान का सृजन किया| दयानन्द सरस्वती ने भी पुस्तक लिखते, शास्त्रार्थ करते हुए भारत का भ्रमण किया था| समुद्र यात्रा करने की जो बंदिशे थीं, उन्हें भी तोड़ा| भारतीय रूढ़िवादी समुदाय पुरानी परम्पराओं और पुरातन विचारों से प्रभावित होकर समुद्र पार की यात्राओं का विरोध करता रहा है, इनसे मुक्त होकर जिन यायावरों ने यूरोप तथा पश्चिमी देशों की यात्राएँ कीं, वे निश्चय ही भारत को उत्कृष्ट करने वाले कर्मठ यात्री रहे हैं|

ज्ञान-विज्ञान की खोज के उद्देश्य से जब साहित्यकार यात्रा करके अपने यात्रानुभवों को शब्दबद्ध करने लगा तब यात्रा-वृत्तांत का उदय हुआ| यात्रा-वृत्तांत को एक विधा के रूप में स्वीकृति आधुनिक युग में मिली है| इसे पाश्चात्य संपर्क का परिणाम माना जाता है| भारतेन्दु काल में लिखे गए यात्रा-वृत्तांत, यात्रा क्रम में लिखे गए स्थूल वृत्त मात्र होते थे| भारतेंदु युगीन यात्रा-वृत्तांतों में भावात्मक स्थलों पर भाषा की प्रवाहमयता में लोकोक्तियाँ, अलंकार आदि सहजता से प्रवेश कर गए हैं| इसके बावजूद हिंदी साहित्य में यात्रा-वृत्तांत का प्रारम्भ भारतेंदु युग से मानना ज्यादा उपयुक्त होगा|

प्रारंभ के यात्रा-वृत्तांतों में लेखकों ने जो विभिन्न लेख और ग्रंथ रचे हैं, उनमें अधिकांशतः तथ्यपरकता, इतिवृत्तात्मकता की ही प्रवृत्ति देखने को मिलती है| इसका प्रमुख कारण यह है कि तब तक यात्रा-वृत्तांत का स्वतंत्र विधा के रूप में कोई स्वरूप निर्धारित नहीं हुआ था| बाद के यात्रा-वृत्तांतकारों ने अपनी यात्रा से जुड़ी रचनाओं में तथ्यपरकता के स्थान पर स्वानुभूतियों की बुनावट, आत्मपरकता या वैयक्तिकता का समावेश किया है| यात्रा-वृत्तांत में उतरोत्तर वृद्धि हो रही है और इसमें विवरण एवं तथ्यपरक सूचनाओं में अभिवृद्धि देखने को मिल रही है|

सन् 1936-37 का प्रगतिवादी आंदोलन, साम्यवादी विचारधारा के प्रति बढ़ता आकर्षण, द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति आदि परिस्थितियों ने भारत के यात्रा-वृत्तांत को नई जमीन दी| सांस्कृतिक सम्बन्धों के आदान-प्रदान ने एक-दूसरे देशों को समझने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाया| कुछ दशकों से हिंदी यात्रा-वृत्तांत समृद्ध हुआ है| विदेशों से हमारा संपर्क बढ़ा है, हमारे साहित्यकार चीन, जापान, रूस, अमेरिका, अफ्रीका तथा यूरोपीय देशों के साहित्य और कला के क्षेत्र में रूचि दिखाने लगे हैं| साहित्यकारों को विदेश भ्रमण की सुविधाएं भी अधिक मिलने लगी हैं| वे देश-विदेश की यात्रा करने लगे हैं और अपने यात्रानुभवों को शब्दबद्ध करके यात्रा-वृत्तांत के रूप में पाठक के सामने ला रहे हैं|

यात्रा मनोरंजक होते हुए भी कष्टकारी होती है, क्योंकि वहाँ हमें तमाम अनभिज्ञ चीजों और असुविधा से गुजरना पड़ता है| यात्री जब किसी नए स्थान पर जाता है तब निश्चित रूप से एक ऐसी दुनिया को समक्ष पाता है, जो भू-दृश्य या भौतिक परिवेश, संस्कृति, भाषा तथा व्यवहार में भिन्न होती है| इसके बावजूद यात्रा-वृत्तांत के लिए विषयवस्तु के चयन में पर्याप्त स्वतंत्रता है| यात्रा-वृत्तांत सामान्य-वर्णन शैली के अतिरिक्त डायरी, पत्र और रिपोर्ताज शैली में भी लिखा जाता है| इसलिए इसमें निबंध, कथा, संस्मरण, रेखाचित्र आदि कई गद्य-विधाओं का आनंद एक साथ मिलता है|

रचनाशील मनुष्य अपनी यात्राओं से प्राप्त अनुभवों को अभिव्यक्त करता है तब यात्रा-वृत्तांत का सृजन होता है| यात्रा अनुभवों का विवरण देना नहीं बल्कि रचनाकार की संवेदनात्मक अनुभूतियों को प्रस्तुत करना भी इस विधा का लक्ष्य है| यात्रा-वृत्तांत का विषय अत्यंत स्पष्ट और व्यापक है| यह पूरे विश्व को अपने दायरे में समाहित किए हुए है| यह विधा देश-विदेश की दूरी को मिटाते हुए एकात्मकता स्थापित करती है| यात्रा-वृत्तांतकार जिस प्रकार अपने अनुभवों को रमणीयता और आत्मीयता के साथ प्रस्तुत करता है, उस प्रस्तुति से पाठक आह्लादित होता है, क्योंकि लेखक जहाँ का वर्णन करता है, पाठक भी वहाँ की तमाम गतिविधियों से तादात्म्य स्थापित करता है और यात्रा-वृत्तांतकार के साथ विभिन्न देश के इतिहास, भूगोल, कला, धर्म, दर्शन, संस्कृति, साहित्य आदि में गोता लगाता चलता है|

यात्रा-वृत्तांत हिंदी गद्य विधा में एक स्वतंत्र विधा के रूप में अपना स्थान रखता है, लेकिन इसका अन्य कथेतर विधाओं के साथ गहरा सम्बन्ध है| यात्रा-वृत्तांत और आत्मकथा दोनों में लेखक की अनुभूतियों की आत्माभिव्यक्ति होती है| आत्मकथा भी एक प्रकार से किसी व्यक्ति की जीवन यात्रा है| दोनों रचनाओं के माध्यम से तत्कालीन समाज, संस्कृति, रीति रिवाज आदि का-परिचय मिलता है| यात्रा-वृत्तांत और रेखाचित्र दोनों में यथार्थ पर बल दिया जाता है| दोनों में रचनाकार के संपर्क में आए किसी वस्तु या व्यक्ति का चित्रण होता है, जो लेखक की संवेदना को जगाते हैं| रेखाचित्र में व्यक्ति या वस्तुचित्रों के अतिरिक्त अन्य बातों को कम महत्त्व दिया जाता है| यायावर जब चित्रात्मक शैली में यात्रा-वृत्तांत की रचना करता है तब उसकी शैली रेखाचित्र की सी होती है| संस्मरण यात्रा-वृत्तांत की सबसे निकटवर्ती विधा है| बीती हुई घटनाओं का सम्यक स्मरण दोनों में होता है, किन्तु दोनों के स्मरण में अंतर है| संस्मरण अपने व्यक्तिगत जीवन से सम्बंधित किसी

व्यक्ति की स्मृतियों को आधार बनाकर लिखा जाता है, लेकिन यात्रा-वृत्तांत में यात्रा के दौरान आने वाले दृश्यों या घटनाओं को स्मरण करके उनका चित्रण किया जाता है|

यात्रा-वृत्तांत और निबंध में भी समानता है| दोनों में लेखक अपने व्यक्तित्व को महत्त्व देता है| दोनों में यथार्थ और कल्पना के सहारे व्यक्तिगत अनुभूतियों को वाणी दी जाती है| पाठकों को आत्मीयता के सूत्र में बांधने की क्षमता दोनों में होती है| दोनों विधाएं सूचनात्मक हैं| सभी निबंध यात्रा-वृत्तांत नहीं होते, लेकिन यात्रा-वृत्तांत एक हद तक निबंध होता है| रिपोर्ताज और यात्रा-वृत्तांत में भी गहरा सम्बन्ध है, लेकिन रिपोर्ताज का सम्बन्ध पत्रकारिता से है| किसी घटना, दुर्घटना या मेला आदि की रिपोर्ट को कलात्मक और साहित्यिक रूप दिया जाता है, तब रिपोर्ताज का सृजन होता है| रिपोर्ताज में लेखक मात्र दर्शक के रूप में होता है, लेकिन यात्रा-वृत्तांत में अपनी अनुभूतियों को संवेदनात्मक रूप में अभिव्यक्ति देता है| यात्रा-वृत्तांत और डायरी साहित्य में वास्तविक सुख-दुःख को प्रकट करते हुए लेखक का सही व्यक्तित्व प्रतिबिंबित होता है| दोनों में बीती हुए घटनाओं का स्मरण तथा पुनर्मूल्यांकन होता है| इन दोनों विधाओं का संस्मरण तथा रेखाचित्र के साथ गहरा सम्बन्ध है, क्योंकि दोनों में व्यक्ति, वस्तु या परिवेश का अंकन होता है| वास्तव में यात्रा-वृत्तांत के लिए डायरी एक माध्यम है| अधिकांश लेखक डायरी में लिखित टिप्पणी के माध्यम से यात्रानुभवों का स्मरण करके साहित्यिक अभिव्यक्ति देते हैं|

वैयक्तिक आनंद के क्षणों को लिपिबद्ध करने के उद्देश्य से यात्रा-वृत्तांत और पत्र साहित्य दोनों विधाओं का सृजन होता है| दोनों विधाएँ व्यक्तिगत सुख-दुःख के अनुभवों को दूसरों तक पहुँचाकर एक प्रकार की आनंदानुभूति कराती हैं| यात्रा-

वृत्तांत ने एक शैली के रूप में पत्र को अपनाया है| प्रसिद्ध इतिहासकार और जीवनीकार टॉमस कार्लाइल ने अत्यंत सरल भाषा में जीवनी को 'व्यक्ति का जीवन' कहा है| इस तरह किसी व्यक्ति के जीवन-वृत्तांत को सचेत और कलात्मक ढ़ंग से लिखना जीवनी कहा जाता है| इसमें किसी एक व्यक्ति के यथार्थ जीवन के इतिहास का आलेखन होता है, जबकि यात्रा-वृत्तांत में यात्रा में मिले सभी प्रमुख चरित्रों का वर्णन होता है|

मध्यकालीन साहित्य का एक पहलू ही धर्म था| लगभग सभी रचनाकारों ने धर्म को किसी-न-किसी रूप में अपनी रचना का आधार बनाया था| वर्त्तमान समय में भी बौद्ध धर्म-दर्शन का वृहद् साहित्य प्रकाश में आ रहा है| रचनाकार लगभग सभी विधाओं में धर्म से सम्बंधित रचनाएँ कर रहे हैं| हिंदी यात्रा-वृत्तांत भी इससे अछूता नहीं है| कई लेखकों ने धार्मिक स्थलों की यात्रा करके उनका रोचक शब्दों में अपने यात्रा-वृत्तांत में वर्णन किया है| जब कोई यात्रा-वृत्तांतकार किसी देश की यात्रा करता है, तब वह उस देश की सभ्यता, संस्कृति एवं इतिहास को भली-भांति समझता है और अपनी रचना में स्थान देता है| लेकिन यात्रा-वृत्तांतकार इतिहासकार की तरह विवरण को तथ्यों के रूप में प्रस्तुत नहीं करता, बल्कि उसे अपनी संवेदना के साथ प्रस्तुत करता है| यात्रा-वृत्तांतकारों ने यात्रा-वृत्तांत में ऐतिहासिक पक्षों को संवेदना के साथ प्रस्तुत किया है| इसमें इतिहास के मार्मिक पक्षों का ही अधिक वर्णन हुआ है| यात्रा-वृत्तांतकरों ने इतिहास में हुए अत्याचारों, गौरवपूर्ण गाथाओं, रोचक घटनाओं, ऐतिहासिक धरोहरों आदि का बहुत ही गंभीरता से वर्णन किया है|

दुनिया का कोई भी भू-भाग हो, वहाँ का साहित्य, वहाँ की राजनीति से प्रभावित होता है| साहित्य की कोई भी विधा हो, उसमें राजनीति के पुट दीख ही जाते हैं और अगर सभी विधाएँ राजनीति से प्रभावित हैं तो यात्रा-वृत्तांत भी इससे अछूता नहीं है| कई यात्रा-वृत्तांतकारों ने राजनैतिक उद्देश्यपरक यात्रा-वृत्तांत लिखे हैं| उन्होंने देश विदेश की राजनैतिक व्यवस्था और उथल-पुथल को अपने यात्रा-वृत्तांत का विषय बनाया है| साहित्य मानव जीवन का प्रतिबिम्ब है, अतः उस

प्रतिबिम्ब में उसकी सहचरी प्रकृति का प्रतिविम्बित होना स्वाभाविक है| साहित्यकार की विशिष्ट दृष्टि प्रकृति के सौंदर्य का अन्तर्मन से अवलोकन करती है, जिससे उसके अचेतन मन में प्रकृति के प्रति साहचर्य भाव उत्पन्न होता है| कलाकार की दृष्टि उसे आत्मसात कर उसमें सौन्दर्य के गुण ढूँढती है, जिससे उसे आनन्द की अनुभूति होती है, तब वह साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्त करता है| यात्रा-वृत्तांत में भी प्रकृति चित्रण मुखर रूप में हुआ है, क्योंकि लेखक जहाँ की यात्रा करता है, वहाँ प्रकृति से ही उसका पहला साक्षात्कार होता है|

दुनिया का साहित्य युद्ध के रक्तरंजित इतिहास से भरा हुआ है| भारत में भी बहुत लम्बे समय से युद्ध की विभीषिका का चित्रण साहित्य में हो रहा है| महाभारत, रामायण, रासो साहित्य आदि में युद्ध का चित्रण मिलता है| आधुनिक युग में भी बहुत सारे साहित्यकारों ने दुनिया में हुए युद्ध और भारत-पाकिस्तान बंटवारे की त्रासदी को अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त किया है| कुछ साहित्यकारों ने अपने भोगे हुए यथार्थ को भी शब्द दिए हैं| आज यात्रा-वृत्तांत में भी युद्ध की विभीषिका का चित्रण देखने को मिल रहा है| हिंदी साहित्य की लेखिकाएँ हों या अन्य भारतीय साहित्य की, उनका लेखन भारतीय समाज और संस्कृति के रूढ़िवादी पुरुषसत्तात्मक ढाँचे के बहुस्तरीय विद्रूपताओं को उजागर करते हुए सामने आ रहा है| हिंदी साहित्य में महिला लेखन के रूप में विभिन्न कहानियों, कविताओं, आत्मकथाओं एवं यात्रा-वृत्तांतों में स्त्री की दैहिक पीड़ा से परे जाकर उसकी वर्गीय, जातीय एवं लैंगिक पीड़ा का वास्तविक स्वरूप प्रतिबिंबित हो रहा है| हिंदी साहित्य में स्त्री स्वतंत्रता की मांग अब इस जगह पर पहुँच गयी है, जहाँ स्त्री अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व की पहचान कर पाने में सक्षम है| यही वह आधार है, जहाँ से सामाजिक और लैंगिक विभाजन के स्थान पर मनुष्यता की पहचान शुरू होती है| लेखिकाएँ यात्रा-वृत्तांत के माध्यम से भी रूढ़िवादी पुरुषसत्तात्मक ढाँचे पर चोट कर रही हैं|

राहुल सांकृत्यायन की चार यात्राओं का विस्तार वर्णन 'एशिया के दुर्गम भूखंडों' में मिलता है| राहुल सांकृत्यायन ने यात्रा-वर्णन के माध्यम से लद्दाख,

तिब्बत, अफगानिस्तान, ईरान सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक परिवेश का रोचक वर्णन किया है| यह पुस्तक इतिहास ग्रंथ नहीं है किंतु इसके माध्यम से एशियाई देशों के इतिहास को बखूबी समझा जा सकता है| 'पैरों में पंख बाँधकर में' श्रीरामवृक्ष बेनीपुरी ने अपनी यात्रा को डायरी के रूप में प्रस्तुत किया है| इसमें फ़्रांस, स्विट्जलैंड, स्कॉटलैंड, इंग्लैंड की प्राकृतिक, राजनैतिक, सामाजिक, मानसिक और आर्थिक संरचना को शब्दांकित किया गया है| लेखक ने अपनी यात्रा में देखे गए यूरोपीय जीवन का बहुत ही सजीव और रोचक वर्णन इस यात्रा-वृत्तांत में किया है| उन्होंने अपने यात्रा-वृत्तांत में ऐतिहासिक व्यक्तियों, ऐतिहासिक धरोहरों और ऐतिहासिक घटनाओं को प्रमुखता से चित्रित किया है| इसमें प्रकृति चित्रण में सौन्दर्य बोध, वर्णनों में चित्रात्मकता, स्त्री जीवन का खुलापन और ख़ूबसूरती, यूरोपीय रंगमंच और यूरोपीय जाति की विशेषताएँ देखने को मिलती हैं|

'लोहे की दीवार के दोनों ओर' में सोवियत देश और पूंजीवादी देशों के जीवन और व्यवस्था का आँखों देखा तुलनात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है| यशपाल ने व्यक्तिगत जानकारी के आधार पर सब बातों का विवरण और विश्लेषण करने की चेष्टा की है| अज्ञेय की एक कविता 'दूर्वाचल' की पंक्ति 'अरे यायावर रहेगा याद' यात्रा-वृत्तांत का नाम बनकर मुहावरा सा बन चुकी है और यायावर नाम लगभग 'अज्ञेय' का पर्याय| उन्होंने असम से बंगाल, उत्तरप्रदेश, दिल्ली, पंजाब, तक्षशिला, एबटाबाद, हसन अब्दाल, नौशेरा, पेशावर और अंत में खैबर यानी भारत की एक सीमा से दूसरी सीमा की यात्रा की थी| इस यात्रा-वृत्तांत में तरह-तरह के अनुभव, दृश्य, लोग और हादसे सबकुछ हैं| इस यात्रा के अलावा कुल्लू, रोहतांग जोत की यात्रा का भी वर्णन इस कृति में है, जब लेखक ने मौत को करीब से देखा| अज्ञेय की यूरोप यात्रा का चर्चित यात्रा-वृत्तांत 'एक बूँद सहसा उछली' घुमक्कड़ी का काव्य है| उसमें मन्त्र नहीं आत्मा बोलती है| नश्वरता से मुक्त आलोक छुए अपनेपन की बात पुस्तक को शीर्षक देने वाली कविता में है, यह पुस्तक में सर्वत्र बिखरा है| यह यात्रा-वृत्तांत एक रूपक, ललित निबंध, आत्म-संलाप का मिला-जुला रूप है| इसमें अज्ञेय ने इटली, स्विट्ज़रलैंड, फ्रांस, नीदरलैंड, इंग्लैंड,

स्कॉटलैंड, वेल्श, स्वीडन आदि देशों की यात्रा का वर्णन किया है| लेखक ने यूरोप के इतिहास, धर्म, दर्शन, संस्कृति, एवं यूरोपीय जीवन की स्वतंत्रता और खुलापन पर गहरी चर्चा की है|

विष्णु प्रभाकर का यात्रा-वृत्तांत 'हँसते निर्झर:दहकती भट्ठी' इस युग की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है| यह यात्रा-वृत्तांत गुण और मात्रा दोनों ही दृष्टि से श्रेष्ठ है| विष्णु प्रभाकर ने अपनी यात्रा की कलात्मक एवं भावात्मक अभिव्यक्ति की है| उन्होंने यात्रा-वृत्तांत में विविध भावों, विचारों तथा घटनाओं को विविध शैली में रोचकता के साथ प्रस्तुत किया है| विष्णु प्रभाकर ने हिंदुस्तान एवं दक्षिण पूर्व के एशियाई देशों की प्रकृति, संस्कृति, भूगोल, इतिहास, समाज, भाषा, धर्म आदि के अनेक पक्षों का उद्घाटन किया है| 'कितना अकेला आकाश' में नरेश मेहता ने युगोस्लाविया और अन्य यूरोपीय लोगों की मानसिक बनावट का जो रूप प्रस्तुत किया है, वह बड़ा ही ह्रदयस्पर्शी और प्रभावी है| इस यात्रा-वृत्तांत में साहित्यिक गोष्ठियों, व्यक्तियों, स्थानों और प्राकृतिक दृश्यों का जो वर्णन किया गया है, वह नरेश मेहता जैसा संवेदनशील लेखक ही कर सकता है| इस यात्रा-वृत्तांत में प्राकृतिक और सांस्कृतिक छवियों की अपेक्षा राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, साहित्यिक और अर्थशास्त्रीय विश्लेषणों पर अधिक बल दिया गया है| लेखक इसमें शुद्ध यात्री न होकर एक सजग विश्लेषक भी बन गया है|

मोहन राकेश ने 'आखिरी चट्टान तक' में गोवा से कन्याकुमारी तक की यात्रा का वर्णन बहुत ही ईमानदारी एवं भावुकता से किया है| इस यात्रा-वृत्तांत में मोहन राकेश का व्यक्तित्व एवं विभिन्न व्यक्तियों के साथ व्यतीत किए समय का लेखा-जोखा भी है| इस यात्रा-वृत्तांत में अनेक व्यक्तियों की मनःस्थितियों एवं चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन है| इसमें एक ओर रेखाचित्र के गुण हैं तो दूसरी ओर काव्यमयता एवं चित्रात्मकता के भी गुण हैं| प्राकृतिक सौंदर्य की दृष्टि से यह यात्रा-वृत्तांत उच्च कोटि का है| 'सौंदर्य की नदी नर्मदा' में अमृतलाल वेगड़ ने नर्मदा का इतिहास, भूगोल और उसके धार्मिक महत्त्व के बारे में विस्तृत चर्चा की है| नदी के ऊपर बनाए जा रहे बाँध के कारण विस्थापन और उजाड़ की समस्या और इसके दूरगामी परिणाम को भी उठाया है| 'चीड़ों पर चाँदनी' निर्मल वर्मा का पहला यात्रा-वृत्तांत है, जिसमें उनकी यूरोप यात्रा का वर्णन है| यह यात्रा-वृत्तांत द्वितीय

विश्वयुद्ध के बाद के यूरोपीय समाज का जीता-जागता दस्तावेज है| किताब का ज्यादातर हिस्सा यूरोप की यात्रा का है और शीर्षक हिंदुस्तान के घर से लिया गया है, जहाँ खिड़की से बाहर दिख रहे चीड़ पर बर्फ के बाद गिरी चाँदनी की तारीफ की है| इस यात्रा-वृत्तांत में लगता है कि एक के बाद एक शहर की ओर हम बढ़ते जाते हैं और ऐसा एहसास कि हम उसे अपनी आंखों से देख रहे हैं| ये बिल्कुल ऐसा कि कोई आपकी आँख बन गया हो|

कृष्णनाथ का यात्रा-वृत्तांत 'स्पीति में बारिश' स्थान विशेष से जुड़े होकर भी भाषा, इतिहास, पुराण, धर्म, संस्कृति का संसार समेटे हुए है| माना जाता है कि स्पीति में कभी बारिश नहीं होती, लेकिन उस दुनिया में भी कृष्णनाथ स्नेह, ज्ञान, परम्परा, धर्म, संस्कृति, मानवीय रिश्तों की बारिश ढूँढ़ते हैं| लेखक ने इस यात्रा-वृत्तांत में बौद्ध धर्म का अन्वेषण ही नहीं बल्कि हिमालयी अंचल के लोक-जीवन और संस्कृति का भी बहुत ही आत्मीय ढंग से वर्णन किया है| मृदुला गर्ग के 'कुछ अटके कुछ भटके' में हिंदुस्तान और विदेश यानी मालदीव, सूरीनाम और अमेरिका से संबंधित यात्राओं का संकलन है| इसमें आसाम, केरल के वर्षावनों और अभ्यारण्यों की अठखेलियाँ दर्ज हैं तो हिरोशिमा की त्रासदी का वर्णन देख आँखें भी नम हो जाती हैं| जुमले, व्यंग्य, कटाक्ष और एक मस्ती भरी लापरवाही पूरी पुस्तक में देखने को मिलती है| यात्रा में आए जंगल, दरख़्त, पर्वत-घाटी, पशु-पक्षी मनुष्य के पूरक सम्बंधों को रचते चलते हैं|

कुसुम खेमानी का 'कहानियाँ सुनाती यात्राएँ' बतरस और किस्सागो शैली में रचित यात्रा-वृत्तांत है, जिसमें निबंध, कहानी, संस्मरण सब एक हो गए हैं| इस पुस्तक में हरिद्वार, उज्जैन, कोलकाता, कश्मीर, शिलांग, हैदराबाद से लेकर डर्बन, रोम, बर्लिन, स्विट्जलैंड, प्राग, मास्को, मिस्र, मॉरीशस, भूटान और अलास्का तक की यात्रा का वर्णन है| वहाँ की भौगोलिक और आनुभूतिक यात्राओं का ही वर्णन नहीं है, बल्कि ऐतिहासिक, सांस्कृतिक यात्रा के भी साक्ष्य मौजूद हैं| 'चलते तो अच्छा था' असगर वजाहत की ईरान और आजरबाईजान यात्रा की दस्तावेज है| इसमें 26 संस्मरणात्मक वृत्त हैं, जो कबूतरों के झुंड से छाए हैं, जो तेहरान जाकर उतरते हैं और पूरे ईरान व आजरबाईजान में अमरूद के बाग़ खोजने के लिए भटकते

हैं| इस यात्रा-वृत्तांत में लेखक तेहरान के हिज़ाब से खिन्न कोहे क़ाफ़ की परियों से दो-चार होता है और उस दुनिया से हमें भी परिचित कराता है| असग़र वजाहत ने ईरान और आजरबाईजान की यात्रा ही नहीं की बल्कि उनके समाज, संस्कृति और इतिहास को समझने का भी प्रयास किया है|

नासिरा शर्मा स्वतंत्र विचारों की प्रगतिशील लेखिका हैं| उन्हें पीड़ित जनता की सच्ची हमदर्दी है| उनका लेखन फासिस्ट व्यवस्था के विरुद्ध है| इस यात्रा-वृत्तांत में हम देखते हैं कि कुछ बड़ी ताक़तें मज़हबी खब्त को बढ़ावा देकर अपना प्रभाव बनाए रखना चाहती हैं| मध्य-पूर्व एशियाई देश उनकी साजिश के शिकार हैं| इस पुस्तक में उन्होंने जो कुछ भी लिखा है, एक बुद्धिजीवी की हैसियत से अनुभव किया हुआ सच है| नासिरा शर्मा के यात्रा-वृत्तांत में देखा हुआ ही नहीं बल्कि भुगता हुआ भी सच है| पेरिस हो या लंदन, कुर्द हो या पेशावर, तेहरान हो या बगदाद, जहाँ जो कुछ जैसा प्रत्यक्ष देखा और अनुभव किया है, उन्हें वैसा ही सजीव और जीवंत रूप में इस यात्रा-वृत्तांत में प्रस्तुत किया है| निश्चय ही रिपोर्ताज शैली में लिखा गया यह यात्रा-वृत्तांत मध्य-पूर्व देशों का जीता-जागता दर्पण है|

'देश ही देश' गरिमा श्रीवास्तव की क्रोएशिया यात्रा की दस्तावेज है| इस पुस्तक में क्रोएशिया, बोस्निया, सर्बिया, पाकिस्तान, बांग्लादेश, हिंदुस्तान और पूरी दुनिया के युद्ध में घर्षित स्त्रियों के रक्तरंजित इतिहास को हम देखते हैं| अपने दो साल के क्रोएशिया प्रवास के दौरान गरिमा श्रीवास्तव ने युगोस्लाविया विखंडन में हताहत हुए स्त्रियों की त्रासदी को इस यात्रा-वृत्तांत में दर्ज किया है| इस पुस्तक में लेखिका ने शोध करके सभी ज़रूरी आंकड़ों और प्रवाहमय भाषा शैली के साथ विस्थापन, सेक्स ट्रैफिकिंग से लेकर पुनर्वास तक हर पक्ष की गहरी पड़ताल की है| अनिल यादव का चर्चित यात्रा-वृत्तांत 'वह भी कोई देस है महराज' पूर्वोत्तर की जमीनी हकीकत तो बयान करता ही है, वहाँ के जन-जीवन का आँखों देखा हाल भी बताता है| पूर्वोत्तर केंद्रित इस यात्रा-वृत्तांत में वहाँ के जन-जीवन की असलियत

बयान करने के साथ-साथ व्यवस्था की असलियत को उजागर करने में भी अनिल यादव ने कोताही नहीं बरती है|

अनुराधा बेनीवाल का यात्रा-वृत्तांत ‘आजादी मेरा ब्रांड’ समाज में विमर्श पैदा करती किताब है| यहाँ स्त्रीवाद जैसा कोई वाद नहीं है, लेकिन पूरी किताब लड़कियों के सम्मान के साथ जिंदा रहने, अपनी निजता और स्पेस खोजने की वकालत करती है| यह यात्रा-वृत्तांत भारत की उन तमाम स्त्रियों के लिए घोषणापत्र सा मालूम पड़ता है, जो संस्कार, धर्म, मर्यादा की बेड़ियों में कैद हैं| उन्होंने विचारधाराओं की बाध्यता के बिना अपनी यूरोप की यात्रा का वृत्तांत लिखा है| यह यात्रा-वृत्तांत यूरोपियन समाज को प्रतिबिम्बित करने का दम्भ नहीं भरता बल्कि वहाँ पर रहने वाले प्रवासी भारतीय, पुराने दोस्त एवं यूरोपीय लोगों की निजी जिंदगी का हिस्सा आपके सामने साफगोई से रखता है|

‘इनरलाइन पास’ में उमेश पंत ने आदि कैलास और ओम पर्वत की 200 किलोमीटर से ज्यादा चली अपनी अठारह दिनों की पैदल यात्रा का वृत्तांत दर्ज किया है| यह यात्रा-वृत्तांत पैदल यात्रा के रोमांचक अनुभवों का एक गुलदस्ता है, जो आपको ख़ूबसूरती और जोख़िमों के एकदम चरम तक लेकर जाता है| यह यात्रा-वृत्तांत पहाड़ी जिंदगी की मुश्किलें, वहाँ के लोगों की ईमानदारी और निश्छल प्रेम को रेखांकित करता है| लेखक पहाड़ी में बसने वालों की पहाड़-सी विशाल और मजबूत जिजीविषा का कायल है, क्योंकि पूरे इलाके के पहाड़ इतने संवेदनशील हैं कि कोई तेज बारिश कब पूरे इलाके के भूगोल बदल दे, कहना मुश्किल है| इन इलाक़ों का जनजीवन मृत्यु और आपदाओं से घिरा हुआ है, फिर भी यहाँ के लोग अपनी जमीन से जुड़े हैं|

यात्राओं के जरिए हम उन तमाम जाने-अनजाने लोगों से प्रत्यक्षतः रू-ब-रू होते हैं, जिनसे हमारा पूर्व में सीधा साहचर्य नहीं होता| हम इन मुलाकातों में जहाँ एक तरफ प्रकृति से सीधे जुड़ते हैं, वहीं दूसरी तरफ यह भी जान पाते हैं कि दुनिया

के हर हिस्से के मनुष्य में प्रेम, दया, क्षमा, करुणा और परोपकार का भाव ही प्रधान होता है| कोई भी लेखक उत्कृष्ट रचनाकार तभी बनता है जब वह जीवन को समीप से देखता है और जीवन को समीप से देखने का सबसे सरल माध्यम यात्रा है| रचनात्मक लेखन करने वाला हर लेखक अपने साहित्य में किसी-न-किसी रूप में यात्रा-साहित्य का सृजन करता है| हिंदी गद्य के साथ-साथ यात्रा-वृत्तांत का भी पर्याप्त विकास हुआ है| अधिकांश लेखकों ने इस विधा को अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया है|

यात्रा करना मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति है| अज्ञात के प्रति मनुष्य के मन में स्वाभाविक जिज्ञासा है, जो उसे नए और दूरस्थ स्थानों की यात्रा के लिए प्रेरित करती है| यात्राएँ हमें अपने देश-दुनिया की विविधताओं को बहुत करीब से देखने का अवसर देती हैं| हम जान पाते हैं कि जहाँ प्रकृति ने इसे करीने से सजाया है, वहीं समाज ने अपनी विविधता से उसमें और अधिक रंग भरा है| इस दुनिया को समझने में यायावरी का बडा हाथ रहा है| आज भी मनुष्य की यायावरी और घुमक्कडी जारी है और जारी है इस दुनिया को जानने समझने का क्रम|

यात्रा मानव के लिए एक महत्त्वपूर्ण कदम है| किसी भी व्यक्ति का बाहरी दुनिया से संपर्क कट जाने के बाद उसके समुचित व्यक्तित्व का विकास नहीं हो पाता है| यायावर दूसरी जगहों का इतिहास, राजनीति, भूगोल, भाषा, धर्म, संस्कृति, रीति-रिवाज एवं तमाम सामाजिक गतिविधिओं की जानकारी अर्जित करता है और इनसे पाठकों को भी लाभान्वित कराता है| यात्रा के द्वारा हम दूसरे जाति, धर्म, संप्रदाय एवं देश के सम्पर्क में आते हैं, जिससे अनेकता में एकता, निकटता, सद्भाव और सामंजस्य आदि में वृद्धि होती है| यात्रियों के मन में प्राकृतिक सौंदर्य के प्रति उत्कट इच्छा होती है| विविध दृश्यों, प्राकृतिक सौंदर्य तथा विविध संस्कृतियों को देखने-परखने से मनुष्य की संवेदना-शक्ति में वृद्धि होती है|

यात्रा-वृत्तांत ने हमारे लिए दुनिया का एक बड़ा दरवाजा खोला है| इसके पास दुनिया के किसी भी संदर्भ को आधार देने की क्षमता है| यात्रा-वृत्तांत ने हमारे सामने जानने और समझने की एक बड़ी दुनिया खड़ी की है| हमारी देखने समझने की सीमाओं में वह अनंत विस्तार किया है, जिसकी कल्पना वह व्यक्ति नहीं कर सकता, जो इससे महरूम है| यात्रा-वृत्तांत ने देश और समाज के कितने सारे पहलू उजागर किए हैं| राहुल सांकृत्यायन की यायावरी को कौन भूल सकता है, जिन्होंने देश और दुनिया के कई अनछूए पहलुओं को उजागर किया| निर्मल वर्मा के जरिए हम पूर्वी यूरोप से परिचित होते हैं तो अज्ञेय के साथ यायावर बन कर असम से पेशावर तक की यात्रा करते हैं| कृष्णनाथ की हिमालय यात्राओं ने लद्दाख, हिमाचल और अरुणाचल के दुर्गम इलाकों से हमारा परिचय कराया है, तो अनिल यादव के जरिए हमने पूर्वोत्तर को जाना और समझा है| हम अमृतलाल बेगड़ के साथ चलकर ही यह जान पाते हैं कि अमरकंटक से निकल कर खम्बात की खाड़ी में गिरने वाली नर्मदा को 'सौन्दर्य की नदी' क्यों कहा जाना चाहिए? तो असगर वजाहत की यात्राओं ने ईरान का अर्थ समझाया है|

यात्रा-वृत्तांत इतिहास, धर्म, कला, समाज, संस्कृति आदि की कलात्मक अभिव्यक्ति है| यात्रा-वृत्तांत मात्र भूमि नापने की क्रिया, आँखों देखा हाल, रिपोर्ट या रिपोर्ताज भी नहीं है, बल्कि वह गहरी संवेदना या रागात्मक संबंधों की प्रेरणा से लिखा जाता है| इसमें भी राग, प्रेम, मानवता, प्रकृति, संस्कृति, समाज के प्रति सरोकार आदि उतना ही महत्त्व रखते हैं, जितना अन्य साहित्य विधाओं में, इसलिए यह कथा, उपन्यास, कविता, समीक्षा, पत्र, डायरी आदि विधाओं की शैली में लिखा जा सकता है, बशर्ते कि उसका यथार्थ बराबर बना रहे|

संदर्भ ग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ

1. राहुल सांकृत्यायन:एशिया के दुर्गम भूखंडों में, जगतराम एंड संस दिल्ली, सं. 2018
2. श्रीरामवृक्ष बेनीपुरी:पैरों में पंख बाँधकर, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा.लि., नई दिल्ली, सं. 2015
3. यशपाल:लोहे की दीवार के दोनों ओर, लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद, सं. 1984
4. सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय':अरे यायावर रहेगा याद, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., प्र. सं. 2015
5. सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय':एक बूँद सहसा उछली, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, सातवाँ सं. 2012
6. विष्णु प्रभाकर:हँसते निर्झर:दहकती भट्ठी, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2012
7. नरेश मेहता:कितना अकेला आकाश, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, द्वितीय सं. 2005
8. मोहन:राकेश:आखिरी चट्टान तक, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, द्वितीय सं. 2015
9. अमृतलाल वेगड़:सौंदर्य की नदी नर्मदा, पेंगुइन बुक्स इंडिया प्रा. लि. प्र. सं. 2006
10. निर्मल वर्मा:चीड़ों पर चाँदनी, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, आठवाँ सं. 2015

11. कृष्णनाथ:स्पीति में बारिश, वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर, प्र. पॉकेट बुक सं. 1998
12. मृदुला गर्ग:कुछ अटके कुछ भटके, पेंगुइन बुक्स इंडिया प्रा. लि., नई दिल्ली, प्र. सं. 2006
13. कुसुम खेमानी:कहानियाँ सुनाती यात्राएँ, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि., नई दिल्ली, पहली आवृत्ति 2013
14. असगर वजाहत:चलते तो अच्छा था, राजपाल प्रकाशन प्रा. लि., नई दिल्ली, 2008
15. नासिरा शर्मा:जहाँ फव्वारे लहू रोते हैं, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. सं. 2003
16. ओम थानवी:मुअनजोदड़ो, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. सं. 2011
17. गरिमा श्रीवास्तव:देह ही देश, राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली, प्र. सं. 2017
18. अनिल यादव:वह भी कोई देस है महराज, अंतिका प्रकाशन, गाज़ियाबाद, तृतीय सं. 2014
19. अनुराधा बेनीवाल:आजादी मेरा ब्रांड, राजकमल प्रकाशन, प्रा. लि., नई दिल्ली, द्वितीय सं. 2016
20. उमेश पंत:इनरलाइन पास, हिन्द-युग्म, दिल्ली, तीसरा सं. 2017

सहायक ग्रंथ

1. राहुल सांकृत्यायन:घुमक्कड़शास्त्र, किताब महल, इलाहाबाद, 2004, प्र. सं. 1948
2. राहुल सांकृत्यायन:किन्नर देश में,किताब महल, इलाहाबाद, प्रस्तुत सं. 2015
3. सुरेंद्र माथुर:यात्रा साहित्य का उद्भव और विकास, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, 1962
4. यशपाल:लोहे की दीवार की दोनों ओर, लोकभारती, इलाहाबाद, 1984
5. फणीश्वरनाथ रेणु:ऋणजल धनजल, राजकमल प्रकाशन, प्रा. लि. नई दिल्ली, पाँचवाँ सं. 2015
6. कृष्णा सोबती:बुद्ध का कमण्डल लद्दाख, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., नई दिल्ली, प्र. सं. 2012
7. कृष्णनाथ:किन्नर धर्मलोक, वाग्देवी प्रकाशन,बीकानेर, प्र. पॉकेट बुक सं. 1998
8. कृष्णनाथ:लद्दाख में राग-विराग, वाग्देवी प्रकाशन,बीकानेर, प्र. पॉकेट बुक सं. 2000
9. कृष्णनाथ:अरुणाचल यात्रा, वाग्देवी प्रकाशन,बीकानेर, प्र. पॉकेट बुक सं. 2016
10. मेरी जर्मन यात्रा:सत्यदेव परिव्राजक, सत्य ग्रंथ प्रकाशन, देहरादून द्वितीय स. 1973
11. मनोहर श्याम जोशी:क्या हाल हैं चीन के, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली प्र. सं. 2006
12. सं. धीरेन्द्र वर्मा:हिंदी साहित्य कोश, भाग-1, भाग-2, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी तृतीय सं. 1985
13. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी:अमेरिका और यूरप में एक भारतीय मन, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, प्र. सं. 2012

14. विश्वमोहन तिवारी:हिंदी का यात्रा-साहित्य:एक विहंगम दृष्टि, आलेख प्रकाशन, दिल्ली, सं. 2013

15. रामदरश मिश्र:तना हुआ इन्द्रधनुष, साहित्य सहकार प्रकाशन, दिल्ली, प्र.स. 1990

16. गोविन्द मिश्र:धुँध भरी सुर्खी, नेशनल पब्लिशिंग हॉउस, दिल्ली, प्र. स. 1979

17. असगर वजाहत:रास्ते की तलाश में, अंतिका प्रकाशन, गाज़ियाबाद, प्र. पेपरबैक सं. 2012

18. अमरनाथ:हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, चतुर्थ छात्र सं. 2016

19. पंकज बिष्ट:खरामा-खरामा, अंतिका प्रकाशन,गाज़ियाबाद, प्र. सं. 2012

20. प्रयाग शुक्ल:सम पर सूर्यास्त, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. सं. 2002

21. सं. दामोदर लाल गर्ग:ह्वेनसांग की भारत यात्रा, लिट्रेरी सर्किल, जयपुर प्र. सं. 2009

22. फूलचंद मानव:मोहाली से मेलबर्न, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, प्र. सं. 2012

23. दामोदर लाल गर्ग 'श्रीप्रस्थी':पश्चिमी भारत की यात्रा, ग्रंथ विकास, जयपुर, प्र. सं. 2014

24. हरिराम मीणा:आदिवासी लोक की यात्राएँ, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, प्र. सं. 2016

25. प्रतापलाल शर्मा:हिंदी का आधुनिक यात्रा साहित्य, अमर प्रकाशन, मथुरा, प्र. सं. 2003

26. सं. माधव हाड़ा:कथेतर, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, प्र. सं. 2017

27. मनोज सिंह:स्वर्ग यात्रा:एक लोक से दूसरे लोक तक, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा.लि. दिल्ली, प्र. सं. 2015

28. मनोज सिंह:सपनों का शहर दुबई, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. सं. 2017

29. हरि सिमरन कौर भुल्लर:समकालीन यात्रा-वृत्तों में सांस्कृतिक संदर्भ, के.के. पब्लिकेशन्स, दिल्ली, प्र. सं. 2009

30. सं. डॉ. अमिता:भारतेंदु हरिश्चंद्र के यात्रा-वृत्तांत:कुछ अनछुए पहलू, ईशा ज्ञानदीप, नई दिल्ली, प्र. सं. 2016

31. रेखा प्रवीण उप्रेती:हिंदी का यात्रा-साहित्य (1960 से 1990 तक) हिंदी बुक सेंटर, नई दिल्ली, सं. 2000

पत्र-पत्रिकाएँ

1. सं. रघुवंश:आलोचना, राजकमल प्रकाशन, प्रा. लि., नई दिल्ली, जुलाई 1954

2. श्यामसिंह 'शशि':यायावर साहित्य-शास्त्र, भाषा पत्रिका, 'भारतीय यायावर साहित्य विशेषांक' केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली, मई-जून, 2006

3. सं. नानकचंद, मधुरेश:इन्द्रप्रस्थ भारती, हिंदी अकादमी, दिल्ली, अंक- 4, वर्ष- 2004

UGC Approved Journal No – 47299
(IIJIF) Impact Factor - 3.192

ISSN 2249 – 8907

VAICHARIKI

A Multidisciplinary Peer Reviewed Refereed International Research Journal

Volume 8 | Issue I | January 2018

Chief Editor : Dr. Manoj Kumar
Department of Sanskrit
B.R.A. Bihar University
Muzaffarpur
www.vaicharikibihar.com

E-mail : vaichariki@gmail.com **www.vaicharikibihar.blogspot.com**

- **जल संसाधन एवं जीवन** **60-62**
  डॉ. सुमन सिंह, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, भूगोल, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय चरखारी, महोबा
- **भारत की शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन की आवश्यकता एवं सुझाव** **63-66**
  डॉ. नवीन कुमार श्रीवास्तव, स.अ., ग.शं.वि.स्मा.इं.का., महराजगंज; पूर्व शोध छात्र, राजा श्रीकृष्णदत्त स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जौनपुर
- **भारतीय दर्शन का संक्षिप्त ऐतिहासिक विवेचन** **67-69**
  कुमारी शिल्पी पाण्डेय, शोध छात्रा, हिन्दी विभाग, नार्थ ईस्ट फ्रंटियर टेक्निकल यूनिवर्सिटी, अरूणाचल प्रदेश
- **यात्रा-वृत्तान्त की यात्रा-भारतीय सन्दर्भ** **70-73**
  लोकेश कुमार, शोधार्थी (पीएच.डी.), हैदराबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय
- **महान् वाग्गेयकार पं. बलवन्त राय भट्ट 'भावरंग' जी का सांगीतिक योगदान** **74-75**
  डॉ. ज्ञानेश चन्द्र पाण्डेय, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, गायन विभाग, संगीत एवं मंच कला संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी - 221005
- **बिहार की राजनीति में अनुसूचित जाति की महिलाओं की भागीदारी : एक राजनैतिक आलेख** **76-79**
  श्वेता शालिनी, शोधा-छात्रा, इतिहास विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना
- **भारतीय राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्था के परिप्रेक्ष्य में वैश्वीकरण की अवधारणा : एक अनुशीलन** **80-82**
  आमिर सोहेल, एम.फिल. (शोधप्रज्ञ), इन्टरनेशनल रिलेशन विभाग, जाधवपुर विश्वविद्यालय, (प.बं.)
- **प्राचीन भारतीय शासकों द्वारा बौद्ध विहारों को दिये गये अनुदानः एक ऐतिहासिक पुनरावलोकन** **83-86**
  संगीता कुमारी, शोध-छात्र, इतिहास विभाग
- **भारत में उच्च प्रजनन-दर की समस्या : एक अध्ययन** **87-90**
  डॉ. सुभाष चन्द्र प्रभात, पी-एच.डी., समाजशास्त्र विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना
- **श्रीमद्भागवत में श्रीकृष्ण के रासनृत्य का वर्णन** **91-97**
  अमित कुमार तिवारी, शोध-छात्र, संस्कृत विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया।
- **प्राचीन भारतीय विज्ञान में कृषि में बराहमिहिर का योगदान : एक अध्ययन** **98-100**
  डॉ. नरेन्द्र कुमार, प्रा.भा.इ. एवं पुरातत्त्व विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना
- **आन्तरिक सुरक्षा व्यवस्था और पुलिस भारतीय संदर्भ में** **101-106**
  डॉ. मुकेश प्रसाद निराला, सहायक प्राध्यापक, राजनीति शास्त्र विभाग, रमेश्वर लता संस्कृत महाविद्यालय, दरभंगा
- **भारत में पुलिस प्रशासन का इतिहास** **107-109**
  डॉ. उमेश कुमार, शोध निदेशक, विभागाध्यक्ष, लोक प्रशासन विभाग, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा
  धर्मराज मिश्रा, शोध छात्र, लोक प्रशासन विभाग, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा (बिहार)
- **जयप्रकाश नारायण और उनके समाजवादी विचारधारा : एक विश्लेषण** **110-114**
  कामदेव प्रसाद यादव, शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, एस.के.एम. विश्वविद्यालय, दुमका
  डॉ. पी. के. सिंह, एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, एस.के.एम. विश्वविद्यालय, दुमका

यात्रा-वृत्तान्त की यात्रा-भारतीय सन्दर्भ

लोकेश कुमार *

आदिम युग में मनुष्य घुमक्कड़ था और वह तमाम चिंताओं से मुक्त रहकर हमेशा विचरण करता था| मनुष्य अपनी भूख-प्यास मिटाने और जीवनगत आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु हमेशा यात्रा करता रहा है, लेकिन धीरे-धीरे सभ्यता के विकास के साथ उसकी यायावरी वृत्ति भी बढ़ने लगी और अपनी जरुरत के अनुसार देश-विदेश की यात्रा करने लगा| घुमक्कड़ों में से आर्यों, शकों, हूणों ने अपने अमानवीय कृत्यों द्वारा मानवता को प्रशस्त किया, किन्तु मंगोल घुमक्कड़ों ने पश्चिम में बारूद, तोप, कागज, छापाखाना आदि चीजों का आविष्कार किया। घुमक्कड़ी धर्म ने ही यहूदियों को व्यापार-कुशल, उद्योग-निष्णात और विज्ञान, दर्शन, साहित्य, संगीत सभी क्षेत्रों में आगे बढ़ने का मौका दिया। भारत की उन्नति में कई कुपमण्डूकताओं का बाधक होना भी यायावरों की कमी की ओर इशारा करता है। भारत में कुछ लोग पुरानी परम्पराओं और पुरातन विचारों से प्रभावित होकर समुद्र पार की यात्रा का विरोध करते रहे हैं| इन पुरातन विचारों से मुक्त होकर जिन यायावरों ने दूसरे देशों की यात्राएँ कीं, वे निश्चय ही भारत को उत्कृष्ट बनाने वाले कर्मठ यात्री रहे हैं| घुमक्कड़ी के लिए मनुष्य को चिंतामुक्त होना जरूरी है और साथ ही साहस की भी जरुरत है, तभी एक सफल यायावर बना जा सकता है। राहुल सांकृत्यायन ने घुमक्कड़ी को धर्म का दर्जा दिया है| उन्होंने लिखा है- "मेरी समझ में दुनिया की सर्वश्रेष्ठ वस्तु घुमक्कडी है| घुमक्कड़ से बढ़कर व्यक्ति और समाज के लिए कोई हितकारी नहीं हो सकता| मनुष्य स्थावर वृक्ष नहीं है, वह जंगम प्राणी है, चलना मनुष्य का धर्म है, जिसने इसे छोड़ा वह मनुष्य होने का अधिकारी नहीं है|' '[1]

ज्ञान-विज्ञान की खोज के उद्देश्य से जब साहित्यकार यात्रा करके अपने यात्रानुभवों को शब्दबद्ध करने लगा तब यात्रा-वृत्तांत का उदय हुआ| हिन्दी यात्रा-वृत्तांत के सर्वप्रथम हस्तलिखित ग्रन्थ गोस्वामी विट्ठलनाथ द्वारा लिखित ' वन यात्रा' को माना जाता है। चौवालीस पृष्ठों के इस ग्रन्थ में विट्ठल जी ने व्रजमंडल के विविध दृश्यों को अत्यंत भक्ति-भाव से चित्रित किया है। ' वनयात्रा' नाम से दो अन्य हस्तलिखित ग्रन्थ हैं। उनमें प्रथम के रचनाकाल एवं रचयिता के सम्बन्ध में प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं। पैंसठ पृष्ठों की यह रचना अपूर्ण है। ' वनयात्रा' नाम से जो दूसरी कृति है, उसकी रचनाकार जीमन महाराज की माँ हैं। इसमें भी गोकुल, मथुरा, गोवर्धन, वृन्दावन आदि स्थानों के प्राकृतिक वर्णन को प्रस्तुत किया गया है। ' ब्रजपरिक्रमा' , ' सेठ पद्मसिंह की यात्रा' , ' बात दूर देश की' , ' ब्रज चौरासी कोस वनयात्रा' , ' बद्रीनारायण सुगम-यात्रा' आदि अनेक हस्तलिखित कृतियों का उल्लेख है। इन ग्रंथों में वर्णनात्मकता के साथ-

* शोधार्थी (पीएच.डी.), हैदराबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय

साथ भावात्मकता को भी स्थान दिया गया है। इन यात्रा परक कृतियों में गद्य की अपेक्षा पद्य की प्रधानता है और पद्य में भक्ति भावना को प्रमुखता दी गई है।

यात्रा-वृत्तान्त को एक विधा के रूप में स्वीकृति आधुनिक युग में मिली है। इसे पाश्चात्य संपर्क का परिणाम माना जाता है। भारतेन्दु काल में लिखे गए यात्रा-वृत्तांत, यात्रा क्रम में लिखे गए स्थूल वृत्त मात्र होते थे| भारतेंदु युगीन यात्रा-वृत्तांतों में भावात्मक स्थलों पर भाषा की प्रवाहमयता में लोकोक्तियाँ, अलंकार आदि सहजता से प्रवेश कर गए हैं। इसके बावजूद हिन्दी साहित्य में यात्रा-वृत्तांत का प्रारम्भ भारतेंदु युग से मानना ज्यादा उपयुक्त होगा। उनके सम्पादन में निकलने वाली पत्रिकाओं में 'सरयूपार की यात्रा', 'मेहदावल की यात्रा', 'लखनऊ की यात्रा', 'जनकपुर की यात्रा', 'वैद्यनाथ की यात्रा' आदि यात्रा-वृत्तांत प्रकाशित हुए हैं। इन यात्रा-वृत्तांतों की भाषा व्यंगपूर्ण और शैली बड़ी रोचक एवं सजीव है। आलोचकों ने इन वृत्तांतों को निबंध विधा के अंतर्गत ही समाविष्ट कर लिया है। उस समय यात्रा-वृत्तांत के रूप में गद्य की स्वतंत्र विधा मान्य नहीं थी| भारतेंदु के बाद यात्रा-वृत्तांतों की एक लम्बी परम्परा दिखाई पड़ती है। इन रचनाओं में श्रीमती हरदेवी कृत 'लन्दन यात्रा' (जिसे यात्रा-वृत्तांत का सर्वप्रथम मुद्रित ग्रन्थ माना जाता है|) बालकृष्ण भट्ट कृत 'कातिकी का नहान', 'विलायत की यात्रा' एवं प्रताप नारायण मिश्र कृत 'विलायत यात्रा', पंडित दामोदर शास्त्री कृत 'मेरी पूर्व दिग्यात्रा', देवी प्रसाद खत्री कृत 'रामेश्वर यात्रा', 'बद्रिकाश्रम यात्रा', स्वामी सत्यदेव परिव्राजक कृत 'मेरी कैलाश यात्रा', 'मेरी जर्मन यात्रा', शिव प्रसाद गुप्त कृत 'पृथ्वी प्रदक्षिणा', कन्हैया लाल मिश्र कृत 'हमारी जापान यात्रा' और रामनारायण कृत 'यूरोप यात्रा में छः मास' आदि महत्त्वपूर्ण यात्रा-वृत्तांत हैं।

सन् 1936-37 का प्रगतिवादी आंदोलन, साम्यवादी विचारधारा के प्रति बढ़ता आकर्षण, द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति आदि परिस्थितियों ने भारत के यात्रा-वृत्तांत को नई जमीन दी। सांस्कृतिक सम्बन्धों के आदान-प्रदान ने एक-दूसरे देशों को समझने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस कालखंड में यात्रा संसाधनों की प्रचुरता से यात्राओं की संख्या में वृद्धि हुई और यात्रा-वृत्तांतों में भी इजाफा हुआ। हिन्दी यात्रा-वृत्तांत के सशक्त हस्ताक्षर प्रसिद्ध यायावर राहुल सांकृत्यायन ने अमूल्य कृतियों का सृजन किया है। सांकृत्यायन जी ने देश-विदेश की कई बार यात्राएँ की हैं और उनके आधार पर अनेक यात्रा-वृत्तांत का भी सृजन किया है। उन्होंने तिब्बत से अपार बौद्ध ग्रंथों और ज्ञान-विज्ञान की अप्राप्य पांडुलिपियाँ भी खोजी हैं। तिब्बत यात्राओं का उनका उद्देश्य ही प्राचीन ग्रंथों की खोज रहा है। उसी प्रकार अध्यापन के लिए वे रूस गए, तब भी उनकी दृष्टि रचनाओं के लिए सामग्री संकलन में लगी थी। वामपंथ के समर्थक होने के बावजूद सांकृत्यायन जी भारतीयता के प्रति गहरी आस्था रखने वाले थे। अपने देश की मिट्टी के प्रति उनके मन में बेहद सम्मान था। हिन्दी यात्रा-वृत्तांत के विकास में राहुल सांकृत्यायन का योगदान अतुलनीय है। सांकृत्यायन जी के यात्रा-वृत्तांतों की शैली इतिवृत्ति-प्रधान है। इसके बावजूद गुणवत्ता और

परिणाम की दृष्टि से वे यात्रा-वृत्तांत के बहुत बड़े लेखक हैं| सांकृत्यायन जी कृत महत्त्वपूर्ण यात्रा-वृत्तांत 'मेरी लद्दाख यात्रा', 'मेरी तिब्बत यात्रा', 'रूस में पच्चीस मास', 'एशिया के दुर्गम भूखंडों में' आदि हैं| राहुल सांकृत्यायन के बाद यात्रा-वृत्तांतकार के रूप में बहुमुखी प्रतिभा के धनी कवि-कथाकार सच्चिदानंद हीरानंद वात्सयायन ' अज्ञेय' का नाम बड़े सम्मान के साथ लिया जाता है। 'अज्ञेय' अपने यात्रा-वृत्तांत को यात्रा-संस्मरण कहना पसंद करते थे। इससे उनका आशय यात्रा-वृत्तांतों में संस्मरण का समावेश कर देना था। उनका मानना था कि यात्राएँ न केवल बाहर की जाती हैं बल्कि ये हमारे अंदर की ओर भी की जाती हैं। ' अरे यायावर रहेगा याद' (1953) और ' एक बूंद सहसा उछली' (1960) उनके द्वारा लिखित यात्रा-वृत्तांत की प्रसिद्ध कृतियाँ हैं। ' अरे यायावर रहेगा याद' में उनके भारत भ्रमण का वर्णन है और ' एक बूंद सहसा उछली' में विदेश की यात्राओं को शब्दबद्ध किया गया है।

यात्रा मनोरंजक होते हुए भी कष्टकारी होती है, क्योंकि वहाँ हमें तमाम अनभिज्ञ चीजों और असुविधा से गुजरना पड़ता है। यात्री जब किसी नए स्थान पर जाता है तब निश्चित रूप से एक ऐसी दुनिया को समक्ष पाता है जो भू-दृश्य या भौतिक परिवेश, संस्कृति, भाषा, तथा व्यवहार में भिन्न होती है| इसके बावजूद यात्रा-वृत्तांत के लिए विषयवस्तु के चयन में पर्याप्त स्वतंत्रता है। लेकिन यात्री अपने साहित्य में संवेदनशील होकर भी तटस्थ रहता है, ऐसा नहीं होने पर यात्रा के स्थान पर यात्री के अधिक प्रधान हो उठने की संभावना होती है। यात्रा-वृत्तांत सामान्य-वर्णन शैली के अतिरिक्त डायरी, पत्र और रिपोर्ताज शैली में भी लिखा जाता है। इसलिए इसमें निबंध, कथा, संस्मरण, रेखाचित्र आदि कई गद्य-विधाओं का आनंद एक साथ मिलता है| यात्रा-वृत्तांत का अन्य विधाओं के साथ अंतर्संबंध को दिखाते हुए डॉ. रघुवंश ने लिखा है- "समग्र जीवन को अभिव्यक्ति देने वाले यात्रा-वृत्तांत में महाकाव्य और उपन्यास का विराट तत्व, कहानी का आकर्षण, गीतिकाव्य की मोहक भावशीलता, संस्मरणों की आत्मीयता, निबंधों की मुक्ति सब एक साथ मिल जाती है|"[2]

यात्रा-वृत्तांत और संस्कृति का घनिष्ठ सम्बन्ध है। संस्कृति में इतिहास, धर्म, कला, समाज आदि समाविष्ट हैं तो यात्रा-वृत्तांत इन सभी की कलात्मक अभिव्यक्ति है। यात्रा-वृत्तांत मात्र भूमि नापने की क्रिया, आँखों देखा हाल, रिपोर्ट या रिपोर्ताज भी नहीं है, बल्कि वह गहरी संवेदना या रागात्मक संबंधों की प्रेरणा से लिखा जाता है। उसमें भी राग, प्रेम, मानवता, प्रकृति, संस्कृति, समाज के प्रति सरोकार आदि उतना ही महत्व रखते हैं, जितना अन्य साहित्य विधाओं में। इसलिए वह कथा, उपन्यास, कविता, समीक्षा, पत्र, डायरी आदि विधाओं की शैली में लिखा जा सकता है, बशर्ते कि उसका यथार्थ बराबर बना रहे। यह स्पष्ट है कि जो यात्रा-वृत्तांत परिवेश को या अनुभूतियों को जितनी गहरी संवेदना या रागात्मक संबंधों की प्रेरणा से अभिव्यक्ति देगा वह उतना ही उत्कृष्ट होगा। ऐसी संरचना यायावर अपनी कलात्मक एवं सृजनात्मक संवेदनशीलता के द्वारा ही कर सकता है। विभिन्न यांत्रिक अनुभवों से यात्रावृत्त के लिए चुने हुए केन्द्रों से सम्बद्ध अनुभवों का चयन, सम्बंधित घटनाओं का अनुक्रम, उत्सुकता बनाए रखने के लिए यात्रावृत्त की संरचना में

घटनाओं को काटना, छांटना, तोड़ना, जोड़ना, मोड़ लाना आदि रचनात्मक क्रियाएँ उपयोगी हो सकती हैं। विषय को प्रभावी बनाने के लिए उपयुक्त सामग्रियों का चयन एवं संयोजन कर, उनमें सामाजिक, प्रश्नोत्तरी, खोज-समाधान या कलात्मक सम्बन्ध बनाना, विषय के विकास के अनुरूप वाक्यों में लय स्थापित करना भी यात्रा-वृत्तांत को साहित्यिक बनाता है। इन समस्त क्रियाओं का उद्देश्य यात्रा-वृत्तांत को पठनीय, रोचक, रंजक, स्मरणीय, अनुभव-समृद्धिकारी, अनुभूति-संवाहक जानकारी, ज्ञान तथा विवेक-दृष्टि देने वाला होता है। इस उद्देश्य हेतु साहित्यिक अलंकारों का समुचित उपयोग भी वांछनीय है।

कुछ दशकों से हिन्दी यात्रा-वृत्तांत समृद्ध हुआ है। विदेशों से हमारा संपर्क बढ़ा है, हमारे साहित्यकार चीन, जापान, रूस, अमेरिका, अफ्रीका तथा यूरोपीय देशों के साहित्य और कला के क्षेत्र में रूचि दिखाने लगे हैं। साहित्यकारों को विदेश भ्रमण की सुविधाएं भी अधिक मिलने लगी हैं| वे देश-विदेश की यात्रा करने लगे हैं और अपने यात्रानुभवों को शब्दबद्ध करके यात्रा-वृत्तांत के रूप में पाठक के सामने ला रहे हैं। इन यात्रा-वृत्तांतों में कृष्णनाथ कृत 'स्फीति में बारिश', 'लद्दाख में राग-विराग', अमृतलाल वेगड़ कृत 'सौंदर्य की नदी नर्मदा', तीरे-तीरे नर्मदा', निर्मल वर्मा कृत 'चीड़ों पर चाँदनी', मोहन राकेश कृत 'आखिरी चट्टान तक', मनोहर श्याम जोशी कृत 'क्या हाल हैं चीन के', विश्वनाथ प्रसाद तिवारी कृत 'आत्मा की धरती', रमेशचंद्र शाह कृत 'एक लम्बी छाँह', कृष्णदत्त पालीवाल कृत 'जापान में कुछ दिन', प्रयाग शुक्ल कृत 'सम पर सूर्यास्त', कृष्णा सोबती कृत 'बुद्ध का कमंडल लद्दाख', नासिरा शर्मा कृत 'जहां फव्वारे लहू रोते हैं', कमलेशवर कृत 'आँखों देखा पाकिस्तान', 'पश्चिमी जर्मनी पर उड़ती नजर', अजित कुमार कृत 'सफरी झोले में', पंकज बिष्ट कृत 'खरामा-खरामा, असगर वजाहत कृत 'रास्ते की तलाश में', ओम थानवी कृत 'मुअनजोदड़ो', अनिल यादव कृत 'वह भी कोई देश है महाराज', गरिमा श्रीवास्तव कृत 'देह ही देश' आदि महत्त्वपूर्ण यात्रा-वृत्तांत हैं। इनके अतिरिक्त पत्र-पत्रिकाओं में भी लगातार यात्रा-वृत्तांत प्रकाशित हो रहे हैं।

सन्दर्भ :

1. राहुल सांकृत्यायन : घुमक्कड़शास्त्र, किताब महल, इलाहबाद, 2004, पृष्ठ. 81.
2. डॉ.रघुवंश : हिंदी साहित्य कोश, भाग 1 और भाग 2, ज्ञानमण्डल लिमिटेड वाराणसी,तृतीय स. 1985, पृ. 610.
3. राहुल सांकृत्यायन:एशिया के दुर्गम भूखंडों में, जगतराम एंड संस,दिल्ली, 2018
4. सचिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' : एक बूँद सहसा उछली,भारतीय ज्ञानपीठ,नई दिल्ली, 2012
5. सचिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' : अरे यायावर रहेगा याद, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015
6. विश्वमोहन तिवारी : हिन्दी का यात्रा-साहित्य, आलेख प्रकाशन, दिल्ली, 2008

***

ISSN No. 2348-6163

साहित्य-सेतु

जनवरी-मार्च, 2019

प्रकाशक
हिंदी अकादमी
हैदराबाद

साहित्य-सेतु

त्रैमासिक

वर्ष : 5 ◆ अंक : 18 ◆ जनवरी-मार्च 2019 ई.

संपादक
डॉ. घनश्याम
निदेशक
हिंदी अकादमी

परामर्शमंडल
डॉ.एम.वेंकटेश्वर
डॉ.बी.सत्यनारायण
डॉ.शुभदा वांजपे
डॉ.अनिता गांगुलि
डॉ.वी.कृष्ण
डॉ.ऋषभदेव शर्मा

सह संपादक
श्रीमती पी.उज्ज्वला वाणी

हिन्दी प्रचार संवाहिका

प्रकाशक
हिन्दी अकादमी
हैदराबाद

---

* Hindi Academy, Hyderabad -
As per the Xth Schedule the Gazette of India Extraordinary Part-II S.N.50 Dated 01.03.2014.

विषय-क्रम

पृ.सं.

5 *संपादकीय*

आलेख

11 प्रवासी कथा साहित्य में स्त्री जीवन की अंतर कथा – *डॉ.एम.वेंकटेश्वर*

17 विश्व में हिन्दी की महत्ता – *डॉ. एम.आंजनेयुलु*

21 राग कविता का मूल्यांकन – *दिनेश कुमार यादव*

27 दर्द का हद से गुज़रना है दवा हो जाना – *सीताराम गुप्ता*

31 'ठाकुर का कुआँ, और 'गावँ का कुआँ' कहानी में दलित स्त्री – *सुभाष कुमार*

36 समकालीन हिन्दी कविता और पर्यावरणीय चिंतन – *अमरनाथ प्रजापति*

40 केदारनाथ सिंह की कविता में लोक और वैश्वीकरण – *आज़ाद*

49 समकालीन हिन्दी आलोचना की समस्या और युवा लेखन का महत्व – *विशाल कुमार सिंह*

58 असग़र वजाहत का उपन्यास 'कैसी आगी लगाई' में सामाजिक चिंतन – *सय्यद ताहेर*

61 प्राचीन बौद्ध शिक्षा का केन्द्र : नालन्दा – *डॉ. मनोज कुमार*

66 21 वीं सदी का आदिवासी विमर्श और हिन्दी नाटक – *डॉ.करन सिंह ऊटवाल*

72 "समकालीन महिला कथाकारों की कहानियों में भाषा का बदलता रूप" – *डॉ. आर.सपना*

74 प्रो.सुवास कुमार की रचनाशीलता के विविध आयाम – *वंदना शर्मा*

78 नागार्जुन का काव्य : सामाजिक सरोकार – *कुमारी सलमा असलम*

84 भूमंडलीकरण के दौर के हिन्दी उपन्यासों में अन्नदाता (किसान) की करुणगाथा – *इन्द्रदेव शर्मा*

90 वर्चस्ववाद के विरूध्द फ़ैज़ – *प्रियंका*

कविता

96 पहचान - सैयद दाऊद रिजवी

97 हिन्दी की जय - डॉ.रामसनेही लाल शर्मा

कहानी

98 'पुनः गृहस्थ जीवन की शुरूआत'' - देवेन्द्र कुमार मिश्रा

103 बैरी भये पालनहार - राजेन्द्र परदेसी

यात्रा-साहित्य

109 ''हिन्दी के वैश्विक संदर्भ में यात्रा साहित्य का योगदान'' - हेमंत कुमार

115 'यात्राओं के झरोखे में राहुल सांकृत्यायन' - लोकेश कुमार

व्यंग्य

118 हर्र लगे न फिटकारी रंग चोखा - विवेक रंजन श्रीवास्तव

....

'यात्राओं के झरोखे में राहुल सांकृत्यायन'

- लोकेश कुमार

यात्रा मानव जीवन की एक जरुरत है। मानव जाति के विकास में यात्रा की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। यद्यपि हिन्दी में यात्रा वृत्तान्त एक स्वतंत्र विधा का रूप ले चुका है, लेकिन फिर भी इस विधा की आलोचना और विश्लेषण बहुत कम हुआ है। हिन्दी के परंपरागत अनुसंधान विषयों जैसे-उपन्यास, कहानी, कविता, नाटक, निबंध आदि पर काफी अनुसंधान हो चुके हैं और हो रहे हैं, किंतु गद्येतर विधाओं-यात्रा वृत्तान्त, आत्मकथा, रिपोर्ताज, डायरी आदि पर बहुत कम आलोचनात्मक और अनुसंधान ग्रंथ उपलब्ध हैं। अतः आलोचकों और शोधार्थियों को इन उपेक्षित विधाओं की ओर ध्यान देने की जरुरत है।

राहुल सांकृत्यायन ने हिन्दी साहित्य को विपुल भंडार दिया है। उनका योगदान हिन्दी साहित्य के लिए ही नहीं बल्कि उन्होंने कई अन्य क्षेत्रों- धर्म, दर्शन, लोक साहित्य, इतिहास, राजनीति, जीवनी, यात्रा वृत्तान्त, कोश एवं प्राचीन ग्रंथों की खोज के लिए कार्य किया है। राहुल जी की रचनाओं में प्राचीन के प्रति आस्था, इतिहास के प्रति गौरव और वर्तमान के प्रति सधी हुई दृष्टि का समन्वय देखने को मिलता है। उन्होंने प्राचीन और आधुनिक भारतीय साहित्य चिंतन को आत्मसात कर मौलिक दृष्टि देने का प्रयास किया है। राहुल जी इस्माइल मेरठी की इन पंक्तियों को वेद की ऋचा मानकर सारी उम्र चलते रहे हैं-

''सैर कर दुनिया की गाफिल जिंदगानी फिर कहाँ।
जिंदगानी गर रही तो नौजवानी फिर कहाँ।।''

राहुल सांकृत्यायन ने घुमक्कड़ी को सर्वश्रेष्ठ कार्य और घुमक्कड़ को विश्व की श्रेष्ठतम विभूति बताया। उनका मानना था कि जितना कुछ हम यात्रा करते हुए प्राप्त कर सकते हैं, उतना अधिक किताबें पढ़कर नहीं। उनका जीवन ही एक घुमक्कड़, यायावर, यात्री का जीवन था। देश-विदेश का भ्रमण, एक विचारधारा से दूसरी विचारधारा की यात्रा और ज्ञान के एक क्षेत्र से विविध क्षेत्रों की यायावरी उनके जीवन का वैशिष्ट्य था। छायाचित्रकार फणी मुखर्जी ने उनकी मृत्यु के बाद लिखा- **''वे भारत के महान यात्री और घुमक्कड़ थे। वे इतने दिनों तक इस जीवन की अविश्रांत घुमक्कड़ी के बाद चले गये। वहाँ भी वे अपनी घुमक्कड़ी न छोड़ेंगे ऐसा मेरा विश्वास है।''**[1]

राहुल सांकृत्यायन को यात्रा साहित्यकार के रूप में अधिक ख्याति मिली। उनके यात्रा-वृत्तान्त में, यात्रा में आनेवाली कठिनाईयों के साथ उस जगह की प्राकृतिक संपदा, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक परिवेश एवं इतिहास का जबर्दस्त समन्वय है। राहुल जी असाधारण पर्यटक थे। उन्होंने विभिन्न देशों, स्थानों की कई बार यात्राएँ कीं तथा विपुल मात्रा में साहित्य की रचना की। उन्होंने अपनी यात्रा के दौरान अनेक ग्रंथों की खोज करते हुए, उनका

संपादन किया। उनका विश्व भ्रमण और लेखन उन्हें ह्वेनसांग एवं मार्कोपालो के समतुल्य खड़ा करता है। उन्होंने न केवल भारतीय सभ्यता, संस्कृति एवं दर्शन से दुनिया को अवगत कराया बल्कि उन्होंने विश्व साहित्य से भारतीयों को भी परिचित कराया। उन्होंने ज्यादातर पैदल भ्रमण किया, क्योंकि उनका मानना था कि ज्ञान और अनुभव तो पैदल चलकर ही प्राप्त किया जा सकता है। यात्रा के सिद्धांत को आधार बनाकर उन्होंने घुमक्कड़शास्त्र नामक पुस्तक लिखी और अनेक यात्रा वृत्तान्त की पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें-'मेरी लद्दाख यात्रा', 'तिब्बत में सवा वर्ष', 'मेरी यूरोप यात्रा', 'मेरी तिब्बत यात्रा', 'रूस में पच्चीस मास', 'किन्नर देश में', 'एशिया के दुर्गम भूखंडों में', 'चीन में क्या देखा' आदि महत्वपूर्ण हैं।

राहुल सांकृत्यायन एक विश्व पर्यटक थे, जिन्होंने भारत का ही भ्रमण नहीं किया बल्कि दुनिया को अपने क़दमों से लांघा है। उन्होंने टट्टुओं पर बैठकर, पानी के जहाज से, रेलगाड़ी से एवं पैदल बहुत ही दुर्गम यात्राएँ की हैं। उन्होंने यात्रा के संपर्क में आनेवाली चीजों को गहराई से देखीं और नई-नई भाषाएँ, नए-नए लोग, उनके रीति-रिवाज, समाज और संस्कृति, उन सब पर सृजनात्मक कार्य किया।

राहुल सांकृत्यायन का आकर्षण हमेशा पिछड़ी और घुमंतू जातियों के प्रति बना रहा है। उन्होंने उनके बीच जाकर सब कुछ देखा, समझा और हमें भी उनसे परिचित कराया। राहुल जी की पिछड़ी और घुमंतू जातियों के प्रति आस्था को हम इन पंक्तियों के माध्यम से समझ सकते हैं- ''पहले-पहल जब मैं 1926 में तिब्बत की भूमि में गया और मैंने वहाँ के घुमंतुओं को देखा तो उनसे इतना आकृष्ट हुआ कि एक बार मन ने कहा-छोड़ो सबकुछ और हो जाओ इनके साथ। बहुत वर्षों तक मैं यही समझता रहा कि अभी भी अवसर हाथ से नहीं गया है। वह क्या चीज थी, जिसने मुझे उनकी तरफ आकृष्ट किया।''[2]

अपनी यात्रा के दौरान राहुल सांकृत्यायन एक मनमौजी सैलानी की भांति आकर्षक और आश्चर्यजनक वस्तुओं को नहीं देखते थे, बल्कि उन्हें गहराई से समझते थे। वे संसार को सबसे बड़ी पोथी मानते थे। उन्होंने तिब्बत में बौद्ध धर्म के मूल ग्रंथों के अनुसंधान के लिए गोपनीय यात्रा की थी। राहुल जी की यायावरी सहजात थी। उनमें देश दर्शन का नैसर्गिक स्वाभाव था। उनमें अदम्य साहस, अद्भुत उत्साह और अपराजेय जिज्ञासा थी, जिसके सहारे वे दुनिया का सैर करते रहे। जितनी अधिक यात्राएँ उन्होंने की, उतना ही विपुल साहित्य भी इस क्षेत्र में छोड़ गए हैं। शायद ही कोई पर्यटक और रचनाकार हो, जिसने इतना अधिक यात्रा-वर्णन लिखा हो। उन्होंने अपनी आत्मकथा भी 'मेरी जीवन यात्रा' नाम से लिखी। उनकी आत्मकथा के संदर्भ में प्रभाकर माचवे ने लिखा है- ''राहुल जी ने अपनी आत्मकथा को सार्थक नाम दिया था- 'जीवन यात्रा' एक तरह से उनकी पूरी जीवनी ही एक यात्रा थी। एक स्थान से दूसरे स्थान तक, गाँव से शहर और महानगर की ओर, राष्ट्र से अन्तरराष्ट्र, देश से विदेश तक, वैष्णव धर्म से आर्य समाज, आर्यसमाज से बौद्धधर्म, बौद्धधर्म से साम्यवाद की ओर एक निरंतर गतिमान, न रूकने वाली यात्रा।''[3]

राहुल सांकृत्यायन ने यात्रा-वृत्तान्त को महत्वपूर्ण स्थान दिया और यात्रा के प्रति जन-मानस

में रुचि भी जगाई। राहुल जी ने अपने यात्रानुभवों से जितने यात्रा-वृत्तांत की रचना की वह विलक्षण है। उनका यायावर व्यक्तित्व विभिन्न जगहों को देखने-परखने में और हर एक देश की संस्कृति को अंकित करने में बहुत ही तन्मयता दिखाता है। राहुल जी के यात्रा-वृत्तांतों में उस देश के इतिहास-भूगोल की सम्यक जानकारी भी भरी मिलती है। साथ ही लोक जीवन के जीवंत चित्रों को भी इन यात्रा-वृत्तों में रूपायित किया गया है। इन यात्रा-वृत्तांतों में अनगढ़ भाषा का सहज स्वाभाविक अनलंकृत रूप मिलता है। वे अपनी यात्राओं में सामान्य जन को, उनके रीति-रिवाजों, धर्म आदि के अंधविश्वासों और पूजा विधानों आदि को पैनी निगाह से देखते-परखते चलते थे और उन पर अपनी बेबाक टिप्पणी भी करते चलते थे। प्रथाओं, परंपराओं से लेकर प्रकृति, भूगोल, इतिहास और पुरातत्व की सामग्रियों को सहेजते चलते थे।

यात्रा करना मनुष्य की नैसर्गिक प्रवृति रही है। अगर हम मानव इतिहास पर नजर डालें तो पाएँगे कि मनुष्य के विकास की गाथा में यायावरी का महत्वपूर्ण योगदान है। संसार के बड़े-से-बड़े धर्माचार्य, इतिहासकार और भूगर्भशास्त्री यायावर रहे हैं। फाहियान, ह्वेनसांग, बर्नियर, मार्कोपालो, अलबरूनी, इब्नबतूता, गौतम बुद्ध, महावीर जैन, रामानुज, मध्वाचार्य, दयानंद आदि की घुमक्कड़ी ने ही दुनिया को आश्चर्य जनक एवं नवीन ज्ञानस्रोतों से परिचित कराया। मानव जीवन के इतिहास में यात्रा की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करते हुए सुरेन्द्र माथुर ने लिखा है- ''यात्रा का जीवन से अविछिन्न संबंध है। जीवनगत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वह सदैव से बड़े पर्वत, घनघोर जंगल और जलते हुए रेगिस्तानों की यात्रा करता आया है।''[4]

यात्रा-वृत्तान्त साहित्यिक यात्री के यात्रानुभवों की संवेदनात्मक एवं कलात्मक प्रस्तुति है, जिसमें विश्व संस्कृति की समग्रता, मानव जीवन की सम्पूर्णता एवं प्राकृतिक जीवन की विराटता है। समाज की हर झांकी रहने के कारण यात्रा-वृत्तान्त की उपादेयता अत्यधिक महत्वपूर्ण है। राहुल सांकृत्यायन अपनी यात्राओं में बहुत ही संवेदनशील थे, पर अपने संकल्प में इतने दृढ़ थे कि बाधाओं का पहाड़ भी सामने आ पड़े तो भी दुर्गम पहाड़ों, कंदराओं में बढ़ते जाते थे। कभी न रूकने वाला वह यायावर कोई साधारण यात्री नहीं था, बल्कि उसने यात्राओं के माध्यम से अनगिनत ज्ञान भंडारों का संचय किया।

...

संदर्भ-ग्रंथ

1.'राहुल सांकृत्यायन':कन्हैया सिंह, डी.पी.एस.पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृष्ठ-22
2.'घुमक्कड़शास्त्र':राहुल सांकृत्यायन, किताब महल, इलाहाबाद, पृष्ठ-81
3.'राहुल सांकृत्यायन':प्रभाकर माचवे, राजपाल एंड संज, दिल्ली, पृष्ठ-23
4.'यात्रा साहित्य का उद्भव और विकास':सुरेंद्र माथुर, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ-10

...

संपर्क-सूत्र *:- पीएच.डी.शोधार्थी, केंद्रीय विश्वविद्यालय, हैदराबाद. मो:9666285172*

राष्ट्रीय संगोष्ठी

आचार्य शिवपूजन सहाय और राहुल सांकृत्यायन : हिंदी नवजागरण के परिप्रेक्ष्य में

ज्ञान शांति मैत्री

प्रमाण-पत्र

19, 20, 21 फरवरी, 2018

संयुक्त आयोजन

हिंदी विभाग- म.म.वि., मालवीय मूल्य अनुशीलन केन्द्र, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा एवं उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/श्रीमती/कु./डॉ. लोकेश कुमार, शोध छात्र, हिंदी विभाग, हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद ने संगोष्ठी में प्रतिभागिता की तथा 'यात्राओं के झरोखे में राहुल सांकृत्यायन' विषय पर अपना शोध पत्र /व्याख्यान प्रस्तुत किया।

प्रो. चंद्रकला त्रिपाठी	प्रो. कृष्ण कुमार सिंह	डॉ. उर्वशी गहलौत	प्रो. आनंदवर्धन शर्मा
संयोजक	संयोजक	आयोजन सचिव	संरक्षक
हिंदी विभाग, म.म.वि, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी	हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा	हिंदी विभाग, म.म.वि, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी	प्रतिकुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

SCHOOL OF DISTANCE EDUCATION
UNIVERSITY OF KERALA
PALAYAM, THIRUVANANTHAPURAM,KERALA

Three Day
International Seminar on

'PRAVASEE SAHITY KI SANSKRUTIK UPLABDHIYAN'

Certificate

This is to certify that Mr/Ms/Dr./Prof

लोकेश कुमार, शोधार्थी

हैदराबाद विश्वविद्यालय, (हैदराबाद)

has attended/Presented a Paper/Chaired a Session/ Served as a Resource Person/ Organizing Committee Member in the Three day International Seminar on

'Pravasee sahity ki Sanskrutik Uplabdhiyan'

Organized by the School of Distance Education, University of Kerala held on 11th to 13th November 2019 at the Senate Chamber University of Kerala Palayam, Thiruvananthapuram, Kerala.

Title of the paper presented :

"हिंदी यात्रा-वृत्तांत में प्रवासी जीवन का संदर्भ"

SCHOOL OF DISTANCE EDUCATION
THIRUVANANTHAPURAM
PIN 695 034
UNIVERSITY OF KERALA

Dr.Indu K V	**Dr. Rajan T K**	**Dr. R.Vsasanthagopal**
Organizing secretary	**Convener**	**Director, SDE**